मासिक प्रकाशन ● मार्च '९४

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका



मार्शलों को
चटानेवाला भारतीय

एं भूलने के लिए
हैं !

महिलाओं का खतना :
बहस अमरीका में

प्रेम एक विलक्षण वस्तु है

रुपए

स्तान टाइम्स प्रकाशन

धर्म, संस्कृति, कला, ज्योतिष आदि पर नवीन अनुपम प्रकाशन

—— आचार्य नरेन्द्रदेव कृत ——

बौद्ध धर्म दर्शन

आचार्य जी की यह सर्वश्रेष्ठ रचना, बौद्ध धर्म तथा दर्शन कें समस्त भेद, प्रभेदों का वर्णन करने में अद्वितीय है। यह एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है जिससे बौद्धों की समस्त शाखाओं का ज्ञान होता है।

मूल्य : रु० ३००

—— जगद्गुरु भारतीकृष्णतीर्थ जी महाराज कृत ——

वैदिक गणित

वैदिक गणित पर लिखित इस चमत्कारी एवं क्रांतिकारी ग्रंथ में एक नितांत नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। इसके चालीस अध्यायों में गणित के सभी विषयों–गुणन, भाग, खण्डीकरण, समीकरण फलन इत्यादि–का समावेश किया गया है।

मूल्य: रु० ६० (अजिल्द); रु० १०० (सजिल्द)

—— पं० देवीदत्त जोशी कृत ——

सुगम ज्योतिष

इस ग्रंथ में जन्म पत्र, वर्षफल, प्रश्न आदि अत्यन्त सरल विधि में समझाये गये हैं। जिसे पढ़कर साधारण व्यक्ति भी जन्म पत्र बना सकता है व फलादेश कर सकता है। मूल्य : रु० १९५ (अ); रु० २८५ (स)

—— कैलाशनाथ उपाध्याय कृत ——

जीवन फल दर्पण	मूल्य : रु० ४६
राशि ज्योतिष	मूल्य : रु० ४८
जन्मांग फल विचार	मूल्य : रु० २८

—— बी० वी० रमन कृत ——

तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग

यह पुस्तक हमें विभिन्न प्रचलित योगों से अवगत कराती है। सब महत्त्वपूर्ण, सुव्यस्थित तथा क्रमबद्ध योगों का वर्णन इस एक पुस्तक में मिलता है ताकि इन योगों से व्यावहारिक जन्मकुण्डली बनाई जा सके।

मूल्य : रु० ६

जातक निर्णय : कुण्डली पर विचार करने की विधि

फलित ज्योतिष पर यह एक अत्यन्त लाभप्रद एव उपयोगी पुस्तक है। इस पुस्तक में जन्म कुंडली के अलग-अलग बारह भावों का विश्लेषण अति वैज्ञानिक ढंग से किया गया है जिसे पढ़कर पाठ सुगमता से बारह भावों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

मूल्य : रु० ४५ (अ); रु० ८० (

जैमिनी ज्योतिष का अध्ययन

जैमिनी पद्धति उत्तर भारत में प्रचलित पाराशर पद्धति की पूरक है तथा न केवल होरा शास्त्र में अपितु संहिता शास्त्र में भी ज्योतिष की पूर्ण सहायता करती है।

मूल्य : रु०

—— केदारदत्त जोशी कृत व्याख्या ——

मुहूर्त्त मार्तण्ड (नारायण दैवज्ञ विरचि

ज्योतिष शास्त्र के कतिपय गंभीर आशयों को सरल और लघु रूप में प्रकट करते हुए लोक जीवन में अनेक शुभाशुभ मुहूर्त्त काल एवं दशा का विशद विवरण। मूल्य : रु० ६५ (अ); रु० ११० (

—— मोतीलाल बनारसीदास ——

चौक, वाराणसी (उ० प्र०)

मुख्यालय: बंग्लो रोड, दिल्ली-११० ००७

शाखाएं: अशोक राजपथ, पटना ● बंगलौर ● मद्रास

छोटी-बड़ी सभी बीमारियों से निबटने के लिए 'स्वयं चिकित्सक पुस्तकें'



● होमियोपैथी द्वारा स्वयं चिकित्सा

यह पुस्तक असंख्य मरीजों का इलाज करने वाले सफल चिकित्सक श्री राजीव शर्मा, जिनके लेख अनगिनत पत्रिकाओं एवं अखबारों में छपते हैं, के विशाल अनुभव का निचोड़ है। इसमें 75 से अधिक रोगों के लक्षण, परहेज व दवा संबंधी संपूर्ण जानकारी चित्रों सहित दी गई है। इसके अतिरिक्त सेक्स एवं नशे से संबंधित भ्रांतियों एवं रोगों को दूर करने की विधियां भी इस पुस्तक में दी गई हैं।

पृ. 256/- • मूल्य: 32/- • डाकखर्च : 6/-

● योग और भोजन द्वारा रोगों का इलाज

सुप्रसिद्ध योगाचार्य श्री सतपाल ग्रोवर के 40 वर्षों के अनुभव के आधार पर लिखित अनमोल पुस्तक। इसमें रोग-निवारण हेतु योगासन, ध्यान एवं शुद्धि क्रियाओं, जैसे-जल नेति, सूत्र नेति आदि का सचित्र वर्णन व प्राकृतिक उपचार, जिनसे सभी रोगों का इलाज किया जा सकता है, दिए गए हैं।

पृ. 160 • मूल्य: 28/- • डाकखर्च: 6/-

● दिल का दौरा: बचाव आपके हाथ में

एक हृदय रोगी द्वारा लिखी गई अत्यंत ही प्रामाणिक एवं प्रैक्टिकल पुस्तक। दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे इस रोग के प्रति सचेत कराते हुए आपके इन प्रश्नों का सहज ही उत्तर देने में सक्षम - दिल का दौरा पड़ने की बीमारी किन कारणों से होती है; इस बीमारी से कैसे बचा जा सकता है; दौरा पड़ने के बाद क्या सावधानियां आवश्यक हैं ताकि दूसरा दौरा न पड़े; खान-पान व रहन-सहन की खराब आदतें कैसे सुधारें? नवीनतम शोध निष्कर्षों की जानकारी।

पृ. 144 • मूल्य: 24/- • डाकखर्च: 6/-

● फल-सब्जी एवं मसालों द्वारा चिकित्सा

घर-घर में उपलब्ध दैनिक प्रयोग के फल-सब्जी एवं मसालों द्वारा विभिन्न रोगों के निवारण के सफल उपाय के साथ-साथ दूध, घी, आदि पदार्थों के लाभकारी प्रयोगों की अचूक विधियां भी इसमें हैं।

पृ. 120 • मूल्य: 20/- • डाकखर्च: 5/-

अपने निकट के रेलवे तथा बस-अड्डों पर स्थित बुक-स्टालों से खरीदें। न मिलने पर वी. पी. पी. द्वारा मंगाने हेतु इस पते पर लिखें:

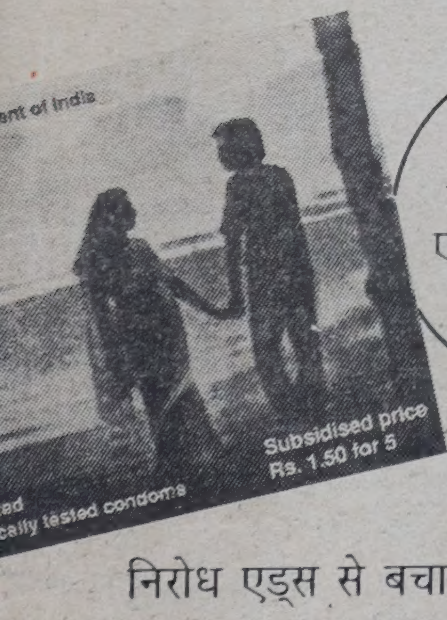
पुस्तक महल 10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002 फोन: 3268292-93, 3279900
शाखाएं: ■ 22/2 मिशन रोड, **बंगलोर**-27 फोन: 2234025. ■ 23-25, जाओबा वाडी, ठाकुरद्वार, **बम्बई**-2 फोन: 2010941, 2053387. ■ खेमका हाउस, अशोक राजपथ, **पटना**-4 फोन: 653644


Made specia
De
Su
pi

उनको मुझ पर
रा विश्वास है

डीलक्स
निरोध

कुदरती अहसास और
सुरक्षा के लिए



डीलक्स
निरोध
एक विश्वसनीय
कंडोम

निरोध एड्स से बचाव करता है

davp 93/602

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

• ज्ञानेंदु

१. **संयमन**—क. रोक, ख. निग्रह, ग. संतुलन, घ. तप ।

२. **हीनग्रंथि** —क. छोटी गांठ, ख. थोड़ी अनबन, ग. हीन भावना, घ. जटिलता ।

३. **धुरंधर**—क. जोरदार, ख. तेज आवाज वाला, ग. अभिमानी, घ. श्रेष्ठ ।

४. **संवहन**—क. सहना, ख. ले जाना, ग. साथ-साथ चलना, घ. बहना ।

५. **आविर्भाव**—क. प्रकट होना, ख. आना, ग. आगे आनेवाला, घ. विचार ।

६. **त्राणकारी**—क. कल्याणकारी, ख. मोक्षदायक, ग. रक्षक, घ. सुखदायक ।

७. **ध्यानस्थ**—क. ध्यान देने योग्य, ख. केंद्रित, ग. बुद्धिमान, घ. ध्यानमग्न ।

८. **संराधन**—क. तुष्ट करना, ख. बाधा डालना, ग. दमन, घ. जुटाना ।

९. **तेजोहत**—क. मंद, ख. जिसका अपमान किया गया हो, ग. जिसका तेज नष्ट हो गया हो, घ. आहिस्ता ।

१०. **संलिप्त**—क. एकत्रित, ख. लगा हुआ, ग. फंसा हुआ, घ. लिपा-पुता ।

११. **अत्याज्य**—क. आवश्यक, ख. जो स्पर्श न हो सके, ग. जो छोड़ने योग्य न हो, घ. जिसे बुलाया न गया हो ।

१२. **त्रसित**—क. दमित, ख. डरा हुआ, ग. बहिष्कृत, घ. तिरस्कृत ।

१३. **संलंघन**—क. अनशन, ख. बाधा, ग. समय व्यतीत होना, घ. लांघना ।

१४. **अत्ययी**—क. आगे बढ़ जानेवाला, ख. उपद्रवी, ग. तेज चलने वाला, घ. अति करनेवाला ।

उत्तर

१. ख. निग्रह, आत्मनिग्रह । **संयमन** से ही आत्मबल प्राप्त होता है ।
(व्युत्.—सम्+यम्)

२. ग. हीनभावना, हीनमन्यता, लघुमन्यता (अंग.—इनफीरियारिटी कांप्लेक्स) । **हीनग्रंथि** से ग्रसित होने पर व्यक्तित्व में निखार नहीं हो पाता । (हीन+ग्रंथि)

३. घ. श्रेष्ठ, प्रधान, अग्रगण्य । राहुल सांकृत्यायन की **धुरंधर** विद्वानों में गिनती की जाती है । (व्युत्.—धुर्व्)

४. ख. ले जाना, नेतृत्व करना । देश को उन्नति के शिखर पर **संवहन** करने का दायित्व नेताओं पर है । (व्युत्.—सम्+वह्)

५. क. प्रकट होना, उत्पत्ति । नयी शताब्दी में नवयुग के **आविर्भाव** की कामना करनी चाहिए । विशेषण—**आविर्भूत**
(व्युत्.—आविस्+भू)

६. ग. रक्षक, त्राता । सुयोग्य शासक दुर्बलों के लिए **त्राणकारी** सिद्ध होता है । (व्युत्. —त्रै)

. घ. ध्यान-मग्न, ध्यान में लगा हुआ । जा-पाठ में **ध्यानस्थ** होने से ही लाभ होता । (**ध्यानावस्थित** भी पर्याय) –व्युत्- ध्यै ।

. क. तुष्ट करना, मेल कराना अंग-रिकंसीलिएशन) । विवादग्रस्त पक्षों में **राधन** का प्रयास करना चाहिए । व्युत्.—सम्+राध्)

. ग. जिसका तेज नष्ट हो गया हो । **तेजोहत** यक्ति समाज में चेतना पैदा करने में असमर्थ ता है । (तेजः+हत) ।

०. ख. लगा हुआ, लीन । वह विज्ञान की क्षा ग्रहण करने में **संलिप्त** है । लिप्त—व्युत्.—लिप्)

१. ग. जो छोड़ने योग्य न हो । सद्मैत्री **त्याज्य** है । अ+त्याज्य (व्युत्.—त्यज्)

२. ख. डरा हुआ, त्रस्त, आक्रांत । आदर्श माज में कोई भी व्यक्ति या समूह अन्य किसी **त्रसित** नहीं होना चाहिए । (व्युत्.—त्रस्)

३. ग. व्यतीत होना । काल का **संलंघन** ब-कुछ भुला देता है । (सम्-लंघन)

४. क. आगे बढ़ जानेवाला । अथक परिश्रम व्यक्ति किसी दिशा में **अत्ययी** हो जाता है । त्.—अति+इ)

पारिभाषिक शब्द

Excise duty =उत्पाद-शुल्क
ductive expenditure=उत्पादक-व्यय
Caretaker =अवधाता/अवधायक
retaker government=अवधात्री सरकार
Officer-in-charge =प्रभारी अधिकारी
Closure =समाप्ति/समापन
Concurrent list =संवर्ती सूची
Augmentation =संवर्धन

ज्ञान-गंगा

गच्छत् शरीरविच्छेदादपि भस्मावशेषताम् । कर्पूरः सौरभेणेव जन्तुः ख्यात्याऽनुमीयते ।।

(राजतरंगिणी ७/१४३५)

शरीर छूटने के पश्चात राख हो जाने पर प्राणी अपनी ख्याति से वैसे ही जाना जाता है, जैसे कपूर अपनी सुगंध से ।

यो यद्वपति बीजं हि लभते सोऽपि तत्फलम् ।

(कथासरित्सागर ३/३/१४८)

जो जैसा बीज बोता है, वह वैसा ही फल पाता है ।

यत्नेन पुंस्त्वं सफलीकुरुष्व ।

(विवेकचूडामणि ४१२)

यत्न से अपने पुरुषत्व को सफल बनाओ ।

कथं यात्रा शरीरस्य निरारम्भस्य सेत्स्यति ।

(महाभारत, शांतिपर्व १०५/३)

जो आदमी काम नहीं करेगा, उसके शरीर की भी यात्रा कैसे चल सकती है ।

भूतानि सस्यप्रतिमानि लोके जातानि जातानि लुनाति कालः ।

(सुभाषित सुधानिधि ३४/१३)

सभी प्राणी संसार में सस्य (फसल) के समान होते हैं । वे जब-जब पैदा होते हैं, तब-तब काल उन्हें काटता रहता है ।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पांडेय)

आस्था के आयाम

हिंदू क्यों हुए



भारत से दूर समुद्र पार जन्म लेने के बावजूद जिस व्यक्ति ने भारत की संस्कृति को अपनाया । संस्कृति ही नहीं, हिंदू धर्म भी अपनाया और जीवनभर इसकी सेवा में लगकर इटली में कैंसर से जूझ रहा है, ऐसे महान सांस्कृतिक दूत का नाम है—एलन डनेलो । आज वह ८७ वर्ष के हैं ।

आज से पचास वर्ष पूर्व हिंदू धर्म अपनाकर इन्होंने अपना नाम शिवशरण रखा । आज कैंसर के ग्रास बनकर भी वह मानते हैं कि भारतीय संस्कृति को सही ढंग से आजादी के बाद शासकों ने नहीं समझा । वे शासक अंगरेजी मिश्रित भारतीय होने के कारण देश की नब्ज को नहीं पहचान पाये, जिसकी वजह से सांस्कृतिक प्रदूषण भारत झेल रहा है ।

श्री डनेलो का मानना है कि संसार का कोई भी व्यक्ति मूलतः हिंदू है । डनेलो ४ अक्तूबर १९०७ को पेरिस में पैदा हुए थे । पिता राजनीतिज्ञ थे । पहली बार सन १९३४ में वह पेरिस से कलकत्ता आये और फिर हिंदू होकर भारतीय बने । पूरे विश्व भ्रमण के बाद ही सन १९३९ में उन्होंने भारत को अपनी कर्मभूमि बनाया । भारत में २० वर्ष के प्रवास में उन्होंने १५ वर्ष बनारस में बिताये । भारत की सभी महान विभूतियों से उनका संपर्क रहा । इतना ही नहीं जब वह रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिले, तब उन्होंने डनेलो से राष्ट्रीय गान—'जन गण मन' और राष्ट्रीय गीत बंदेमातरम की धुनें बनायी ।

वह पूर्ण रूप से भारतीय संस्कृति में डूबे हैं, सन १९६० में वह यूरोप प्रवास पर निकल गये । और वहीं भारत के गैर सरकारी सांस्कृतिक दूत का कार्य करने लगे ।

आज भी उनके गले में रुद्राक्ष की माला है । वह अतिथियों का स्वागत हाथ मिलाने के बजाय 'नमस्ते' से करते हैं । वह शुद्ध शाकाहारी हैं । पहनने में वह धोती और चादर का प्रयोग करते हैं । इन्होंने बनारस में विजयानंद त्रिपाठी से बहुत कुछ भारतीय शास्त्रों का ग्रहण किया ।

सन १९६० में उन्हें भारत छोड़ना बड़ा दुःखदायी लगा । क्योंकि उन्हें फोर्ड फाउंडेशन ने बर्लिन में संगीत के अंतरराष्ट्रीय संस्थान में निमंत्रित किया था । वहां उन्होंने भारतीय संगीत के १२० ग्रामोफोन रेकॉर्ड यूरोप को दिये । पश्चिमी दुनिया को रविशंकर से परिचित करवाया । रविशंकर से पेरिस में उनकी पहली मुलाकात हुई थी, तब वह १५ वर्ष के थे ।

गांधीजी का प्रभाव

जो हानिसबर्ग में गांधीजी की वकालत बड़ी सफल थी । काम बहुत ज्यादा रहता था । एक साथ चार हिंदी क्लर्क काम रते थे । लेकिन उनका अंगरेजी ज्ञान कम । अतः गांधीजी को अंगरेजी में पत्र व्यवहार लिए टाइपिंग आवश्यक था । लेकिन ांधीजी के अतिरिक्त किसी को टंकण नहीं ाता था । काम काफी था । कोई गोरा इपिस्ट कुली बैरिस्टर के अधीन काम करना हीं चाहता था ।

आखिर एक लड़की को ढूंढ़ निकाला या । उसका नाम मिस डिक था । वह यी-नयी स्काटलैंड से आयी थी । रंगभेद से छूती थी । उसे सिर्फ वेतन चाहिए था ।

गांधीजी ने उससे पूछा—''एक काले के तहत काम करने में कष्ट तो नहीं होगा ?'' सने स्पष्ट रूप से 'ना' कहा ।

''क्या वेतन चाहिए ?''

''साढ़े सत्रह पौंड ।''

गांधीजी खुश हो गये और उसी क्षण से क्टेशन देना आरंभ कर दिया । बाद में मिस क की श्रद्धा-समर्पण इस पराकाष्ठा को हो कि वह घर की बेटी बनकर रहने लगी । जी मामलों में भी वह गांधीजी का मार्गदर्शन ने लगी । यहां तक कि किससे शादी करनी उसका निर्णय भी उसने गांधीजी से मांगा । धीजी ने उसका बेटी के रूप में कन्यादान वाया । मिस डिक की शादी के बाद गांधीजी फिर काम अस्त-व्यस्त हो गया । वकालत र साथ-साथ समाज-सेवा दोनों का पत्र व्यवहार काफी हो जाता था । पत्रों का ढेर बढ़ने लगा । एक दिन केलन बेक एक सुंदर-सी लड़की लेकर गांधीजी के पास आये । उसी दिन से उसने गांधीजी का काम संभाल लिया । उसका नाम सोंजा श्लेषिन था । सोलह वर्ष की वह बालिका मनमौजी और मजाकिया थी । वह पूरी तरह गांधी परिवार में घुलमिल गयी । गांधी दर्शन को भी उसने आत्मसात किया ।

सोंजा श्लेषिन की नटखटपन की एक घटना काफी प्रसिद्ध है । गांधीजी को धूम्रपान से सख्त नफरत थी । सोंजा धूम्रपान नहीं करती थी, न करना चाहती थी । लेकिन एक दिन गांधीजी को चिढ़ाने के लिए उसने भरे दफ़्तर में सिगरेट सुलगायी और धुंआ गांधीजी की ओर छोड़ दिया । गांधीजी ने सबके सामने उसके दो तमाचे जड़ दिये । इस सजा पर भी उसने बुरा न माना । जैसे वह अपने बेटे रामदास व देवदास को दंडित करते थे वैसे ही उन्होंने सोंजा को दंडित किया । गांधीजी को सोंजा के काम पर इतना विश्वास था कि वह बिना पढ़े ही पत्रों पर दस्तखत कर देते थे ।

मिस श्लेषिन का स्वभाव बड़ा उदार था और उसका त्याग ऊंचा था । काफी समय तक उसने सिर्फ छह पौंड वेतन पर ही काम किया । बहुत आग्रह पर १० पौंड मासिक लेना स्वीकार किया ।

एक बार उसने गांधीजी से ४० पौंड उधार मांगे । गांधीजी उसे १०० पौंड देने लगे, लेकिन उसने सिर्फ ४० पौंड लिये ।

गांधीजी के हिंदुस्तान लौट आने के बाद ४० पौंड मनीऑर्डर से भिजवाये ।

प्रस्तुति : भगवती प्रसाद डोभाल

प्रतिक्रियाएं



पुरस्कृत पत्र

'कादम्बिनी' नव-वर्षांक को स्वास्थ्य विशेषांक के रूप में निकालकर तथा उसमें घरेलू चिकित्सा पर इतनी उपयोगी सामग्री देकर आपने जो उपकार किया है, वह अमूल्य है । संयुक्त परिवारों के टूटने और बड़ी-बूढ़ियों के न रहने पर आज जरा-जरा-सी बात के लिए डॉक्टर के पास दौड़ने का चलन-सा हो गया है । ऊंची फीस, महंगी दवाइयां, रोगियों की भीड़ । मगर कोई विकल्प नहीं । इस विशेषांक के रूप में आपने वह विकल्प प्रस्तुत किया है । साधुवाद ।

घरेलू इलाज भी कितना प्रभावकारी हो सकता है, मैं अपने निजी अनुभव से जानता हूं । जनवरी १९७० में मुझे 'संधिवात' (रयूमेटिड आर्थराइटिस) हुआ । लंबे, महंगे एलोपैथिक इलाज से स्थायी लाभ नहीं हुआ । फिर एक परिचित ने अनुभूत मामूली-सा घरेलू इलाज बताया । विश्वास-अविश्वास के बीच झूलते हुए वह इलाज किया । २४ वर्ष होने को आये । आयु भी ६४ की हो रही है । खूब चलता-फिरता, सैर करता हूं । खानपान भी सामान्य है, तब से फिर यह तकलीफ नहीं हुई । मेरे बताने पर कई अन्य रोगियों ने भी इसे आजमाया है । अनेक लाभान्वित भी हुए हैं । इलाज इस प्रकार है—

सात दाने अरंड के बीज (कैस्टर सीड्स जिनसे अरंडी का तेल— कैस्टर आयल निकाला जाता है । पंसारी की दुकान पर आम मिलते हैं) लेकर, छिलका उतारकर, उनके गूदे को चकले-बेलन पर पीस लें । एक प्याला गरम दूध में मिलाकर प्रातः खाली पेट पी लें । दूसरे दिन आठ दाने, तीसरे दिन नौ दाने, इसी विधि से लेते हुए प्रतिदिन एक दाना बढ़ाते हुए चालीस दानों तक ले जाएं । फिर एक-एक दाना घटाना शुरू करें तथा वापस सात दानों तक पहुंचकर बंद कर दें । यह पूरा कोर्स है । बीच में नागा न हो । जब दानों की संख्या ज्यादा होती है, तब दोपहर को भोजन की इच्छा नहीं होती । इसके अतिरिक्त अन्य कोई दुष्प्रभाव नहीं देखा गया । परहेज भी कोई विशेष नहीं ।

—ओमप्रकाश बजाज
(सेवानिवृत्त वरिष्ठ मंडल प्रबंधक भा.जी.बी. निगम)

इंद्राणी अपार्टमैंट्स,
२१९१— एफ., मदन महल,
जबलपुर-४८२००१

स्वास्थ्य विशेषांक काफी रुचिकर एवं उपयोगी लगा । 'दिल का दौरा क्यों ?' लेख में डॉ. रामकुमार करौली ने सारगर्भित रूप से इस रोग के कारणों, लक्षणों एवं उपचारों पर समझाने का प्रयत्न किया है । दिल के दौरे के जो लक्षण बताये गये हैं, वे शत-प्रतिशत सही

हैं । मैंने अपने जीवन में प्रथम बार अपने पिता की मृत्यु दिल के दौरे से होते नजदीक से देखी थी, जिसमें ये लक्षण मौजूद थे । परंतु मैं तथा मेरा परिवार इन लक्षणों से अनभिज्ञ था । जी घबराने तथा उल्टी के लक्षणों को हम भोजन का अपचन समझ रहे थे । हम लोग यह जान ही नहीं पाये कि उन्हें दिल का दौरा पड़ा है, उसके तुरंत बाद मृत्यु हो गयी । काश, यह लेख पहले प्रकाशित हो जाता तो उसके अनुसार उपचार करते ।

—एस.पी. दवे, जोधपुर

नये साल की शुरुआत ही तंदुरुस्ती पर 'खुसूसी नंबर' से हुई है । कहा भी गया है 'एक तंदुरुस्ती हजार नियामत' । काबिले तारीफ और अहम जानकारियों का यह खजाना संभालकर रखने लायक है । यह नंबर एक घरेलू डॉक्टर की तरह घर-घर में जगह पाएगा ।

—रजिया सुल्तान, अररिया

स्वास्थ्य विशेषांक में प्रकाशित विभिन्न लेखों की प्रशंसा में हमें सैकड़ों पाठकों के पत्र प्राप्त हुए । कुछ पाठकों के नाम : कुमार रामनरेश, टना; जनप्रिय नरेश गालिमपुरी, पो. बैदाचक जि. बांका, बिहार); प्रदीप गवांदे, विदिशा; भुदयाल माहेश्वरी, नयी दिल्ली; लोकेश कुमार त्रिपाठी, कानपुर; दिलीपकुमार, मुजफ्फरपुर; ब्रजेश संघवी, जोधपुर; शैलेन्द्र भार्गव, पुनासा; डॉ. शील गेहलोत, चापड़ा (म.प्र.); नीति ग्निहोत्री, खंडवा; श्याम मोहन दुबे, जबलपुर; केश सिंह, ग्राम गढ़ी कुर्मा (बिहार); प्रदीप मन, दाहोद; शक्ति प्रकाश डे, लहेरिया सराय; नोज वाजपेयी, घोबहा (रायबरेली); संजीव देल, अकलसरा; शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, रोजाबाद ।

फिल्मी गीतों में अश्लीलता

मैं 'फिल्मी गीतों में बढ़ती अश्लीलता' शीर्षक लेख से पूरी तरह सहमत हूं ।

मेरा बारह वर्षीय बेटा दादा-दादी के सामने गाना गा रहा था, 'मेरी पेंट भी सेक्सी', तो मैंने उसे डांटकर कहा कि, 'ये गाना गंदा है मत गाओ' तो उसने मुझसे पूछा, 'मम्मी इसमें गंदा क्या है ?' अब उसके सामने अश्लील शब्द का प्रयोग मैं कर नहीं सकती, सैक्सी का मतलब भी नहीं बता सकती । ये समस्या सिर्फ मेरी नहीं और भी मां-बहनों की है ।

गीतकार-संगीतकार ये कहकर जान छुड़ा लेते हैं कि जनता की यही मांग है । पर सच्चाई यह है कि पैसा कमाने के चक्कर में कैसेट कंपनियां बिना किसी फरमाइश के ये गाने रेडियो-टेलीविजन पर दस-दस बार प्रसारित करती हैं । सेंसर को शायद कैंसर हो गया है, जो ऐसे गानों को नजरअंदाज कर देती है । ऐसे अश्लील गीत सिबाका गीत माला या सुपरहिट मुकाबला में भले ही चोटी पर आ जाएं पर पुरस्कार और सम्मान तो 'रुदाली'-जैसे संगीत को ही मिल सकता है । ऐसे भद्दे गीत बनाना गीत-संगीत जैसी दिव्य कला का अपमान नहीं तो और क्या है ?

—प्रमोद बाला शर्मा
डी/७८, कमला नगर
दिल्ली-११०००७

इस लेख में व्यक्त विचारों के समर्थन में हमें निम्नलिखित पाठकों की प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं : मोहन कुमार सरकार, भागलपुर; प्रत्यूष 'प्रवीण' (छात्र कक्षा दशम) धनबाद; नलिनी रंजन, हाजीपुर; अजयकुमार नयागांव; हिमांशु कुमार मिश्र, छतहार (बिहार)

उसकी आंखों में बसे सपने साकार आपके.
आपके हाथों में है उसका भविष्य.



बाल उपहार वृद्धि निधि.

आपके प्यार की तरह,
यह बढ़ता जाए, बढ़ता जाए, बढ़ता ही जाए.

कितना लाड़, कितना दुलार उसकी हर ज़रूरत के लिए. दिनभर का हर पल आप सुरक्षित बनाते हैं उसके लिए. क्या यही वह सही समय नहीं जब आप उसके भविष्य के बारे में भी सोचें ? आज, छोटी सी योजना बनाइए और उसे उज्जवल भविष्य का उपहार दीजिए. आप सोचते होंगे, कैसे ? सीधी बात है. आपके लिए हमारे पास है–बाल उपहार वृद्धि निधि. जिसमें आप एक बार निवेश कीजिए या हर साल थोड़ी थोड़ी रकम जोड़ते जाइए. फिर आपके लाड़ले के 21 वर्ष के होने तक निवेश को बढ़ता हुआ देखिए. जबकि आपका लाड़ला लखपति बन जाएगा. ज़रा सोचिए यह उपहार उसके कितने काम आएगा ? ऊंची शिक्षा के द्वार खुल जाएंगे. या अपने खुद के बिजनेस में काम आएंगे या अपना छोटा सा घर बनाने में सहायता पहुँचाएगा यह उपहार. 18 साल के होने पर यदि वह चाहे तो साल में दो बार पैसा निकाल सकता है. जबकि बकाया रकम उसके 21 वर्ष के होने तक बढ़ती जाएगी. बाल उपहार वृद्धि निधि. एक दिन आपका लाड़ला आपके गुण गाएगा.

14% डिवीडेंड.
हर 3 वर्ष में बोनस

भारतीय यूनिट ट्रस्ट
आपके बेहतर कल के लिए

सभी सिक्योरिटी निवेश के साथ बाजार का जोखिम होता है. किसी भी निवेश से पहले अपने निवेश सलाहकार या एजेंट से सलाह अवश्य ले लें

मुख्य कार्यालय : बम्बई आंचलिक कार्यालय : [illegible] ❑ नई दिल्ली : [illegible] शाखा कार्यालय [illegible] ❑ कानपुर : [illegible] ❑ जयपुर : [illegible] ❑ लखनऊ : [illegible] ❑ लुधियाना : [illegible] ❑ [illegible] ❑ चंडीगढ़ : [illegible] सेक्टर 17 [illegible] ❑ शिमला : [illegible] ❑ आगरा : [illegible] ❑ इलाहाबाद : [illegible] ❑ वाराणसी : [illegible] 63970 ❑ देहरादून : [illegible] 23620

J. Bdkhanna UTI-4162-H

अप्रैल अंक : सब रंग विशेषांक

फागुनी मस्ती से भरपूर

एक से बढ़कर एक बेहद दिलचस्प रचनाएं

● खोजपरक लेख

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराइए

आखिर कब तक

कादम्बिनी के जनवरी '९४ अंक में 'आखिर कब तक' स्तंभ के अंतर्गत आपकी लेखनी का विराट-स्वरूप देखकर हतप्रभ रह गया । मुझे लगा कि त्रिपुरारि बाबू जैसे व्यक्तित्व के प्रति आपकी शुभकामना के एक-एक शब्द यथार्थ के धरातल पर कठोर सत्य की तरह उतरे हैं । मुझे लगा कि आप सत्याग्रही हैं । मेरे सम्मुख खड़े हैं । हिंदुस्तान में चरित्र है, चरित्रवान है और चरित्र निर्माता भी है । स्वास्थ्य विशेषांक में आपका यह हस्तक्षेप, संबद्ध लोगों को दिशाहीन होने से रोकेगा, रक्षा करेगा । निश्चित रूप से स्वस्थ रखेगा, इसलिए कि यह आत्मा की आवाज है, सत्य-सूत्र है । आप शतायुष हों, एवं स्वस्थ रहें ।

इसी मंगलकामना के साथ आपको प्रणाम करता हूं । —ज्योतीन्द्र मिश्र ,पटना

'आखिर कब तक' शीर्षक नये स्तंभ के संबंध में काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए हैं । कुछ पाठकों के नाम :

ललित शर्मा, भोपाल; रूपेश अग्रवाल, रीवा; उषा किरण शुक्ल, ग्राम हरेवा शुक्ल (जिला बस्ती उ.प्र.); सुशील मिश्र, भोजपुर (बिहार); कृष्णकांत मधुर, दिल्ली; प्रेमचंद्र स्वर्णकार, दमोह; श्यामला सेन, कानपुर; डॉ. मधुर गर्ग, लखनऊ ।

फरवरी अंक

कादम्बिनी का फरवरी अंक काफी अच्छा लगा । सच पूछिए तो तंत्र-मंत्र विशेषांक के बाद यह अंक काफी रुचिकर तथा मनोहारी लगा । यह आपका संयुक्त परिश्रम, संपादन कौशल एवं विस्तृत ज्ञान ही है जो कादम्बिनी को श्रेष्ठ पत्रिका बनाये हुए है । कहने की आवश्यकता नहीं कि हर बार की तरह इस बार का भी 'काल-चिंतन' एक छाप छोड़ देनेवाला था । रचनाओं का जिक्र किया जाए तो—

'आखिर डुंकेल प्रस्ताव...' एक तथ्यपरक लेख था । कम शब्दों में पूरी बात कह दी गयी है, बड़ा सुंदर प्रस्तुतिकरण था ।

'सेना का उपयोग...' तथा 'सरकारी बेरुखी' प्रभावकारी लेख थे ।

गोपाल चतुर्वेदी का व्यंग्य 'अच्छी सेहत के गुर' अच्छा लगा, गुदगुदाने वाला था ।

डॉ. जगदीप सक्सेना का 'कैक्टस' वाला लेख जानकारीपूर्ण व रोचक था ।

प्रवेश के अंतर्गत 'मौन पीड़ा' कविता मन को छू गयी । यह अच्छी कविता थी ।

—राजकुमारी त्रिपाठी,
नयी दिल्ली

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका
कादम्बिनी
वर्ष ३४, अंक ५, मार्च १९९४
आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

कहानियां एवं हास्य व्यंग्य

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कविताएं

ार-संक्षेप

थायी स्तंभ

वरण चित्रः योगेश 'आनंद'

पादकीय परिवार

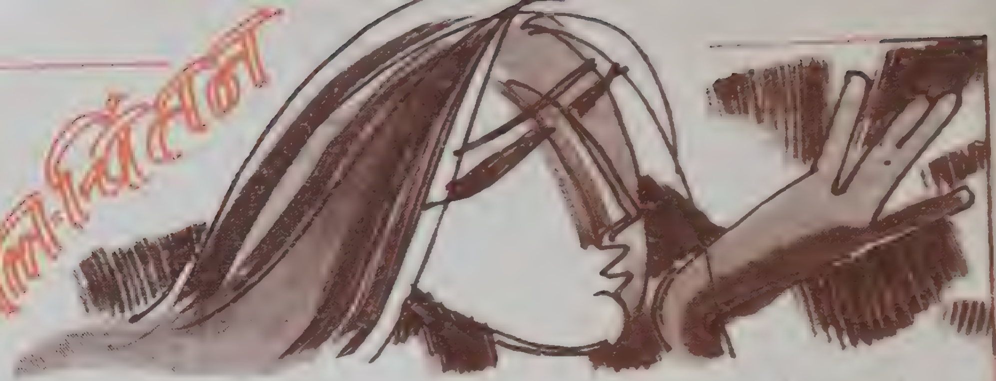
-संपादक : दुर्गा प्रसाद शुक्ल, वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, भगवती प्रसाद डोभाल
-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह, प्रूफ रीडर : प्रदीप कुमार
ला विभाग-प्रमुखः सुकुमार चटर्जी, चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त ।

दकीय पता : 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि.,
१८/२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

: ९५ रुपये; द्विवार्षिक : १८५ रुपये;
शों में : पाकिस्तान, भूटान और नेपाल, विमान से ३४० रुपये, समुद्री जहाज से १४०
।
सभी देशों के लिए : वायुसेवा से ५१० रुपये, समुद्री जहाज से १९० रुपये ।

क भेजने का पता : प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि.,
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

कामना-नियंत्रक



'मन मान-अपमान के भय से शंकित रहता है, अशांत है, क्या करूं और कैसे ?'

'मेरा अतीत पापमय रहा है जिस पर मुझे पश्चाताप है । मैं भविष्य पापमुक्त बिताना चाहता हूं, लेकिन व्यतीत से भयभीत हूं, अशांत हूं, उससे मुक्त होना चाहता हूं । मन में पाप-बोध है इसलिए वह वर्तमान को हीन-क्षीण बना देता है । इस बोध से मुक्त होना चाहता हूं । आपकी शरण में हूं ।'

—एक पाठक, देहरादून से

□ □

— जिज्ञासा सहज है, लेकिन जिस निर्भय रूप से बात रखी गयी है, निदान उतना ही सहज है ।

— दो बातें हैं, एक— मान-अपमान का भय और दूसरा अतीत में किये पापों की स्वीकृति और वर्तमान को उनसे मुक्त हीन बनाना ।

— आत्म-स्वीकृति अपने आप में प्रायश्चित है ।

— प्रायश्चित के बाद अतीत मात्र एक कोरा कागज रह जाता है और नयी पुस्तक का पृष्ठ खुलता है जिस पर निर्भय होकर हस्ताक्षर किये जा सकते हैं ।

— इनके बीच दुविधा है मन । मन चंचल है, मन खरल की तरह आगे-पीछे होता रहता है, मन भटकता है, मन भटकाता है ।

— मन वेदना है ।

— मन संवेदना है ।

— मन सुख का आगार है तो मन से अधिक गहरी दर्द और भटकन की न तो हवाएं हैं और न महासागर ।

— अर्थ हुआ हमारे शरीर और शारीरिक अवयवों का नियंत्रक हमारा मन है ।

— मन नियंत्रक है तो मन को नियंत्रित करना या मन के नियंत्रण में आना आवश्यक है ।



— यह प्रक्रिया न साध्य है और न असाध्य ।

— इस प्रक्रिया के लिए आत्मबोध आवश्यक अनुश्रुति है । उसी तरह जैसे लोहे का अर्थ लोहार के लिए अज्ञात है । लोहे का अर्थ वह घोड़ा जानता है जिसके मुंह में लगाम है ।

— मुंह में लगाम ?

— हां !

— पांच इंद्रियां हैं, पांचों काम करेंगी तो जलाशय पंचधारा में बंट जाएगा । जलाशय को रोकना है, पवित्र करना है तो कुछ रास्ते बंद करने होंगे ।

— यह विरोधाभास-जैसा भले लगे किंतु सत्य का श्रेष्ठतम अनुग्रह यहीं आवृत्त है । जैसे :

❑ वैराग्य बढ़ाना है तो अनुराग की चरमसीमा तक पहुंचना होगा

❑ ज्ञान पाने के लिए अज्ञान के प्रश्नवाचक परिच्छेद श्लाघ हैं

❑ एक से विरक्त होना है तो दूसरे से अनुरक्त होना पड़ेगा

❑ दूसरे को पहचानना है तो पहले अपने को पहचानना होगा । अपनी पहचान किये बिना दूसरे को नहीं पहचाना जा सकता ।

❑ ज्ञान-अज्ञान के भ्रमजाल से उभरना है तो सत्संग और संस्कृति की पहचान आवश्यक है ।

❑

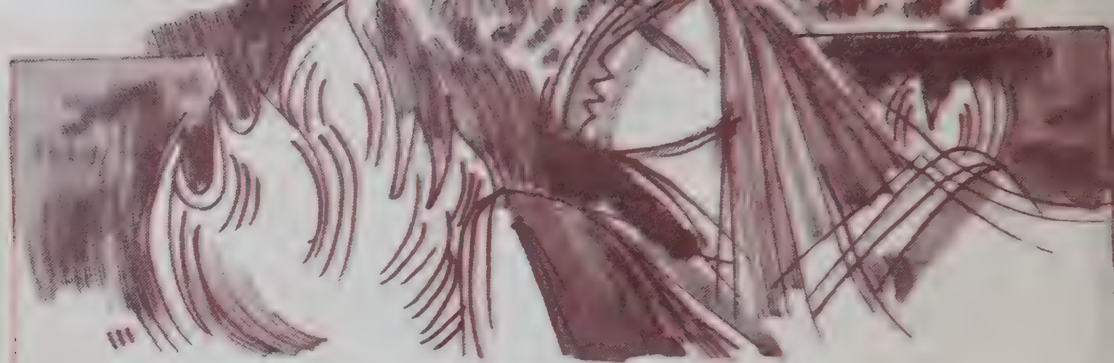
❑ मूलभूत लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए ये सारे समन्वय और तत्त्व खरल में कसे जानेवाले सोने की कसौटी का काम करते हैं ।

— खरल विवेकी है जैसे नीर-क्षीरकर्त्ता हंस दूध और पानी की सहज पहचान का परिचय-पत्र है ।

❑

— जीवन सहज और समतल नहीं है ।

— जीवन तब भी साध्य और असाध्य को पहचानता है और अपनी विवेकशीलता से असाध्य को साध्य में परिवर्तित करने की क्षमता रखता है ।



— जीवन का यही विवेक शाश्वत स्वरों का जन्मदाता है ।

— घटना दो पथचारियों की है । दोनों समवेत चल रहे थे । अचानक पर्वत-शिखर के बिंदु पर आ पहुंचते हैं और दोनों के पैर अयाचित रुक जाते हैं । एक : मार्ग अवरुद्ध है, बाधक तत्त्वों से बचना श्रेयस्कर है, वापस लौट रहा हूं मैं ।

दूसरा : हां, मार्ग अवरुद्ध है, वापस लौटना पराजय है, आगे जाने के परिणाम संपुट नहीं हैं; लेकिन यह विवेक का महाद्वार है । व्यक्ति के नाते कांच का चूर्ण बनना दोनों स्थितियों में संभव है— एक स्थिति होगी पराजय और आत्म ग्लानि तथा गलत मार्ग के चयन से; दूसरी स्थिति में पश्चाताप का संवेद्य घृणा और ग्लानि से बचा लेगा । वह वापस नहीं लौटता, अवरोधी पर्वत के शिलालेख पढ़ता है । पता लगता है, यहां तो अनंत संदेश लिखे हैं । व्यतीत ज्वलंत हो उठता है, यानी व्यतीत के शिलालेख वर्तमान की चुनौती में उसी तरह ढल जाते हैं जैसे एक फूंक से कांच फूंक के प्रकारों के अनुरूप स्वरूप ग्रहण करने लगता है । वह संतुलित हो जाता है, उसकी गिद्ध-दृष्टि सतर्क होकर अपने अभीष्ट मार्ग पर केंद्रित हो जाती है ।

— बस, यही तो निर्णय का क्षण है; इसी एक क्षण में निर्माण और विध्वंस दोनों का समायोजन है ।

— इसी एक क्षण में महल बनते हैं और इसी एक क्षण में महल ढलते हैं ।

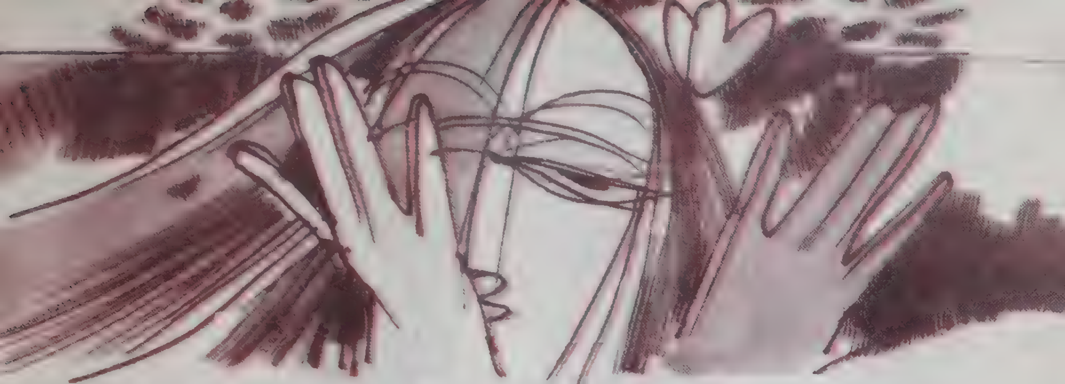
— बनने और ढलने को जड़-प्रक्रिया न माना जाए तो सहज ही कहा जा सकता है कि यही एक क्षण निर्णायक है । यही एक क्षण नियंता है, यही एक क्षण विध्वंस है ।

— हत्याएं और आत्म-हत्याएं इसी एक क्षण में होती हैं ।

— इसी एक क्षण में सहज, सामान्य पुरुष, महापुरुष और महापुरोधा बनता है ।

— इसी एक क्षण में इतिहास के पृष्ठ बदलते हैं ।

— इसी एक क्षण में तृष्णा और वितृष्णा के सोपान सार्थक होते हैं ।



— इसी एक क्षण में महाकाव्यों का सृजन होता है और इसी एक क्षण में महाकाव्यों में वन्या-प्रवाहित धवल श्वेत दुग्धधारा में मटमैले आवेग आ मिलते हैं ।

— क्षण, क्षणिक भले हो, वह दीर्घ-निर्णय का कार्य करता है ।

— 'हां,' या 'ना' कहने में आवेष्टित श्वासों के अंश समान हैं ।

— बस, ठहरिए यहां :

सारे अनुत्तरित उत्तरों का क्षण यही है । जीवन-मृत्यु का संधिकाल और कहां, कौन खोजेगा । प्यार और घृणा के बीज इसी क्षण बोये जाते हैं । इसी क्षण पकी फसल लहलहाती है । इसी क्षण कमजोर धराशायी होता है । इसी क्षण भेद-विभेद के मर्यादा-पुरुषोत्तम कमजोर होते हैं ।

— क्षण को पहचानिए : वह शाश्वत होगा, वह नश्वर भी होगा ।

— क्षण जन्म-जन्मांतरों तक लिखा रहेगा,क्षण, क्षण के साथ विलीन भी हो जाएगा ।

□

— प्यारे दोस्त, भ्रम की उस स्थिति में हो तुम, जहां बच्चों का हिंडौना झूल तो रहा है, रोकनेवाला अनाड़ी है ।

— इसमें तुम्हारा आत्म-निर्णय कहीं नहीं है । इसलिए पहले आत्म-निर्णय के क्षण में पहुंचो ।

— आत्म-निर्णय के क्षण एक महान भूमिका का काम करेंगे ।

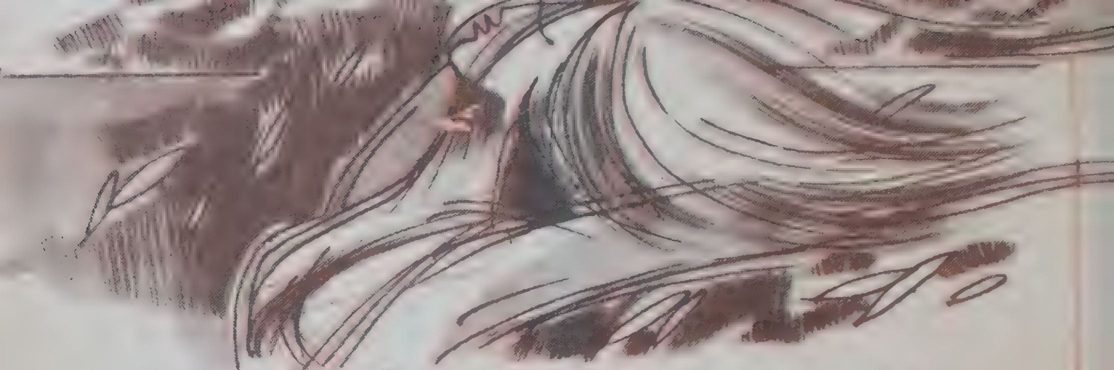
— निश्चित लक्ष्य का अभाव है, आत्म-दृष्टि तिरोहित है, तो...

— ... तो साध्य क्या होगा ?

— लक्ष्य को निश्चित करो, लक्ष्य के प्रति समर्पण आवश्यक है, समर्पण के लिए ग्रहणशीलता परमश्रेष्ठ तत्त्व है,

— वह तत्त्व प्राप्त हुआ तो अतीत कपूर-सा हवा में उड़ जाएगा ।

— अतीत गया तो अतीतातीत तत्त्व अपने आप चले गये—फिर कैसा पाप, कैसा पुण्य ?



— पश्चाताप, उनके लिए है जिनमें जठराग्नि नहीं है । जिनमें जठराग्नि है वे पश्चाताप को मात्र एक मृतक के अंतिम अवशेष राख के रूप में बदल देंगे ।

— तुम्हारा पाप, महापुण्य बनेगा । अहिल्या से ज्यादा पापी कौन होगा ?

— पाप-पुण्य अहिल्या प्रस्तर से नाजुक-बदन सौंदर्यशीला नारी बन सकती है ।

— नारी बनते ही उसने पाप और पुण्य का परिणय नहीं किया था ।

— परीक्षा वे देते हैं जो किसी प्रमाण-पत्र के अभिलाषी हैं ।

— मान और अपमान उन्हें मिलता है जो परीक्षा के प्रांगण में परिणाम-चेतना के अतिशय आकांक्षी हैं ।

— बुद्धि को परीक्षा की आवश्यकता नहीं है, जैसे सत्य को 'सोच' की चिंता नहीं है ।

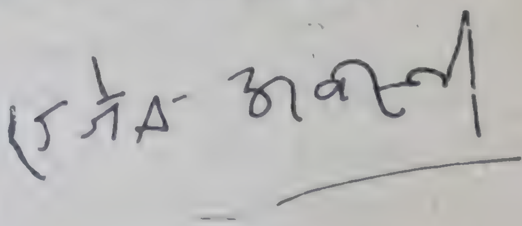
— सत्य स्वयं प्रतिष्ठापित समग्र चेतना का मूल केंद्र है ।

— सत्य के सामने न मान है, न अपमान है, न भय है, न शंका है, न व्यतीत है, न वर्तमान है और न आगत भविष्य है ।

□

— सत्य के स्वर्ण-द्वारों के पैर तो स्वयं देवता भी पखारते हैं, फिर हम तो चेतनशील व्यक्ति हैं; सत्य और असत्य के असाध्य वंदनवार हैं ।

— अपने को पहचानो, इससे बड़ी सार्थक उपलब्धि और कुछ नहीं है ।





कांसीराम के साथ कितने दिन और ?

कुछ दिन पहले ही मैंने मुलायम सिंह यादव को अकबर का दरजा दिया था । कुछ दिन बाद ही उ. प्र. में जो घटना हुई है उसके कारण मुलायम सिंह यादव से पूछने का मुझे पूरा अधिकार है कि आखिर कांसीराम के साथ कब तक आपकी दोस्ती चलेगी । कांसीराम सवर्णों को अब भी पानी पी-पीकर कोस रहे हैं । प्रजातंत्र में जातियों को बांटने से बड़ा खिलवाड़ और क्या होगा ? यह तो चूहे और बिल्ली की आंख-मिचौनी का खेल लगता है ।

कुछ हिन पहले ही रामावतार पासवान नाम के एक हरिजन की हत्या कर दी गयी । उसका शव अस्पताल में पड़ा था । जैसा कि समाचार-पत्रों में छपा है, मुलायम सिंह यादव के मंत्रिमंडल के एक सदस्य और कांसीराम के चहेते दीनानाथ भास्कर ने हुक्म दिया कि जब तक तीन ठाकुरों की हत्या नहीं हो जाती, तब तक पासवान की लाश नहीं उठेगी । दीनानाथ के हुक्म से तीन ठाकुरों की खोज हुई और निहत्थे, बेकसूर और अनजान तीन व्यक्तियों यानि तीन ठाकुरों को गोली से उड़ा दिया गया । यह खुशखबरी कांसीराम और दीनानाथ भास्कर को पहुंचायी गयी । उसके बाद ही रामावतार पासवान का शव वहां से उठाया गया । इस घटना के बाद बनारस और उसके आसपास जातीय दंगे भड़क उठे । यह धीरे-धीरे उ. प्र. में और फैले तो कोई बड़ी बात नहीं होगी । विचलित मुलायम सिंह यादव ने गोली से मारे गये तीन ठाकुरों और पासवान को एक-एक लाख रुपये मुआवजा देने की घोषणा की । लाशों के लिए एक लाख रुपये तो क्या, दुनिया की संपत्ति भी हो तो बेकार है । लेकिन अब मेरा सीधा प्रश्न भाई मुलायम सिंह यादव से है कि कांसीराम के साथ कितने दिन और दोस्ती आपको रखनी है ? मुलायम सिंह एक ओर पढ़े-लिखे लोगों और सभ्य वर्ग के साथ हाथ मिलाना चाहते हैं लेकिन उनकी सत्ता के सहयोगी कांसीराम अब भी सड़े-गले और बदबूदार वातावरण

को बनाये रखना चाहते हैं । इस देश के सबसे बड़े राज्य में यह घटना प्रजातंत्र का कितना तीखा मजाक है ।



खिलाड़ी ने स्वर्ण मुकुट पहनाया

दूसरी ओर कपिल देव ने पूरे देश का नाम दुनियाभर में रोशन किया है । उसने न्यूजीलैंड के गेंदबाज रिचर्ड हैडली के ४३१ विकिटों के कीर्तिमान को तोड़कर एक नया रेकॉर्ड बनाया है । इस विश्व कीर्तिमान के साथ हरियाणा के कपिल देव विकिटों के एवरेस्ट पर उसी तरह अकेले खड़े हो गये हैं जैसे कोई माउंट एवरेस्ट पर खड़ा हो जाता है । इस जीत से दुनियाभर में भारत को सबसे ऊपर खड़ाकर कपिल देव ने अपने देश के माथे पर विजय का जो ताज पहनाया है, उसे देखकर टुटपुंजिए राजनीतिज्ञों को कहीं तो शरम आनी चाहिए । राजनीति सत्ता मदांध होती है । लेकिन एक कलाकार अपने देश को स्वर्ण मुकुट पहनाता है । इसीलिए समय के थपेड़ों के साथ लेखक, गायक, साधक और खेल जगत के नायक हमेशा जीवित रहेंगे, राजनेताओं की तरह चींटियों-सी जिंदगी उनकी नहीं रहेगी । कपिल देव तुम धन्य हो ! मेरी और सारे रचनाधर्मियों की बधाई लो ।

कट्टरपंथियों को कमरे में बंद करो

चेक गणराज्य के राष्ट्रपति वासलाव हावेल भारत की यात्रा पर पहली बार आये थे । हावेल दुनिया के विख्यात साहित्यकारों में से हैं । उनके नाटक पूरे यूरोप और खासकर फ्रांस में धड़ल्ले के साथ खेले जाते हैं । हावेल से कई वर्ष पहले मैं प्राह में मिल चुका था, तब उन्हें सपना नहीं था कि चेकोस्लोवाकिया टूटकर दो देशों में बंट जाएगा और वे चेक गणराज्य के राष्ट्रपति बनेंगे ।

भारत की यात्रा में हावेल से मुझे लगातार दो-तीन बार राष्ट्रपति भवन में मिलने का अवसर मिला। यदि मैं यह कहूं कि हावेल लेखकों को नहीं भूलते तो अचरज नहीं होना चाहिए। भरपूर मुसकान के साथ मुझसे कुछ क्षण उनकी बात हुई। उन्हें इंदिरा गांधी शांति निरस्त्रीकरण तथा विकास का उच्चतम पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति ने दिया। डॉ. हावेल यह पुरस्कार पानेवाले आठवें व्यक्ति हैं। हमारे राष्ट्रपति ने पुरस्कार देते हुए कहा कि श्री हावेल हमारे समय के सर्वाधिक उल्लेखनीय बुद्धिजीवियों में से एक हैं। डॉ. हावेल भारतप्रेमी तो हैं ही, उन्होंने दुनियाभर के कट्टरपंथियों की आलोचना की और दो सुझाव दिये— एक तो यह कि सारे कट्टरपंथियों को निहत्था करके एक कमरे में बंद कर दिया जाना चाहिए और विवादों के हल तक उन्हें बाहर नहीं निकलने देना चाहिए। उनका दूसरा सुझाव था कि कट्टरपंथ की समस्या के हल के लिए वे नोबेल पुरस्कार विजेताओं के एक सम्मेलन का स्वागत करेंगे। एक बुद्धिजीवी के नाते डॉ. हावेल के दोनों सुझाव दुनिया के हर देश को मानने चाहिए।

पुरस्कार समारोह राष्ट्रपति भवन के भव्य अशोक कक्ष में हुआ था। समारोह अत्यंत गरिमापूर्ण था, इसमें संदेह नहीं। मैं यह नहीं जानता कि मुझे लिखने का यह अधिकार है या नहीं कि डॉ. हावेल ने अपना लंबा भाषण चेक भाषा में पढ़ा (उसका अंगरेजी अनुवाद पहले वितरित कर दिया गया था) लेकिन हमारे सभी महामान्य शीर्षस्थ आदरणीय नेताओं ने अपने भाषण ठेठ अंगरेजी में पढ़े। मैं सोचता हूं भारतीय नागरिक के नाते यह कहने का मुझे अधिकार है— इन सभी भाषणों के चेक और हिंदी अनुवाद पहले वितरित किये जा सकते थे।



कब तक ये मैला ढोते रहेंगे

डॉ. बिंदेश्वर पाठक— एक अत्यंत सहज, सरल और सहृदय व्यक्ति, सुलभ शौचालय के आविष्कारक, उनका प्रयत्न है कि खुले मैदान में शौच न जाकर प्रदूषण से

बचा जा सके। मेहतर, यानी सफाई कर्मचारियों को वाल्मीकि समान कहकर उनके भीतर चेतना जगाने का काम भी उन्होंने किया है। उनके बच्चों को साफ-सुथरे कपड़े पहनने को दिये जाते हैं। पाठशालाओं में शिक्षा, नृत्य और गायन तथा सिलाई-कढ़ाई की शिक्षा देकर उन्हें मुख्य धारा के साथ जोड़ने का उन्होंने प्रयत्न किया है। कुछ दिन पहले इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में लगभग ३०० वाल्मीकि परिवार इकट्ठे हुए और उन्होंने अपने नृत्य-संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस कार्यक्रम में दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री मदनलाल खुराना भी उपस्थित थे। उन्होंने जोर-शोर से घोषणा कर दी कि दिल्ली में इतने सुलभ शौचालय बनने चाहिए कि एक भी आदमी खुले मैदान में शौच न कर सके। खुरानाजी ने कहा कि इसके लिए जितना भी धन चाहिए उनकी सरकार देगी। देखना यह है कि कितना धन सरकार दे सकती है, क्योंकि दिल्ली में झुग्गी-झोंपड़ियों की कमी नहीं है। अलस्सुबह जितनी भी रेलगाड़ियां दिल्ली में प्रवेश करती हैं, उनमें सवार यात्रियों को दोनों ओर पंक्तिबद्ध लोटा लिये आदमी और औरतें जिस निर्भय समन्वयवाद का परिचय देते हैं वह कम घृणित नहीं है। एक बार मेरे साथ एक विदेशी यात्रा कर रहे थे। उन्होंने यह सब देखकर पूछा कि ये सभी एक साथ क्यों खड़े हो गये, तो मुझे अपनी हंसी दबाते हुए उत्तर देना पड़ा कि ये मिलकर प्राणायाम कर रहे हैं। देखना यह है कि पं. बिंदेश्वर पाठक कब तक इस प्राणायाम को रोकने में सफल होते हैं। वैसे पाठकजी बेहद दिलेर आदमी हैं, इसमें संदेह नहीं। जो सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया था, उसके अंत में उन्होंने स्वयं स्टेज पर आकर हाथ में माइक लेकर दो फिल्मी गीत सुनाये। उसमें एक गाने का मुखड़ा था 'चांद मेरे आजा रे।' मैं आखिर में अपनी ओर से जोड़ना चाहूंगा—

चांद मेरे आ जा रे,
सुलभ शौचालय में चला जा रे।

इस कार्यक्रम की सबसे काबिले तारीफ बात थी कि इंडिया इंटरनेशनल सेंटर की संभ्रांत प्लेटों पर वाल्मीकि और उच्च स्तर के सभी मेहमानों ने एक साथ भोजन किया।

शराब में खून हो तो क्या कहने

जयललिता के राज्य तमिलनाडु की बात है। वहां तेरुनेलवेली जिले के बन्नारपेताई थाने में एक महिला ने मामला दर्ज कराया है कि उसका पति रोज शाम को सिंरिज डालकर उसके शरीर से खून निकालता है और उसे शराब में मिलाकर मजे में पीता है। महिला की शादी उस पुरुष से सन १९९० में हुई, तो क्या यह मान लिया जाए कि ४ साल तक वह महिला अपना खून देती रही। मैं नहीं जानता कि दंड-संहिता में इसके

लिए क्या सजा है । मेरा वश चलता तो फैसला देता कि खून पीने की सजा खून पीना ही है । इस घटना से मुझे लगता है कि महानगर की महिलाएं कैसे दम भरती है कि उन्हें समान अधिकार मिल गया है ।



अदालत तो छोड़ ही देगी

अमरीका का एक मजेदार किस्सा मैं इसी के साथ जोड़ना चाहता हूं । लारैना बाबेर नाम की एक महिला का किस्सा दुनियाभर के अखबारों में छपा है । एक दिन उसने अपने पति का गुप्तांग इसलिए काट दिया कि वही परेशानी की जड़ है । सुना है मामला न्यायालय तक गया, लेकिन न्यायाधीशों की दृष्टि में लारैना अपराधिनी सिद्ध नहीं हो सकी । उसे ससम्मान छोड़ दिया गया ।

विज्ञान ने जो उन्नति की है उसके कारण लारैना के पति का गुप्तांग डॉक्टरों ने फिर जोड़ दिया । अब इसकी नकल का उदाहरण भारत के फिल्मवाले कितनी बेशरमी से करते हैं यह देखने लायक है । एक फिल्म बन रही है । नाम है— 'पुरुष' । उसमें दिखाया गया है कि अश्विनी भावे के पास बदनीयत से जब एक लोलुप राजनेता पहुंचता है तो वह भी रसोईघर के पैने चाकू से लारैना की कहानी दोहराती है । निर्माताओं ने एक प्रेस शो में यह दृश्य दिखाया और आखिर में यह भी बता दिया कि बहुत खोज करने पर भी राजनेता का गुप्तांग नहीं मिला । यह एक सटायर भले हो, लेकिन हिंदी फिल्में अपने गानों और दृश्यों से जिस प्रकार देश को बरबाद कर रही हैं, वहां हमारी न्यायपालिका भी खामोश है । वे इसे अश्लील नहीं मानते ।

— राजेन्द्र अवस्थी



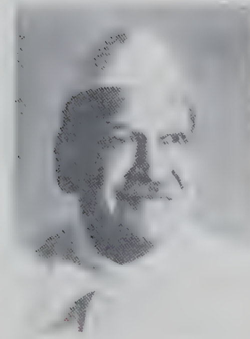
धर्मनिरपेक्ष राज्य में धर्म का स्थान

● डॉ. शंकर दयाल शर्मा (भारत के राष्ट्रपति)

ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजा राममोहन राय को मैं आधुनिक युग का एक ऐसा महान बौद्धिक व्यक्तित्व मानता हूं, जिसने पहली बार हमारी लोक-चेतना पर आधुनिकता की दस्तक दी थी। उनकी इस दस्तक से भारतीय चेतना झंकृत हो उठी थी। इस चेतना ने एक नये सोच की शुरुआत की। बाद में होनेवाले चिंतकों और समाज-सुधारकों ने उसे आगे बढ़ाया। स्वामी दयानंद सरस्वती, महर्षि अरविंद, विवेकानंद, रवींद्रनाथ ठाकुर, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, बंकिमचंद्र चटर्जी आदि के चिंतन के लिए उपजाऊ भूमि का निर्माण राजा राममोहन राय ने ही किया था।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि भारतीय चिंतन आरंभ से ही धर्मनिरपेक्ष रहा है। इस बारे में ऋग्वेद के '**एकम् सद् विप्रा बहुधा वदंति**' से लेकर इस तरह के अनेक कथन हमारे उपनिषद्, पुराण तथा अन्य ग्रंथों में बिखरे हुए हैं। हमारे यहां के मध्यकाल में भी धर्मनिरपेक्षता की यह भावना अपनी पूरी ताक के साथ मौजूद थी लेकिन इस पूरे युग के दौर कुछ शरारती तत्व हमेशा सक्रिय रहे हैं, जो हमारी इस स्वर्णिम चेतना को बरगलाने में लगे रहे। लेकिन धर्मनिरपेक्षता की जड़ों के रेशे भारतीय चिंतन और संस्कृति के रोम-रोम में इ कदर समाये हुए थे कि इन संकुचित विचारवा

मारे समाज को सबसे पहले 'धर्म' ौर 'धर्मनिरपेक्षता' का सही अर्थ मझाना होगा । वस्तुतः मैं समझता कि इन दोनों शब्दों के गलत तेमाल या गलत ढंग से प्रचारित ‌कये जाने के कारण ही ऐसी स्थिति ायी है कि हमें आज इस विषय पर तचीत करनी पड़ रही है ।



ओं का शमन हुआ । परंतु इस बारे में निवेशवादी प्रक्रियाओं से सभी अच्छी तरह चित ही हैं ।

मध्यकाल तक का हमारा धर्मनिरपेक्षतावादी तन मूलतः भावना पर, या कहें कि ध्यात्मिक अनुभव पर आधारित था । राजा मोहन राय का मैं सबसे बड़ा योगदान यह ता हूं कि उन्होंने धर्मनिरपेक्षता की हमारी दृढ़ परंपरा को पहली बार पूरी शक्ति के तार्किक और तुलनात्मक आधार पर प्रस्तुत ा । राजा राममोहन राय का धार्मिक चिंतन ी दैवी शक्ति से प्राप्त आदेश अथवा उनके ने भावोद्रेक का परिणाम नहीं है बल्कि क सुव्यवस्थित चिंतन का सुपरिणाम है । त नेहरू ने अपनी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑव या' में राजा राममोहन राय के बारे में यर विलियम्स के जिन शब्दों का उल्लेख है, उन्हें मैं यहां उद्धृत करना चाहूंगा । यम्स ने कहा था, 'वे दुनिया के सबसे व्यक्ति थे, जिन्होंने पूरी गंभीरता, निष्ठा तत्परता से विश्व के धर्मों का तुलनात्मक यन किया, और उसमें निहित विज्ञान को समझा ।' राजा राममोहन राय का चिंतन इसलिए विशेषकर अधिक प्रासंगिक और विश्वसनीय लगता है, क्योंकि आज के वैज्ञानिक युग में तर्कपूर्ण बातों पर लोगों का भरोसा अधिक होता है ।

विश्व : एक परिवार

मैंने जहां तक राजा राममोहन राय को पढ़ा और समझा है, उस आधार पर मैं कह सकता हूं कि उनका मूल चिंतन यही था कि पूरा विश्व-समाज एक विशाल परिवार के समान है । विभिन्न देश, जाति और धर्म इस विश्व-परिवार की विभिन्न शाखाएं हैं । इसलिए इन विभिन्न शाखाओं के बीच परस्पर आदान-प्रदान की भावना को उसी प्रकार सहज, सरल और उदार बनाया जाना चाहिए, जिस प्रकार एक परिवार के सदस्यों के बीच होता है । इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए राजा राममोहन राय ने ब्रह्मसमाज की स्थापना की थी । जब ब्रह्मसमाज का अपना नया भवन बन गया, तब राजा राममोहन राय ने एक ट्रस्ट डीड की रचना की थी । मैं समझता हूं कि इस डीड में ब्रह्मसमाज का संपूर्ण उद्देश्य तो निहित है ही, साथ-ही-साथ राजा राममोहन राय

के धार्मिक चिंतन का निचोड़ भी निहित है । मैं आप सबके सामने उन शब्दों को प्रस्तुत करना चाहूंगा । ट्रस्ट डीड में लिखा है, ''इस पूजा-गृह में सभी समुदाय के लोग श्रद्धा एवं ध्यान के साथ शांत होकर प्रार्थना में शामिल हो सकते हैं । इसके लिए जाति, धर्म या श्रेणी का कोई बंधन नहीं है । इस गृह में विश्व नियंता की पूजा होगी । किसी के द्वारा दिये गये किसी नाम से उसकी वंदना नहीं होगी । उसकी पूजा के लिए किसी मूर्ति या चित्र का व्यवहार नहीं किया जाएगा । पूजा का कोई उपचार जैसे नैवेद्य आदि नहीं दिया जाएगा । किसी भी कारण से पशु-बलि नहीं दी जाएगी । इस गृह में खाना-पीना नहीं होगा । संगीत, प्रार्थना या उपदेश के समय कभी किसी धर्म या संप्रदाय के धर्मगत या उपास्य देवताओं के प्रति उपहास या व्यंग्य-वाक्य नहीं बोला जाएगा । संगीत, पूजा एवं प्रार्थना इस उद्देश्य से होगी कि सभी संप्रदाय के लोगों में पारस्परिक सौहार्द और एकता की भावना, प्रेम, नैतिक शक्ति, दया एवं साधुता का विकास तथा प्रचार हो, और वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर का ध्यान एवं पूजा कर सकें ।''

इस डीड में जो महत्त्वपूर्ण बात कही गयी है, वह यही है कि सभी जातियों और धर्मों के लोग एक हैं तथा प्रेम, करुणा, सदाचरण और परोपकार की भावना ही सच्चा धर्म है । चूंकि आपके इस विषय का प्रवर्तन ब्रह्मसमाज के तत्वावधान में हो रहा है, इसलिए मैंने राजा राममोहन राय के मूलभूत चिंतन की एक हलकी-सी झलक यहां देने की कोशिश की है, ताकि आपकी इस चर्चा में इस दृष्टि से भी विचार हो सके ।

धर्म और धर्मनिरपेक्षता

मेरा विशेष जोर इस बात पर है कि समाज को सबसे पहले 'धर्म' और 'धर्मनिरपेक्षता' का सही अर्थ समझाना वस्तुतः मैं समझता हूं कि इन दोनों शब्दे गलत इस्तेमाल या गलत ढंग से प्रचारि जाने के कारण ही ऐसी स्थिति आयी है आज इस विषय पर बातचीत करनी पड़ है । यह बात बहुत साफ की जानी चाहि तो धर्म का अर्थ 'संप्रदाय' है, जैसा कि आजकल अकसर भ्रमवश ऐसा समझा लगा है, और न ही 'धर्मनिरपेक्षता' का धर्म-विहीनता से है । मैं अपनी इस बा थोड़े साफ तरीके से कहना चाहूंगा ।

वस्तुतः धर्म किसी भी जाति, वर्ग अ के लोगों की धरोहर नहीं है । जैसे ही इ वर्ग विशेष की धरोहर समझ लिया जा वैसे ही यह 'संप्रदाय' में बदल जाता है होते ही धर्म अपना मूल मकसद खो दे धर्म का अर्थ तोड़ना नहीं बल्कि लोगों जोड़ना है । धर्म एक संयोजक तत्व है लोगों को जोड़ता है जबकि 'संप्रदाय' त तोड़ता है । मैं धर्म को व्यक्ति की एक अंतःप्रेरणा मानता हूं, जो उसकी चेतना रूपांतरण करके उसके अंदर विद्यमान मानवीय गुणों का विकास करता है । य ऐसा आंतरिक बल है, जो मनुष्य की प चेतना को दबाता है और उसे उच्चतर श्र ओर अग्रसर करता है । प्रेम, करुणा, स त्याग आदि वे सार्वभौमिक एवं सार्वक जीवन-मूल्य हैं, जो व्यक्ति को तथा व्य

ध्यम से समाज को उच्चतर श्रेणी की ओर ग्रसर करते हैं । मैं प्रेम, करुणा, सेवा, त्याग दि इन्हीं चारित्रिक गुणों को धर्म मानता हूं । के मैं इन गुणों को ही सच्चा धर्म मानता हूं, लिए मेरा यह मानना है कि धर्म के अभाव अर्थ है जीवन को सर्वोच्च मूल्यों से रहित देना ।

स्वाधीनता के बाद

आजादी के बाद हमारे संविधान निर्माताओं अपनी ऐतिहासिक परंपरा का सम्मान करते भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित या । बाद में इस शब्द को संविधान की ावना में ही शामिल कर लिया गया, जो रे संविधान की आत्मा है । यह निरपेक्षता क्या है ?

मैं समझता हूं कि अंगरेजी के 'सेक्यूलर' द के लिए हिंदी में 'सर्वधर्मसमभाव' शब्द धक उपयुक्त होगा, बजाय 'धर्मनिरपेक्ष' द के । पंडित जवाहरलाल नेहरू ने २५ वरी, १९४८ को अलीगढ़ मुसलिम विद्यालय में भाषण देते हुए कहा था, त सभी धर्मों का देश रहेगा, जैसा कि वह ीन काल से रहा है । यहां पर सभी धर्मों के समान आदर और सम्मान बना रहेगा ।'

इसी बात को राज्य की दृष्टि से और भी स्पष्ट हुए श्रीमती इंदिरा गांधी ने २८ जनवरी, ९ को कहा था, "किसी भी धर्म को वालों के बीच हम किसी भी प्रकार का ात नहीं करते हैं । सभी धर्म समान आदर समान रक्षा पाने के अधिकारी हैं । हमने धर्मनिरपेक्षता' नाम दिया है, जिससे हर ीय अपने धर्म पर चलकर उसका अधिक

धर्म का अर्थ तोड़ना नहीं बल्कि जोड़ना है । धर्म एक संयोजक तत्व है । धर्म लोगों को जोड़ता है ।

अध्ययन कर सकता है । पर इसी के साथ उससे यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह दूसरे धर्मवालों को भी यही अधिकार पाने दे ।"

टकराव क्यों ?

अपने धार्मिक अधिकार का उपयोग करने तथा अन्य लोगों को उनके धार्मिक अधिकार का उपयोग करने देने की यह भावना तभी आ सकती है, जब हमारे नागरिकों के मन में सभी धर्मों के प्रति समान भाव हो । जब धर्म के प्रति समान श्रद्धा की यह भावना केवल अपने धर्म तक सिमट जाती है, तभी टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है । बापू इस सचाई को समझते थे । इसलिए उन्होंने हरिजन के २२ सितम्बर, १९४६ के अंक में लिखा था, "मैं अपने धर्म से बंधा हुआ हूं । मैं इसके लिए मर सकता हूं । लेकिन यह मेरा निजी मामला है । राज्य को इससे कुछ लेना-देना नहीं है ।"

मेरी समझ में धर्मनिरपेक्षता का यही सही अर्थ है । हमें इन्हीं तथ्यों के संदर्भ में एक धर्मनिरपेक्ष राज्य में धर्म का स्थान निर्धारित करना होगा । महात्मा गांधीजी ने 'यंग इंडिया' में ३० अगस्त, १९२८ को लिखा था, "इसने (ब्रह्मसमाज ने) धर्म के निसृत स्रोत को पवित्र करने का प्रयास किया और सर्वोच्च शक्ति की शुद्ध पूजा का आदर्श रखा ।"

'चेतना के स्रोत' से । प्रकाशक—प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार दिल्ली ६, मूल्य : सौ रुपये ।

वह सूक्ष्म आत्मा का चित्र खींच लेता है !

• सुरेन्द्र कुमार मिश्र

कहा जाता है कि जिस समय जरमन देश का महान दार्शनिक गेटे इस लोक से मृत्यु-लोक की यात्रा करने के लिए तैयार था, तब उसका अंतिम उद्गार यह था—'लाइट, मोर लाइट' अर्थात आलोक, तीव्र आलोक । यह आलोक आत्मा का ही था और उसने इसकी झलक अपने प्रज्ञाचक्षु से ही देखी थी । उस महा-प्रज्ञावान दार्शनिक ने अद्‌भुत चक्षुष्मत्ता अपने जीते जी ही प्राप्त कर ली थी और उसके प्रज्ञाचक्षु की दर्शन-शक्ति अप्रतिहत थी ।

नेत्रों में कोई विकार नहीं

किसी देवयुग में सूर्य पर कल्मष का प्र[illegible] देवों को असह्य प्रतीत हुआ था । इस वैदि[illegible] उपाख्यान में बैकुंठाधिपति (कुंठन रहित) [illegible] इंद्र हैं, उनको ही अकुंठित नेत्र प्राप्त हुआ था । इसीलिए इंद्र ने कहा, "चाहे जिस वस्तु की ओर मैं आंख उठाकर देखूं, चाहे जिससे मैं आंख मिलाऊं, मेरे नेत्रों में तिलभर भी विकार नहीं होता । मैं जगत के समस्त पदार्थों [illegible] अप्रतिहत नेत्र से देख सकता हूं ।" इंद्र [illegible] अप्रतिहत नेत्र चर्मचक्षु न होकर प्रज्ञाचक्[illegible] था—जो आत्मा को भी देख सकता था [illegible]

कारलाइल ने आत्मा के प्रांगण में प्र[illegible] के इच्छुक मनुष्यों के लिए कहा है, "उन[illegible] प्रज्ञाचक्षु के तीव्र आलोक से आत्मा की [illegible] को झांकना चाहिए ।" इससे यह स्पष्ट [illegible] होता है कि प्रज्ञाचक्षु से आत्मा दिखती है[illegible]

देवयुग के आरंभ में जिस दिन आक[illegible] पहली बार उषा का प्रकाश छिटका (व्यौ[illegible] था, उस दिन देवों ने सर्वप्रथम जिस आ[illegible] दर्शन किये—वह यही चक्षु था—"तच्चक्षुदेवहितं पुरस्ताच्चक्षुक्रमुच्चर[illegible] देवों के सामने यह तेजस्वी ज्ञान-नेत्र प्रक[illegible] हुआ । जिन्होंने इसको पहचान लिया—[illegible] देव हुए, जो इससे विमुख रहे—वे ही

वस्तुतः मनुष्य ने विश्व के धंधे को जितनी कुशलता से संभालने का अभ्यास कर लिया है, अपने विषय में वह उतना ही असावधान बन गया है। ऐसा क्यों है ? प्रत्येक सारहीन वस्तु की उन्नति के लिए भी जो मनुष्य इतना व्याकुल है, अपने देवत्व व प्रज्ञा के संबंध में वह इतना उदासीन क्यों है ? अपनी आत्मा के प्रति वह इतना उपेक्षा-भाव क्यों रखने लगा है ? जबकि पैगंबर ईसा ने कहा है, "यदि आत्मा खो गयी और उस कीमत पर सारी दुनिया जीत भी ली, तो क्या लाभ ?"

भिभूत रह गये। यह कौन नेत्र था ? यह चर्मचक्षु न होकर प्रज्ञाचक्षु ही था, देवगण जीवों की आत्मा तक को देख । नचिकेता की कथा का भाव भी यही सने भी अपने प्रज्ञाचक्षु के बल पर ही न का सामना किया और फिर आत्मा के तथा उसके रहस्यों को समझा। भला क्षु की पहुंच से परे आत्मा जाएगी कहां ?

त्रिकाल में देखनेवाला

ाचक्षु की खोज आदिकाल से ही कितने करते आ रहे हैं, किंतु कितने वशिष्ठों के कवि यह कह सकता है—

पदेष्वजन्मनः समतीतं च भवच्च भावि च ।
ष्प्रतिघेन चक्षुषा त्रितयं ज्ञानमयेन पश्यति ।।
(रघु. ८/७८)

र्थात "पुराण-पुरुष का जो भूत, भविष्य, में यह अनंत पट विस्तार फैला हुआ है, येक रहस्य को देखने के लिए किसके प्रतिहत ज्ञान-नेत्र का साधन है ?" यह र ही सामान्य व्यक्ति भी वशिष्ठ बन और आत्म-साक्षात्कार करता है।

संसार में बहुत सारे व्यक्ति अंधे हैं। कोई दिन में अंधे हैं, और कोई रात में अंधे हैं, और किन्हीं को दिन-रात में एक-सा दिखायी पड़ता है।

दिन और रात क्या हैं ?

स्पष्ट दिखने की अवधि को दिन कहते हैं और स्पष्ट नहीं दिखने के समय को रात कहते हैं।

आत्मतत्व के विषय में जिनको दिखायी नहीं पड़ता, वे दिन में अंधे हैं। सांसारिक जीवन के विषय में जो उदासीन हैं, वे रात में अंधे हैं। सच्चे मनुष्य वे हैं, जिनको रात और दिन में, लोक और परलोक के संबंध में एक-सा दिखायी पड़ता है। वे तुल्य-दृष्टि पुरुष ही धन्य हैं। ऋषि इसी आशय के भाव को निम्नलिखित श्लोक में गा उठे थे—

दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे ।
केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः ।।

और ऐसे तुल्यदृष्टिवाले धन्य पुरुष वे ही हो सकते हैं—जिन्हें अप्रतिहत प्रज्ञाचक्षु प्राप्त हो गया हो।

चर्मचक्षु की दर्शन-शक्ति सीमित है और मनुष्य चाहता है कि उसको ऐसी आंख प्राप्त हो, जिसकी दर्शन-शक्ति अप्रतिहत हो । यही अकुंठित चक्षु प्रज्ञाचक्षु है—जोकि सत्य ही चक्षु है । चर्मचक्षु तो अक्षिगोलक मात्र है । प्रज्ञाचक्षु ही त्रिकाल में देख सकता है और सदैव सत्य ही देख सकता है । इस चक्षु की शक्ति का कितना विस्तार किया जा सकता है, इसकी कोई सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती । यह तो व्यक्ति की साधना पर निर्भर करता है ।आध्यात्म व दर्शन के जगत में सफलता की यही परख है, यही कसौटी है । धन, यश, वैभव सबका नाम परिमित है । लौकिक वैभव से संबंध रखनेवाली प्रत्येक वस्तु कुंठित हो सकती है, किंतु यह प्रज्ञाचक्षु कभी और कहीं कुंठित नहीं होता । यही प्रज्ञाचक्षु हमारा अभीष्ट होना चाहिए ।

किंतु आज बात बिलकुल उल्टी हो गयी है । लगता है कि इस युग में मनुष्य को अपनी प्रज्ञा और अपने देवत्व से ही विराग हो गया है । आत्मा का अवलोकन व आध्यात्मिक जीवन छोड़कर मनुष्य अन्य सब कार्यों के बोझ को अपने कंधों पर टिका हुआ समझता है । एक दार्शनिक ने कहा था कि यदि मैं अपने घर का छप्पर उठाने के लिए मनुष्यों को बुलाऊं तो वे तुरंत आ जाएंगे, किंतु मैं उन्हें उच्च काव्यमय जीवन व्यतीत करने के लिए तथा आत्मा के वास की कलात्मक प्रक्रिया दिखाने के लिए बुलाता हूं—तो कोई नहीं आता । वस्तुतः मनुष्य ने विश्व के धंधे को जितनी कुशलता से संभालने का अभ्यास कर लिया है, अपने विषय में वह उतना ही असावधान बन गया है । ऐसा क्यों है ? प्रत्येक सारहीन वस्तु की उन्नति के लिए भी जो मनुष्य इतना व्याकुल है, अपने देवत्व व प्रज्ञा के संबंध में वह इतना उदास क्यों है ? अपनी आत्मा के प्रति वह इतना उपेक्षा-भाव क्यों रखने लगा है ? जबकि पैगंबर ईसा ने कहा है, "यदि आत्मा खो ग... और उस कीमत पर सारी दुनिया जीत भी ... तो क्या लाभ ?" माउंट एवरेस्ट की चोटी ... जमे बर्फ और प्रशांत महासागर की तलह... पड़े हुए घोंघों का भी जो कुशल-संवाद पू... है, वही मनुष्य अपने आत्मिक-अस्तित्व व आध्यात्मिक स्वत्व के बारे में बिल्कुल अन... क्यों है, इस रहस्य का भेद कुछ समझ नहीं पड़ता । मनुष्य ने मनुष्य की महिमा को ना... लिए, उसकी गुरुता को तौलने के लिए जो कल्पित किये हैं, उनमें प्रज्ञाचक्षु को छोड़क... अन्य सब चीजों का महत्त्व वह मानता है । आध्यात्मिक संकट ने विश्व के हर 'वादों' ... प्रत्येक मनुष्य के विचारों को किसी न किसी अंग में अपवित्र जरूर किया है ।

बेलगाम जीवन

मनुष्यों की वर्तमान पीढ़ी के मन में यह देखकर कोई टीस भी नहीं होती कि वह आध्यात्मिक जीवन की गरिमा, मनोहरता ... उसके रहस्यों से क्रमशः अनजान होती जा है । आज के जीवन में यह तथ्य स्पष्ट उजा... होता है कि भौतिकता के समक्ष आध्यात्मि... का अभी कोई मूल्य नहीं है और पूर्व के आध्यात्मिक जीवन का संयम, अनुशासन लय सभी का ह्रास होता जा रहा है । आध... नियंत्रित भावना व संयमित आवेश का ही प्रकटीकरण है । जीवन जब आध्यात्म से

एक अनुमान है कि आत्मा कांपती हुई किरण की तरह है । इस सूक्ष्म किरण को स्थूल-चक्षु से नहीं देखा जा सकता । इसे सूक्ष्म नेत्र अर्थात प्रज्ञा-चक्षु से ही देखा जा सकता है ।

त नहीं होगा, तब वह झूठा और बेलगाम एगा ।

ाज सर्वाधिक क्षुब्धकारी लक्षण हमें यह यी देता है कि बुराई व बुराईजन्य भोग के हम जरा भी सचेत नहीं हैं । दूसरे की काटकर हम अपने कंधे पर जोड़ने के लालायित रहते हैं, जोड़ते हैं और इसका निक भी मलाल नहीं । दूसरे की कौर र खाने में हमें ग्लानि की जगह गर्व की ति होती है और अपने अहं की तृप्ति होती गाज का मनुष्य अपने असुंदर, अनियंत्रित नयहीन बाह्य जीवन से पूरी तरह संतुष्ट ी देता है । उसे यह भी पता नहीं है कि त्मिक जीवन की सुअलंकृत सादगी को र वह भौतिक जीवन की जिन भड़कीली, , असुंदर और सारहीन वस्तुओं व उसके को अपना रहा है, उससे उसकी कितनी रही है । उसे यह भी पता नहीं है कि यह भूल उसकी मनुष्य जाति के लिए भी सिद्ध हो सकती है । क्योंकि जैसा कि क प्लेटो ने स्पष्ट कहा है, ''रुग्ण, ी, अनुदार और अशोभनीय प्रवृत्तियों पर नहीं लगाया जाता, तो वे धीरे-धीरे को भी दुष्टता से भर देती हैं ।'' और इस े आत्मा की रक्षा व बचाव के लिए क्षु की खोज व प्राप्ति आवश्यक है, आत्मा, उसकी चमक व उसकी स्पष्ट दिखायी देती है और इससे आत्मा के तल पर मैल जमने के समय ही हम सचेत हो सकते हैं ।

मानवता का शत्रु-मानव

मनुष्यों की इस दुर्बलता का रहस्य यही है कि वे आत्मा को प्यार नहीं करते, वे देह को प्यार करते हैं और वे शरीरों को सजा-धजा देखना चाहते हैं । हमें इस कटु सत्य का सामना करना होगा कि मनुष्यों की आत्मा देह के भोगों के भार से ग्रस्त है और ये भोग आत्मा को कुंठित कर रहे हैं । आत्मा को अस्तित्वहीन करने में ये जरा भी नहीं हिचकते । फिर मनुष्यों के साथ यह मुसीबत है कि वे अपनी आत्मिक अस्मिता व आध्यात्मिक जीवन को ऐसे नष्ट कर रहे हैं, जैसे इस तरह वे अपनी जाति को सम्मानित कर रहे हों । और इसमें उन्हें गर्व की अनुभूति होती है । मानो आध्यात्म व आत्मा का विषय मनुष्यों के पिछड़ेपन का बोध कराता हो और भौतिक उपलब्धियां उसके विकास का । मानो जीवन-संग्राम से उदासीन करने के लिए ही आत्मा की तार छेड़ी जाती हो । मानो देह और आत्मा एक-दूसरे के पूरक न होकर एक-दूसरे के शत्रु हों । यह विचार ही मनुष्य जाति का सबसे बड़ा शत्रु है और इस सोच ने इसकी जितनी अधिक क्षति की है, मानवता के अन्य किसी शत्रु ने नहीं ।

फिर प्रज्ञाचक्षु के अभाव में ही हम भोगों में लिप्त होते जा रहे हैं और हमें आत्मा दिखायी तक नहीं देती । स्थूल चर्म-चक्षु से तो हम

प्लेटो ने स्पष्ट कहा है, "रुग्ण, असंयमी, अनुदार और अशोभनीय प्रवृत्तियों पर अंकुश नहीं लगाया जाता, तो वे धीरे-धीरे आत्मा को भी दुष्टता से भर देती हैं ।"

स्थूल देह को ही देख सकते हैं, सूक्ष्म आत्मा को नहीं । सूक्ष्म आत्मा के दर्शन की खातिर तो हमें सूक्ष्म-नेत्र की आवश्यकता है और यह सूक्ष्म-नेत्र प्रज्ञाचक्षु ही है जो सूक्ष्य आत्मा को देखता है ।

हाइडेग्गर कहता है, "स्रोत तक जाओ, स्रोत को ही सुनो ।" मनुष्य जीवन का स्रोत क्या है ? यदि हम इस पर विचार करें, तो निश्चित ही यह स्रोत आत्मा पर आकर ठहरता है । फिर क्यों नहीं हम अपने जीवन-स्रोत की तलाश करें ?

इसके लिए हमें प्रज्ञा-इंद्रियों को जगाना होगा तथा इन इंद्रियों में प्रथम स्थान प्रज्ञा-चक्षु का ही आता है, जो कि अपने स्रोत आत्मा को देख सकता है ।

आत्मा के दर्शन

'हम कौन हैं ?' 'भारत-भारती' के कवि ने इस प्रश्न के उद्घोष को अतीत, वर्तमान और भविष्य में एक साथ गूंजते सुना था, और भारत की राष्ट्रीय आत्मा के संदर्भ में सुना था । जब राष्ट्र की आत्मा की तलाश भी हमारे कवि और मनीषी करते आ रहे हैं, तब हम अपनी आत्मा की तलाश क्यों न करें ? फिर हमारे ऋषि-मुनियों ने तो कई पीढ़ियों तक जंगलों में रहकर अपनी आत्मा की खोज का अभियान जारी रखा था और उपसंहार स्वरूप स्वयं अपने प्रज्ञाचक्षु से अपनी आत्मा को देखा था ।

उपनिषदों का भरा-पूरा दर्शन उन महर्षि-मु[illegible] के प्रज्ञा-चक्षु का स्पष्ट साक्षात्कार कराता है[illegible]

महर्षि रमण के लिए भी सब प्रश्नों का प्र[illegible] था—"मैं कौन हूं ?" भारतवर्ष का शाश्वत[illegible] चिंतन भी इसी प्रश्न की धुरी पर घूमता रहा [illegible] और आत्मा की खोज में डूबता-उतराता रह[illegible] भारत के शाश्वत चिंतन से हमारा अभिप्राय [illegible] सनातन, सार्वभौम व अकुंठ दर्शन से है जो [illegible] 'योगवाशिष्ठ' से लेकर महर्षि रमण के इस [illegible] के उत्तर की खोज तक फैला हुआ है ।

एक अनुमान है कि आत्मा कांपती हुई [illegible] किरण की तरह है । इस सूक्ष्म किरण को स्थूल-चक्षु से नहीं देखा जा सकता । इसे [illegible] नेत्र अर्थात प्रज्ञा-चक्षु से ही देखा जा सकत[illegible] है । यह प्रज्ञाचक्षु आत्मा के बिंब को अपने [illegible] प्रतिबिंबित कर लेता है । एक मिसाल यह [illegible] दी जा सकती है कि आत्मा हिलती हुई एक [illegible] सूक्ष्म वस्तु है, जिसका चित्र खींचना बहुत [illegible] कठिन, लगभग असंभव-सा है, किंतु प्रज्ञा[illegible] ही एक ऐसा यंत्र है कि वह इस सूक्ष्म आत[illegible] चित्र खींच लेता है अथवा कम से कम उस[illegible] बिंब का प्रतिबिंब बना लेता है । जो भी हो[illegible] निश्चित है कि प्रज्ञाचक्षु से आत्मा दिखती है[illegible]

—टंडवा (राममंदिर के नि[illegible]
पत्रालय—जिला-[illegible]
(बिहार) पिन-८२२ [illegible]

एक समय असुरों पर विजय प्राप्त करने के बाद 'अग्नि, वायु और इंद्र' तीनों में इस बात पर विवाद होने लगा कि कौन सबसे बलशाली है। देवासुर संग्राम में देवताओं और संपूर्ण सृष्टि के हित के लिए ब्रह्मा ने असुरों को पराजित किया था, किंतु विजय के मद में डूबे इन देवताओं ने ब्रह्मा के जय लाभ को अपनी विजय और महिमा माना व अहंकारवश कहने लगे, 'इस विजय से हमारी महिमा बढ़ी है।'

इस विजय से सचमुच देवताओं को भी प्रभूतयश प्राप्ति हुई। सर्वत्र देवताओं की पूजा होने लगी। इस अभिमान के कारण वे यह समझने लगे कि इस संसार में हमसे बढ़कर दूसरा कोई नहीं है और स्वयं अपनी स्तुति,

इस अंक से हम अपने पाठकों के लिए उपनिषदों की चुनी हुई कथाओं का प्रकाशन शुरू कर रहे हैं। इनकी चयनकर्ता हैं डॉ. सुधा पांडे, जो संस्कृत, पाली और प्राकृत की प्रकांड विद्वान हैं। डॉ. सुधा पांडे देहरादून के एम. के. पी. (पी. जी.) कॉलेज में प्राचार्या हैं और संस्कृत का अध्यापन भी करती हैं।

प्रशंसा करने लगे। इसी आत्म श्लाघा के कारण कभी अग्नि कहते थे कि 'मैं अधिक बलशाली हूं, यह विजय मेरे कारण हुई है'। कभी वायु और कभी इंद्र इस विजय का श्रेय स्वयं लेना चाहते थे।

धीरे-धीरे यह विवाद बहुत बढ़ गया। ब्रह्मा

उपनिषद की कहानियां

शक्ति परीक्षण

● डॉ. सुधा पांडे

उपनिषद का अर्थ है ब्रह्म ज्ञान जिससे अज्ञान से मुक्ति मिलती है।

उप यानी निकट, नि. यानि नीचे, सद यानी बैठना। गुरु से गुप्त आध्यात्मिक विद्या सीखने के लिए शिष्य [illegible] गुरु [illegible] निकट बैठते थे। 'उपनिषद' [illegible] गया। [illegible]

उपनिषदों की [illegible]

भारतीय परंपरा एक सौ आठ उपनिषद ही मानती है।

उपनिषदों [illegible] की उप[illegible] के [illegible] कथाएं भी [illegible] के [illegible] वार्तालापों [illegible] ये कथाएं [illegible] युग [illegible] हैं और भौतिकता [illegible] के लिए आ[illegible] भी।

उनके इस मिथ्याभिमान को पहचान गये और अंत में उन्होंने इनका मान भंग करने के लिए एक उपाय खोजा ।

जिस समय नंदन वन में इंद्र की सभा में देवगण अपने अहंकार को व्यक्त करते हुए तीव्रता से विवाद कर रहे थे , उसी मध्य आकाश से परम तेजस्वी यक्ष पुरुष नीचे उतरता हुआ दिखायी पड़ा । उसके तेज से दशों दिशाएं चकाचौंध हो गयीं । उस चमक से सभी देवताओं के नेत्र मानो बंद से होने लगे । देवताओं की हंसी और अहंकारमयी वाणी शांत हो गयी तथा सारा वातावरण स्तब्ध हो गया । कुछ क्षण बाद देवताओं ने उस यक्ष का भेद जानने के लिए अग्नि से विनती की, क्योंकि अपने तेज के कारण वह महासागर में अपना विशेष स्थान बना चुके थे ।

अग्नि की पराजय

कुछ क्षण पहले तक अपने को सर्वाधिक बलशाली कहनेवाले अग्नि पहले इस कार्य के लिए तैयार न हुए किंतु इंद्र ने उन्हें ललकारा तो निरुपाय अग्नि किसी प्रकार यक्ष के समीप जाकर उसका पता लगाने के लिए तत्पर हुए, किंतु जैसे ही वे यक्ष के समीप पहुंचे, उसके तेज से उनका शरीर मानो जलने लगा । वह उस यक्ष के समीप तक तो पहुंच गये किंतु उनके कंठ से एक शब्द भी न निकला और वह नेत्र बंद किये वहीं कुछ क्षण तक खड़े रहे ।

यक्ष ने अपने समक्ष खड़े अग्नि से पूछा, 'तुम कौन हो ?'

अग्नि ने उत्तर दिया, 'मैं अग्नि हूं । कुछ लोग मुझे 'जात वेदा' भी कहते हैं । जो कुछ भी पदार्थ है मैं उसे जानता हूं, उस सबमें मैं विद्यमान हूं ।'

यक्ष ने अग्नि से पूछा 'तुम में क्या शि है ?'

अग्नि ने अभिमानभरी मुद्रा में उत्तर दि 'क्या आपको मेरा पराक्रम ज्ञात नहीं है ? पृथ्वी पर जो कुछ भी है, उसे मैं भस्म कर सकता हूं ।'

तब यक्ष ने उनके सामने एक तिनका दिया और कहा कि इसे जलाकर दिखाओ अपना पराक्रम दिखाओ । अग्नि देवता अ पूरे बल से तिनके को जलाने के लिए तत् किंतु वह उसे जला न सके । अपने को असहाय देखकर अग्नि वहीं से लौट आये सिर नीचा कर इंद्र से कहा, 'हे देवराज ! प्रयास करके हार गया किंतु उस तेजस्वी प का पता न लगा सका कि वह यक्ष कौन है

वायु भी असफल

संपूर्ण देव सभा में अग्नि की निराशाभ बातों को सुनकर आतंक-सा छा गया । इ बाद देवराज इंद्र ने वायु से कहा कि तुम प लगाओ क्योंकि विवाद के समय वायु भी वीरता का लंबा व्याख्यान दे चुके थे । वा कहकर कि अग्नि यक्ष का पता नहीं लगा अभी मैं लगाता हूं, तत्काल यक्ष की तरफ उन्मुख हुए । यक्ष के तेज के समक्ष वायु गति भी अग्नि के समान हो गयी । यक्ष ने से पूछा, 'तुम कौन हो ?'

वायु ने उत्तर दिया, 'मैं वायु हूं । मैं 'मातरिश्वा' हूं, बलवान हूं ।'

यक्ष ने वायु से पुनः पूछा, 'तुम्हारी क्या शक्ति है ?'

वायु ने उत्तर दिया, 'संसार में जो कुछ



है, उसे उठाकर ले जा सकता हूं । मैं पृथ्वी की सुगंध अपने में समेटकर ले जाता हूं । इसी से मुझे गंधवाह भी कहते हैं, क्या आज तक तुमने मेरा नाम नहीं सुना ?'

यक्ष ने मुसकराकर वही तिनका वायु के सामने रखकर कहा, 'इसे उड़ाकर दिखाओ ।'

वायु ने प्रसन्नतापूर्वक कहा, 'मैं सारे ब्रह्मांड को विचलित कर सकता हूं । पहाड़ों, पेड़ों को हिला सकता हूं, इस तिनके का क्या ?' और तिनके को उठाने के लिए वायु ने अपनी संपूर्ण शक्ति लगायी, किंतु वह तिनके को हिला भी न सके । निश्चेष्ट वायु वहीं से लौट पड़े और चुपचाप आकर देवसभा के एक कोने में बैठ गये ।

इंद्र की बारी

इंद्र स्वतः जान गये कि यक्ष का रहस्य वायु नहीं जान पाये हैं । देवगुरु वृहस्पति ने अंततः इंद्र से कहा, 'देवराज, तुम्हीं उस यक्ष के बारे में पता लगा सकते हो ।' अग्नि और वायु ने भी

अभिमान चेतन बुद्धि को ढंक लेता है, जीव अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाते हैं ।

व्यंग्य से इंद्र से कहा, 'तुम भी अपनी शक्ति लगा लो और पता करके देखो कि यह यक्ष कौन है ? इंद्र चकित भी थे और चिंतित भी । इसी विचारणा में मग्न वह पता लगाने के लिए दौड़कर यक्ष के पास गये । इंद्र के पहुंचते ही यक्ष तिरोहित हो गया और उसके स्थान पर एक शुभ वदना देवी प्रकट हुई । अपनी एक सहस्र आंखों से ध्यानपूर्वक देखने पर इंद्र को आभास हुआ कि वह देवी 'उमा' है ।

यक्ष साक्षात् ब्रह्म

इंद्र ने अपनी शक्ति से जान लिया कि यक्ष का रहस्य सिवाय ब्रह्म के और कोई नहीं हो सकता । उस देवी से इंद्र ने पूछा, 'यह यक्ष कौन था ? अग्नि और वायु प्रयास करके उसका

रहस्य नहीं जान सके । आप उस तेजस्वी पुरुष का रहस्य मुझे बताइए ।'

उन्होंने इंद्र को बताया कि वत्स । वह यक्ष और कोई नहीं था, साक्षात ब्रह्म का स्वरूप था जिनका रहस्य और शक्ति कोई नहीं बता सकता । वह श्रेष्ठ कार्यों का विधाता है और बुरे कार्यों का संहारक । उसकी इच्छा के बगैर कुछ संभव नहीं । अहंकार के वशीभूत हो अग्नि और वायु अपनी शक्ति के मद में उसका रहस्य जानना चाहते थे । अग्नि और वायु इन जड़ पदार्थों से यक्ष ने अपनी शक्ति खींच ली थी, इसीलिए न अग्नि उसे जला सके और न वायु उसे हिला सके । जब चेतन इंद्र की बारी आयी तब यक्ष तिरोहित हो गया और उमा प्रकट हुई । ब्रह्म की महिमा से ही असुरों पर देवों की विजय हुई थी, उनकी अपनी शक्ति के बल पर नहीं. किंतु देवगण अहंकार में यह भूल गये कि असुरों का विनाश स्वयं उन्होंने किया है और सभी में घोर अभिमान हो गया था, यही सारे अनर्थ का मूल है । अभिमान भंग करने के लिए ब्रह्म रूपी यक्ष के लिए एक तिनका ही काफी था । अभिमान चेतन बुद्धि को ढक लेता है, जीव अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाते हैं । इंद्र ने भी इस बात को तभी जाना कि ब्रह्म ही वह यक्ष थे । देवी के द्वारा इस रहस्य को जानने के बाद इंद्र की अभिमानभरी कलुषित आत्मा मानो धुल गयी । वह देवी से मुग्धी हो का आशीर्वाद लेकर देवसभा में पहुंचे, जहां उत्सुकता से सभी देवता उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे । इंद्र का निरभिमानी तेज अब कई गुना अधिक हो गया था, उन्होंने देवताओं को ब्रह्म का उपदेश दिया, उनके वास्तविक स्वरूप का परिचय दिया । इस क्षण देवता सचमुच विजय लाभ कर सके थे क्योंकि उनके अंदर का अहंकार रूपी असुर समाप्त हो गया था ।

(केनोपनिषद

—प्राचार्या : एम. के.पी. (पी. जी.) कॉलेज,
देहरादून

पोलियो की अचूक आयुर्वेदिक औषधि

बिहार के अररिया जिले में फारबिसगंज स्थित पोलियो क्लिनिक और रिसर्च सेंटर के चिकित्सक पंचम कुमार दास ने पोलियो के इलाज के लिए एक अचूक आयुर्वेदिक औषधि ईजाद की है । डॉ. दास का दावा है कि चार से पांच साल के बच्चों की विकलांगता एक माह के इलाज में ही वे दूर कर सकते हैं । पोलियोग्रस्त पंद्रह वर्ष की उम्र के लड़के-लड़कियों को भी करीब ढाई साल की चिकित्सा के बाद ठीक किया जा सकता है । डॉ. दास के इस करिश्मायी आयुर्वेदिक दवा के आविष्कार के बाद अब तक इस दवा से लगभग ८०० पोलियोग्रस्त बच्चे पूरी तरह स्वस्थ हो चुके हैं ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ ने श्री दास के इस खोज को मान्यता दे दी है और अन्य व्यवस्थाओं के लिए भारत सरकार को लिखा है । डॉ. दास ने इस चमत्कारी औषधि का आविष्कार अपने ही जुटाये साधनों से छोटे से अनुसंधान केंद्र में निरंतर प्रयास के बाद किया है ।

— रमेश कुमार

ओड़िया कविता

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित सीताकांत महापात्र की दो कविताएं

प्रार्थना

जोर-जोर से चिल्लाकर
तुम्हें पुकारने की क्या जरूरत है प्रभु ?

झांझ मृदंग कीर्तन का उदंड नाच, स्वर
मुआजिन की नमाज अल्ला-हो अकबर
तुम्हारी मिट्टी, पत्थर,
मार्बल मूर्ति, तसवीर के आगे
कोटि-कोटि भक्तों की उच्चकित चीत्कार
इन सबकी क्या जरूरत है प्रभु ?

सुना है मैंने
सुन सकते हो तुम
नन्हीं इल्ली के पैरों का नूपुर निक्कण
सुन सकते हो नर्म पलकें खोलते
नये पत्तों-कलियों को डालों पर ।

सुन सकते हो स्थावर जंगम कीट पतंग
सबके सीने की धुकधुकी अनकहे आर्त्तनाद
नील व्योम के शेष सीमांत पर
जमुहाई लेते अनंत अंधेरे को और
उसकी खामोशी को ।

कृष्ण लीला

अध उड़ी फूस की मड़ैया से
टिमटिमाती ढिबरी की रोशनी से
पखाल☆ के बासन, साग की भुज्जी और
निरानंद सांझ से
पैर खिंचे चले जाते हैं
यमुना किनारे कदंब के नीचे
चांदनी का ज्वार, झीने वस्त्र
पट-पीतांबरी, पीत वसन
दूध मलाई मक्खन मोर पंख की ओर ।

हर दिन-सी बीतती है रात
गांव किनारे अमराई में पेट्रोमैक्स बुझता है
दिन के निर्दयी प्रकाश में भी
नदी की रेत पर
चांदनी-फूल का चांद होता है
नदी के घाट पर गांव की बालाओं का
पानी भरते समय की ध्वनि में
सुनायी देता है बांसुरी का स्वर ।
सारे सहजन के पेड़, नारियल के पेड़
बन जाते हैं कदंब के पेड़
टंगे होते हैं उन पर
गोपिकाओं के अंग आवरण
रतजगे के कारण चरवाहे-लड़के
सो रहे हैं नदी की रेत पर
आकाश की ओर मुंह किये,
निर्जन नदी किनारे
करता रहता है गुटरगूं
एक कबूतर ।

☆पखाल : पानी मिला भात ।

कवि का पता : सी-१/३७, पंडारा पार्क, नयी दिल्ली-११०००३

अनुवाद : डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र

गेरुआ वस्त्र पहने, दाढ़ी बढ़ाये जब वे मेरे पुराने परिचित मेरे कमरे में दाखिल हुए, उन्हें पहचानने में भी कुछ सैकेंड लग गये । पहचानते ही मैं जैसे चीख पड़ा, "अरे साधुशरण, यह क्या, तुम सचमुच किसी साधु की शरण में चले गये हो ? यह गेरूआ वस्त्र..."

मुझे टोकते हुए उन्होंने कहा,

मैंने न कोई दीक्षा ली है, न मुझे कोई गुरु मिला । दो-एक मिले, पर उनके पास दंड कमंडल था, सर भी घुटा हुआ था, चेले भी थे पर उनमें न प्रकाश था, न नेत्रों में ज्योति । केवल कुछ रटे हुए शब्द —मे विरक्ति बढ़ गयी ।"

मैंने पूछा, "आखिर यह परिवर्तन कैसे हुआ । तुम तो शहर के मशहूर गुंडों में भ

कहानी

धरना और नारे

• परिपूर्णानंद वर्म्मा

"अरे यार, चुप भी रहो । मुझे साधुशरण न कहकर स्वामीजी कहो । तुम तो मेरे सहपाठी थे —अब भी कद्र करो ।"

"पर क्यों —कब से स्वामीजी हुए ।"

"संसार में सब कुछ कुकर्म करने के बाद मैंने देखा कि अपने संस्कारों को भुलाने के लिए यही वेष अच्छा है । आजकल साधु-संतों का बड़ा मान है । मैं भी इसका लाभ उठाना चाहता हूं । इस वेष में बड़ा लाभ है । रिक्शेवाला तक कहता है, 'अरे बाबाजी आपसे क्या किराया तय करूंगा । देना हो दे दीजिएगा । आशीर्वाद मिलेगा' ।"

"तो तुम आशीर्वाद बांटने के लिए स्वामी बने हो ?"

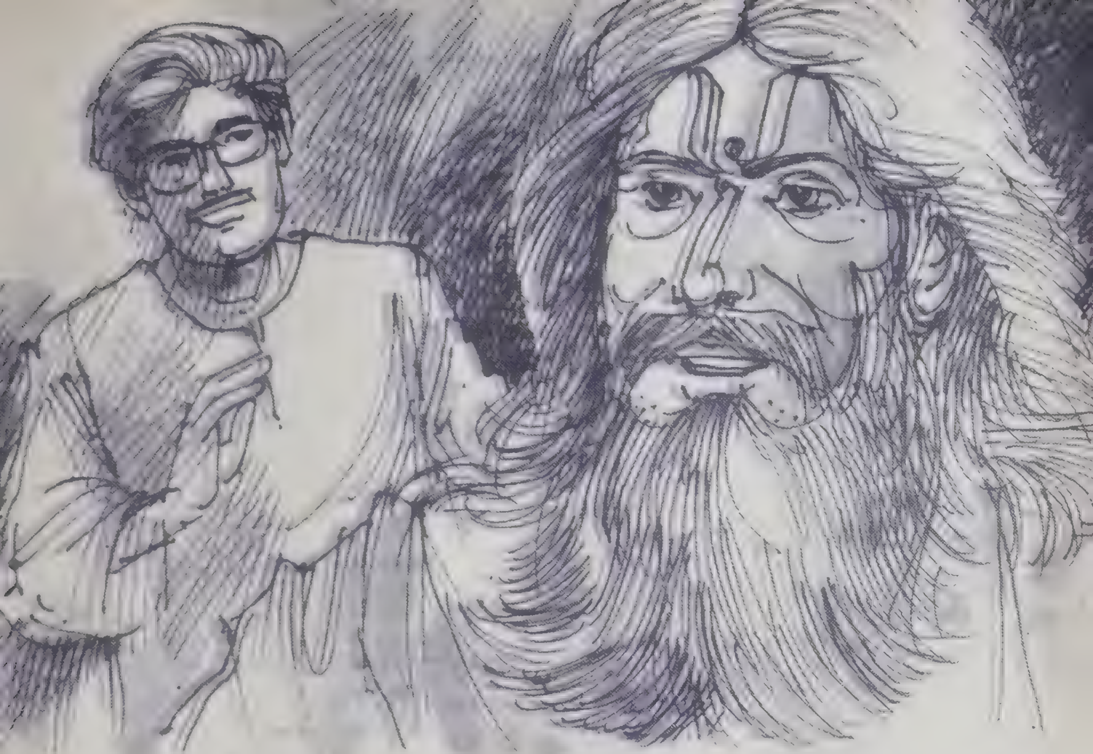
कुछ क्षण चुप रहकर वे बोले,

"यह सब तो हंसी में कह गया । अब सचमुच में मुझे संसार से विरक्ति हो गयी है ।

क्या वह सब काम छोड़ दिया ।"

स्वामीजी फिर मौन हो गये और कुछ चुप रहकर बोले, "इसीलिए आया हूं कि मेरे मित्र थे और हो । अपनी कथा कहक हलका कर लूं ।"

"तुम जानते हो मैं पिछड़ी जाति का ह दलित जाति भी कहा जाता है । दलित क तात्पर्य अभी तक नहीं समझ पाया । यह है कि जब सरकार ने सरकारी सेवा में दलि कहे जानेवालों के लिए कुछ आरक्षण दि केवल मैट्रिक पास मेरे पिताजी को नगरप में क्लर्की मिल गयी और वह भी सौभाग्य गृह-कर निर्धारण विभाग में । बड़ी जल्दी दफ़्तर का हुनर सीख गये । कर निर्धारण अफसर के साथ वे भी जाते थे और मक वाजिब हैसियत से तिगुना 'असेस्मेंट' कर थे । बाद में मकान मालिक के गिड़गिड़ा



काफी रुपया वसूलकर किराया दफ़्तर में ही ठीक कर देते, अफसर को न पता चलता न याद रहता । अपने इस काम में वे ऊंच-नीच, अमीर-गरीब में कोई भेद नहीं करते थे । बस रुपया चाहिए । अनेक दलित कहे जानेवाले मकानों की भी यही स्थिति थी । जब दुःखी व्यक्ति जाति की दुहाई देता तो वे साफ कह देते, 'सरकारी काम में जात नहीं देखी जाती । रुपया लाओ ।' धीरे-धीरे वे दलित वर्ग में काफी बदनाम होने लगे । पर, रुपया बड़ा था, न कि जाति । उन्होंने धन कमाया, उससे मकान भी बनवा लिया । मेरी पढ़ाई चलने लगी । कॉलेज में मेरी जाति के दो अध्यापक ऐसे मिल गये जो प्रचुर मात्रा में पैसा लेकर नकल करना सिखाते तथा करवाते थे । मुझे पैसों की क्या कमी थी । पिताजी ने थैली खोल दी । मैंने बी.ए. तथा एम.ए. प्रथम श्रेणी में पास किया । तुम्हारे-जैसे मेरे सहपाठी परिश्रम से पढ़ते तथा तीसरे डिवीजन से आगे न बढ़ पाते । अपनी सफलता का कारण मैं जानता हूं ।''

''खैर ! मेरे कॉलेज में अध्यापकों के दो दल थे —और दोनों दलों के साथ अलग विद्यार्थी समुदाय होता था । मैं अपने 'शुभचिंतक अध्यापकों के दल में था । इसलिए भाई, मैं सच कहता हूं, कॉलेजों में छात्र उपद्रव के प्रमुख कारण तो अध्यापक हैं, छात्र तो उनका खिलौना ही हैं ।''

* * *

सुबीरा मेरे ही कक्षा में पढ़ती थी । बराबर पास होती गयी, पर मेरे प्रथम श्रेणी में पास होने से वह मुझसे बड़ी प्रभावित थी । मैं भी शक्ल-सूरत आचार-व्यवहार में इतना अच्छा

था कि वह मेरे प्रति आकृष्ट हो गयी और मैं भी। बात बढ़ती गयी। यहां तक कि हमने प्रेम-विवाह का निश्चय कर लिया। मैं जानता तो नहीं उसे, वह कौन वर्ण की थी पर दलित की श्रेणी में अवश्य नहीं थी। हमारे प्रेम की चर्चा उसके माता-पिता के कानों तक पहुंची। मैं एक सम्मानित परिवार का मेधावी-प्रथम श्रेणी पास छात्र था। सुबीरा के माता-पिता उदार अवश्य थे। उन्होंने अवश्य सोचा होगा कि संपन्न परिवार है। लड़का पढ़ाई में इतना तेज है कि ऊंचे पद पर आरक्षण के कारण अवश्य जाएगा। जब उनकी आपत्ति दूर हुई तो पिता-माता के सामने प्रस्ताव गया। पिता ने कहा, "मां से पूछो।" मां तो सुनते ही उखड़ गयी। पुरानी चाल की अपढ़ महिला, पिता के कहने पर भी मजदूरनी नहीं रखी थी। घर का झाड़ू, बुहरी तथा बरतन-चौका स्वयं करती थी। उसने छूटते ही कहा, "ना बाबा। पढ़ी-लिखी बहू आवेगी। काम-धाम कुछ न करेगी। शृंगार करेगी। बड़ी जाति की है। हम छोटों में कैसे खप सकेगी।"

मैं जिद्द पकड़ गया। यहां तक कह दिया कि इस लड़की से विवाह न हुआ तो जीवनभर कुंआरा रहूंगा। मां की ममता —आखिर मेरे कुंआरेपन से घबराकर उसने स्वीकृति दे दी। मां चाहती थी कि मंडप में सनातन धर्म की रीति से विवाह हो। सुबीरा रजिस्ट्री आफिस से आगे नहीं बढ़ना चाहती थी। बड़ी कठिनाई से आर्यसमाज के ढंग से शादी हो गयी। पढ़ी-लिखी बीवी पाकर समाज में, मेरे दलित समाज में बड़ा नाम हुआ।

* * *

पर सुबीरा क्या आयी मेरे घर की शांति
चली गयी। उसने मां का घर-गृहस्थी में ह
बटाना अस्वीकार कर दिया। मां ने मुझसे
'बहू चौके में भी नहीं जाती। वह इतनी
पढ़ी-लिखी है पर उसे रोटी सेंकना भी नहीं
आता।' पर मैं तो प्रेम में पागल था। सुब
बार-बार आग्रह करती थी कि 'अलग घर
लेकर रहो।' पर इसके लिए मेरा नौकरी क
जरूरी था। इन दिनों एक नेताजी से दोस्ती
गयी। वे नगरपालिका के सभासद थे। मे
पिताजी से उनका काफी काम निकलता थ
दलित वर्ग के नहीं थे पर हमारे नेता थे। द
पर होनेवाले अत्याचार के विरुद्ध खूब भाष
देते थे। बात असल में यह थी कि वे हम
क्षेत्र से विधानसभा के लिए खड़े होना चा
थे। उन्होंने तो एक दिन सभा में यहां तक
दिया कि अपना धर्म छोड़कर बौद्ध हो जा
पिताजी ने सभा में ही कहा था, 'भगवान ब
भी तो विष्णु भगवान के अवतार थे।' नेत
को इसकी जानकारी भी नहीं थी। मेरी मा
रोज तुलसी पौधे की पूजा करती, पीपल में
देती, भूत-प्रेत भी मानती थी। नेताजी घर
आते-जाते थे। उसने एक दिन उन्हें फटक
दिया।

'धर्म बदलने से क्या रोटी-कपड़ा भी ब
जाएगा।'

नेताजी की ही सलाह पर, आरक्षण का
लाभ उठाने के लिए मैं डिप्टी
कलक्टरी-पी.सी.एस. की परीक्षा में बैठा
वहां नकल करने की गुंजाइश भी नहीं थी
वर्ग के थर्ड डिवीजनवाले कई साथी चुन
गये —मैं निराश रहा।

आजकल समाज में कोई रचनात्मक कार्य तो होता ही नहीं । हर प्रकार का आंदोलन ही लोगों का शगल है । सिनेमा तथा टी.वी. से भी ज्यादा मनोरंजक होता है धरना देना, रास्ता जाम करना, नारा लगाना, बिना मतलब समझे भी नारा लगाना ।

अब मैंने अपनी जातिवाले अफसरों के यहां दौड़ लगानी शुरू की । एक ने कहा, 'भाई, मेरा अनुभव है कि अपनी जातिवाला सहायक ठीक से काम नहीं करता, जाति के नाम पर उल्टे मेरी बराबरी करना चाहता है । मैं तुम्हें अवसर न दे सकूंगा ।' एक दूसरे ने कहा, 'मैं पक्षपात का दोषी नहीं बनना चाहता ।' हार मानकर मैंने अन्य साधन तलाश किये पर देखा कि क्लर्की के लिए दस हजार रुपये से कम घूस नहीं चलेगी । रेलवे में तो पंद्रह हजार का सौदा था । पिताजी से मांग नहीं सकता था —शायद इतना वे देते भी नहीं । इधर सुबीरा रात-दिन उपद्रव मचाये थी कि अलग रहेंगे । दौड़-धूप कर जब मैं लाचार होता गया तो सुबीरा का प्रेम भी ढीला पड़ता गया । एक दिन घर आया तो मां ने कहा, ''बहू चली गयी ।'' वह एक पुरजा मां को दे गयी थी —लिखा था—

'मैं इस घर में बेपढ़ों के साथ नहीं रह सकती । बेकार शौहर लेकर क्या करूंगी । मैं नेताजी के साथ जा रही हूं । उनके घर रहूंगी भी । उन्हें बीवी-बच्चे भी नहीं हैं —इत्यादि ।'

मुझे बड़ा क्रोध आया । तुरंत घर से निकल पड़ा । इत्तिफाकन नेताजी से सड़क पर भेंट हो गयी और मैंने उन्हें पीटना शुरू किया । शायद उन्हें मार भी डालता पर पुलिसवाले आ गये । मुझे थाने ले गये । हर नेता से पुलिस डरती है । न जाने क्या वाही तबाही बक दें । थाने में मेरी काफी पिटाई हुई । जेल भेजा गया । तीन महीने बाद जेल से छूटा ।

बस यहीं से मेरी जिंदगी ने पलटा खाया । मैं हरेक नेता तथा पुलिस का शत्रु बन गया । मैंने तय किया कि मैं स्वयं लीडर बनूंगा । मेरे दो ही प्रकट शत्रु थे —एक तो मेरी बीवी को उड़ा ले जानेवाले नेताजी, दूसरे मुझे थाने में पीटनेवाली पुलिस । नेताजी का हाथ चढ़ना कठिन था । उन्होंने मेरी पत्नी सुबीरा को भी स्त्री नेता बना दिया था । वे स्त्रियों पर अत्याचार, सास-ससुरों द्वारा बहू से कठोर व्यवहार तथा 'पुरुष के समान महिला वर्ग को अधिकार' आंदोलन की नेता बन गयी थी । आजकल समाज में कोई रचनात्मक कार्य तो होता ही नहीं । हर प्रकार का आंदोलन ही लोगों का शगल है । सिनेमा तथा टी.वी. से भी ज्यादा मनोरंजक होता है धरना देना, रास्ता जाम करना, नारा लगाना, बिना मतलब समझे भी नारा लगाना । अनेक राजनीतिक दल कुछ लड़कों को मिठाई खिलाकर झंडा पकड़ा देते हैं और 'जिंदाबाद' तो कम मुरदाबाद के नारे लगाना सिखा देते हैं । बस, बड़े-बूढ़े भी वही चिल्लाने लगते हैं । जहां कहीं दृश्य बदला और दूसरे नारेवाली टोली आ गयी, वही नारा लगने लगता है । लक्ष्यहीन नारेबाजी आज हमारे देश

का शगल है । मैंने भी नारेबाजी को ही अपनाया । हमारे नेताजी तो अनेक क्षेत्रों के नेता थे —व्यापारियों पर अत्याचार, मजदूरों पर अत्याचार, दलितों पर अत्याचार, हर दिशा में अत्याचार देखते, संगठन करते, नारे लगवाते । उनके किसी मंच के विरुद्ध नारे लगवाना तय नहीं हो पा रहा था । मैंने पुलिस को ही सबसे सरल, बेजबान समझकर उनके विरुद्ध नारे लगवाना शुरू किया । दूर-दराज भी कहीं कोई सड़क दुर्घटना हो जाए, कहीं चोरी हो, डकैती हो —बस पुलिस जिम्मेदार । भीड़ जुटाना, नारा लगवाना —यह हमारे देश में सबसे आसान पेशा है । कहीं कुछ हुआ हो या न हुआ हो, थाने का घेराव, नारेबाजी, गाली-गलौज —बड़ा आसान पेशा था । पैसे की जरूरत नहीं थी । बच्चों को, बूढ़ों तक को पान-चबेना भर पैसा तो पिताजी से मिल जाता था । मेरे माता-पिता मेरे लफंगेपन से बड़े दुखी थे, पर क्या करते —एक ही लड़का, मां की ममता । माता तो यही कहती थीं कि 'लल्लू देश सेवा कर रहा है ।' पिताजी के विरोध को वे चु
से उड़ा देती थीं ।

* * *

उस दिन औरतों की विशाल सभा थ
कुछ पुरुष भी दुबके से बैठे थे । मंच पर
श्रीमतीजी सुबीराजी गरज रही थीं, 'अब
पुरुषों का —यहां तक पतियों का,
अत्याचारिणी सास-ससुर का दुर्व्यवहार
नहीं सहन कर सकेंगी । हर वर्ग जाग ग
दलित, मजदूर, व्यापारी, दुकानदार, कर्म
सभी जाग गये हैं । कर्मचारियों से शिक
कि वह ज्यों-ज्यों वेतन या भत्ता में वृद्धि
है, उतना ही घूस भी बढ़ता जाता है, अ
ही सोचिए कि किस देश में, किस युग
घूसखोरी नहीं थी या नहीं है । आप कहे
स्वराज्य में यह नितांत अनुचित है —ज
चुनाव में घूस चलती है, जब वोटर घूस
तो कर्मचारी क्यों न ले ।'

मैं इस विपत्ति का भोगी बेकार एम.

लघु कथा

यात्रा और वह युवती

काफी लंबी यात्रा थी, रात्रि बस में सफर कर रहा था । सभी यात्री सो चुके थे, लेकिन मैं अपनी सीट में बसी एक अधेड़ युवती के कारण सो नहीं सका था । वह मुझे अपने हावभाव से आकर्षित कर रही थी । और
मैं अपने ही खयालों में डूब रहा था कि
मेरा परिचय पूछा । हम दोनों में परिचय

मैं खिड़की के सहारे सोने का यत्न
था, तभी उसने कहा, "लीजिए !"

मैंने उसका दिया आम खाया ।

हम दोनों चुप थे । कुछ समय बाद
लड़की फिर बोली, "सागरजी ! सफ
अनजान लोगों द्वारा दी वस्तु नहीं खान
चाहिए । क्या आपको मालूम नहीं ?"

मैं उसके प्रश्न से किंकर्तव्यविमूढ़

और सहन न कर सका, फिर सुबीरा-जैसी बेवफा पत्नी का यह रूप —मेरा खून खौल उठा। मुझे देर न लगी कुछ लड़के तथा जवानों को मिठाई खिलाकर सभामंडप में आकर नारा लगवाने में—

'ये झूठों की सरदार है। ये सब मक्कार हैं' —जब तक औरतें संभलें और हमारे मित्र नेताजी जो मंच पर विराजमान थे, कुछ सचेत हों, दुबके बैठे पुरुष जन भी हमारे साथ नारेबाजी करने लगे। उनको क्रोध तथा व्याख्यान से उत्पन्न क्षोभ को फूट पड़ने का मौका मिला। वे भी हमारे नारे में शामिल हो गये। सभा में हड़कंप मच गया। औरतें भाग खड़ी हुई। नेताजी ने मुझे देख लिया था और वे पास आकर इतना ही कह सके, 'मैं समझ लूंगा।'

मैं इतना ही कर सका कि घूंसा तान बैठा। पर वे दूर हट गये थे।

और अप्रत्याशित हो गया। नेताजी मेरे पिता की हरकतों से वाकिफ थे। तीन दिन के भीतर वे घूस लेते पकड़े गये। पुलिस तो मुझसे चिढ़ी थी ही, हथकड़ी पहनाकर वे थाने लाये गये जहां उनकी मरम्मत की गयी। मेरा बदला लिया जा रहा था।

संक्षेप में कहूं तो पिताजी को छह महीने की सजा हो गयी। मेरी माता का अनुमान था कि मैं देशसेवक हूं, अपने प्रभाव से उन्हें छुड़ा लूंगा, पर मैं विवश था। मां रो-रोकर जान दे रही थी, 'लल्लू, तुम कुछ न कर सके —हाय लल्लू।' —न जाने कितना शोक था कि वह पड़ोस के कुएं में कूद गयी। पिताजी जेल में हैं। माता चल बसीं। सभासद नेताजी राजनीति में आगे बढ़ते जा रहे हैं। सुबीरा को राज्यपाल ने महिलाओं का प्रतिनिधि बनाकर विधान परिषद में नामजद कर दिया है। हारा-थका पराजित मैं अब किसी काम लायक नहीं हूं। मैं जीवन की दौड़ में हारकर अब संन्यासी स्वामी का वेष बनाकर कुछ समय में समाज का धर्म गुरु बनने की तैयारी कर रहा हूं।

—४, एल.आर. बंगला, काल्पी रोड, कानपुर



मन को शंका ने घेर लिया। शरीर कांपा। फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी, और कहा, "मेरी अपनी ही. बहन-मां ने दिया समझकर... ।"

मेरा गला अवरुद्ध हो गया। वह मेरे विपरीत दिशा में मुड़ी और फिर कभी उसने मेरी तरफ मुड़ के नहीं देखा।

प्रस्तुति : रमेश घिमिरे

—गैंडाकोट-१, नवलपरासी
लुम्बिनी अंचल, नेपाल।

राम कालीन संसद

● डॉ. श्यामसनेही लाल शर्मा



रामकालीन संसद का स्वरूप औ
कार्य प्रणाली का परिचय बाल्मी
रामायण में विस्तार से और तुलसी के
रामचरितमानस' में संकेत रूप में प्रा
है । राम के पिता राजा दशरथ के स
में राजनीतिक स्तर पर एक इकाई के
अखंड केंद्रीय सत्ता नहीं थी । हिमाल
विंध्यपर्वत श्रेणियों का मध्यवर्ती आ
अंग, काशी, कौसल, केकय, मगध
मिथिला, बंग, विशाला, सिंधु, सौवी
सांकाश्या आदि स्वतंत्र राज्यों में विभ

राम के शासनकाल में उनके शी
और शक्ति के समन्वित प्रभाव से अ
साम्राज्य न केवल सशक्त और विस्तृ
अपितु भारत में सांस्कृतिक स्तर पर
सत्ता स्थापित हुई थी । उत्तर से दक्षि
की विजय यात्रा सांस्कृतिक एकता व
अभियान था ।

रामायणकालीन भारत में गणतंत्र
शासन-व्यवस्था का उल्लेख प्राप्त न
तत्कालीन शासन का स्वरूप लोकतं
राजतंत्र था । राजा का पद कुल परंप
इक्ष्वाकुवंश की वंशावली इस तथ्य
है कि राम से कई पीढ़ियां पहले औ
राजपद आनुवांशिक था । नये राजा
के लिए सभा (लोकसभा) की अनु
आवश्यक होती थी । राम यौवराज्य
पूर्व दशरथ ने अपनी सभा की अनु
की थी । वानरराज बालि की अनुप
मंत्रियों ने सर्वानुमति से 'सुग्रीव' क
राज्याभिषेक किया था । राम-यौवर
की तैयारी के वर्णन से तत्कालीन र

प्रणाली की रूपरेखा प्राप्त की जा सकती है, साथ ही युवराज और राजा की नियुक्ति में तत्कालीन संसद की भूमिका को भी जाना जा सकता है ।

शासन तंत्र के अंग

रामकालीन शासनतंत्र के तीन मुख्य अंग थे : १ सभा, २ मंत्रिपरिषद् तथा ३ शासनाधिकारी (तीर्थ) । इन तीनो की सहायता से राजा राज्य की व्यवस्था और शासन-संचालन करता था ।

सभा : तत्कालीन राज्यसभा, लोकसभा या धारासभा, परिषद, समिति या केवल सभा

शक्तिशाली था, क्योंकि देश की बहुसंख्यक जनता का प्रतिनिधित्व यही अंग करता था । पौर-जानपदों में राजधानी के नैगम और 'गणवल्लभ' तथा ग्राम-प्रांत के 'ग्राम घोष महत्तर' (कृषकों और गोपों के प्रतिनिधि) समाविष्ट होते थे । ये वैश्य वर्ण और व्यापारी वर्गों के प्रतिनिधि थे । इस प्रकार सभा में वर्णों, हितों और प्रदेशों को प्रतिनिधित्व प्राप्त था । ये प्रतिनिधि सरकार द्वारा नियुक्त या मनोनीत होते थे अथवा जनता द्वारा निर्वाचत, इस तथ्य का स्पष्टीकरण रामायण में नहीं है तथापि 'नैगमाः', 'ग्राम घोष महत्तराः', 'श्रेणी मुख्याः',

रामकालीन संसद और संसदीय कार्य प्रणाली का जो स्वरूप रामायण और मानस में उल्लिखित है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि आधुनिक संसद से वह बहुत कुछ साम्य रखता है । अंतर है तो सिर्फ इतना कि आधुनिक संसदीय व्यवस्था पूर्णतः लोकतंत्रानुमोदित है जबकि रामकालीन संसदीय प्रणाली लोकतंत्रानुमोदित राजतंत्रीय व्यवस्था के रूप में थी ।

हलाती थी । सभा के सदस्य प्रकृति, सभासद थवा आर्यमिश्र कहे जाते थे । उन्हें 'आर्य' हकर संबोधित किया जाता था । समष्टि रूप वे 'आर्यगण' कहलाते थे ।

सभासद, शासकीय और अशासकीय दोनों ते थे । शासकीय सदस्यों में अमात्य त्रिय), मंत्री (कुलगुरु, ब्राह्मण) तथा धिकारी होते थे । अशासकीय सदस्यों में नः (सामंत) और नगर-ग्राम के प्रतिनिधि थे । राजधानी के प्रतिनिधि 'पौर' और शेष के प्रतिनिधि 'जानपद' कहलाते थे । सभा यह पौर-जानपद अंग ही सर्वाधिक

'गणवल्लभाः', 'जनमुख्याः' जैसे अभिधानों से किसी-न-किसी प्रकार का चुनाव ध्वनित होता है ।

सामान्यतः शासन संबंधी सभी महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर सभा का परामर्श लिया जाता था । राजा या युवराज का निर्वाचन या नियुक्ति, युद्ध, राजा द्वारा राज-त्याग जैसे विषयों में सभा की स्वीकृति आवश्यक होती थी ।

संसदीय कार्य विधि

'बाल्मीकीय रामायण' में तत्कालीन लोकसभा की कार्यप्रणाली पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है । वहां एक ओर तो

दशरथ जैसे वैधानिक राजा की सभा का शांतिकालीन अधिवेशन का वर्णन मिलता है, वहीं दूसरी ओर रावण-जैसे निरंकुश शासक की परिषद के युद्धकालीन अधिवेशन का भी विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है । रामायण में वर्णित उक्त अधिवेशनों की तुलना यदि आधुनिक संसद की कार्यविधि से की जाए, तो दोनों में आश्चर्यजनक साम्य देखा जा सकता है ।

दशरथ की सभा का अधिवेशन

राम को युवराज पद पर नियुक्त करने से पूर्व राजा दशरथ ने अपनी सभा का अधिवेशन बुलाया था और सभा का सभापति होने के नाते उसे संबोधित करते हुए अधिवेशन बुलाने का कारण उद्‌घाटित किया था । दशरथ ने अपनी वृद्धावस्था का हवाला देते हुए शासन-भार से मुक्त होने की इच्छा व्यक्त की और यह प्रस्ताव रखा कि मेरे पुत्र राम को जो योग्य और सामर्थ्यवान है, युवराज पद पर अभिषिक्त कर दिया जाए । दशरथ ने यह भी कहा कि यदि यह प्रस्ताव आपको रुचिकर, बुद्धिमत्तापूर्ण तथा कल्याणकारी प्रतीत होता हो, तो आर्यगण मेरे प्रस्ताव को स्वीकारें अन्यथा उससे अधिक उपयुक्त कोई अन्य प्रस्ताव रखें ।

राजा सिर्फ प्रस्ताव रखने का अधिकारी होता था । रखे गये प्रस्ताव पर अंतिम निर्णय सभा को ही करना होता था । सभा ने दशरथ के प्रस्ताव पर विचार-विनिमय के बाद सर्वानुमति से यह निर्णय लिया कि राम, दशरथ के उत्तराधिकारी बनने योग्य हैं ।

यहां यह ध्यातव्य है कि सभा के समक्ष प्रस्ताव रखने से पूर्व दशरथ ने अपने मंत्रियों के साथ परामर्श कर यह पता लगा लिया था कि प्रजा उनके प्रस्ताव से कितनी सहमत हो
यह भी ध्यातव्य है कि दशरथ ने अपने
को सभा पर लादने का प्रयास नहीं किय
अपितु एक सर्वानुमोदित निश्चय प्रकट क
प्रार्थना भर की । राम के पक्ष में सभा क
सम्मति जान लेने के बाद भी दशरथ ने
यह जानना चाहा कि मेरे धर्मपूर्वक शास
रहने पर भी आप राम को युवराज क्यों
चाहते हैं ? और उत्तर में सभा ने राम के
व्यक्तित्व के वैशिष्ट्य का उल्लेख करते
सिद्ध किया था कि वे वर्तमान राजा को
करने के लिए नहीं अपितु सर्वोत्तम शास
चुनने की इच्छा से संप्रेरित हो यह निर्ण
हैं तात्पर्य यह कि—

*१. राजा मात्र प्रस्ताव रखने का अधि
था ।*

*२. अंतिम निर्णय का अधिकार सभा
था ।*

*३. राजा अपना निर्णय सभा पर थोप
सकता था ।*

*४. सभा को अपने निर्णय की सकार
करनी होती थी ।*

*५. विशेष परिस्थिति में सभा के सर्वा
निर्णय के विरुद्ध अंतिम निर्णय लेने का
संभवतः राजा को था ।*

बिंदु क्रमांक ५ ही वह तथ्य है जो
सर्वाधिकार प्रदान कर विशुद्ध राजतंत्रा
व्यवस्था का रूप प्रस्तुत करता है । यह
आश्चर्यजनक बात है कि सर्वसम्मति से
गये सभा के निर्णय—राम को युवराज
जाए—पर राजा दशरथ क्रियान्वयन न
पाये और अंतःपुर की कलह के परिण
राम को वन जाना पड़ा । इससे तो यह
है कि विषम और विशेष परिस्थिति में



निर्णय ही अंतिम और सर्वमान्य होता होगा ? फिर भले ही वह प्रजाजन, मंत्रिपरिषद् अधिकारी गण और सभा के विरुद्ध ही क्यों न हो ।

रावण की सभा के युद्धकालीन अधिवेशन

रामायण में रावण द्वारा अपनी सभा के दो अधिवेशन बुलाने का उल्लेख है, एक हनुमान द्वारा लंका दाह के बाद और दूसरा लंका पर राम के आक्रमण के समय प्रथम अधिवेशन में (वा.रा. ६/६) रावण ने सभासदों को सर्वप्रथम यह सूचना दी कि हनुमान ने दुर्गम लंकापुरी का विध्वंस कर दिया है और फिर उनकी सम्मति मांगी कि राम के विरुद्ध क्या किया जाए ? रावण यह अच्छी तरह जानता था, कि सफलता का मूल सत्परामर्श है ।

मंत्र मूलंहि विजयं प्रवदंति मनस्विनः

वह यह भी जानता था कि जो राजा अपने हितकारियों के साथ परामर्श करके कार्यारंभ करता है, वह उत्तम, जो अकेला ही अपने कर्तव्य का विचार करता है वह मध्यम और जो गुण-दोषों का विचार न करके अहंकारवश कार्यारंभ करता है, वह अधम है । वह जानता था कि जिस निश्चय में शास्त्रोक्त दृष्टि से सब मंत्री एकमत होकर प्रवृत्त होते हैं, वह उत्तम निश्चय है, जहां प्रारंभ में अनेक प्रकार के मतभेद हों, किंतु अंततः सब एकमत हो जाएं, वह निश्चय मध्यम और जहां अपनी-अपनी बुद्धि की प्रधानता रख स्पर्धापूर्वक वक्तव्य दिये जाएं और ऐसे परस्पर विरोधी मत प्रतिपादित किये जाएं जिनमें कल्याण की संभावना न हो, वह निश्चय अधम कहा जाता है । अतः उसने एक परामर्शदात्री सभा (परिषद) का गठन कर रखा था, जिसमें उसके बंधु-बांधवों का ही बाहुल्य था, चाहे वे बांधव मंत्रीपद पर हों या फिर सैन्य अधिकारी पद पर ।

यह रावण का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि उसकी सभा के अधिकांश सदस्यों को न तो नीति का ज्ञान था और न उन्हें शत्रु की शक्ति का अनुमान । वे युद्ध के प्रति विमोहित और चाटुकार थे । अतः रावण द्वारा उचित सम्मति मांगे जाने पर उन्होंने उसके पौरुष की प्रशंसा करते हुए परामर्श दिया कि बदला लिया जाए और अपहृत सीता वापस न की जाए । केवल विभीषण ने विपरीत राय व्यक्त की, जिसे सुनने के बाद रावण ने सभा भंग कर दी थी ।

रावण की सभा का द्वितीय अधिवेशन

रावण के राजकीय वैभव और उसकी सभा के विशेष अधिवेशन का परिचय उसकी दूसरी बैठक में ही मिलता है । राक्षसों के जयघोष के साथ अपनी राज्यसभा में पहुंचा था । रावण का

सिंहासन वैदूर्यमणियों से निर्मित था जिस पर अत्यंत सुकोमल मृग-चर्म बिछा हुआ था। सभासदों के लिए सुंदर चौकियां रखी हुई थीं। सदस्यों को यथास्थान बैठाने का प्रबंध शुक्र और प्रहस्त नामक राक्षसों के अधीन था।

रावण ने अध्यक्ष-आसन ग्रहण करके दूतों को आदेश दिया कि वे सभा के सदस्यों को तुरंत बुला लाएं। दूतों ने रावण के आदेश से सभासदों को घर-घर जाकर अवगत कराया। सभासद शीघ्र ही सभाभवन पहुंचे। युद्धकालीन अधिवेशन होने के कारण रावण ने विशेष सतर्कता का परिचय दिया था। सभा-भवन और नगर-द्वार की सुरक्षा के प्रति पूर्ण आश्वस्त होने के बाद ही उसने अधिवेशन की कार्रवाई प्रारंभ की।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए रावण ने प्रथमतः सभासदों की पूर्व सेवाओं के लिए धन्यवाद दिया, 'आप सबकी सहायता से ही मैंने देवासुर संग्राम में विजय प्राप्त की थी।' और फिर उसने याचनाभरे स्वर में वह युक्ति पूछी, जिससे राम और उनके सहायकों का विनाश हो और सीता को न लौटाना पड़े। यहां यह तथ्य ध्यातव्य है कि सीता-हरण की सूचना रावण ने अपने सभासदों को नहीं दी थी, इसीलिए रावण का प्रलाप सुनकर कुंभकर्ण ने क्रोधित होकर पूछा कि महाराज, आपको चाहिए था कि आप सीता-हरण से पूर्व हमसे परामर्श करते। आपने बिना विचार किये यह अनुचित कृत्य कर डाला।

रावण के कृत्य को अनुचित मानते हुए भी कुंभकर्ण ने उसके प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि [illegible] यह कार्य आपने अपनी योग्यता

से बढ़कर कर डाला है, फिर भी आपके
का संहार करके मैं सब ठीक कर दूंगा।
की सभा के प्रायः सभी सदस्यों ने राम के
उसकी युद्ध-घोषणा का समर्थन किया।
किसी ने अस्वीकृति व्यक्त की थी तो वही
विभीषण। तुलसी के मानस में विभीषण
अतिरिक्त प्रहस्त, माल्यवत, शुक आदि
स्थान-स्थान पर अपने विरोधी मत व्यक्त
हैं। विभीषण को तो विरोधी विचार व्यक्त
के कारण रावण ने उस पर 'देशद्रोही' और
'कुलकलंकी'-जैसे विशेषण थोपे और
यह आरोप लगाया कि 'शत्रु से तुझे रिश्व
है।' अपमानित विभीषण ने उस समय
उठकर चला जाना ही उचित समझा। य
रावण की सभा में कोई विरोधी दल नहीं
फिर भी विभीषण, कुंभकर्ण आदि के वि
भाषण एक निरंकुश शासन में प्रजातांत्रि
पद्धति का आभास देते हैं।

मानस में रामायण की तरह विस्तार
रामकालीन संसदीय प्रणाली पर प्रकाश
डाला गया है तथापि संसद और संसदी
कार्यविधि पर संकेतात्मक रूप में स्थान
पर प्रकाश डाला है यथा—

- **राम को युवराज बनाने से पूर्व राजा द**
अपनी सभा की अनुमति ले ली थी।
- **कुलगुरु, जो कुल पुरोहित होने के सा**
राजनीतिक दृष्टि से राजा के परामर्शदा
थे, के समक्ष युवराज नियुक्ति संबंधी
पर सहमति प्राप्त की थी।
- राज्य के उत्तराधिकारी के चयन के प्र
के मत का आदर।
- राजा दशरथ की मृत्यु के बाद कुलगुरु
राज्यसभा की बैठक बुलानी थी, जि

क्र

से राजा का पद स्वीकारने के लिए कहा गया था।

- राज्यसभा का एक अन्य अधिवेशन चित्रकूट पर हुआ था। यह महाधिवेशन था।
- रावण की राज्यसभा का अनेक स्थलों पर उल्लेख।

वस्तुतः रामकालीन संसद और संसदीय कार्य प्रणाली का जो स्वरूप रामायण और मानस में उल्लिखित है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि आधुनिक संसद से वह बहुत कुछ साम्य रखता है। अंतर है तो सिर्फ इतना कि आधुनिक संसदीय व्यवस्था पूर्णतः लोकतंत्रानुमोदित है, जबकि रामकालीन संसदीय प्रणाली लोकतंत्रानुमोदित राजतंत्रीय व्यवस्था के रूप में थी। राजा और युवराज के चयन, राजा द्वारा राज्य-त्याग युद्ध आदि अवसरों पर सभा की अनुमति आवश्यक थी। सभासदों को अपने मत व्यक्त करने का अधिकार था और वे निर्भीक होकर अपनी बात कह सकते थे। भारत में लोकतंत्र की जड़ें बहुत गहरी हैं।

—सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग
कुसुमबाई जैन कन्या महाविद्यालय
भिंड-४७७००१ (म. प्र.)

ऑपरेशन के बारह घंटे पूर्व धूम्रपान बंद कर दीजिए

यदि आपका शल्योपचार होना है और आप बीड़ी, सिगरेट के शौकीन हैं तब ऑपरेशन की कामयाबी के लिए आप शल्यक्रिया से कम से कम बारह घंटे पूर्व धूम्रपान बंद कर दीजिए। इससे ऑपरेशन की कामयाबी दर अपेक्षाकृत बढ़ जाएगी।

सिगरेट के हर कश के साथ जो कार्बन मोनोआक्साइड हमारे खून में दाखिल हो जाती है वह हीमोग्लोबिन के साथ संयुक्त होकर रक्त की ऑक्सीजन ग्रहण क्षमता को घटा देती है। इस प्रकार रक्त प्रवाह के जरिए जो वस्तु कोशिकाओं को ऑक्सीजन पोषक तत्व के रूप में पहुंचती रहती है उसकी मात्रा घट जाती है।

गौरतलब है कि निश्चेतक शल्य कर्म के बाद फौरन फेफड़ों के प्रकार्य को पहले ही घटा चुका होता है। अतः अंगों को क्षति पहुंचने का खतरा सिगरेट पीनेवाले व्यक्ति के लिए और भी बढ़ जाता है। ऐसे में ऑक्सीजन का अभाव एवं कोशिकाओं को वांछित भरपाई न हो पाने से शल्य कर्म के बाद पैदा होनेवाला पेचीदापन और भी बढ़ जाता है परंतु धूम्रपान बंद करने के बारह घंटे के भीतर शरीर की ऑक्सीजन वहन क्षमता सामान्य हो जाती है। हृदय की हर धड़कन के साथ रक्त प्रवाह के जरिए हीमोग्लोबिन पर्याप्त मात्रा में कोशिकाओं पर पहुंचकर उन्हें एक बार फिर भरपूर पोषण मुहैया कराने लगता है।

क्या याददाश्त है !

जापान के नेत्रविहीन विद्वान हानावाह्रेकची की याददाश्त इतनी तेज थी कि एक बार उन्हें कोई भी पुस्तक पढ़कर सुना दी जाती तो बाद में अक्षरशः बोलकर सबको चकित कर देते। अपनी उम्र के सौ वर्ष तक लगभग चार लाख पुस्तकों और पांडुलिपियों कीविषयवस्तु याद कर चुके थे, और तो और २८२० पृष्ठों की '...गगुन्जी' नाम से एक निर्देश-पुस्तक का संपादन भी कर चुके थे।

भूकंप क्यों आते हैं

● राजराजेश्वरी प्रसाद सिंह

विश्व के वैज्ञानिक अभी भूकंप की भविष्यवाणी कर सकने की तकनीकी क्षमता का सृजन नहीं कर पाये हैं। अतीत में चीन और भारत में बिल्लियों, कुत्तों, चूहों, सर्पों, कीड़े मकोड़ों की प्रवृत्तिय का अध्ययन करके भूकंप का अनुमान लगाया जा सकने का विज्ञान विकसित था। चीन तो २८ जून १९७५ में हुए भूकंप का अनुमान इन्हीं निरीक्षणों के कारण लगा सकने में सफल हुआ हालांकि तंशासा के इस प्रांत में फिर भी एक लाख लोगों की म हुई। कुत्तों और बिल्लियों के विचित्र व्यवहारों का निरीक्षण कर समय से चेतावनी दी गयी अन्यथा कई गुना ज्यादा जनहानि होत

इक्कीस अगस्त, १९८८ की उस सुबह की याद द. बिहार और उत्तर प्रदेश वासियों को अवश्य होगी जब नेपाल तराई और उत्तरी बिहार में विनाशलीला करते हुए भूकंप ने हमारे दरो-दीवार पर भी दस्तक देकर डरा दिया था। ३० सितम्बर, ९३ को आये मराठावाड़ा के प्रलयंकारी भूकंप को हमने सुना-पढ़ा और देशवासियों के ३० हजार मौतों और सैकड़ों करोड़ों की क्षति का मातम मनाया। विश्व में बहुतांश में लोग भूकंप की त्रासदी के प्रत्यक्षदर्शी नहीं भी हो सकते फिर भी विश्व में प्रतिदिन औसतन २५० भूकंप आते हैं जिनमें ९८% समुद्रीतलों में होते हैं और औसतन १००० भूकंप पृथ्वीतल पर प्रति वर्ष होते हैं जिनमें औसतन १४००० लोगों की मृत्यु है।

भूकंप की प्रक्रिया

सामान्य जिज्ञासा होती है कि भूकंप क हैं ? कारण क्या है ? कितने प्रकार के भूकंप के दो कारण तो प्राकृतिक हैं (१) ज्वालामुखी क्षेत्रों में पृथ्वी के खौलते हुए गैस, तरल अतिगर्म मैगमा के बाहर आन प्रक्रिया में उत्पन्न दबावों के कारण, (२) चट्टानों के विवर्तनिक स्थानांतरण की प्रक्रि उत्पन्न ऊर्जा के निःक्षेपण की विनाशकारी भूमिका जनित भूकंप और (३) मानवकृ अणुपरीक्षणों तथा बड़े-बड़े बांधों के फल के रूप में होनेवाला भूकंप।

प्रलयंकारी तबाही

'बिग-बैंग' के बाद पृथ्वी के अरबों-खरबों वर्ष पूर्व से दहकते शोले का गैसरूप ठंडा होकर वर्तमान स्वरूप में उपस्थित है पर भीतर पृथ्वी का गोला आज भी दहक रहा है, उबल रही है पृथ्वी, पृथ्वी अशांत है, अर्धविगलित चट्टानी परतों में संवहन की धाराएं प्रवाहित हो रही हैं और पिघले चट्टानों-गैसों के रूप में ऊपर की ओर उठना चाहती है तो ठंडे सतह के नीचे के धराखंडों (प्लेट्स) में गतिशीलता का सृजन होता है। चट्टानों (धराखंडों) के इस समान या विपरीत दिशाओं की गतिशीलता में अवरोध आने पर तनाव या खिंचाव के बल के कारण ऊर्जा की अकूत मात्रा का प्रलयंकारी प्राकट्य क्षणों-सेकंडों में तबाही का कारण बनता है। करीब दस हजार गुना ज्यादा होती है ऊर्जा क्षमता—जापान पर गिराये एक अणु बम की ऊर्जा के। चट्टानों के विवर्तनिक स्थानांतरण (टेक्यानिक मूवमेंट) में (१) चट्टानों की गति परस्पर विरोधी दिशाओं में होती है या (२) जब एक तरफ गतिशील चट्टान के ही दो टुकड़े हो जाए और फिर इन दो भागों की गति एक ही दिशा में अपेक्षाकृत रूप से एक दूसरे के अधिक हो सकती है। इस प्रक्रिया में भूकंपन होता है। चटकने-दरकने के फलस्वरूप दरार पड़ जाती है जिन्हें फाल्ट या 'भ्रंश' कहते हैं। हालांकि ये दरारें (फाल्ट) पृथ्वी की सतह के बहुत नीचे पड़ती है फिर भी कुछ एक भ्रंश सतह तक स्पष्टतया दृष्टिगोचर होती हैं जिनमें प्रसिद्ध हैं उत्तरी अमरीका के कैलिफोर्निया का सान ऐंड्रीस भ्रंश। सतह पर यह १२०० कि. मी. लंबे और ४०-५० कि. मी. चौड़ाई लिए इस भ्रंश के कारण ही सन १९०६ में सानफ्रांस्किो में आये भूकंप में २१ फुट के फांक के दोनों भाग चलते दिखायी दिये। हजारों लोग उस फांक में समा गये। ४ फरवरी १७९७ पेरू-इक्वेडर में धरती फटी, सैकड़ों लोग उस भ्रंश में समा गये और फिर पृथ्वी सतह सामान्य हो गयी। सीताजी के समाधि लेने की घटना-जैसी घटना।



धराखंडों के परस्पर गति के अवरोधों से उत्पन्न विपुल ऊर्जा जहां से निःसृत होती है उसे 'फोकस' कहते हैं—इस निःसृत ऊर्जा के द्वारा 'फोकस' के ठीक ऊपर अधिकतम अपघात होता है उसे 'भूकंप केंद्र' या 'एपीसेंटर' कहते हैं—यहां भूकंप की अधिकतम तीव्रता होती है। 'फोकस' से चारों ओर कंपन की तरंगें प्रसारित होती हैं—'सिसमिक तरंगें' जो 'एपीसेंटर' तक तो बड़ी तीव्रतम गति से पहुंच जाती हैं पर एपीसेंटर के विपरीत ध्रुव पर पृथ्वी के पूर्व अंतर्सघन भाग से गुजरने में २ मिनट लगा देती है। यही कारण है कि मराठवाड़ा में ४ बजकर ५ मिनट पर हुए भूकंप की तरंगों को अमरीका के सैनफ्रासिसको में ४ बजकर २६ मिनट पर नापा गया। सन १९३० में कैलिफोर्निया के डॉ. चार्ल्स फ्रांसिस रिक्टर ने एक भार और स्प्रिंग विधि से सिसमोग्राफ नामक यंत्र की रचना की जिस पर पृथ्वी के कंपन और आंतरिक गतिविधियों का चार्टग्राफ बनता रहता है। जिन लोगों ने हृदय रोगियों के ई. सी. जी. के चार्टग्राफ देखे हैं कमोबेश सिसमोग्राफ की इबारत भी वैसी ही होती है। सिसमोग्राफ की इकाई रिक्टर होती है। एक से लेकर ९ रिक्टर तक तीव्रता का अर्थ ९ गुणा ही नहीं होता बल्कि दस करोड़ गुणा होता है उसी प्रकार ६ रिक्टर से ८ रिक्टर की तीव्रता १०० गुणा मानी जाएगी। परिवर्द्धित मरकरी पैमाना भी तीव्रता मापन के लिए प्रयुक्त हो रहा है।

अमूमन पृथ्वी सतह के नीचे ६०० कि. मी. से ६० कि. मी. दूरी पर के भागों में हुई उथल-पुथल भूकंप का प्रभाव पैदा करता है, पर प्रायः विनाशकारी भूकंप केंद्र पृथ्वी सतह से १६ कि. मी. से ०५ कि. मी. तक होती है। जहां ज्वालामुखी फूटते हैं या नये पहाड़ बनने की प्रक्रियाएं होती हैं—भूकंपन होता रहता है।

पृथ्वी पर प्रशांत, एटलांटिक, उ. अमरीका, द. अमरीका, अफरीका, यूरेशिया तथा आस्ट्रेलिया धराखंडों में विभिन्न प्रकार के 'ट्रेंचेज' पाये जाते हैं। पूरी पृथ्वी पर समान रूप से भूकंप क्षेत्र हों ऐसी बातें नहीं हैं बल्कि प्रकट में उन संकरे-तंग सतत अंतर्सक्रिय क्षेत्रों को निरूपित किया गया है जो भूकंप प्रभावित हो सकते हैं। ऐसे बिंदु क्षेत्रों को जोड़ने से जो सर्पिल रेखाएं बनती हैं इन्हें ही 'ट्रेंचेज' कहते हैं। ऐसे कुछ मुख्य ट्रेंचेज प्रशांत धराखंडों के पेरू चीले ट्रेंचेज तथा एल्युशियन ट्रेंचेज, पूर्व में कुरील ट्रेंचेज और जापान ट्रेंचेज बहुत विनाशकारी हैं। अटलांटिक सागर के मध्य से यूरोप के आल्पस होती हुई पेशावर-हिमालय क्षेत्र से गुजरती हुई जावा ट्रेंच आगे आगे न्यूहाइब्राइड ट्रेंच के रूप में महान नागराज की तरह लेटी है। सभी टेंचेज को मानचित्र पर देखकर सहस्त्र शीशवाले शेषनाग की कल्पना का अर्थ साकार हो उठता है—

सशैलवनधात्रीणां यथाधारो हिनायकः।
सर्वेषां योगतंत्राणां तथाधारो हि कुंडली॥

(ह. यो. प्र. ३-१)

भूकंप के प्रकार

भूकंप को, असर के, कारणों के-रूपों में विभिन्न प्रकारों से हम देखते हैं। एक तो वैसा, जैसा अभी मराठवाड़ा में आयी हुई विपदा जहां भूकंप का विवर्तनिक रूप दृष्टिगोचर

हुआ-कोयना कुरूवाड़ी की ८०० कि. मी. लंबी ४०-५० कि. मी. चौड़ी दरार के कारण हुआ भूकंप (२) कहीं-कहीं भूमि का जलीय कीचड़ में बदल जाना—जैसा कि २३ जून, १५५६ को सियाचीन नगर पूरे का पूरा जलीय कीचड़ में समाहित हो गया और ८ लाख ३० हजार व्यक्तियों की मौतें हुईं। (३) कहीं भूकंप भूस्खलन के रूप में—जैसे १९७० में पेरू में हुए भूकंप में ७०,००० लोग मारे गये जिनमें २०,००० भूस्खलन के कारण मृत। (४) सूनामी तरंगों के रूप के भूकंप को बहुधा समुद्री तूफान के चक्रवात की लीला समझ लिया जाता है जबकि समुद्रतल की पहाड़ी श्रेणियों या ज्वालामुखियों से उठे भूकंपजनित ऊर्जा के कारण १०० फुट ऊंची उठी उत्ताल तरंगें ७५० से ८०० कि. मी. प्रतिघंटा की रफ़ार से भूखंडों पर हमला करती हैं जैसा कि १८९६ में जापान के २७,००० लोगों को जलसमाधि लेनी पड़ी। (५) अग्नि लीला के साथ आये हुए भूकंप का उदाहरण १९२३ के जापान का है जब भूकंप में एक लाख तैंतालीस हजार मौतें हुईं जिनमें ५६,००० लोगों की मौत भूकंप के कारण हुई आगजनी की आहुति बनी। (६) कहीं भूकंप के कारण पहाड़ निकल आते हैं या झील बन जाती है तो कभी आसाम में आये १५ अगस्त १९५९ के भूकंप जैसा, जिसमें ब्रह्मपुत्र की कई सहायक नदियां सूख गयीं। सन १९८४ का उत्तर बिहार भूकंप एवं ३० सितम्बर, ९३ के अभी आये मराठवाड़ा के भूकंप का कारण भारतीय धराखंड का उत्तर पूर्व की ओर तिब्बती धराखंड के नीचे ५ सेंटीमीटर प्रति वर्ष की गति से घुसते जाना है। अगर यही प्रक्रिया चलती रही तो १३५ लाख वर्षों में पूरा बिहार और उत्तर प्रदेश हिमालय में समा जाएगा।

भूकंप की भविष्यवाणी

क्या भूकंप की भविष्यवाणी संभव है ? विश्व के वैज्ञानिक अभी भूकंप की भविष्यवाणी कर सकने की तकनीकी क्षमता का सृजन नहीं कर पाये हैं। अतीत में चीन और भारत में बिल्लियों, कुत्तों, चूहों, सर्पों, कीड़े मकोड़ों की प्रवृत्तियों का अध्ययन करके भूकंप का अनुमान लगाया जा सकने का विज्ञान विकसित था। चीन तो २८ जून १९७५ में हुए भूकंप का अनुमान इन्हीं निरीक्षणों के कारण लगा सकने में सफल हुआ हालांकि तंशासा के इस प्रांत में फिर भी एक लाख लोगों की मौतें हुईं। कुत्तों और बिल्लियों के विचित्र व्यवहारों का निरीक्षण कर समय से चेतावनी दी गयी अन्यथा कई गुना ज्यादा जनहानि होती। १८ अप्रैल, १९०६ को सानफ्रांसिस्को के भूकंप की पूर्व रात्रि में शहर में कुत्ते रातभर बेचैन और भूंकते रहे। चिली के १८३५ के भूकंप के पहले 'सीगल' पक्षी उड़ चले और कुत्तों ने शहर छोड़ दिया, भारत में भूकंप से रक्षोपाय के लिए क्या करें ?—

भारत के पास उन्नत तकनीक रहते हुए भी किसी प्रकार की समन्वयात्मक योजना के सकारात्मक पहलुओं पर विचार न कर पाने के कारण भी हम काफी नुकसान उठाते रहे। सही है कि हमारे पास वी. एल. बी. आई. (वेरी लांग बेस लाईन इंटरफेरोमिटर) जैसे भूकंप की भविष्यवाणी करने के दावा करने वाले उपकरण अभी नहीं हैं। तीन फ्रांसीसी वैज्ञानिकों ने 'नेचर' पत्रिका (खंड ३६४, दिनांक ७-८-९३) 'सिंथेटिक एपरचर रडार' टेक्नीक (एस. ए.

आर.) से सफलतम भूकंपीय भविष्यवाणियों का दावा किया है और लैंडर्स कैलिफोर्निया में सफलतम परीक्षण भी किये हैं। श्री ए. के. लाल के अनुसार ई. आर. एस.-१ उपग्रह से भी भूकंप की भविष्यवाणी किये जाने में सफलता मिली है—पर भारत इन सुविधाओं को उपलब्ध कर पाने में कब तक सफल हो पाएगा ? दिक्कत तो यह है कि भूकंपीय दृष्टि से शांत क्षेत्रों—जैसे लाटूर मराठवाड़ा क्षेत्र का दक्षिण धराखंड या सन १९८९ में प्रभावित पूर्व आस्ट्रेलिया क्षेत्र—भूकंपीय दृष्टि से स्थिर क्षेत्र माने जाते रहने पर भी भूकंपग्रस्त हो गये जिससे अनिश्चितता की स्थिति का निर्माण हो गया है। बड़े-बड़े ढले हुए ब्लाक से 'प्रीकास्ट निर्माण तकनीक' पश्चिम से लेकर भारत देश तक निर्माण में अपनायी जा रही है पर आरमेनिया के दिसम्बर, १९८८ के भूकंप ने 'प्रीकास्ट' भवन तकनीक पर सोचने को मजबूर किया है अतः 'भूकंपावरोधी भवन प्रारूप और निर्माण' के लिए भारतीय मानक संस्थान द्वारा मानक (आई. एस. : ४३२६) परिवर्द्धित रूप में रुडकी विश्वविद्यालय के भूकंप तकनीक विभाग तथा सिविल इंजीनियरिंग विभाग की मदद से तैयार किया गया है। रुड़की विश्वविद्यालय द्वारा ३ दशकों से भूकंप अवरोधी डिजायनों-भवन निर्माण तकनीक पर शोध होकर आचार संहिता, सुझाव-कम लागत के उपाय उपलब्ध हैं पर भवन निर्माण की प्रक्रिया में खुद सरकारी तंत्रों द्वारा ही इनकी अनदेखी की जाती है। इस दिशा में ए. सी. ई. (एसोसिएशन ऑफ कंसल्टिंग इंजीनियर्स) के मसूबों को जनसमर्थन मिलना चाहिए। भवन निर्माण में सरकारी, गैरसरकारी या जन सामान्य के स्तरों पर रुड़की विश्वविद्यालय, काशी हि. वि. वि. द्वारा उपलब्ध कराये गये सस्ते रक्षोपायों को अपनाने के लिए आचार संहिता पर कड़ाई से पालन कराये जाने की आवश्यकता है। भारतीय हिंदू भवन निर्माण-वास्तुकला के शास्त्रीय प्रतिमान थे। भवन निर्माण के लिए वास्तुविदों को उनका अवगाहन करना श्रेयस्कर होगा।

मंदिर बनाने में अभी भी हम अपने ग्रंथों का सहारा लेकर योजनाबनाते हैं, तो परिणाम ठीक उतरते हैं। मराठवाड़ा के भूकंप क्षेत्रों में दो बड़े-बड़े शिव मंदिर ज्यों के त्यों खड़े रहे। का. हि. वि. वि. के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भूगर्भशास्त्र विभाग के वैज्ञानिकों, सिविल इंजीनियरिंग के पर्यावरण, भवन निर्माण, जल संसाधन से जुड़े वैज्ञानिकों के सहयोग को सरकार अपनी नीतिगत अवधारणाओं के निरूपण में स्थान दे। टिहरी-सरदार सरोवर—जैसी बांध-योजना पर पुनर्विचार किया जाए। प्रकृति के ईकोसिस्टम के साथ तादात्म्य और लयबद्ध होकर श्रीमद्‌भगवतगीता के एकादश अध्याय की प्रार्थना करें—

त्वमव्ययः शाश्वत धर्मगोप्ता,
सनातनास्त्वं पुरुषोमतो मे/१८
द्यावा पृथिव्योरिदमन्तरंहि,
व्याप्तं त्वैयकेन दिशश्च सर्वाः/२०
अनन्तवीर्यामित विक्रमस्त्वं,
सर्वं समाप्नोषि ततो षि सर्वः/४०

बी. २१/१०४ बिंद भवन
कमच्छा, वाराणसी-१

सीढ़ियां सफलता की

• डॉ. जमनालाल बायती

सामान्य गुण, दृढ़ इच्छा शक्ति, तत्परता, संजगता, शालीनता, उदारता, मधुर व्यवहार, कठोर परिश्रम, सही समय पर प्रशंसा तथा प्रसन्नता ही सफलता की ओर आगे बढ़ाते हैं । इन सब गुणों के साथ स्फूर्ति का अपना अलग ही प्रभाव पड़ता है । यदि आप इन बातों का पालन कर सकें, तो सफलता की जयमाला आपके गले में है ।

कहते हैं अच्छी शुरूआत आधी सफलता की सूचक है । किसी भी काम में फलता पाने के लिए योजनाबद्ध कार्य ष्पादन आवश्यक होता है । किसी भी कार्य योजना बनाते समय उस काम के संबंध में छले अनुभवों का लाभ उठाया जाना चाहिए । बार ऐसा पाया जाता है कि पिछली बार नये कों से, अनुभवों का लाभ उठाते हुए कार्य नना में संशोधन किया था, पर उन संशोधनों परिवर्तनों के अनुसार कार्य नहीं हो सका, वर्तन या संशोधन आपके ज्ञान में न हों, ऐसा नहीं है । यदि कोई कारण है, तो मात्र यही आप समय-समय पर मूल्यांकन नहीं कर तथा दूसरे स्थान पर दृढ़ निश्चय की कमी जोड़ी जा सकती है ।

दृढ़ निश्चय

आप जो भी निश्चय करें, उसका दृढ़ता से पालन कीजिए । आप इस बात के लिए भी पूरा-पूरा विश्वास विकसित कीजिए कि आप दूसरों के लिए, समाज के लिए उपयोगी व्यक्ति हैं तथा सफल जीवन के लिए, जीवन में आगे बढ़ने के लिए उद्यत हैं, निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रयत्नशील हैं । निश्चय के साथ इस विश्वास को लेकर आगे बढ़िए ।

आप सफलता पाने के सही पात्र हैं, अधिकारी हैं, ऐसी प्रतिज्ञा कर लीजिए । ऐसा करने से आपकी परिपक्वता, पूर्णता, सजगता, कार्य के प्रति निष्ठा तथा कार्य निष्पादन का ज्ञान स्पष्ट होता है । ऐसा करने से साथी लोगों को अनुभव होने लगता है कि आप जिज्ञासु बन

गये हैं, आप में प्रकाश प्रस्फुटित हो रहा है, आप अधिक सक्षम हो गये हैं। हर कोई जानना चाहता है कि आखिर सफलता पाने का राज क्या है ?

पैसा तथा सिफारिश

कई नौजवान या आज की पीढ़ी सोचती है कि सफलता उन्हीं को मिलती है, जिनके पास पैसा तथा सिफारिश (पुल एंड पुश) है। किसी काम की सफलता में न्यूनाधिक रूप से पैसा तथा सिफारिश का महत्त्वपूर्ण स्थान हो सकता है, पर मात्र इन्हीं से सफलता मिलती हो, ऐसा भी नहीं है। विचारकों का एक अन्य समूह ऐसा भी है, जो सफलता को अनिवार्यतः संतोष तथा धैर्य से जोड़ता है। वे आगे कहते हैं कि सभी कार्य सिफारिश से ही होते हों, ऐसा नहीं है। हो सकता है ५-७ या १० प्रतिशत कार्यों में सिफारिश मदद कर जाए, पर सभी जगह सभी कार्यों के लिए सिफारिश ही चाहिए, ऐसा नहीं है। इसका कारण भी वे बताते हैं कि कोई भी नियोक्ता अयोग्य व्यक्ति को कार्य देकर हानि नहीं उठाना चाहेगा, फिर चाहे निजी क्षेत्र हो या सार्वजनिक, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता।



सामान्य प्रयत्नों तथा औसत गुणों का महत्त्व

अंगरेज लेखक फैदम का यह कहना कितना सही तथा युक्तियुक्त है कि जीवन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां साधारण तरीकों, सामान्य प्रयत्नों तथा औसत गुणों, लक्षणों से प्राप्त होती हैं। इन उपलब्धियों के लिए दो गुणों—सामान्य ज्ञान तथा धैर्य का तुलनात्मक रूप से अधिक योगदान होता है। दूसरे शब्दों में इसे यों भी कहा जा सकता है कि असफल न होने का निश्चय करना ही सफलता प्राप्ति का महत्त्वपूर्ण लक्षण है, निश्चय के साथ सफलता के मार्ग पर आगे बढ़ना है। कई ऐसी और भी बातें या तथ्य हो सकते हैं, जिन्हें आप आनेवाले समय की योजना से जोड़ना चाहें।

घबराहट दूर रखिए

सफलता आपके लिए अनजानी ही रहेगी, यदि आप घबराहट या उद्विग्नताओं से घिरे ही रहे। यदि ऐसा ही है तो आप अपने कार्य में एकाग्र होकर मन नहीं लगा सकते। उद्विग्नताएं आपकी अधिकांश शक्ति का नाश करती हैं। आप अपने मुख्य काम के लिए बहुत ही कम, नाममात्र की शक्ति लगा पा रहे हैं, आप विचार कीजिए—ऐसी स्थिति में सफलता कैसे मिल सकती है। चिंताओं या उद्विग्नताओं से घिरा आदमी उस कार के समान है जो गेराज में बंद है तथा इंजन सड़क पर दौड़ रहा है, ईंधन जला

है, पर कार अपनी जगह से एक इंच भी
ो नहीं बढ़ी है । और भी, सड़क पर
नेवाला इंजन पर्यावरण तो प्रदूषित कर ही
है । उद्विग्नताओं, चिंताओं, घबराहटों से घिरे
मी की स्थिति भी यही है, वह शक्ति का
ोग तो कर रहा है पर सफलता प्राप्ति की
उसके प्रयत्न नहीं हो रहे हैं ।

चिंता छोड़िए

अधिक सोच-विचार की आदत न पालिए,
िक ही चिंताओं में न डूबिए, चिंता चिता से
धिक हानिकारक है । कार्य करने का
य करिए तथा कार्य आरंभ कर दीजिए ।
हट या उद्विग्नता से उबरने का यह एक ही
, कार्य आरंभ कर देना है, दूसरे शब्दों में
यक्ष रूप से इसे निराशाओं से निजात पाने
ाधन कहा जा सकता है ।
पने विचारों पर नियंत्रण रखिए । इस
्य तथ्य को मस्तिष्क में रखिए कि खराब
वांछित विचार निकृष्टतम रूप में बदल
ा है । यदि आप इन्हें अपने ध्येय वाक्य
क्ष्य बना लें तो आप सही मानिए कि
ता के मार्ग पर उपयुक्त दिशा में आगे बढ़
। अपने प्रयत्नों में शिथिलता न आने
ए ।

गुणों को पैने बनाइए

पने काम का स्तर सुधारिए । सफलता का
ही निष्पादित काम का उच्च स्तर बनाये
में है, अनिच्छा, लापरवाही से काम करने
ों सफलता मिली है ? कुछ अंशों में
ा आजकल कार्मिकों का आप्रवेशन
अपनी आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण देते
ई बार औद्योगिक संस्थानों में नवाचार या
विवेकीकरण से कार्मिकों की शिक्षा या ट्रेनिंग
आवश्यक हो जाती है । आप भी पत्राचार,
संध्या या प्रातःकालीन कक्षाएं, अवकाश में
शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अपने
संस्थान के लिए आवश्यक शिक्षा प्राप्त कर
अधिक योग्य कर्मचारी या अधिकारी बन सकते
हैं । इससे आपको अपना काम निष्पादन करने
के लिए नयी तकनीक या गुणों को विकसित
करने का अवसर मिलेगा ।

काम को सम्मान दीजिए

यदि आप ही अपने काम को हेय दृष्टि से देखेंगे, तो उसके स्तर का सुधार असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है । जो आप करते हैं, जो सोचते हैं, वह आपके चेहरे से स्पष्ट होता है । जिस भांति आप काम निपटाते हैं, वह आपके अंतर्मन को स्पष्ट करता है । काम आपको नापसंद है, इस दृष्टि से विचार ही न कीजिए, काम ही आपकी प्रतिभा का सही प्रदर्शन है, यही सोचकर काम निपटाइए । अंगरेजी के प्रसिद्ध निबंध-लेखक विलियम हेजलिट ने, 'इंडियन जगलर' निबंध में एक जगह लिखा है—"मैं जीवनभर क्या करता रहा ? क्या मैं आलसी था ? या मैं श्रम तथा दर्द का बहाना बनाता रहा ? क्या कहीं कोई एक भी ऐसी चीज नहीं है जो मेरी पूर्णता की, योग्यता की द्योतक हो तथा दूसरे उसकी आलोचना न कर सकें, उसमें दोष न निकाल सकें ।"

दृढ़ निश्चय कीजिए

आप भी हेजलिट के इन वाक्यों को दोहराइए, इनका सच्चे मन से उत्तर दीजिए तथा अपना मूल्यांकन कीजिए कि आप अपने काम के निष्पादन में सफल हैं या नहीं । विश्व के

महान आदमी, जो सफलता के शिखरों तक पहुंचे, स्वभाव से भीरू, कामचोर या पलायनवादी नहीं थे। सफलता उनकी गोद में आकाश से आकर नहीं गिर पड़ी, उन्होंने इसके लिए काम किया, प्रयत्न किया। 'जहां चाह वहां राह' आश्चर्यजनक कहावत है। यदि आप किसी काम को करने के लिए कमर कस लें तो कोई कारण नहीं कि काम पूरा न हो। हेलन केलर इसी राय की पोषक थी।

अपने प्रयत्नों को दोहराइए

टॉल्सटाय का नाम प्रायः एक लेखक के रूप में स्मरण किया जाता है, पर बहुत कम लोग जानते हैं कि उन्होंने अपनी रचना की पांडुलिपि को प्रकाशन के पूर्व छह बार संशोधित किया। सेमुएल जॉनसन किसी एक शब्द के संबंध में आश्वस्त होने के लिए पुस्तकालय की आधी पुस्तकें छान मारते थे। नीत्से ने अपनी पांडुलिपि में १५ बार सुधार किया, स्पेंसर ने 'दर्शन की विधियां' पुस्तक छह बार लिखी। ये



सभी ख्याति प्राप्त लेखक थे, किसी को भी इनसे ईर्ष्या हो सकती है। प्रयत्न करीब-करीब सभी लोग करते हैं पर अभूतपूर्व सफलता कुछ ही लोगों को मिलती है। कठोर तथा सतत परिश्रम ही सफलता का मूल्य है।

सहकर्मियों के साथ समायोजन कीजिए

अन्य लोगों के समान ही आपका जीवन भी आशा-निराशाओं, सफलताओं-असफलताओं, तथा कड़वे-मीठे अनुभवों से भरा हुआ है। किसी भी काम में दूसरों की सहायता लेना सामान्य बात हो गयी है। यदि आप यह जान लें कि दूसरों के साथ आप किस प्रकार सुविधा से समरसतापूर्वक रह सकते हैं, तो आप मान सकते हैं कि आप सफलता के मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं।

सफलता के लिए मौलिक तत्त्व

सफलता पाने के लिए सदैव दो बुनियादी बातें अपने दिमाग में रखिए। उनमें से प्रथम है—दूसरों को कड़वा लगनेवाला न बोलना, यदि आप कर सकें तो कटु बोलने से बचिए। और, दूसरी बात है—उपयुक्त समय पर प्रशंसा करने से न चूकिए।

आलोचना रचनात्मक हो

यदि आपकी चुगली करने की आदत है—इसे छोड़िए, यह निस्संदेह हानिकारक है। इन शब्दों को याद कीजिए कि कोई मेरे लिए भी ऐसा कहे तो मुझे कैसा लगेगा? यदि आप आलोचना ही करना चाहें तो स्वीकार्य शब्दों में भाषा में, जो कटु न हो, अप्रसन्नता सूचक न कीजिए। आपको सजग रहकर नम्रता बरतते हुए शालीन शब्दों का ही प्रयोग करना है। आप आलोचना तो कीजिए, पर किसी को ह

पहुंचाइए, आपकी आलोचना रचनात्मक हो, लोचना सुननेवाला, आलोचना सुनकर सुधार तत्पर बने. इस दृष्टि से आपकी आलोचना भावात्मक भी हो सकती है। आपकी लोचना से किसी की प्रतिष्ठा या साख कूल रूप से प्रभावित नहीं होनी चाहिए। कर्मी के व्यक्तित्व का सम्मान कीजिए, उसके वहार की उपयुक्त समय पर सराहना जिए।

सजगता के साथ प्रशंसा कीजिए

प्रशंसा क्या नहीं करवा लेती ? प्रशंसा से वहार में मिश्री घुल जाती है, इससे मानवीय धों में मधुरता आती है। एक सफल दमी जानता है कि कब कितनी प्रशंसा की जाए, कब शुभकामनाएं व्यक्त की जाएं। यदि आप प्रशंसा में अति उदारता बरतें या सीमाहीन प्रशंसा करें, तो चापलूसी कही जाती है—इससे बचना चाहिए, ऐसा करना हानिकारक है।

सामान्य गुण, दृढ़ इच्छा शक्ति, तत्परता, सजगता, शालीनता, उदारता, मधुर व्यवहार, कठोर परिश्रम, सही समय पर प्रशंसा तथा प्रसन्नता ही सफलता की ओर आगे बढ़ाते हैं। इन सब गुणों के साथ स्फूर्ति का अपना अलग ही प्रभाव पड़ता है। यदि आप इन बातों का पालन कर सकें, तो सफलता की जयमाला आपके गले में है।

—७/१८२, मुक्ताप्रसाद नगर,
बीकानेर-४ (राजस्थान)

कृत्रिम-मांसपेशी का आविष्कार

मांसपेशियों का शरीर में एक जाल-सा बिछा रहता है। युवा शरीर की त्वचा और बुढ़ापे की त्वचा में अंतर, मांसपेशियों के क्षरण या उनके सिकुड़ जाने के कारण नजर आता है। कभी-कभी मांसपेशियों में खराबी आ जाने के कारण ही शरीर में अन्य कई प्रकार के रोगों का जन्म हो जाता है।

जापान में टोकियो स्थित इबारकी-विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक कृत्रिम मांसपेशी तैयार करने में सफलता प्राप्त की है। यह मांसपेशी प्राकृतिक मांसपेशी का स्थान ले सकती है तथा इस पर भरोसा भी किया जा सकता है। फिलहाल यह कृत्रिम-पेशी बहुत ही कम गति से काम करती है, और उसे हल्के विद्युत-आवेगों से काम करने के लिए उत्प्रेरित किया जाता है। वैज्ञानिक लोग इस बात का प्रयास कर रहे हैं, कि यह मांसपेशी, प्राकृतिक मांसपेशी की तरह काम करने लग जाए। इस बात का भी प्रयास किया जा रहा है कि कोई ऐसी विधि खोज निकाली जाए, जो रासायनिक-ऊर्जा को सीधे ही गतिज-ऊर्जा में बदल दे।

इस प्रकार की कृत्रिम-मांसपेशी तैयार करने में विशेष प्रकार की पौलीमर जैल का उपयोग किया गया है, जिसे 'पी. एम. ए. ए.' कहते हैं। इस पदार्थ में संकुचन तभी होता है जब इसे 'विद्युत आवेश' दिया जाता है। जापानी वैज्ञानिक 'पारगम्य-झिल्ली' के निर्माण में भी लगे हुए हैं, जो १५ वोल्ट का आवेग देने पर तुरत ही सिकुड़ जाए, और उसके सूक्ष्म-रंध्रों में द्रव्य तुरंत ही सोख लिया जाए।

वैज्ञानिकों का अभिमत है कि यदि इस कार्य में सफलता मिल गयी तो चिकित्सा के क्षेत्र में उल्लेखनीय क्रांति आ जाएगी।

ऋषि मोहन श्रीवास्तव



नादे अली, गुना

● **यू. एन. एच. सी. आर. का पूर्ण रूप क्या है ?**

□ यूनाइटेड नेशंस हाई कमिश्नर फार रिफ्यूजीज (संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त) । इसका मुख्यालय जेनेवा में है ।

सरोज कुमार दीक्षित, लखनऊ

● **चश्मे का आविष्कार कब हुआ ?**

□ रॉजर बेकन (सन १२१४-९२) एक विद्वान अंगरेज भिक्षु था, जिसने सबसे पहले (सन १२६६ में) लिखे अक्षरों को बड़े आकार में देखने के लिए शीशे के टुकड़े का उपयोग किया था । किंतु यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि चश्मे का आविष्कार किसने और कब किया था ।

रामेश्वर वर्णवाल, झुमरी तिलैया

● **वैटिकन सिटी कहां है और क्यों प्रसिद्ध है ?**

□ इटली की राजधानी रोम के भीतर ही लगभग ४४ हैक्टेयर (१०९ एकड़) क्षेत्र का यह एक स्वाधीन राज्य है । यह नगर रोमन कैथलिक ईसाइयों के गिरजे का पवित्र स्थल माना जाता है । कैथलिक ईसाइयों के धर्म गुरु पोप यहां रहते हैं । समस्त ईसाई संसार को फतवे यहां से ही जारी किये जाते थे । पोप पायस एकादश और इटली के तानाशाह मुसोलिनी के बीच सन १९२९ में हुए एक करार के अंतर्गत इसे अलग राज्य घोषित किया गया था । इसकी अपनी सेना, पुलिस, राजनयिक सेवा, सिक्के, डाक-टिकिटें, रेडियो स्टेशन आदि हैं । इसकी आबादी लगभग एक हजार है ।

वैभव भारतीय, रतलाम

● **विश्व का सबसे छोटा देश कौन-सा है ?**

□ वैटिकन सिटी (विस्तृत विवरण उपर्युक्त प्रश्नोत्तर में देखें) ।

दीपक कुमार सिंह, गया

● **भारतीय राज्यों में राज्यपाल अन्य राज्यों के होते हैं, क्या यह एक सांविधानिक नियम है ?**

□ नहीं यह एक परंपरा है । पचास के दशक में एच. एन. मुखर्जी अनेक वर्षों तक पश्चिम बंगाल के राज्यपाल रह चुके थे । हाल में जनरल मल्होत्रा को पंजाब का राज्यपाल बनाया गया था ।

साजिद अली अंसारी, भदोही (उ. प्र.)

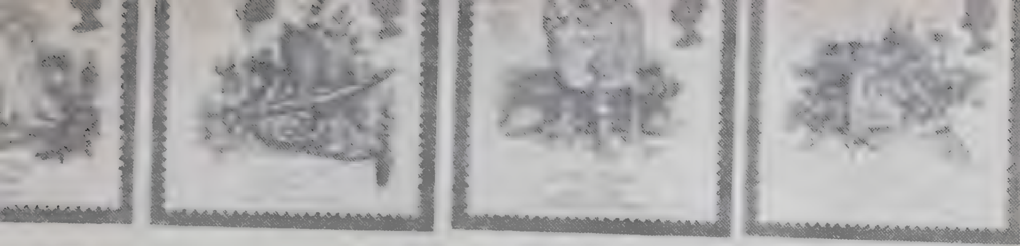
● **ताश के खेल का आविष्कार किसने किया था ?**

□ इसकी शुरुआत कहां हुई, इस बारे मे मतैक्य नहीं है । कुछ इतिहासकारों का विश्वास है कि ताश सबसे पहले मिस्र में खेले गये थे, किंतु अन्य लोगों की मान्यता है कि यह सबसे पहले भारत या चीन में खेले गये थे । यूरोप में यह तेरहवीं शताब्दी में खेला जाता था, इसके प्रमाण मिलते है । तब इसमे केवल २२ पत्ते होते थे । बाद मे यह ७८ पत्तों का खेल हो गया, और अंततः फ्रांसीसियों ने इसके पत्तों की संख्या घटाकर ५२ कर दी, जो अब संसारभर में प्रचलित है ।

उदयभानु यादव, राजारामपुर (बस्ती)

● **डंकेल प्रस्ताव क्या है ? इतना विवाद क्यों है ?**

□ आलोचकों का मानना है कि इससे बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा शोषण बढ़ जाएगा और दवाएं आदि महंगी बिकेंगी । विस्तृत लेख 'कादम्बिनी' के फरवरी अंक में पढ़ें ।



चतुर्वेदी, ग्वालियर

ंगली जंतुओं के विलुप्त होने की समस्या शों में क्यों नहीं ?

यह समस्या विश्वव्यापी है । ब्रिटेन द्वारा जारी डाक-टिकटों से स्पष्ट है कि वन्य प्राणी वहां विलुप्त हो रहे हैं तथा उन्हें बचाने के प्रयास जा रहे हैं । घोंसले बनाने के लिए उपयुक्त घटने के कारण उल्लुओं की संख्या कम ही है । इसी प्रकार जंगली बिल्लियों तथा विशेष प्रकार के मेंढकों की नस्ल त्तप्राय है ।

स जैन, इंदौर

गला भारत महोत्सव कहां होगा ?

मई-जून १९९४ में भारत महोत्सव का जन चीन में किया जाएगा ।

व कुमार राजपूत, बरेली

पाल के प्रसिद्ध हिंदू मंदिर कौन से हैं ?

पाल के अनेक नगरों तथा गांवों में देवी शंकर के मंदिर स्थित हैं जिनमें अनेक सद्ध हैं, किंतु काठमांडू में पशुपतिनाथ का मंदिर और उसी के निकट वागमती नदी के र गुह्येश्वरी देवी का मंदिर प्रसिद्धतम हैं । र सती के दोनों जनु (घुटने) गिरे थे । क्तिपीठ है ।

द्र सेमवाल, चमोली

न की कितनी प्रजातियां हैं, तथा उनके जंतु क नाम क्या है ?

ल मूलतया सिटासिया (जंतु वैज्ञानिक वर्ग का स्तनधारी जीव है । इसके दो हैं मिस्टीसिटे-१२ प्रजातियां तथा टोसिट-८० प्रजातियां ।

उमेश कुमार श्रीवास्तव, सिद्धार्थ नगर (उ.प्र.); दगडू कदम तथा धर्मेंद्र शर्मा सेंधवा (म. प्र.)

● फैक्स क्या है तथा किस प्रकार काम करता है ?

□ फैक्सिमिल का संक्षिप्त नाम 'फैक्स' है । संचार की इस प्रौद्योगिकी के द्वारा किसी भी हस्तलिखित या मुद्रित दस्तावेज अथवा चित्र को टेलीफोन नेटवर्क के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजा जा सकता है । प्राप्त करनेवाले स्थान पर, टेलीफोन जितनी तत्परता से, मूल प्रति की फोटोकापी पहुंच जाती है । जिस प्रपत्र को भेजना होता है उसे फैक्स मशीन पर रखकर प्राप्त करनेवाले स्थान के कोड नंबर का बटन दबाया जाता है । इसके बाद फैक्स मशीन इलेक्ट्रोस्टैट यंत्र के प्रकाशीय स्कैनर-जैसे उपकरण से निरीक्षण करने के बाद यंत्र कंपरेटर के सहयोग से उस प्रपत्र पर मुद्रित या हस्तलिखित जानकारी को विद्युत संकेतों में परिवर्तित कर देती है । इन विद्युत संकेतों को फिर टेलीफोन लाइन के द्वारा गंतव्य स्थान को भेजा जाता है जहां एक अन्य मशीन इन संकेतों को मूलरूप में परिवर्तित करके प्रिंटर पर छाप देती है ।

जगत डैनी, चमोली (गढ़वाल)

● चार्ली चैपलिन कौन था और क्यों प्रसिद्ध है ?

□ चार्ली चैपलिन (सन १८८९-१९७७) एक ब्रिटिश फिल्म अभिनेता था । उसका असली नाम चार्ल्स चैपलिन था जिसे प्यार से लोग चार्ली कहने लगे थे । उसे अमरीका में कस्टोन स्टूडियो ने, सन १९१३ में जब वह उस देश

का, फ्रेड कार्नो की पैंटोमाइन (मूकाभिनय) कंपनी के साथ, दौरा कर रहा था, एक भूमिका के लिए चुना था। वह एक हास्य कलाकार था और उसे अपने प्रथम फिल्म अभिनय से ही लोकप्रियता मिल गयी थी। इसके बाद सन १९१८ से उसने अपनी ही फिल्में बनानी शुरू कर दी थीं। उसे सन १९७६ में ऑस्कर पुरस्कार मिला तथा सेन १९७९ में उसे सर की उपाधि दी गयी। कम्युनिस्ट समर्थक होने का आरोप लगाये जाने के बाद सन १९५२ से वह स्विट्जरलैंड में रहने लगा था।

भोलादत्त जोशी, पुणे; पूर्णचंद्र गुभाजू, रांझा (नेपाल); प्रफुल्ल कानूनगो, उज्जैन

● **ब्रिटिश शासनकाल में भारत के गवर्नर-जनरल और वायसराय कौन-कौन हुए ?**

☐ गवर्नर-जनरल : वॉरेन हेस्टिंग्स (१७७४-८५), लार्ड कॉर्नवालिस, (१७८६-९३), सर जॉन शोर (१७९३-९८), लार्ड वेलजली (१७९८-१८०५), लार्ड कॉर्नवालिस (१८०५-०७), लार्ड मिंटो (१८०७-१३), लार्ड हेस्टिंग्स (१८१३-२३), लार्ड ऐमर्हस्ट (१८२३-२८), लार्ड विलियम बेंटिक (१८२८-३५), लार्ड ऑकलैंड (१८३५-४४), लार्ड हार्डिंग (१८४४-४८), लार्ड डलहौजी (१८४८-५६), लार्ड कैनिंग (१८५६-५८); वायसराय : लार्ड कैनिंग (१८५८-६२), लार्ड एलिगन (१८६२-६३) लार्ड लॉरेंस (१८६३-६९), लार्ड मेयो (१८६९-७२), लार्ड नार्थब्रुक (१८७२-७६), लार्ड लिटन (१८७६-८०), लार्ड रिपन (१८८०-८४), लार्ड डफरिन (१८८४-८८), लार्ड लैंसडाउन (१८८८-९४), लार्ड एलिगन (द्वितीय) (१८९४-९९), लार्ड कर्जन (१८९९-१९०५), लार्ड मिंटो (१९०५-१०), लार्ड हार्डिंज (१९१०-१६), लार्ड चेम्सफोर्ड (१९१६-२०), लार्ड रेडिंग (१९२१-२६), लार्ड अर्विन (१९२६-३१), लार्ड विलिंग्डन (१९३१-३६), लार्ड लिनलिथ गो (१९३६-४३), लार्ड वैवेल (१९४३-४७), और लार्ड लुई माउंटबैटेन (१९४७-मार्च १३ से अगस्त १४ तक)।

(स्रोत : 'वायसरायज ऐंड गवर्नर्स-जनरल ऑव इंडिया', लेखक, वाइकाउंट मर्सी—१९४९)।

दीपक साहू, कटक

● **पांडवों ने कौन से पांच 'पत' कौरवों से मांगे थे ?**

☐ इंद्रपत (इंद्रप्रस्थ), पानीपत, सोनीपत, तिलपत और बागपत।

सत्येंद्रपाल सिंह, झांसी

● **बुकर पुरस्कार किस देश का है ?**

☐ यह ब्रिटेन का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार है। इसकी पुरस्कार राशि अब २० हजार पौंड है।

चलते-चलते

● **मच्छर काटता है तो आदमी को दर्द पहुंचता है, क्या मच्छर अपनी प्रसन्नता के लिए काटते हैं ?**

☐ केवल मादा मच्छर के काटने से ही दर्द होता है और दर्द दोनों को मिलता है— आदमी को और मच्छर को, क्योंकि मच्छर का कांटा आदमी के शरीर में टूटकर रह जाता है। पुरुष मच्छर बुद्धिमान होता है, वह केवल भुन-भुनाकर रह जाता है।

—सूत्रधार

□ □

वगढ़ का प्राचीन दशावतार मंदिर अपनी सुंदर मूर्तियों के कारण र्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है । पास में स्थित देवगढ़ पर्वत र जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां भी हद कलात्मक हैं ।

□ □

देवों की नगरी देवगढ़

● जयकिशन शर्मा



उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित देवगढ़ का पाषाण निर्मित दशावतार मंदिर पुरातत्वविदों के अनुसार उत्तर की पंचायतन शैली का सर्वाधिक प्राचीन एवं अनोखा मंदिर है । चौथी शताब्दी में निर्मित इस मंदिर की दीवारों में स्थापित विष्णु की मूर्तियां देश-विदेश के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं । दशावतार मंदिर के पास ही चार किलोमीटर लंबी और एक किलोमीटर चौड़ी एक पहाड़ी है, जो इस क्षेत्र में देवगढ़ पर्वत के नाम से प्रसिद्ध है ।

उत्तर प्रदेश के जनपद मुख्यालय ललितपुर से जब देवगढ़ के लिए प्रस्थान करते हैं, तो दक्षिण-पश्चिम में तैंतीस किलोमीटर की दूरी पर दांये हाथ की ओर बेतवा नदी की तलहटी में बसा लगभग छह सौ व्यक्तियों की आबादीवाला छोटा-सा गांव देवगढ़ मिलता है । वहीं पर लाल पत्थरों से निर्मित दशावतार मंदिर स्थित है । चौथी शताब्दी में निर्मित यह मंदिर आज भी अपने पुराने स्वरूप में ज्यों का त्यों खड़ा हुआ है । सात एकड़ भूमि पर टूटी-फूटी चारदीवारी से घिरा हुआ यह मंदिर लाल बलुआ पत्थरों को आपस में जोड़कर बनाया गया है । करीब तीस फुट लंबाई और तीस फुट चौड़ाई वाले क्षेत्र में पांच फुट ऊंचे चबूतरे पर निर्मित इस मंदिर की दक्षिण दिशा की दीवार पर विष्णु की शेषशायी मूर्ति, पूर्वी दिशा की दीवार पर नर-नारायण की मूर्ति व उत्तर दिशा की दीवार पर विष्णु को नागराज से हाथी की रक्षा करते हुए दर्शाया गया है ।

पुरातत्वविदों के अनुसार इस तरह की सुंदर मूर्तियां विश्व के कुछ गिने-चुने स्थानों पर ही



देखने को मिलती हैं । भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा सन १९५० में इस मंदिर का बीमा १ करोड़ ७५ लाख रुपये का कराया गया था । वर्तमान में यह बीमा पालिसी समाप्त हो गयी है, ऐसा पुरातत्व विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों का मानना है । इसी मंदिर के परिसर में एक संग्रहालय का निर्माण भी केंद्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा सन १९७२ में किया गया । यह संग्रहालय पर्यटकों के लिए सदैव खुला रहता है । यहां पर तिहत्तर प्राचीन मूर्तियां देखने योग्य हैं ।

पर्वत पर जैन मूर्तियां

देवगढ़ पर्वत पर जैन तीर्थकरों की मूर्तिया



ही मूर्तियां हैं । दीवारों में चुनी अथवा जमीन पर पड़ी हुई । यहां पर जैन संप्रदायों के इकतालिस छोटे-बड़े मंदिर हैं । आदिनाथ के मंदिर के ठीक सामने स्थित एक बरामदे में लगा एक स्तंभ यहां आनेवाले पर्यटकों में सर्वाधिक चर्चा का विषय बना रहता है । इस स्तंभ में १८ भाषाओंवाले शिलालेख का वर्णन मिलता है ।

देवगढ़ किले के दक्षिणी-पश्चिमी कोने पर प्राचीन वराह मंदिर स्थित है । लेकिन इस मंदिर के निर्माण के समय के विषय में पुरातत्व विशेषज्ञ अभी तक किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सके हैं । इस मंदिर के विषय में पुरातत्वविदों का मत है कि इसका निर्माण गुप्तकाल के बाद हुआ है क्योंकि गुप्तकाल में मंदिरों के ऊपर शिखर नहीं बनाये जाते थे । इस मंदिर में शिखर होने के चिह्न स्पष्ट हैं और उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इसका शिखर खंडित हो गया है ।

—ठंडी सड़क, न. पा. भवन
शिवपुरी (म. प्र.
पिन-४७३५५



वतार मंदिर की
दिशा में स्थित
णु की प्रतिमा



दशावतार मंदिर की
दक्षिण दिशा में स्थित
विष्णु की शेषशायी
मूर्ति



देवगढ पर्वत पर
स्थित एक जैन मंदिर

चित्र : जयकिशन शर्मा



कवियों की उपमाओं में पलाश के फूल

● डॉ. राम लखन सिंह सिकरवार

माघ मास के अंत में शीत ऋतु अपनी वृद्धावस्था से गुजरती हुई अंतिम सांसें भरने लगती है। वहीं वसंत ऋतु धीरे-धीरे अपने यौवनावस्था की दहलीज पर दस्तक देने लगती है।

ऋतुराज वसंत के स्वागत का मुख्य श्रेय

खिला है टेसू हंसते हैं रंग



लाल रंग से आवृत्त पलाश वृक्ष को ही जाता है ।

हिंदी में पलाश को ढाक, टेसू, केसू तथा छौला, बंगाली तथा मराठी में पलस, गुजराती में खाखरी, कन्नड़ में मुतुगा, उड़िया में पोरासू, तेलगू में मोदूक, तमिल में पिलासू, मलयालम में मुरक्कच्यूम तथा संस्कृत में पलाश, किंशुक एवं लैटिन में **ब्यूटिआ मोनोस्पर्मा** कहते हैं । इसका **ब्यूटिआ** नाम १८वीं सदी के वर्गिकी के एक संरक्षक 'ब्यूट के अर्ल' जोहन की स्मृति में रखा गया था । **मोनोस्पर्मा** ग्रीक भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है— एक बीजवाला ।

संस्कृत भाषा का शब्द पलाश दो शब्दों के मेल से बना है— पल और अश । पल का अर्थ है मांस और अश का अर्थ है खाना । अर्थात पलाश का अर्थ हुआ ऐसा वृक्ष जिसने मांस खा रखा है । खिले हुए लाल फूलों से लदे हुए पलाश की उपमा संस्कृत लेखकों ने इस प्रकार दी है कि मानो सारा वृक्ष मांस के लाल लोथड़ों से भरा पड़ा हो ।

पलं मांसम् अश्नाति इति पलाशः ।

—भानुजी दीक्षित

पलाश एक छोटे मध्यम आकार का बारह से पंद्रह मीटर ऊंचा वृक्ष होता है । इसका तना गांठदार तथा छाल मोटी, राख के रंग की होती है । नयी शाखाएं तथा पत्ते घने रोंओं या रोमिकाओं से आवृत्त होते हैं । पत्ते हरे, मोटे, चौड़े तथा तीन पर्णकों में विभक्त रहते हैं, जिनमें से पार्श्व के दो पत्ते तो एक-दूसरे के आमने-सामने लगे रहते हैं और तीसरा सिरे पर लगा रहता है, जो अपेक्षाकृत बड़ा तथा लंबाई-चौड़ाई में बराबर होता है । सरदियों में पत्ते प्रायः गिर पड़ते हैं । टेढ़ी-मेढ़ी शाखाएं नंगी खड़ी रहती हैं ।

'जंगल की ज्वाला' है पलाश

फरवरी के अंत में पत्र-विहीन पलाश वृक्ष की नंगी शाखाओं पर काले रंग की पुष्प-कलिकाओं के गुच्छे प्रकट होने लगते हैं । यह वसंत ऋतु के आगमन का संकेत होता है । फालुन मास में जब सारा वृक्ष नारंगी लाल रंग के उज्ज्वल फूलों से आवृत्त हो जाता है, तो ऐसा प्रतीत होता है कि मानो प्रकृति के होलिकोत्सव में सबसे मुख्य अतिथि यही हो ।

पलाश वृक्षों को श्रीराम ने जब फूलों से लदा हुआ देखा, तो वे उन्हें अत्यंत रमणीय वृक्ष भी सीता की विरहाग्नि में संतप्त लाल अंगारों से दीख पड़े ।

इन दिनों पलाश का जंगल तो ऐसा प्रतीत होता है मानो सारा जंगल ही आग की लपटों में धधक रहा हो । इसे 'जंगल की ज्वाला' (फ्लेम ऑफ द फोरेस्ट) भी कहते है ।

फूल गहरे लाल रंग के होते हैं, जो गुच्छों में लगे होते हैं और तोते की चोंच के समान दिखायी देते हैं, इसलिए पलाश को संस्कृत में 'किंशुक' (क्या यह तोता है ?) कहते हैं ।

आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण में, कविगुरु कालिदास ने रघुवंश, कुमार संभव तथा ऋतुसंहार में, पलाश पुष्पों के रक्तिम सौंदर्य की भरपूर प्रशंसा की है । वाण ने कादम्बरी में, जयदेव ने गीतगोविंद में, भर्तृहरि ने वैराग्य

शतक में, माघ ने शिशुपाल वध में, भारवी ने किरातार्जुनीय में तथा राजशेखर ने विद्धशाल भज्जिका में पलाश का वर्णन किया है ।

संस्कृत कवियों ने पलाश पुष्पों के रक्तिम सौंदर्य की उपमा अपने नाटकों के नायक एवं नायिकाओं के वियोग से की है ।

आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण में लिखा है कि पंपा के किनारे खिले हुए पलाश वृक्षों में श्रीराम की आंखें उलझ जाती हैं, वे समझ रहे हैं कि ये तो बिलकुल सीता की आंखों के समान ही हैं—



पद्मकोशपलाशानि द्रष्टुं दृष्टिर्हि मन्यते ।
सीताया नेत्र कोशाभ्यां सदृशानीति लक्ष्मण ।।

—रामायण, किष्किधा काड, सर्ग १, ७१

पंपा के पास पहाड़ पर झड़े हुए पत्तांवाले पलाश वृक्षों को श्रीराम ने जब फूलों मे लदा हुआ देखा, तो वे उन्हें अत्यंत रमणीय पेड़ भी सीता की विरहाग्नि में संतप्त लाल अंगारों के समान दीख पड़े—

गिरिप्रस्थास्तु सौमित्रे सर्वतः संप्रपुष्पितैः ।
निष्पत्रै : सर्वतो रम्यै : प्रदीप्ता इव किंशुकै : ।।

—रामायण, किष्किंधा कांड, सर्ग १, ७५

पुष्पित पलाश वृक्ष के बारे में कालिदास की कल्पना बहुत ही सरस है । वे लिखते हैं—वसंत काल में पवन के झोंके से हिलती हुई पलाश के जिन वृक्षों की फूलों के भार से झुकी हुई शाखाएं धधकती हुई आग की लपटों के समान दिखायी देती हैं, ऐसे पलाश वनों से ढकी हुई धरती ऐसी लग रही है, मानो लाल साड़ी में सजी हुई कोई नव-वधू हो—

आदीप्त वहिन सदृशैर्मरूताऽवधूतैः
सर्वत्र किंशुकवनै : कुसुमावनम्रै : ।
सद्यो वसंतसमयेन समचितेयं
रक्तांशुका नववधुरिव भातिभूमिः ।।

—ऋतुसंहार, सर्ग ६, २१

वसंत के आने से पलाश में भी कलियां फूट निकलीं । वे ऐसी जान पड़ती थीं कि काम के आवेश में लाज छोड़कर किसी कामिनी ने अपनी प्रियतम के शरीर पर अपने नाखूनों से घाव कर दिये हों—

उपहितं शिशिरापगमश्रिया मुकुलजालमशोभत किंशुके ।
प्रणयिनीव नखक्षतमंडनं प्रमदया मदयापितलज्जया ।।

—रघुवंश, सर्ग ९, ३१

वसंत के आते ही दूज के चांद के समान टेढ़े लाल-लाल अधखिले पलाश के फूल वन भूमि में फैले हुए ऐसे लग रहे थे, मानो कि वसंत ने वनस्थलियों के साथ विहार करके उन पर अपने नाखूनों से नये चिह्न बना दिये हों—

बालेंदुवक्त्राण्यविकास भावाद् बभु :
पलाशान्यतिलोहितानि ।
सद्यो बसंतेन समागतानां नखक्षतानीव
वनस्थलीनाम् ।।

—कुमार संभव, सर्ग ३, २८

अपनी प्रेमिकाओं के मुखड़ों पर रीझे हुए प्रेमियों के हृदय को तोते की चोंच के समान लाल टेसू के फूलों ने ही कुछ कम जला रखा था कि यह कोयल भी अपनी मीठी कूक सुना-सुनाकर उन्हें और मार डालने पर उतारू हो रही है--

किं किंशुकै शुकमुखच्छविभिर्न भिन्नं
किं कर्णिकारकुसुमैर्न कृतं नु दग्धम् ।
यत्कोकिलः पुनरयं मधुरैर्वचोभिर्यूनां
मनः शुवदना निहितं निहंति ।।

—ऋतु संहार, सर्ग ६, २२

जिसके आम के सुंदर बौर ही वाण हैं, टेसू ही धनुष हैं, भौरों की पंक्ति ही डोरी है, मलयाचल से आया हुआ पवन ही मतवाला सारथी है, कोयल ही गायक है और शरीर न रहते हुए भी जिसने संसार को जीत लिया है, वह कामदेव वसंत के साथ आपका कल्याण करे--

आम्री मंजुल मंजरी वरशरः सत्किंशुकं यद्धनुः
ज्या यस्यालिकुलं कलंकरहितं छत्रं सितांशु सितम् ।
मत्ते भो मलयानिलः परभृता यद्वंदिनो लोकजित्
सोऽयं वो वितरोतीतु वितनुर्भद्रं वसंतांवितः ।।

—ऋतु संहार, सर्ग ६, ३८

महाकवि वाण ने पलाश कुसुमों को कामदेव की ध्वजाओं से उपमा दी है । जयदेव ने पलाश पुष्पों को युव-जनों के हृदय को विदीर्ण करनेवाले कामदेव के नख के समान कांतिवाला बताया है । संस्कृत के एक सुभाषित में कहा गया है—हे पलाश ! तू अपने फूलों का अभिमान को छोड़ । तेरे सिर पर भौंरे जो बैठे हैं, उससे तू फूला नहीं समाता, जबकि वास्तविकता यह है कि नवमल्लिका के फूलों के न खिलने के कारण, वियोग में ये भौंरे तेरे लाल फूलों को आग की लपट समझकर उसमें घुस रहे हैं ।

ऊपर वर्णित प्रेमियों की उपमाओं के अतिरिक्त कवियों ने पलाश के कुसुमित वृक्ष के सौंदर्य की उपमाएं युद्ध में घायल वीरों के रूप में अत्यधिक दी हैं । इनमें आदिकवि वाल्मीकि, वेदव्यास तथा तुलसीदास प्रमुख हैं । वाल्मीकि के अनुसार लंका में युद्ध के समय रणस्थली वानरों और राक्षसों के रुधिर की प्रचुरता से ढकी हुई ऐसी चमक रही थी मानो कि माघ मास में खिले हुए टेसुओं से ढकी हो—

सा मही रूधिरौद्येण प्रच्छन्ना संप्रकाशते ।
सच्छना माघवे मासि पलाशैरिव पुष्पितै : ।।

—रामायण, युद्ध कांड ६, सर्ग ५८, २८

तुलसीदास के अनुसार—

घायल बीर बिराजहिं कैसे ।
कुसुमित किंसुक के तरू जैसे ।।

—रामचरित मानस, लंका कांड ६, ५४

युद्ध में घायल हुए योद्धा कैसे शोभित हैं, जैसे फूले हुए पलाश के वृक्ष हों ।

महाभारत युद्ध में चौड़े और मोटे वक्षस्थलवाले अधिरथ पुत्र कर्ण का शरीर वत्सदंत नामक वाणों से विद्ध होकर खिले हुए अशोक, पलास, सेमल और चंदनवन से युक्त पर्वत के समान सुशोभित होने लगा—

स वत्संदतैः पृथुपीनवक्षाः
समाचितः सोऽ धिरर्थिर्विभाति ।
सुपुष्पिताशोकपलाशशालमलि
यथाचलश्चचंदन काननायुतः ।।

—महाभारत ४, अध्याय ९०, ७५

—एस ए/एस/५, सी.एस.आई. आर. केम्पस,
२१, गोखले मार्ग,
लखनऊ-२२६००१

"कल रैली है," विदेसी ठाकुर के दुआर पर बैठे गांव के कई लोगों के बीच भीखना ने यह बात कही, तो विदेसी ठाकुर ने खखारते हुए कहा, "जरा इंकलाबी तेवर में बोल रे भीखना ! ढोल-मजीरे के साथ गांव में घूम-घूमकर मुनादी कर दे । आखिर, राजा शिवनाथ प्रताप की रैली है, कोई हंसी-मजाक नहीं ? तू त अइसे बोलता है, जैसे कल किसी का जनाजा निकलनेवाला है...अरे रैली है तो जरा धूम मचा के बोल । का हो बटेसर भाई, आपका क्या जवाब है ?"

कहानी

रैली

● **अमरेन्द्र मिश्र**

बटेसर नाथ ने जोड़ा, "बात ठीक है । अपने गांव से ऐसी रैली शायद, पहले कभी नहीं निकली होगी । राजा साहेब बहुत प्रबंध किये हैं, बेचारे ! आने-जाने का सारा प्रबंध, खर्चा राजा साहब किहिन हैं । दस गांव से जनता लोग रैली में शामिल होगा । देख लेना, रैली नहीं, कल महाकुंभ लगेगा दिल्ली में..." बटेसर नाथ ने यह कहते हुए अपने दरवाजे की सुध ली, तो महादेव महतो उनकी जगह बैठते हुए बोले, "विदेसी, यह तो बताओ कि इस रैली में क्या होनेवाला है ?" विदेसी तनिक गंभीर हो गये, कहा, "अरे महादेव भाई, आप इतना भी नहीं जानते ? रैली में वही सब होगा, जो होता है । हमारे राजा शिवनाथ प्रताप दस गांवों से जनता लोग को लेकर दिल्ली जाएंगे और वहां महात्मा गांधी की समाधि पर माथा टेकने के बाद बोट क्लब पर सब लोगों के सामने भाषण देंगे । वहां दिल्ली के बड़ा-बड़ा नेता जमा होंगे ।"

"फिर ?"

"फिर क्या ? अरे भाई, अब हम तो नेता नहीं हैं न ! बाकी बात तो राजा साहेब ही बताएंगे ।"

महादेव महतो ने कहा, "रामबदन से पूछते हैं कि और क्या-क्या होनेवाला है ?"

"लेकिन तुम इतने उतावले क्यों हो रहे हो ? बात क्या है ?"

"एक अजीब पेंच है भाई । परमेसरा की घरवाली कहती है कि वह भी रैली में जाएगी ?"

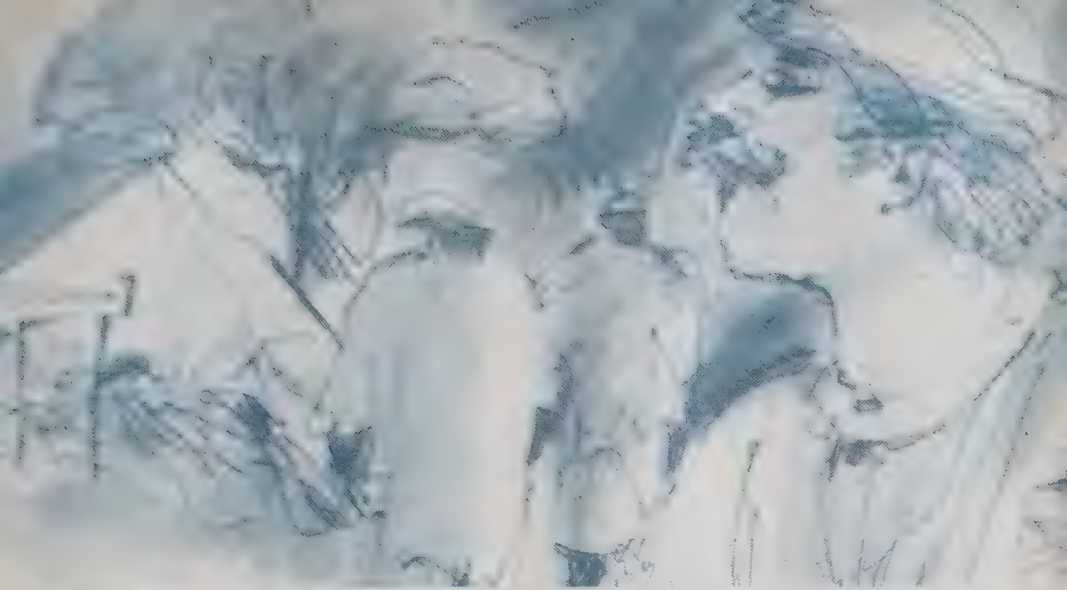
"तो उसे भी जाने दो । जब रैली में सबके सब जा रहे हैं, तो परमेसरा की घरवाली ही बाकी क्यों बचे ? वह देखो, रामबदन इधर ही आ रहा है..."

"का रामबदन, इस रैली में सब जा रहे हैं का ?"

"हां काका, सब जा रहे हैं सिर्फ जगदानंद ठाकुर को छोड़कर ।"

"क्या ? ठाकुर साहब नहीं जा रहे हैं ?" कई लोगों ने समवेत स्वर में पूछा ।

"आप लोग राजा शिवनाथ प्रताप सिंह और जगदानंद ठाकुर की दुश्मनी तो जानते ही हैं । ठाकुर साहब का कहना है कि पिछला चुनाव



राजा साहब बेइमानी से जीते हैं । उन्होंने ठाकुर साहब के साथ विश्वासघात किया है, उनके लोगों को दौलत और लाठी के बल पर उन्हीं के खिलाफ भड़काया और कई बूथों पर कब्जा करके चुनाव जीता । अब उनकी रैली में ठाकुर साहब के शामिल होने का सवाल ही पैदा नहीं होता । लेकिन इन बातों से आखिर आपका क्या लेना-देना ? उन दोनों की लड़ाई अपनी जगह है और हमारी रैली अपनी जगह । जो जीता वही सिकंदर । जो राजा, उसी की प्रजा । यह ठीक है कि पिछले चुनाव में ठाकुर साहब हमारे एम.पी. थे, लेकिन अब राजा साहेब हमारे एम.पी. हैं । जिसके हाथ में पावर है, उसी की चलती है ।''

''हां भाई, बात तो सोलहो आने ठीक है । हमारे नेता राजा साहेब ? बोलो राजा साहेब की जय ! सबने समवेत स्वर में राजा साहेब की जय-जयकार की । और इस जय-जयकार के साथ ही सुबह की मीटिंग समाप्त हुई । सबने चलते-चलते कहा, ''चलो, रैली की तैयारी करो ।''

रामबदन ने भीखना को हिदायत दी, ''जाओ, जल्दी से महादेव प्रसाद के साथ बरहमपुर के नेवाजी दुसाथ का लाउड स्पीकर ले आओ । पूरे गांव में फिल्मी गीत के साथ माइक पर कल की रैली में बूढ़े, बड़े, जवान, औरत, बच्चे सबको जुटने का आह्वान करो । और हां, ठाकुर साहब के दरवाजे के सामने जरा देर तक गाना बजना चाहिए ।''

★ ★ ★

गांवभर की औरतों में हलचल कि कल रैली में जाना है । परमेसरा की घरवाली रैली में जानेवाली महिलाओं का नेतृत्व करेगी...जिन-जिन औरतों को रैली में जाना है, सब परमेसरा के दुआर पर लाइन लगाओ और अपना-अपना नाम लिखाती जाओ । किसी का नाम छूटने न पाये...रामबदन की सख्त हिदायत है । किसी का नाम छूटा तो जुलुम हो जाएगा । दूसरे दिल्ली में किसी के खो जाने पर उसे खोजना बहुत मुश्किल हो जाएगा ।

परमेसरा की घरवाली आखिर, छठी जमात तक पढ़ी है न, कोई नाम छूट कैसे जाएगा ?

मजाल है ? परमेसरा अपने हाथ में कजरौटा लिए खड़ा है... नाम के आगे अंगूठा लगाओ। अंगूठा नहीं लगेगा, तो राजा साहेब पैसा नहीं देंगे। पैसा मिलेगा रैली में जाने का। पर यह पैसा बाद में मिलेगा। कब ? यह तो कोई नहीं जानता।

"नाम ?"

"सबितरी।"

"यह कौन ?"

"रामपतिया है ?"

"उमर ?"

"दस साल।"

"दस साल की ? इसे घर पर छोड़ दो," कहती है परमेसरा की घरवाली, "बच्चे को लेकर जाओगी।"

"किसके भरोसे छोड़ दूं इसे ? बताओ, रामखेली।" रामखेली यानी परमेसरा की घरवाली।

"ठीक है। आगे बढ़ो...।" परमेसरा कहता है।

लाइन खिसकती जाती है। सौ महिलाएं, दो सौ महिलाएं, पांच सौ महिलाएं...

"मनोहरलाल, आप यहां क्या कर रहे हैं ?" परमेसरा पूछता है।

"रैली में जाने के लिए नाम लिख लो।"

"तो आप मर्दाना लाइन में जाइए। आप इधर भूल से आ गये हैं।"

परमेसरा की घरवाली यानी रामखेली खूब सतर्कतापूर्वक अपना काम संपन्न करती है। आखिर, रैली की बात है। थोड़ी-सी असावधानी हुई तो गड़बड़ हो सकती है। रामखेली को पता है कि उसकी बहन राम सनेही एक बार गांव के ही मेले में खो गयी थी, तो उसे ढूंढ़ने में उसे कितनी परेशानी उठानी पड़ी थी।

* * *

इधर बटेसर मिसिर के घर कोहराम मचा हुआ है। बटेसर की बहू सुभद्रा जिद ठाने बैठी है कि वह रैली में जाएगी। कल रैली है और परसों से वह मचल रही है। सारा गांव जब दिल्ली जा रहा है, तब वह यहां पड़ी क्या करेगी ? शादी के बाद जो घर में आयी, तब से दरवाजे के बाहर कदम नहीं रखा। दिल्ली देखने का मौका जाने फिर कब आये ? उसके ससुर ने चेतावनी दी है, 'खबरदार, जो रैली का नाम लिया तो। रैली में बड़े लोगों की बहू-बेटियां नहीं जातीं। इसमें तो गरीब, भुक्खड़, भिखारी जाते हैं। आखिर, हमें किस चीज की कमी है कि हम बेमतलब 'हाय-हाय' चिल्लाते फिरें ?'

बटेसर की धर्मपत्नी कहती है, "सुभद्रा को जाने दो। आखिर, उसकी सहेलियां भी तो जा ही रही हैं। वह उन्हीं लोगों के साथ रहेगी। कल से जिद ठाने बैठी है।"

"तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है ? अरे, जानती हो, रैली में क्या होता है ? हजारों-लाखों लोगों के बीच हजारों शरीर रगड़ खाते हैं।"

"देखो जी, हमारा जमाना तो दूसरा था। मैं जब ब्याह कर आयी थी, तो पांच महीने तक यह भी नहीं जाना कि घर का दुआर किधर है ? अब तो गांव की लड़कियां रोज बरहमपुर जाती हैं। सुभद्रा तो पढ़ी-लिखी है। अपढ़ होती तो वह मान भी जाती। उसे दिल्ली देखने की इच्छा है। कामता ने उसे कई बार दिल्ली घुमाने

'हमने तय किया है कि आनेवाले पांच वर्षों में किसी भी गांव का कोई भी व्यक्ति किसी भी बीमारी से असमय नहीं मरेगा'... राजा साहब भाषण दे रहे थे कि टीकाराम बीच में ही फट पड़ा, 'मर गयी सरकार मर गयी... मेरी बहू मर गयी... ।'

का वचन दिया है, पर उसे तो अपनी पढ़ाई से ही फुरसत नहीं मिलती । रोज की बात तो है नहीं । एक बार जाने दो ।''

''ठीक है । तुम कहती हो तो जाने देता हूं । अच्छा, यह बताओ कि बाबू सीताराम सिंह की बिटिया सुलक्षणा भी जा रही है ?''

''हां, उसी के साथ तो सुभद्रा रहेगी... ।''

सुभद्रा का भी नाम लिखवा दिया गया । रामखेली ने आंख टिपते हुए कहा, ''बड़ा मजा आएगा रैली में दीदी ! दिल्ली का चाट जरूर खाना । चांदनी चौक का चाट...'' बगल में खड़ी साठ वर्षीया बुढ़िया सुरती देवी ने छाती पीटते हुए कहा, ''अरी ? कुछ तो सरम कर ।''

रामखेली ने चिल्लाकर कहा, ''रैली है काकी ! रैली ! इसमें सब जा रहा है । राजा साहेब ले जा रहे हैं । चलो, आओ, यहां अंगूठा लगाओ ।''

★ ★ ★

सब को बरहमपुर स्कूल में जुटने को कहा गया । वहां से लोग ट्रकों में दिल्ली के लिए रवाना होंगे । गांव में अजीब हलचल है । लोगों में उल्लास, उमंग और उत्साह है। दीवान टोले की कुसुमी ने रातभर जागकर महिलाओं को एकजुट किया है । नारी-जागरण पर कितना अच्छा बोल जाती है कुसुमी।

बालमुकुंदजी को इस प्रकार की मुहिम से सख्त परहेज है । वे चाहते हैं कि कम से कम गूजर टोले की औरतें इससे अलग रहें । उन्होंने घूम-घूमकर प्रचार शुरू किया है कि औरतों को इस तरह की रैलियों से अलग ही रहना चाहिए । गूजर टोले की दो हजार औरतों को हर पांच वर्ष पर वोट डलवाने के लिए बालमुकुंदजी ही ले जाते हैं । इस रैली में नेताओं के भाषण होंगे और औरतों के कल्याण पर दस सूत्री कार्यक्रमों की घोषणा भी राजा साहेब करनेवाले हैं । इससे क्या पता, उनके खेत में मुफ़्त मजदूरी करनेवाली औरतें उनसे वाजिब मजदूरी ही मांगने लगें ? तब क्या होगा ? अभी उनकी चिंता वही है, सो वे ठाकुर साहेब यानी जगदानंद बाबू की हवेली की ओर चल पड़ते हैं । लेकिन अचानक उन्हें कुछ स्मरण हो आता है—क्या ठाकुर साहब उन्हें सहज ही स्वीकार पाएंगे ?

चलते-चलते रुक गये बालमुकुंदजी । मानो किसी अदृश्य-शक्ति ने उन्हें रोक लिया । कहां जा रहे हो बालमुकुंद ? पिछली घटनाएं तुम इतनी जल्द भूल गये ? क्या ठाकुर जगदानंद तुम्हें माफ कर पाएंगे ? क्या तुम उनके सामने उनसे आंख मिला पाओगे ?

हुआ यह था कि उतरते कार्तिक का महीना था और पूरा गांव कार्तिक पूर्णिमा के मेले में मशगूल था । ठाकुर साहेब ने बरहमपुर के

कार्तिक पूर्णिमा मेले में रैली आयोजित की थी और पूरे गांववालों को उस रैली में शामिल होने का आह्वान किया था। उस रैली में भोजपुर जिले के प्रत्येक गांव और शहर से लोग बुलाये गये थे। जितवारपुर गांव से सब को बुलाने और रैली में ले जाने की जिम्मेवारी बालमुकुंद के जिम्मे थी। ठाकुर साहेब की इस रैली के समानांतर दूसरी रैली का आयोजन उनके प्रखर विरोधी नित्यानंद बाबू ने किया था। उस रैली के तुरंत बाद ही लोकसभा के चुनाव होने थे। ठाकुर साहब के विरुद्ध शिवनाथ प्रताप इलेक्शन में खड़े थे। दोनों की रैलियां थीं और यह समानांतर रैली दरअसल, एक-दूसरे का शक्ति परीक्षण थी। जगदानंद ठाकुर का एकमात्र विश्वासी व्यक्ति था बालमुकुंद। इलाके का मशहूर डकैत, स्मगलर और खूनी। उसके विषय में यह विख्यात था कि वह जिस नेता के प्रचार में शामिल हो, वह नेता किसी कीमत पर हार नहीं सकता। पूरा जिला उसके नाम से कांपता जो था। चुनाव के समय एक साथ कई हजार बूथों पर कब्जा कर लेना, उसके बायें हाथ का खेल था। बालमुकुंद ने पेशगी के तौर पर पूरे पचास हजार लिये थे ठाकुर साहब से, और कहा था—"एक रैली नित्यानंद बाबू भी कर रहे हैं ठाकुर साहेब।"

"यह नित्यानंद कौन है ?"

"वही हुजूर ! अरे वही, राजा साहेब शिवनाथ प्रताप के बड़े बेटे। अपने पिता के चुनाव-अभियान का आरंभ करने जा रहे हैं, इसी रैली के साथ।"

"पर तुम तो हमारे आदमी हो...पैसे और मिल जाएंगे। काम होना चाहिए...कुछ ऐसा करो कि हमारी रैली उससे बड़ी हो।"

"वह सब तो ठीक है ठाकुर साहब। लेकिन..."

"लेकिन क्या ?"

"वह क्या है ठाकुर साहेब कि शिवनाथ प्रताप सिंह ने हमें धमकी दी है कि हमें उन्हीं का काम करना है। आखिर, मेरे ऊपर जो पांच खूनी केस थे, उनमें से चार की जमानत तो उन्होंने ही करायी है।"

"एक की तो हमने भी करवायी है बालमुकुंद। और वह केस तो सबसे खतरनाक था...खून करने के बाद खून से सने चाकू के साथ तुम पकड़े गये थे... ।"

ठाकुर साहब के साथ विश्वासघात किया था बालमुकुंद ने। नित्यानंद बाबू ने एक लाख देकर खरीद लिया था उसे। उसने अपने प्रभाव के बल पर ठाकुर साहेब के समानांतर एक विशाल रैली आयोजित करायी। उस रैली के बाद ही चुनाव हुए और ठाकुर साहब पराजित हो गये।

बालमुकुंद गहरी सोच में डूबा गांव के आखिरी छोर तक पहुंच गया। उसने देखा हजारों लोग मंत्र-मुग्ध एक ही दिशा में बढ़े जा रहे हैं। बरहमपुर स्कूल के मैदान की ओर। उसने सोचा, 'दीवान टोले की औरतों को रोकना ठीक नहीं। यह ठीक है कि उसका अतीत हत्या, चोरी-डकैती—जैसे तमाम आपराधिक कुकृत्यों से भरा पड़ा है। पर, दूसरे लोग उस जैसे क्यों बनें ? अगर रैली में शामिल होने से जन-चेतना जागती है, लोग जागरूक बनते हैं, अपने अधिकारों को समझते-पहचानते हैं तो बुरा क्या है ?'

और वह भी उस अछोर भीड़ का एक हिस्सा बन गया ।

★ ★ ★

दीवान टोले की अमला की हालत बहुत खराब है । उसका मरद कमाने परदेश गया है । वह आठ महीने के पेट से है । उसके ससुर टीकाराम ने रट लगा रखी है कि अमला को रैली में जरूर जाना पड़ेगा, नहीं तो मालिक बहुत बिगड़ेंगे ।

रैली दिल्ली रवाना हो जाती है ।

दिल्ली का लाल किला और उसके पीछे का विस्तृत मैदान ! हजारों-हजार की जमघट । यहां से रैली चल पड़ती है गांधी समाधि की ओर... नर-नारी अपने-अपने हाथों में तख्तियां लिए...उन तख्तियों पर लोगों की जरूरतों को नारों का रूप दिया गया है...'खाद-बीज का मूल्य कम करो ।' 'आर्थिक असमानता दूर करो', 'बेरोजगारी खत्म करो', 'महंगाई मिटाओ', 'गरीबी हटाओ' ।

लोग समवेत स्वर में उद्घोष करते हैं—'इंकलाब जिंदाबाद', 'राजा साहेब जिंदाबाद ।' अचानक अमला के पेट में जोरों का दर्द उठता है । इंकलाब का उत्तर वह जिंदाबाद नहीं दे पाती । उसे उल्टी होने लगती है । उसकी भयकातर पुकार पर कोई ध्यान नहीं देता । पर उसका ससुर टीकाराम कहता है—'घबराओ नहीं । तुम्हें कुछ नहीं होगा ।' भीड़ गगनभेदी स्वर में चिल्लाती है—'इंकलाब...' पर अमला ? रो रही है अमला । उसके आठ महीने का अज्ञात शिशु कुलबुलाता है क्या ? 'अमला जिंदाबाद बोलो', टीकाराम कहता है । पर वह



जिंदाबाद...गांधीबाबा...दुहाई गांधी बाबा की ।'

अमला गांधी समाधि के पास ही लुढ़क जाती है । टीकाराम पुकार लगाता है 'दुहाई हो ।' विशाल जनसमूह से लैस रैली आगे बढ़ जाती है । मृत अमला, अनगिनत पैरों से दबी-कुचली चली जाती है । टीकाराम असहाय अपने गांव के लोगों को, अपने परिचितों को पहचानने की कोशिश करता है, पर कोई भी अपना नहीं लगता, कोई नहीं रुकता ।

★ ★ ★

राजघाट के सामने की सड़क । रोज की तरह भीड़भरे यातायात से अंटी पड़ी है । पर आज लंबा ट्रैफिक एक छोर से दूसरे छोर तक पसरा पड़ा है । बस, स्कूटर, ट्रक, साइकिल, आटो सब स्थगित, जड़वत । बस में भरी हुई भीड़ दफ़्तर जाने को बेताब है । लोग हैरान हैं कि इतना ट्रैफिक तो इधर कभी नहीं हुआ ? क्या बात है ? लोग रैली के आयोजकों पर हंस रहे हैं...'पोलिटिशियंश रैली निकलवाते हैं और निर्दोष, ईमानदार व्यक्ति पिसता है । क्या फायदा ऐसी रैली का ?' मारुति कार में बैठा वह मोटा व्यक्ति कहता है—'काम तो कुछ नहीं होता इस

देश में, बस लोगों को इकट्ठा करो और रैलियां निकालो।'

रैली आगे बढ़ गयी है। स्त्री-पुरुष, बूढ़े-बच्चे, सब साथ-साथ चल रहे हैं। सुभद्रा खुश हो रही है। दिल्ली घूमने का मौका मिला है। वह रहा विकास मीनार, वह रहा आई.टी.ओ. का दफ़्तर, आगे-आगे चल रहा रामबदन बताता जा रहा है—यह है सुप्रीम कोर्ट—देश की सबसे बड़ी अदालत। यह है इंडिया गेट। सुभद्रा ने गौर से देखा इंडिया गेट। कितना भव्य ? कितना अद्भुत ? अब तक तो उसने इंडिया गेट के बारे में किताबों में ही पढ़ा था, जिसे आज पहली बार देख रही है। कब से उसके मन में यह साध थी इंडिया गेट देखने की...

भीड़ में एक हरकत हुई। सुभद्रा किसी दूसरे पुरुष से जा टकरायी। वह शातिर बदमाश दिख रहा था। उसने भीड़ का फायदा उठाया और सुभद्रा को रेलते-ठेलते दूसरी भीड़ में ले गया और पलक झपकते ही वह शाहजहां रोड की ओर स्कूटर से ले जाना चाह ही रहा था कि दूसरे लोगों द्वारा दबोच लिया गया। बच गयी सुभद्रा वरना, पता नहीं इज्जत कहां रहती ?

रैली ठीक पांच बजे बोट क्लब पहुंची। मंच पर राजा शिवप्रताप सिंह के साथ दिल्ली के कई जाने-माने नेता बैठे हुए हैं। सबसे पहले राजा साहेब अपना भाषण शुरू करते हैं—

भाइयो और बहनो ! आज जहां आप-हम बैठे हुए हैं, वह गांधीजी के सपनों को पूरा करने का एक आयोजन है। आप लोग अपने-अपने गांवों से आये हैं और गांवों की समस्याओं के विषय में आप लोगों से अधिक और कौन जान-समझ सकता है ? हमने तय किया है कि आनेवाले पांच वर्षों में किसी भी गांव का कोई भी व्यक्ति किसी भी बीमारी से असमय नहीं मरेगा...

'मर गयी सरकार मर गयी' बीच में ही फट पड़ा टीकाराम, 'मेरी बहू मर गयी राजा साहेब...गांधी के सामने मरी...उसके भी एक बीमारी थी हुजूर, गरीबी की बीमारी...कितने दिनों से बेचारी...एक 'आस' में जी रही थी और आज...।'

टीकाराम को लोग पागल कहकर बैठने का संकेत कर रहे थे। किंतु, वह बैठ नहीं रहा था। उसने अपने दोनों हाथ उठाये हुए थे और उसी तरह अपनी सुनाये जा रहा था...दूसरी ओर राजा साहब का भाषण वातावरण पर छाया हुआ था...'कोई नहीं मरेगा, कोई असमय मौत का शिकार नहीं बनेगा...आपसे हमारा वादा रहा...।' टीकाराम की आवाज वातावरण में डूब रही थी। उधर अस्ताचल में सूरज डूब रहा था।

लौटते समय किसी के हाथ में कोई तख्ती नहीं थी। न किसी तरह की नारेबाजी। अब तक टीकाराम की बहू की मौत का समाचार भी सबको मिल चुका था। आज सुबह लोगों के मनों में जो उत्साह था, वह डूबते सूरज-सा निस्तेज क्यों हो गया—यह किसी की समझ में नहीं आ रहा था।

—संपादक : गगनांचल
भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद
आजाद भवन, इंद्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-११०००२

टांसिल वृद्धि बिना ऑपरेशन ठीक हो सकती है आयुर्वेद द्वारा

● डॉ. वी. के. वर्मा

मुख के पश्चिम भाग में दोनों तरफ तुण्डीकेरी ग्रंथि (टांसिल) पायी जाती है । यह लसिका ऊत्तकों की ग्रंथि है । यह मनुष्य में श्वेत रक्त कणों के निर्माण में सहायक होती है । इस प्रकार मानव शरीर की जीवाणुओं के आक्रमण से रक्षा करती है । जन्म के समय यह ग्रंथि महत्त्वहीन होती है । कुछ माह बाद इसके आकार में वृद्धि होती है । २ से ८ वर्ष में इसके आकार में क्रियात्मक वृद्धि होती है । यौवनावस्था में ये छोटी होती-होती वृद्धावस्था में इनका शोष हो जाता है ।

इस ग्रंथि के शोथ (सूजन) को तुण्डिकेरी शोथ (टांसलाइटिस) कहते हैं जो जीवाणु संक्रमण के कारण होता है । यह थूक, जूठे बरतन, धूल मिट्टी के कारण तथा शीत व क्षोभक पदार्थों के सेवन से फैलता है । भीड़-भाड़ व अंधेरी जगह रहने से यह अधिक होता है । प्रायः यह बच्चों में पाया जाता है । इस रोग में मोटे तौर पर निम्न लक्षण मिलते हैं ।

- गले में खराश
- कंठ शूल (गले में दर्द)
- भोजन निगलने में पीड़ा
- ज्वर
- कास (खांसी)
- बोलने में कठिनाई
- मुख में दुर्गंध

यदि इन लक्षणों की चिकित्सा न की जाए तो उपद्रव उत्पन्न हो जाते हैं, जिसमें विद्रधि (फोड़ा), मध्य कर्ण शोथ एवं अन्य संस्थानों की विकृतियां जैसे वृक्कशोथ, संधिशोथ आदि भी मिलती है ।

इस रोग की पुनरावृत्ति से बच्चों को नासा, गला एवं फेफड़े के रोग लक्षण समय-समय पर मिलते हैं जैसे बार-बार गले में दर्द, निगलने में, बोलने में कठिनाई, बुखार एवं खांसी इन लक्षणों को देखकर अधिकतर आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के चिकित्सक इसके लिए शल्य क्रिया का परामर्श देते हैं । अनेक बार ऑपरेशन के बाद भी उक्त लक्षणों की पुनरावृत्ति देखी जाती है अतः आम जनता एकाएक ऑपरेशन कराने के लिए तैयार नहीं होती । जीर्ण प्रकार के टांसिल शोथ में आयुर्वेदिक चिकित्सा के बड़े ही उत्साहवर्धक एवं उत्कृष्ट परिणाम रहे हैं ।

कुछ आयुर्वेद योगों का यदि बच्चों में सेवन करायें तो ऑपरेशन से निश्चित बचा जा सकता है। जैसे —

रसमाणिक्य ३० मि. ग्राम
स्फटिका भस्म १२५ मि. ग्राम
कालक चूर्ण १२५ मि. ग्राम
अष्टांगवलेह २५० मि. ग्राम

दिन में तीन बार मधु से

बाल चर्तुभद्रिका २५० मिलीग्राम
स्फटिका १२५ मिलीग्राम
कालक चूर्ण १२५ मिलीग्राम
संजीवनी ३० मिलीग्राम

मधु से दिन में तीन बार।

इस चिकित्सा के अतिरिक्त मैंने अपने चिकित्सा अनुभव में निम्न योग अति उत्कृष्ट पाया है।

रससिंदूर षडगुण जारित ३० मिलीग्राम
अभ्रक भस्म सहस्त्र पुटी ३० मिलीग्राम
कालक चूर्ण १२५ मिलीग्राम

मधु में

इसके प्रयोग से न केवल टांसलाइटिस ठीक होता है,वरन शरीर की पुष्टि होती है,उसकी प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। बच्चों का विकास भी उत्तम प्रकार से होता है। यह योग चमत्कारिक प्रभाववाला है शतसः अनुभूत किया है। इसके प्रयोग से सैकड़ों रोगियों को ऑपरेशन से बचाया जा चुका है। इसके अतिरिक्त बच्चों में च्यवनप्राश, कूका, सैप्टलीन तथा नीरोसिल आदि योग भी उक्त रोग में अपना प्रभाव रखते हैं। यदि आयुर्वेद योग रोग की प्रारंभ की अवस्था में ही शुरू कर दिया जाए तो उपद्रवों का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। टांसलाइटिस के रोगी की आयुर्वेद चिकित्सा के साथ पथ्यापथ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

पथ्य :

- बिस्तर पर आराम करें
- उष्ण पेय पदार्थों का सेवन
- गले पर सेक
- गले को तर रखनेवाले द्रव्य या गोली जैसे मुलहठी आदि चूसना
- विटामिनयुक्त सुपाच्य पौष्टिक एवं लघु भोजन
- उपसर्ग की अवस्था में प्रतिजीव एवं रसायन चिकित्सा लें।

अपथ्य :

१. ठंडी वस्तुएं
२. खट्टी, चटपटी, तली, वस्तु
३. क्षोभ, कटु, द्रव्य, शीतल वायु का सेवन
४. धूल, धूएं तथा भीड़ में न रहें।

—तिब्बिया कॉलेज
करोलबाग, नयी दिल्ली-११०००५

हर दसवा भारतीय ऊंचा सुनने लगा है। गांव में तो १४ साल से कम आयु के ऐसे बच्चों की तादाद १५ प्रतिशत तक है। कम और बिलकुल न सुनायी पड़ने की सबसे बड़ी (६० प्रतिशत) वजह तो कोई चोट या आघात होती है, लेकिन ३० प्रतिशत मामलों में कान बहने के कारण यह कमजोरी आ जाती है। ज्वर के तीव्र प्रकोप और अन्य बीमारियों की वजह से भी काफी लोग बहरे हो जाते है।

भारत स्मृति

मैंने कभी नहीं सोचा था
कि ताड़ इतने ऊंचे हैं,
कि लोगों के दिल में
इतना बहुत प्रेम होता है
कि ताड़ की पत्तियों की अंगुलियां
इतने सूर्य के निकट है
कि इतने गरम होंठ प्यार से
वे स्पर्श कर सकती है,
कि दूर के देशों के रहनेवाले लोग
एक-दूसरे के इतना निकट हैं
कि उनके विचार और भावनाएं
एक ही धारा में संगाम कर सकती हैं
उनके दिल के प्रेम की धारा में ।
मैंने कभी नहीं सोचा था
कि पहुंचूं यह कल्पना का प्रदेश
जो नीले-नीले अंबर
और शाश्वत हरे ताड़ का राज्य है
जहां नीले गिरि पर
लाल गेंद की तरह
डूबता हुआ नरम सूर्य,
और सुबह वह
समुद्र की लहरों से हाथ-मुंह धोते-धोते
सागर के राज-लक्ष्मी की धूसर चट्टान के पीछे से
बाहर निकलता है
मैंने कभी नहीं सोचा था
कि विदाई का समय
इतना निकट है
कि मुझे छोड़ना पड़ेगा प्रदेश
जहां दिल में शांति है जैसे बचपन में
कि मैं फिर बर्फ में वापस आऊंगी
और वहां जहां नीला आकाश
जाता था मिलते-मिलते
सागर के नीलेपन से
वहां धूसर गीले धुंध से मिलकर
एक ही हो जाएगा
मेरे आंसू का सागर ।

— विजया

विकटोरिया शीलीना
फ्लैट-३७, पी. आर. कोसमानवतोव-४८-१-३७
१९६ २३३ पेटरर्सबर्ग (रसीया)

आग का समंदर

सुनके मेरी सदा तुम आ जाओ
मेरे नगमे तुम्हें बुलाते हैं
फूल खिलते हुए देखा ना कभी
हम तो पतझड़ में मुसकुराते हैं
वक्त की आंधियों में घर जो मेरा टूट गया
आज हम फिर उसे बनाते हैं
बने जो मील का पत्थर हमें मंजूर नहीं
आज हम फिर कदम बढ़ाते हैं
दिल में 'नेहा' तेरे इक आग का समंदर है
नैन बादल से बरस जाते हैं

—नेहा 'आस'

सी-१३, आनंद निकेतन, पीछे की तरफ,
नयी दिल्ली-२१

सरस धारा सरस्वती

● डॉ. संतोष सिंह

जल प्राणिमात्र के अस्तित्व के लिए एक अनिवार्यता है । विकास के क्रम में प्राचीन मानव ने इस सत्य को जानकर, समझकर हृदयंगम किया एवं जीवन के गूढ़ अर्थों से जोड़ते हुए उसे परम-शक्ति माना । यह मानव जाति को पृथ्वी पर एक वरदान था । मानो प्रकृति की विशाल उदार भावना का प्रतीक था । इस प्राकृतिक संपदा की अनमोल गुणवत्ता को देखकर मर्त्य मानव अभिभूत हो उठा और उसने इसे 'मां' कहकर पुकारा । न केवल आदम की मां अपितु संपूर्ण धरा की मां । सप्त मातृ शक्ति-स्वरूपों में से एक है, जल ।

आयं गौः पृश्निर क्रमीदस दन्मातरं पुरः ।
पितरं च प्रयंत्स्व ॥

(सामवेद : अरण्य कांड, पांच, ६३०)

जल— बहता हुआ जल,वास्तव में प्रतीक है जीवंतता का । सचेतनता, निरंतरता, गतिशीलता एवं प्रगति का । यही बहता जल मानो चेतावनी भी देता है—मुझे बांधो मत । मुझे पकड़ने का प्रयास मत करो । वरना मैं अभिशाप बन सब कुछ विनष्ट भी कर सकता हूं । मेरे साथ चलो । चरैवेति । चरैवेति ।

यही वह सत्य था,जिसे आदि-मानव ने जानकर, कल-कल निनाद करती सरिता को ईश्वरीय सत्ता के समकक्ष रख उसका पूजन किया तथा उसके पवित्र स्वरूप को बनाये रखने का प्रयास भी किया । इसलिए नदियों को 'मां' कहकर पुकारा गया । सामान्य भाषा में सरसुता या सुरसती अर्थात सरस्वती—इस परंपरा की पहली कड़ी है ।

आदिकालीन आराध्या

वास्तव में सरस्वती एक आदिकालीन आराध्या हैं । संभवतः वह एकमात्र ऐसी देवी है जिसका महत्त्व वैदिक युग से लेकर आज तक अक्षुण्ण बना हुआ है, जबकि वैदिक युग की अन्य मातृशक्तियों (अदिति, पृथ्वी, ऊषा, मही, इडा आदि) का महत्त्व क्रमशः घटते-घटते लोप ही हो गया । इसके और चाहे जो भी कारण रहे हों, किंतु जो तथ्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है,वह है स्वयं सरस्वती का परिवर्तनशील स्वरूप-गुण । इस प्रक्रिया में निरंतर परिष्कृत तथा परिमार्जित लक्ष्य-साधना का आदर्श बन पाने की योग्यता ही कारण है सरस्वती की अपूर्व अलौकिक दिव्यता का । स्वयं के विकास के क्रम में, विभिन्न स्वरूप धारण करती हुई सरस्वती अंततोगत्वा ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी मां भगवती बन प्रतिष्ठित हुई । यही कारण है नित-नवीन शक्ति स्वरूपों के उदित होने के उपरांत भी सरस्वती की गरिमा जरा भी क्षीण नहीं हुई है । वह आज भी महा सरस्वती के रूप में जन-चेतना कर राज्य करती हैं । हालांकि, आज फिर सरस्वती के अर्थ बदल गये हैं ।

सरस से ब्रह्माणी तक

यों तो सरस्वती का पूजन अनेक रूपों में किया जाता रहा है किंतु मुख्यतया वह तीन रूपों में सामने आती है— प्राकृतिक शक्ति, निराकार-दुर्बोध मानसिक शक्ति तथा एहिक मातृ स्वरूप ।

वेदों के समय में सरस्वती के प्राकृतिक तथा मानसिक शक्ति दोनों ही स्वरूप दिखायी देते हैं किंतु प्रारंभ में प्राकृतिक स्वरूप ही उभरकर सामने आता है । अपने इस रूप में सरस्वती जीवनदायिनी सरिता है । सरस्वती अर्थात जल-प्रवाह । यूं भी सरस्वती का शाब्दिक अर्थ है— जलीय, जलयुक्त, जलपूर्ण या जलवत् । सरस शब्द का तात्पर्य है— जल का प्रवाह । प्रारंभिक कार्यों के लिए सरस्वती एक महत्त्वपूर्ण



[illegible]
तेरहवीं शताब्दी की सरस्वती प्रतिमा

जब-जब मानव ने प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने का प्रयास किया है, वह उसके लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ है । सरस्वती का खोना इसका प्रतीक है । अनुपम गुणों से युक्त जल-प्रवाह मानव का साथ सदा के लिए छोड़ गया ।

सरिता थी,जो कि दिव्य गुणों से युक्त थी । उनका विश्वास था कि इस नदी की उत्पत्ति स्वयं ईश्वर के हाथों हुई थी । इसी के तट पर वह अपने संस्कार समारोह तथा अनुष्ठान इत्यादि पूरे किया करते थे ।

शब्द एक : अर्थ अनेक

ऋग्वेद में सरस्वती शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में हुआ है । अरकोशिया में बहनेवाली जल-धारा यदि सरस्वती थी,जो मध्य देश में बहनेवाली नदी भी सरस्वती ही थी । सरस्वती को सप्त सिंधु में सर्वश्रेष्ठ माना गया (सिंधु, वितस्ता, विपाशा, सतद्रु, अक्षिणी, परुश्री तथा सरस्वती को सप्त सिंधु की संज्ञा दी गयी थी) सर्प्ताथ सिंधु मातृ के विशेषण निश्चित ही इस नदी का स्तर अन्य सरिताओं से ऊंचा उठा देते हैं, सप्तऋषि जो कि विद्वता तथा ज्ञान में ईश्वर के समान जाने जाते थे, वो भी इस ज्ञान को सरस्वती का वरदान मानते थे ।

वैतरणी भी सरस्वती

'अम्बतामि नंदतामि देवतामि सरस्वती'

कर्दम ऋषि तथा नारायण ने भी सरस्वती के तट पर ही विद्वता एवं दैवी ज्ञान प्राप्त किया

था । यही नहीं, मृत्युलोक तथा मर्त्यलोक के बीच की सीमा अर्थात वैतरणी नदी को भी सरस्वती कहा जाता था । यम संहिता के एक स्तोत्र में इसी सरस्वती को विशिष्ट पावन कहकर संबोधित किया गया है ।

अथर्ववेद के अनुसार, मृतकों से संबंधित संस्कारों को पूर्ण करने का एक तरीका सरस्वती पूजन है । सौनकिनों में प्रचलित एक परंपरानुसार अर्थी को अग्नि देने के उपरांत सर्वप्रथम यम का, तत्पश्चात सरस्वती नदी का पूजन किया जाता था । यहां सरस्वती एक ऐसी जल धारा के रूप में सामने आती है,जो मृतात्माओं को मर्त्यलोक से अलग करती है । जीवन को मृत्यु से विलग करनेवाली यह वैतरणी रूपी सरस्वती आकाश एवं पृथ्वी दोनों ही विश्व में निरंतर निर्बाध बहनेवाली मानी जाती थी ।

वैदिक सभ्यता में

वैदिक युग में ही भौमिक एवं प्राकृतिक स्वरूप के साथ ही सरस्वती ने आध्यात्मिक एवं दैवीय रूप ले लिया था । वैदिक सभ्यता के उत्कर्ष के साथ-साथ सरस्वती के कार्य क्षेत्र तथा स्वरूप में भी वैभिन्न्य आता गया । सोमपान करने से रोगग्रस्त हो गये इंद्र का वह आश्विन के साथ मिलकर उपचार करती हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि सरस्वती नदी का जल संभवतः वही गुण रखता होगा,जो आज गंगा के जल में पाया जाता है, यह दूसरी बात है कि आज गंगाजल भी दूषित हो चला है तथा धीरे-धीरे अपने पवित्र स्वरूप को खोता जा रहा है । संभवतः वैदिक मानव के लिए सरस्वती वही स्थान रखती होगी,जो आज गंगा का है, भारतीयों के सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन में । इसीलिए वह कल्याणकारी मां के रूप में प्रतिष्ठित हुई तथा अन्य नदियों की अपेक्षा सर्वश्रेष्ठ मानी गयी ।

'मारूत सखा—सरस्वती'

सरस्वती का दूसरा नाम मारूतवती भी है चूंकि,वह मारूत की मित्र है इसलिए मारूत सखा भी कहलायी है । कहीं-कहीं सरस्वती को अमावस्या कहकर भी संबोधित किया गया है । वैदिक युग की तीन मुख्य शक्तियों में से एक है सरस्वती । (इड़ा, मही एवं सरस्वती) ऊर्जा का संचार करनेवाली सरस्वती का आवाहन इड़ा अर्थात मातृभाषा के साथ किया जाता था ।

तिस्रो वाच उदिरते गावो मिमन्ति धेनवः ।
हरिरेति कनिक्रदत् ।।

(सामवेद, १, २:८६९)

सरस्वती के साथ सरस्वान का भी आवाहन किया जाता था,जो संभवतः सरस्वती का पुरुष प्रतिरूप था ।

प्रकृति के रूप से निराकार मानसिक शक्ति के रूप में सरस्वती जब सामने आती है,तब वह 'सप्त स्वर' कहलाती है ।

''उत नः प्रिया प्रियासु सप्त स्वसा सुजुष्टा ।
सरस्वती स्तोम्या भूत् ।।

(सामवेद, ६-१-१४६९)

अपने इसी रूप में वह सर्वाधिक गरिमामयी एवं सर्वाधिक प्रिय दैवी शक्ति है ।

पापविमोचन संस्कार

आगे चलकर एक 'पाप' विमोचन संस्कार को भी सरस्वती संस्कार की संज्ञा दी गयी । भाषा विज्ञान की एक शाखा, जिसका संबंध उच्चारण तथा स्वानिकी से है, को शिक्षा कहा जाता था । शब्दों के दोषपूर्ण प्रयोग तथा

दोषयुक्त उच्चारण न करने हेतु कठिन नियम बनाये गये थे। विशेषकर संस्कार अथवा अनुष्ठान के समय दोषपूर्ण उच्चारण किये जाने पर व्यक्ति को एक पाप-विमोचन संस्कार अर्थात सरस्वती संस्कार को पूरा करना पड़ता था। ऐसा प्रतीत होता है कि यहीं से एक नदी की आराधना ने ज्ञान की साधना का गरिमामय स्वरूप ग्रहण किया। शिक्षा के इस संस्कार तथा प्रकृति पूजा दोनों ने ही एक रूप हो एक नवीन महिमामयी सरस्वती का निर्माण किया और सरस्वती को सत्य का संदेश चराचर जगत में प्रसारित करनेवाली, प्राणिमात्र में चेतना का संचार करनेवाली तथा मानव को शिक्षित रूप प्रदान करनेवाली एकमात्र अधिष्ठात्री देवी के रूप में प्रतिष्ठित किया।

"महो अरण्या सरस्वती प्रशेतयाति"

वाक् देवी

भाषा तथा उच्चारण से संबंध स्थापित होने के कारण ही सरस्वती को 'वाक् देवी' भी कहा जाता है। वाक् शब्द का अर्थ है— दैवीय विचारों का प्रवाह-दैवीय भाषा का प्रवाह। ऋग्वेद में भी सरस्वती के जल प्रवाह की तुलना निपुण वाक् शक्ति, वाक् कुशलता के प्रवाह से की गयी है। वह न केवल ज्ञान की प्रेरणा है अपितु साहित्य तथा विज्ञान की प्रश्रयदाता भी है। सामवेद में सरस्वती के इसी स्वरूप की पूजा की गयी है।

"पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वा जिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥

कठोपनिषद् में सरस्वती ने स्वयं मानव जाति को उद्बोधित करते हुए कहा, 'उठो। जागो। जागृत एवं ज्ञानी जन के सन्निकट हो ज्ञानवान होओ।' संभवतः इसलिए वह शारदा भी कहलायी। शारदा अर्थात ज्ञान प्रदान करने में सक्षम। शनैः-शनैः सरस्वती से लौकिक वरदानों की प्राप्ति को भी जोड़ा जाने लगा। संतानोत्पत्ति, विवाह तथा गृहस्थ जीवन से संबंधित संस्कारों को पूर्ण करने हेतु तथा सफल बनाने हेतु भी सरस्वती का आवाहन किया जाने लगा।

ब्रह्मा से संबंध

प्राकृतिक स्वरूप तथा मानसिक विश्व से एकरूप होने के उपरांत जब सरस्वती को सांसारिक इच्छाओं से जोड़ा गया संभवतः तभी उसका संबंध ब्रह्मा से भी बना। संतति प्रदान



करने तथा संतति की रक्षा एवं पालन करने के दायित्व को ग्रहण करने के कारण ही सरस्वती ब्रह्मा का अंश बनी, जो कि निर्माण प्रक्रिया से जुड़ा दैवीय भाव था। अथर्ववेद में वह ब्रह्मा की पुत्री है। वैदिक युग में सरस्वती एकमात्र ऐसी नारी शक्ति के रूप में है, जिसकी स्वतंत्र सत्ता अक्षुण्ण है। यद्यपि कालांतर में सरस्वती को ब्रह्मा की पत्नी का जामा पहनाकर ब्रह्माणी, ब्राह्मी तथा सावित्री नाम दिये गये।

पौराणिक युग में

पौराणिक युग तक आते-आते सरस्वती एक

पुत्र की मां के रूप में सामने आती है— पुत्र सारस्वत। महाभारत की एक कथा के अनुसार, भयंकर अकाल एवं सूखे के पड़ने पर सरस्वती अपने इस पुत्र की रक्षा, पुत्र को मछलियां उपलब्ध कराकर करती है। ऐसी जीवनदायिनी मां को प्रसन्न करने हेतु उनके स्तोत्रों की रचना की गयी। ऋग्वेद के दसवें मंडल को देवी सूक्त ही कहा जाता है जिसमें सरस्वती की वंदना वाक् देवी के रूप में की गयी है वह वेदों की मां है। ऋषि एवं मुनियों के लिए, प्रज्ज्वलित दीप है। संस्कृत भाषा की जननी, संगीत एवं कला देवी तथा मानव-सभ्यता की प्रणेता है।

क्यों खो गयी सरस्वती ?

ऐसी गरिमामयी महीयसी सरस्वती आज कहां है ? कहां विलुप्त हो गयी और भला क्योंकर ? आज सरस्वती का रूप ज्ञान की देवी केवल नाम के लिए तथा ब्रह्मा की पत्नी के रूप में संकुचित होकर रह गया है। सिमट गया है तथा सरस्वती का पूजन मात्र एक धार्मिक कर्म कांड (वह भी विशिष्ट अवसर पर ही) बनकर रह गया है। अपने सच्चे अर्थ में सरस्वती का बृहद स्वरूप खो चुका है। वह उसका चाहे कोई भी रूप हो प्रार्कृतिक रूप नदी अथवा मानसिक शक्ति। नदी के रूप में सरस्वती के विलुप्त होने की अनेकों कथाएं हैं जो प्रतीक रूप में आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी कि प्राचीन युग में रही होंगी। मात्र पौराणिक कथा कहकर उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। एक स्थान पर प्रसंग है कि ऋषि उतथ्य ने नदी को धरती के गर्भ में समाहित कर दिया एक दूसरा प्रसंग है कि दस्यु अभीरा ने सरस्वती को अपने नियंत्रण में रखने की योजना बनायी जिसे जानकर सरस्वती धरती के गर्भ में छिप गयी।

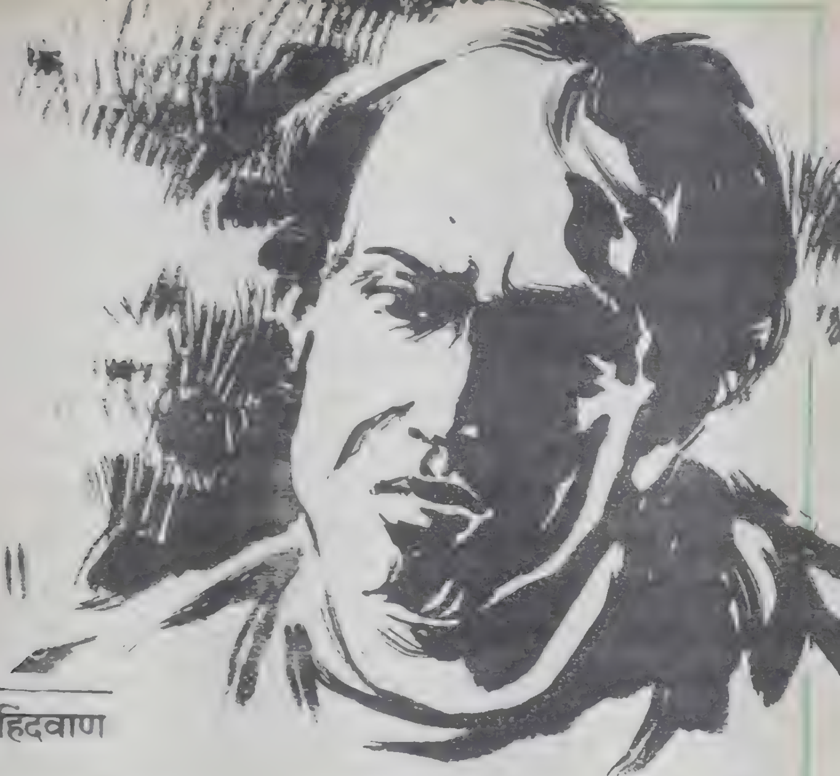
एक अन्य महत्त्वपूर्ण कथा है इस संबंध में। शिव को ब्रह्म हत्या का दोष लगा। उस दोष से मुक्ति तब ही संभव थी जब वह सरस्वती के जल से पवित्र हों। सरस्वती ने शिव को क्षमा न करने के उद्देश्य से धरती के गर्भ में लुप्त होने का निर्णय ले लिया।

ब्रह्मा ने सरस्वती को आदेश दिया कि वह ज्वालामुखी बदावा को समुद्र में बहा दे। बदावा के संपर्क में आने से नदी का जल खौलता हुआ समुद्र बन गया। पृथ्वी जलने से नष्ट न हो जाए इसलिए सरस्वती ने धरती के गर्भ में समाकर ज्वालामुखी बदावा को भूगर्भ के गुप्त मार्ग से ले जाकर समुद्र में डुबो दिया, किंतु फिर वह स्वयं भी धरती पर पुनः प्रवाहित न हो सकी।

एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार विश्वामित्र ने ऋषि वशिष्ठ से अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के प्रयास में सरस्वती के जल को रक्तरंजित कर दिया। इस लज्जा से सरस्वती धरती में विलीन हो गयी।

यों तो यह सभी धार्मिक मिथक है। किंतु यह स्पष्ट होता है कि जब-जब मानव ने प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने का प्रयास किया है, वह उसके लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ है। सरस्वती का खोना इसका प्रतीक है। अनुपम गुणों से युक्त जल-प्रवाह मानव का साथ सदा के लिए छोड़ गया। ज्ञान की देवी के रूप में भी आज सरस्वती कहीं ढूंढ़े नहीं मिलती।

— एफ-१५०, नौरोजी नगर,
नयी दिल्ली-११००२९



दलाली

सत्य प्रकाश हिंदवाण

लेखक था वो । कुछ-कुछ क्रांतिकारी विचारोंवाला । वर्तमान व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन का कट्टर हिमायती । बेचारा... । व्यवस्था तो क्या बदल पाती उसकी लेखनी... पर वह खुद मुफलिसी के गर्त में जा गिरा ।

दीन-ईमान का जमाना खर्च हो चुका था । रातों-रात अमीरी हासिल करने की होड़ रफ्तार पर थी... दलाली तरह-तरह की... उसके फटेहाल यारों को कोठी-मोटर-मोटे बैंक खातोंवाला बना चुकी थी । वह मन ही मन कुढ़ता । काश, मैं भी...

इसी उधेड़-बुन में महीनों पगलाया रहा—पैसा-पैसा, कोठी-बंगला... पर कैसे ? आखिर आयी थी अक्ल उसको भी... मगर देर बाद...

सामाजिक तत्व उसके लेखन के मुरीद बन न पाये, परंतु असामाजिक तत्वों को उसकी लेखनी भा गयी थी । जहां कहीं शांति व्यापती और इन तत्वों का लूटपाट का धंधा मंदा पड़ता, तब-तब उसकी लेखनी ही वहां चिंगारी बीजती...

'तेल लगा के डाब... बाबर का... इस्ला... के... सब कुरबान । विरोधी गुट उसकी काबलियत के कायल हो गये थे । पोलिटिक्स के अखाड़े में भी उसकी पूछ हो चली थी । पौ बारे हो गये उसके... ये धंधा चमक उठा था उसका ।

कार,कोठीवाला बन गया था अब वो भी...

— सी-३१४, प्रगति विहार होस्टल
लोदी रोड, नयी दिल्ली-११०००३

प्रेम केवल गांवों में मिलता है !

● डॉ. महाबीर प्रसाद गैरोला

भारत को स्वतंत्र हुए अभी दो वर्ष और कुछ ही महीने हुए थे, और टिहरी गढ़वाल राज्य का उत्तर प्रदेश में विलीनीकरण उन्हीं दिनों हुआ था । दिल्ली में श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी गवर्नर जनरल और पंडित जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री थे । टिहरी गढ़वाल उत्तर प्रदेश का एक नया जिला बन गया था, और महाराजा दिल्ली में रहते थे । गांधीजी की हत्या भारत के स्वतंत्र होने के ठीक एक सौ अड़सठ दिन बाद नाथूराम गोडसे ने कर दी, जिसके बाद उनके प्यारे चरखे को उनके चेले भूल गये थे । रामराज्य की बात भी अब कोई नहीं करता था । देश में ऐसा परिवर्तन आने के बाद भी टिहरी गढ़वाल के गांव पहले की तरह ही आत्म-निर्भर थे और उनमें रहनेवाले लोग सहयोग एवं सह-उपभोग के सिद्धांत में विश्वास कर शांतिपूर्वक जीवन-यापन कर रहे थे । उनके दिलों में एक-दूसरे के लिए स्नेह और सहानुभूति थी ।

टिहरी गढ़वाल जिले में मुकंदपुर नाम का एक गांव था, जो उसके केंद्रीय नगर, टिहरी से पांच किलोमीटर की दूरी पर एक ढालदार पहाड़ी पर बसा था । उसके समीप एक गधेरा (नाला) बहता था, जिसमें बारहों महीने पानी रहता था । वहां न अधिक गरमी पड़ती थी न अधिक ठंड । उसमें रहनेवाले लोग अपने खेतों में धनिया, जीरा, हल्दी, अदरक, लहसुन, बड़ी इलायची, आलू, प्याज आदि सहित अन्य कई प्रकार की सब्जियां और तरकारियां पैदा कर लेते थे । उनमें से कुछ वे टिहरी ले जाकर बेच भी देते थे । धान, गेहूं, झंगोरा (सॉवां), कोदा की भी वहां अच्छी पैदावार होती थी । थोड़ी मात्रा में चीणा, बाजरा और मक्की भी वे पैदा करते थे । दालें भी वे पैदा करते ही थे, जिनमें चना, उड़द, राजमा, कुलथ, लोबिया, मूंग, मसूर, तोर प्रमुख थीं । कड़ुवा तेल वे सरसों से, मीठा तेल तिलों से और चूलू का तेल चूलू (खुबानी) के ढेलों से वे निकालते थे । मीठे तेल की तासीर गरम, चूलू के तेल की ठंडी और कड़ुवे तेल की गरम रहती है । ईख के कुछ पौधे और आधे खेत में कपास हर परिवार उगाता था । केला, आड़ू, खुबानी, सेब, नासपाती उन्हें अपने खेतों

से और किनगोड़, करौंदा, हिंसर और काफल जंगलों से मिल जाते थे। केवल नमक और गुड़ की भेलियां ही वे टिहरी या ऋषिकेश से मगा लेते थे।

उनके चौक (आंगन) में भैंसें बंधी रहती थीं। जंगल पास में ही था। दूध, दही और घी बेचकर भी वे पैसा कमा लेते थे। हर परिवार के पास अपनी बैलों की जोड़ी रहती थी। कोई गायें भी पालते थे। भेड़ें भी दो-चार हर एक के पास रहती थीं। बाजरा वे डंगरों को चारे के रूप में घास के साथ देते थे। किसी-किसी के पास खिच्चरें भी रहती थीं। वे माल ढोने के काम के लिए रखी जाती थीं।

कपड़ा वे बाजार से नहीं खरीदते थे। फालतू समय में चरखा भी चलाते थे और ऊन भी कातते थे। हर दो-तीन गांव में एक कोली (कोरी) परिवार रहता था, जिसके पास खड्डी रहती थी। वह उनके लिए सूती कपड़े, चद्दरें तथा पंखियां (कंबलें) आदि बुनता था। खेती के उपकरण और दराँतियां, कुदालें, बसौले, कुल्हाड़े आदि उनके लिए गांव का लोहार बनाता था। पीतल और तांबे के बरतन उन्हें स्थानीय टमोटे बनाकर देते थे। सोने-चांदी के गहने बनानेवाले सुनार भी हर क्षेत्र में रहते थे।

अन्य पहाड़ी गांवों की तरह गोविंदपुर में भी सीढ़ीनुमा खेत थे, जो ग्रामवासियों के बीच बंटे थे और उनके नाम पर दर्ज भी रहते थे, परंतु उनमें रोपाई, निराई आदि वे मिलकर करते थे। उनके बीच अड्याल-पड्याल (परस्पर श्रम-सहयोग) चलती थी। हर गांव की तरह वहां भी अपना दरजी था, जिसके पास पंचायती ढोल-नगाड़ा व सिलाई-मशीन रहती थी। वह तीज-त्योहारों में तथा अन्य मांगलिक अवसरों पर ग्रामवासियों के यहां ढोल-नगाड़ा बजाता था, तथा उनके कपड़े भी सिलता था। वहां एक वैद्यजी भी थे, जो बीमारी में लोगों का उपचार करते थे। एक पंडितजी भी थे, जो बच्चों को घर पर पढ़ाते थे और पुरोहित का काम भी करते थे। इन सबके डड्वार बंधे थे, यानी हर फसल पर इनको हर घर से निश्चित मात्रा में अन्नादि मिलता था। रुपये-पैसे का प्रचलन बहुत कम था।

महानंद इसी मुकंदपुर ग्राम का निवासी था और उसकी पत्नी, कौशल्या ही उसके साथ रहती थी। उसका इकलौता बेटा, पदमदत्त एम. कॉम. पास करने के बाद दिल्ली की एक मशहूर कंपनी में मैनेजर के पद पर काम करता था और अपनी बहू और दो पुत्रों के साथ वहां ठाठ से रहता था। कंपनी की तरफ से उसे एक आलीशान फ्लैट, कार एवं अन्य सुविधाएं प्राप्त थीं। उसकी बहू वहां के एक बालिका-विद्यालय में प्रवक्ता थी और दोनों बच्चे अंगरेजी स्कूल में पढ़ रहे थे। पदमदत्त

गांव पहले की तरह ही आत्म-निर्भर थे और उनमें रहनेवाले लोग सहयोग एवं सहस-उपभोग के सिद्धांत में विश्वास कर शांतिपूर्ण जीवन-यापन कर रहे थे। उनके दिलों में एक दूसरे के लिए स्नेह और सहानुभूति थी लेकिन मुकंदपुर गांव से महानंद ने दिल्ली में आकर जो कुछ देखा, वह अजीब ही था।

प्रारंभिक वर्षों में गांव के समीप की प्राइमरी पाठशाला में ही पढ़ता रहा । हाई स्कूल उसने टिहरी से, बी. ए. देहरादून से और एम. कॉम. दिल्ली से किया था । उसे पढ़ाने-लिखाने में उसके माता-पिता को कड़ी मेहनत करनी पड़ी थी ।

एक शाम पदमदत्त अपने गांव पहुंच गया और उसने अपने माता-पिता से कहा, 'आप लोग अब वृद्ध हो चले हैं । यहां अकेले रहकर क्या करेंगे ! चलकर हमारे साथ दिल्ली में आराम से रहिए । वहां सब सुख-सुविधाएं हैं ।'

'बेटा । हमें यहां कोई परेशानी नहीं है । पूरा गांव हमारे साथ सहानुभूति रखता है और सभी हर काम में हमें सहयोग देते हैं । सबका स्नेह हमें मिलता है ।' उसके पिता ने कहा ।

'हम यहां शांति से रह रहे हैं और पूरी तरह संतुष्ट हैं । सबके साथ मिलकर काम करने और बांटकर खाने में हमें जो आनंद मिलता है, वह हमें शायद ही कहीं और जगह मिल सकेगा,' उसकी मां बोली ।

'दिल्ली की बात ही कुछ और है । आप लोग अब तक यहीं रहते रहे हैं । जो आराम और सुख-सुविधाएं आपको वहां मिलेंगी, उनकी कल्पना आप लोग यहां रहकर नहीं कर सकते हैं । फिर आप लोगों को हमें सेवा का मौका भी तो देना चाहिए', पदमदत्त ने उनसे हाथ जोड़ते हुए कहा ।

अंत में उन्हें उसकी बात माननी पड़ी और वे उसके साथ चलने के लिए तैयार हो गये । उन्हें छोड़ने के लिए पूरे गांव के लोग बहुत दूर तक उनके साथ गये और अश्रुपूरित नयनों से उन्होंने उनकी तरफ देखकर उनसे विदा ली । उन्होंने भी हर-एक से गले मिलकर उन्हें छोड़ने के लिए क्षमा याचना की ।

दिल्ली पहुंचकर महानंद और कौशल्या को लगा, जैसे वे किसी दूसरे लोक में पहुंच गये हैं । अपने बेटे के फ़्लैट में प्रवेश कर तथा अपनी बहू और पोतों से मिलकर उनके सिर जीवन में पहली बार गर्व से ऊपर उठ गये और वे अपने को धन्य समझने लगे ।

दूसरी सुबह शौचादि कर्मों से निवृत्त होकर सबने नाश्ता किया । बाद में बच्चे अपने स्कूल, पदमदत्त अपने दफ़्तर और बहू अपने कॉलेज के लिए घर से चल पड़ी । इस प्रकार महानंद और कौशल्या उस फ़्लैट में अकेले रह गये । वे जीवन-पर्यंत काम करते रहे थे, और वह उनका स्वभाव बन गया था, इसलिए वहां बैठे-बैठे परेशान होते रहे । वहां उनके करने लायक कोई काम था भी नहीं ।

ठीक दो बजे अपराह्न उनकी बहू और पोते घर पहुंच गये । इसके बाद बहू खाना बनाने पर लग गयी । और बच्चे अपने दादा-दादी के साथ बातें करते रहे । गांव में लोग क्या करते हैं ? वहां के स्कूल कैसे हैं ? उनका मकान कितना बड़ा है ?— ऐसे ही अनेक प्रश्न वे उनसे पूछते रहे बहुत देर तक । खाना तैयार हो जाने के बाद सबने भोजन किया । फिर टी. वी. देखने में व्यस्त हो गये । पदमदत्त दिन का भोजन दफ़्तर में ही करता था । कभी आवश्यक काम पड़ने पर दिल्ली से बाहर भी चला जाता था और कभी दूसरे ही दिन, तो कभी एक सप्ताह बाद घर पहुंचता था । उस दिन वह देर रात में घर लौटा था ।

अगल-बगल में अन्य लोगों के फ़्लैट थे ।

उनमें कौन रहता था, या क्या करता था, यह महानंद और कौशल्या कई महीने वहां रहने के बाद भी जान न पाये थे । वहां एक-दूसरे से कोई वास्ता लोगों का नहीं रहता था । सब अपने में केंद्रित रहकर अपने-अपने धंधों में लगे रहते थे । कोई मरे, कोई जिए, उनकी बला से । सड़कों पर लाखों लोग रात खुलने से लेकर देर रात तक इधर-से-उधर भागते रहते थे । जिधर देखो, उधर ही गाड़ियां दौड़ती रहती थीं ।

उनके घर में किसी बात की कमी नहीं थी । रेडियो, टेलीविजन, वी. सी. आर., टेप रिकार्डर, फ्रिज, मिक्सी, कपड़े धोने की मशीन, गैस का चूल्हा, हीटर, कूलर आदि सब-कुछ वहां था । फिर भी कुछ ही महीनों के बाद महानंद और कौशल्या को लगा कि वे वहां रहकर उपेक्षा का पात्र बन गये हैं । किसी को भी उनसे बात करने तक की फुरसत नहीं थी । सब अपनी-अपनी धुनों में मस्त थे । बच्चे पहले दो-तीन दिन तक ही उनसे गांव के संबंध में प्रश्न पूछते रहे । बाद में पूछने लायक कुछ रह ही नहीं गया था । इन्हीं कारणों से कुछ ही महीनों में उन दोनों का उस वातावरण में दम घुटने लगा और वहां एक दिन और काटना उनके लिए मुश्किल हो गया ।

एक सुबह महानंद ने कौशल्या के सामने पदमदत्त और उसकी बहू से कहा, 'हमरा मन यहां नहीं लग रहा है । तुम हमें गांव पहुंचा दो ।'

'यह मुझे भी लग रहा था', पदमदत्त के मुंह से निकल पड़ा ।

'ठीक है । इन्हें गांव छोड़ आइए', उसकी बहू बोली ।

अगली सुबह महानंद और कौशल्या पदमदत्त के साथ गांव के लिए चल पड़े । चलते समय उनके पोतों ने 'टा-टा' कहकर अपने हाथ हिला दिये ।

उनके गांव में पहुंचते ही पूरा गांव उनसे मिलने के लिए उमड़ पड़ा और उन्हें अपने बीच पाकर लोग भाव-विह्वल हो गये ।

महानंद ने उन सबके सामने पदमदत्त से कहा, 'बेटा ! मनुष्य को वस्तुतः परस्पर स्नेह और सहानुभूति चाहिए, जो शहरों में नहीं, गांवों में रहकर मिल सकती है । पेट तो डंगर भी भरते हैं ।'

— एडवोकेट
टिहरी-गढ़वाल (उ. प्र.)

अस्थमा (दमा) का भारतीय पद्धति से इलाज

इलेक्ट्रोकेमिकल थेरापी एक नयी भारतीय चिकित्सा पद्धति है, जिसका आविष्कार कोयम्बटूर में बसे डॉ. पी. बी. माथुर ने किया है और इस चिकित्सा पद्धति से डॉ. माथुर अस्थमा, मधुमेह, वात, गुरदे तथा हृदय के असाध्य रोगों का इलाज करते हैं । ८० प्रतिशत रोगियों को उनके उपचार से आराम हुआ है और असाध्य रोगों से छुटकारा मिला है ।

डॉ. पी. बी. माथुर विगत कई वर्षों से इस चिकित्सा पद्धति द्वारा कोयम्बटूर में तथा देश के विभिन्न भागों में कैंप लगाकर हजारों को निरोग कर चुके हैं ।

— रमेश कुमार



नानी के गार्जियन

क ख ग, उ.प्र. मैं पचास वर्षीय, जन्मजात, पूर्णतः व स्थायी रूप से विकलांग हूं और आर्थिक रूप से पराश्रित । पिता की मृत्यु के बाद से मेरी मां, बहन व मुझे नानाजी ने पूर्ण आर्थिक संरक्षण दिया । बीस वर्ष तक नाना का संरक्षण हमें मिला । नाना के बाद नानी ने संरक्षण दिया, लेकिन कुछ वर्ष बाद नानी स्मरण शक्ति खो बैठीं । नानी के बैंक खाते में दूसरा नाम उनके छोटे भाई का है । उन्होंने न्यायालय से नानी की विक्षिप्तता के आधार पर गार्जियनशिप प्राप्त कर ली और हमें यह कह कर पैसा देने से इनकार कर दिया कि नानी के जीवित रहते वह उनकी इच्छा के विपरित कुछ भी नहीं करना चाहते । क्या गार्जियनशिप कानून में कोई ऐसा प्रावधान है कि मैं नानी की संपत्ति में से आजीवन भरण-पोषण के लिए एक नियत राशि प्राप्त करता रह सकूं ।

नानी की मानसिक विक्षिप्तता की स्थिति में उनके पैसे का प्रयोग न्यायालय द्वारा नियुक्त संरक्षक, नानी के भरण पोषण या न्यायालय द्वारा निर्धारित खर्चे के लिए ही कर सकता है । जिस न्यायालय ने आपकी नानी के भाई को उनका संरक्षक बनाया है, वह न्यायालय यह भी स्पष्ट कर सकता है कि उनकी संपति का प्रयोग किस रूप में किया जाए । इसलिए आप संरक्षण महोदय को अनुरोध करें कि वह न्यायालय से आवश्यक आदेश प्राप्त कर लें ।

मामाजी की संपत्ति

महेश कुमार, किशनगंज : हमारे रिश्ते के मामा-मामी काफी दौलतमंद हैं । इनकी केवल एकमात्र पुत्री है, जिसका विवाह वह कर चुके हैं । शादी के बाद से ही लड़की के ससुरालवाले मामाजी की संपूर्ण जमीन-जायदाद हड़पना चाहते हैं । मामाजी के हम तीन सगे भांजे भी हैं । मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या मामाजी की संपत्ति पर केवल इकलौती पुत्री का ही अधिकार बनता है ? यदि हां, तो कहीं ऐसा न हो कि मामाजी की मृत्यु के बाद लड़की के ससुरालवाले लड़की को डरा-धमकाकर सारी जमीन-जायदाद अपने नाम करवा लें ।

हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम के अंतर्गत लड़की प्रथम श्रेणी की उत्तराधिकारी है । इसलिए अपने माता-पिता की संपत्ति में उनका अधिकार विधि सम्मत है । मामा-मामी के न रहने पर यदि प्रथम श्रेणी के अन्य उत्तराधिकारी नहीं रहेंगे, तो लड़की ही पूरी संपत्ति की मालिक होगी । भांजे सगे हों या रिश्ते के, दोनों स्थिति में उनको उत्तराधिकार प्राप्त नहीं हो सकता । लड़की की ससुरालवाले मामा-मामी के जीवनकाल में उनकी इच्छा के विरुद्ध संपत्ति पर कब्जा नहीं कर सकते । वस्तुस्थिति तो यह है कि उनके स्वर्गवास के बाद भी ससुरालवालों का संपत्ति पर अधिकार नहीं बनता, वह तो केवल पुत्री तक ही सीमित रहता है ।

जन्म पूर्व वसीयत

राजेश कुमार, मुजफ्फरपुर : मेरे पिताजी ने एक पुराना मकान का एक भाग खरीदा है तथा उस मकान का शेष भाग अभी नहीं बिका है । उस

कान के मालिक का उसके बड़े भाई से झगड़ा । कारण यह है कि यह मकान नैनिहाल से मिला आ है तथा इस मकान के मध्य एक निजी मंदिर ी है । इन दोनों भाइयों के जन्म से पहले नाना ने सीयत लिखी थी कि मेरी बेटी का जो बड़ा ड़का होगा, वह इस संपत्ति का वारिस होगा । पर छ सालों पहले इन दोनों भाइयों के बीच पंचायत रा बंटवारा करा दिया गया कि मंदिर पर दोनों ाइयों का बराबर हिस्सा रहेगा । पर अब बंटवारे ो नहीं स्वीकार करके उसका बड़ा भाई पूरी पत्ति पर अपना हक मानता है, जबकि बंटवारा नों भाईयों की स्वीकृति से पूरे कागजात के साथ त्या गया था । क्या जन्म के पहले की वसीयत वैध हो सकती है ? क्या इस तरह की संपत्ति पर ी ही लोगों का अधिकार रहता है, जिसके नाम सीयत लिखी हो ? क्या मेरे पिताजी का वह कान खरीदना अवैध हो जाएगा ?

आपके पिताजी ने संपत्ति खरीदते समय चनेवाले व्यक्ति के पक्ष में दस्तावेज देखे गे । आपके पत्र से स्पष्ट नहीं होता कि वह स प्रकार के दस्तावेज थे ।

मकान-मालिक के नानाजी को अपनी संपत्ति वसीयत करने का पूरा अधिकार था, अपने वाले नाती के पक्ष में वसीयत करके उन्होंने ई गलत कार्य नहीं किया । नानाजी की मृत्यु बाद उक्त नाती उस संपत्ति का स्वामी हो । दूसरे नाती का अर्थात छोटे भाई का त्ति में कोई अधिकार नहीं ।

इसके बाद पंचायत में बंटवारा किस प्रकार ाया । क्या पंचायत में बड़े भाई ने संपत्ति को भाई की संपत्ति स्वीकार किया ? यदि हां, चायत को इस दिशा में संपत्ति के एक भाग स्वामित्व छोटे भाई को देने के लिए श्यक दस्तावेज बनवाने चाहिए थे ।

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कार्रवाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

आपके पत्र में एक महत्तवपूर्ण बात यह है कि बड़े भाई ने स्वयं छोटे भाई का हिस्सा मानते हुए आवश्यक दस्तावेज बनवाये तथा इन दस्तावेजों को सही मानते हुए खरीदार अर्थात आपके पिता ने छोटे भाई का हिस्सा खरीदा । इस स्थिति में बड़े भाई का स्वयं का आचरण उनके मार्ग में अवरोध बन जाएगा तथा वह अब आपसे पिताजी द्वारा खरीदे गये भाग के संबंध में पंचायत द्वारा किये गये बंटवारे का विरोध नहीं कर सकेंगे । आवश्यकता पड़ने पर आपके पिताजी को बड़े भाई के आचरण को आधार बनाकर अपने अधिकार की रक्षा करनी चाहिए ।

किराये की रसीद

मनोजकुमार श्रीवास्तव, पटना : मैं किराये के मकान में रहता हूं । तीन साल से मकान-मालिक से किराये की रसीद मांग रहा हूं, लेकिन वे मुझे रसीद नहीं देता । क्या विधि के अनुसार मैं उसे किराये की रसीद देने के लिए बाध्य कर सकता हूं ?

प्राप्त किये गये किराये की रसीद मकान-मालिक को देनी चाहिए । इससे दोनों पक्षों के मध्य भविष्य में विवाद की संभावनाएं कम हो जाती हैं । मकान-मालिक को आप किराये की रसीद देने के लिए बाध्य कर सकते हैं । मकान का किराया आप मनीआर्डर द्वारा मकान-मालिक को भेजें । इससे डाक विभाग

आपको पाबती लाकर देगा। डाक-विभाग की पाबती के बाद भी मकान-मालिक को नियमानुसार निर्धारित फार्म में आपको किराए की रसीद देनी चाहिए। इस रसीद में मकान-मालिक यह उल्लेख कर सकता है कि किराया मनीआर्डर द्वारा प्राप्त हुआ है।

शादी हो सकती है ?

राज, बिहार : मैं २५ वर्षीय युवक हूं। मुझे पांच साल पहले एक लड़की से प्यार हो गया, जब हम दोनों एक साथ कालेज में पढ़ते थे। वह रिश्ते में मेरी चाची की भतीजी लगती है। मैं उससे शादी करना चाहता हूं। क्या ऐसे संबंध में शादी हो सकती है ?

मेरे घरवाले मेरे और लड़की के बीच भाई-बहन का रिश्ता बताकर शादी नहीं करने देना चाहते।

आप दोनों उस परिधि में नहीं आते, जिस परिधि के व्यक्तियों का आपस में विवाह निषेध होता है। चाची की भतीजी से विवाह करने में कानूनन कोई प्रतिबंध नहीं है। आपके परिवारवाले इसे भाई-बहन का रिश्ता बताकर विवाह की अनुमति नहीं दे रहे, यह आपके परिवार की सोच है।

प्रामेसरी नोट का उल्लंघन

सत्यविजय जैन, शाजापुर : मैंने एक व्यक्ति को २३ हजार रुपये दिये हैं, जो उसे प्रामेसरी नोट के अनुसार चार सौ रुपये प्रतिमाह के हिसाब से देने हैं। लेकिन जुलाई ९३ से वह नहीं दे रहा है। अतः मुझे क्या कानूनी कार्यवाही करनी चाहिए ?

आप अपना रुपया वापस लेने के लिए न्यायालय की शरण में जा सकते हैं। दीवानी प्रक्रिया संहिता के आदेश ३७ नियम २ में इस प्रकार के दावे के लिए विशेष व्यवस्था है। उक्त नियम में दावा करने पर प्रतिवादी को दावे का उत्तर प्रस्तुत करने का अधिकार लेने के लिए प्रार्थना पत्र देना पड़ता है। प्रतिवादी यदि न्यायालय को संतुष्ट कर सके कि विशेष कारणों के आधार पर उन्हें उत्तर प्रस्तुत कर दावा लड़ने का अधिकार दिया जाना चाहिए, तब ही न्यायालय दावा लड़ने की अनुमति प्रतिवादी को देता है। अनुमति देने से पूर्व न्यायालय रुपया न्यायालय में जमा करवाने या बैंक गारंटी देने आदि की शर्त भी लगा सकता है।

लोन नहीं दे रहे

भतेरी देवी, हिसार : मेरी मौसी ने जवाहर रोजगार योजना के अंतर्गत दुकान करने के लिए फार्म भरकर जमा कराया था। बैंक अधिकारी ने निरीक्षण करके लोन पास कर दिया था। लोन पास हुए छह महीने से अधिक हो गये। लेकिन बैंक अधिकारी रकम नहीं दे रहे और न कोई कारण ही बता रहे हैं। बराबर चक्कर कटवा रहे हैं बड़े अधिकारी भी सुनवाई नहीं कर रहे। बताइए क्या करें ?

सरकार योजनाएं बनाते समय यह मानती कि योजनाओं का लाभ जनता तक पहुंचेगा, परंतु कुछ सरकारी अफसर उनमें बाधाएं पैदा कर देते हैं।

कानून भी इस प्रकार की बाधाओं को समाप्त करने में सहायक हो सकता है। सरकारी अधिकारी को नियमानुसार कार्यवाही करने के लिए बाध्य करने का एक मार्ग उच्च न्यायालय में समादेश याचिका प्रस्तुत करना है। आपकी मौसी हरियाणा उच्च न्यायालय समादेश याचिका प्रस्तुत करके प्रार्थना कर सकती हैं कि बैंक अधिकारियों को नियमानु कार्यवाही कर स्वीकृत लोन की रकम देने क निर्देश दे।

नुष्य के जीवन में भूलने का भी वही महत्त्व है, जो याद रखने का । अपनी ति के अनुसार मनुष्य निरर्थक बातों को भूल ा करता है । यदि ऐसा न हो, तो अपने र्यों तथा अपनी आवश्यकताओं से संबंधित र्क बातों को अपने मस्तिष्क में रख पाना के लिए कठिन हो जाए । पौराणिक लेखों में विस्मृति को मनुष्य का एक गुण माना गया उसके जीवन में अनेक अप्रिय घटनाएं होती हैं । किसी बात को धारण करने में असफल रहना ही भूलना है, और संभवतः असंगत, अनावश्यक, अप्रासंगिक, असंबद्ध और यदि फ्रायड की दलील को हम सही मान लें तो, अप्रिय बातों को धारण करने से मनुष्य इनकार करता है ।

गत वर्षों में मुलर और पिल्जेकर के प्रयोगों से यह मान्यता बनी है कि किसी बात को सीखने या पढ़ने के बाद हम सो गये हैं, तो

हम भूलते क्यों हैं ?

● अनंतराम गौड़

हैं : किसी का जवान बेटा नहीं रहा, तो स्त्री युवावस्था में ही अपने पति को खो किसी आपदिक घटना में कोई अपने नभर की कमाई गंवा बैठा आदि । ऐसी कष्टदायक बातों को मनुष्य समय बीतने के -साथ भूल जाया करता है । यदि ऐसा न ो वह विक्षिप्त हो जाए और फिर कोई भी क कार्य करने के योग्य ही नहीं रहे ।

नोवैज्ञानिक एच. एबिंगहॉस ने सन १८९० नने की गति पर कुछ प्रयोग किये थे । की हुई बातों को भूलते रहना मनुष्य का त्र है, किंतु धारण की हुई बातों को भूलने ति क्या रहती है—इस बारे में एबिंगहॉस निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सके । किंतु नक मनोवैज्ञानिक यह मानने लगे हैं कि के लिए समय का बीतना तो मात्र एक है, इसके अतिरिक्त और भी कई कारण उसके पश्चात भूलने की संभावना कम रहती है । जागृतावस्था में हम नयी-नयी बातें सीखते-समझते रहते हैं, तथा यदि नयी की पुरानी से सदृश्यता हुई तो पुरानी का भूलना स्वाभाविक है । किंतु यह निष्कर्ष भी सौ प्रतिशत सही नहीं माना गया है ।

भूली हुई यादें

बातों को अस्थायी तौर पर भूलने की भी एक क्रिया है । भूली हुई बातों को याद करने के प्रयास में हमारी चेतना में कुछ स्थानापत्र बातें आ जाती हैं । हम जानते हैं कि वे सही नहीं हैं, फिर भी वे हमारी चेतना में अड़ी रहती हैं । स्थानापत्र बात का भूली हुई बात से कोई न कोई उद्देश्यमूलक संबंध अवश्य होता है ।

इसी प्रकार भूलने के पीछे कोई न कोई दमित उद्देश्य रहता है, जो प्रायः संवेगात्मक (इमोशनल) होता है । एक स्त्री की बहन ने

अपना नया मकान बनवाया । गृहप्रवेश के अवसर पर वह स्त्री अपनी बहन को बधाई देती हुई पत्र लिखती है, किंतु पता पुराना ही लिख जाती है । यह इस तथ्य का द्योतक है कि इस स्त्री के मन में कहीं न कहीं ईर्ष्या की भावना है, क्योंकि वह स्वयं अब तक किराये के मकान में ही रह रही है ।

कभी कोई बात याद न आ रही हो, या सामनेवाले को पहचानने में कठिनाई पेश आ रही हो, तो प्रायः लोग यह मान बैठते हैं कि बुढ़ापे की उम्र हो गयी है, इसलिए यह तो होना ही है । स्मरण-शक्ति कब तक साथ देगी ? लोग यह भ्रम पाल बैठते हैं कि बुढ़ापे के साथ याददाश्त भी कमजोर होने लगती है ।

अभी कुछ वर्ष पूर्व तक ऐसी धारणाओं के प्रति सहमति भी व्यक्त कर दी जाती थी, किंतु हाल में हुए शोध से जब यह पता चला कि हमारी बुद्धि में जीवनपर्यंत लचीलापन बना रहता है, तब लोग कुछ आश्वस्त होने लगे हैं ।

संबंध उम्र और याददाश्त का

बढ़ती उम्र के साथ मनुष्य की स्मरण-शक्ति को थोड़ा-बहुत झटका लगना तो स्वाभाविक है, किंतु सामान्यतया बुढ़ापे की किसी भी कगार तक हमारी याददाश्त हमारा साथ नहीं छोड़ती ।

यह बात तो सच है कि बुढ़ापा आने पर मस्तिष्क की कोशिकाओं की एक बड़ी संख्या निष्क्रिय हो जाती है, फिर भी वास्तविकता तो यह है कि मस्तिष्क में कोशिकाओं की भरमार होती है. मस्तिष्क में कोशिकाएं इतनी अधिक हैं कि हमें उतनी की आवश्यकता नहीं होती । यदि एक दिन में ५० हजार से लेकर एक लाख तक तंत्रिकाकोशिकाएं (न्युरॉन) नष्ट भी हो जाएं तो सत्तर वर्ष की उम्र तक मात्र एक अरब न्युरॉन की ही तो क्षति होगी, जबकि हमारे पास कोशिकाएं इससे १०० गुना अधिक हैं । सौभाग्य से, यहां कोशिकाओं की संख्या का महत्त्व नहीं है, अपितु उन रासायनिक संयोजकों का महत्त्व है, जो हमारे मस्तिष्क में फैली अरबों-खरबों कोशिकाओं को आपस में जोड़ते हैं ।

एक बात और है । हम साधना और प्रशिक्षण द्वारा भी अपने मस्तिष्क को इस योग्य बनाये रख सकते हैं कि एक बार उसमें जो आ जाए वह बाहर न जाने पाये । हमारी मानसिक क्षमताएं उन औजारों की तरह हैं, जिनका जितना अधिक उपयोग करेंगे, उनकी क्षमताएं उतनी ही अधिक धारदार होती जाएंगी । बढ़ती उम्र के साथ यदि नयी चुनौतियां स्वीकार करते जाएं, तो आप देखेंगे कि आपकी याददाश्त तरोताजा रहती है और उसके कारण आप स्वयं भी सदा चैतन्यावस्था में रहते हैं ।

जरूरी है बौद्धिक व्यायाम भी

वैज्ञानिकों की पहले धारणा थी कि जीवन के प्रारंभिक वर्षों में हमारा मस्तिष्क तेजी से बढ़ता है और बीस से तीन वर्ष की आयु में पहुंचने के बाद एक लंबी अवधि के लिए सुस्ताने बैठ जाता है । किंतु यह सच नहीं है । शोध ने इसे गलत सिद्ध कर दिया है । प्रयोगशालाओं में किये गये अध्ययनों से भी यही सिद्ध हुआ है कि आपका मस्तिष्क तब तक बढ़ता रहता है, जब तक आप उसका उपयोग करते रहें और उस पर कसरत से दबाव डालते रहें । हमारा दिमाग तो एक प्रकार का 'प्लास्टिक' वशबर्ती सुनम्य अंग है । यह इस प्रकार का बना हुआ

क इस पर जितना भी भार डाला जाएगा यह से वहन कर लेगा ।

हम अपनी स्मृति और बौद्धिक शक्ति को धना से, अभ्यास से, या रियाज से सुदृढ़ कर कते हैं । ब्रूनो फर्स्ट ने स्मृति की तुलना मसल मांसपेशियों) से की है, और कहते हैं कि मृति को हम मसल की तरह सुडौल और सुंदर ना सकते हैं, तो फिर इसके साथ ही इस तथ्य भी हमें समझ लेना चाहिए कि यदि इसका योग भलीभांति न किया गया तो हमारी सल की तरह यह भी मुरझा सकती है । लिए शरीर के साथ ही दिमाग को भी त-दुरुस्त रखने के लिए उसका भी व्यायाम ता रहना चाहिए । यह बौद्धिक व्यायाम पनी सृजनशीलता को सुनम्य और लचीला नाये रखकर करना सबसे अधिक श्रेयस्कर

यह एक आम धारणा है कि हम उम्र के थ जब आगे बढ़ते जाते हैं, तो हमारी नशीलता उसी गति से पीछे हटती जाती है । लोग अध्ययन करके इस निष्कर्ष पर भी हैं कि अधिक उम्र के लोग उतने अच्छे नशील लेखक और विचारक नहीं होते, ने उनसे नयी पीढ़ी के होते हैं । पुराने लोगों स्तिष्क में जो ज्ञान पहले कभी प्रवेश पा होता है, वे उसी के सहारे चल पाते हैं, कि युवाओं में प्रत्युत्पन्नमति होती है । लिए वे वास्तविक रूप में सृजनशील होते

अतएव सृजनशील लेखन के लिए श्यक है कि अधिक वय के लोग ज्ञान के अपनी उत्सुकता और जिज्ञासा को जीवनभर जागृत बनाये रखें और यह तभी संभव है, जबकि साधना करके अपने मस्तिष्क को इस प्रकार प्रशिक्षित कर लें कि वह धारण की गयी बातों को गिरने न दें ।

बौद्धिक व्यायाम से स्वास्थ्य

ऐसा भी कहा जाता है कि शारीरिक व्यायाम से जहां शरीर चुस्त रहता है वहीं मन-मस्तिष्क भी चंगा रहता है । लेकिन इसके साथ ही यह भी सच है कि बौद्धिक व्यायाम से मन-मस्तिष्क के साथ शरीर भी स्वस्थ रहता है । शारीरिक निष्क्रियता से मस्तिष्क भी शिथिल हो जाता है हिलने-डुलने से परहेज करनेवाले व्यक्ति के दिमाग में कुछेक वैद्युत एवं रासायनिक परिवर्तन होते देखे गये हैं, जिससे जीवन के प्रति उसका उत्साह कम पड़ जाता है । शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि यह आवश्यक नहीं है कि आप कितना व्यायाम करते हैं, कितनी देर करते हैं, बल्कि आवश्यक है उसमें आप कितने नियमित हैं ।

शक्तिवर्द्धक दवाएं लेने के अभ्यस्त लोगों को यह जानकर निराशा होगी कि स्मृति बढ़ानेवाली कोई दवा अब तक नहीं बनी है । हां, स्मृति विशेषज्ञ यह जरूर मानते हैं कि यदि आप तनाव से बच सकें, तो मस्तिष्क के लिए यह टॉनिक जरूर सिद्ध होगा । चिंताग्रस्त मन आपकी स्मृति का भयंकर शत्रु है । इसलिए शांत रहिए, समाधिस्थ होकर मनन-चिंतन कीजिए और ध्यान लगाकर प्रकृतिस्थ हो जाइए । शांति मिलेगी, मन और मस्तिष्क को शांति मिलेगी और शक्ति भी ।

—सी २ बी/११२ सी, जनकपुरी, नयी दिल्ली

मास्को से सिंफरोपोल एक्सप्रेस ठीक नौ बजे रात छूटती है । मैं समय पर स्टेशन पहुंच गया था । कंडक्टर ने टिकट चेक किये और मैं अपने कूपे में दाखिल हुआ । इस कूपे में पहले से ही एक अधेड़ उम्र यात्री, एक युवक और एक छोटी-सी लड़की बैठे हुए थे ।

जैसा कि अकसर ट्रेन के सफर के दौरान होता है, लोग शीघ्र ही एक-दूसरे से परिचित हो जाते हैं । हमारे साथ भी यही हुआ । अधेड़ उम्र महाशय जीवशास्त्र के प्रोफेसर थे और युवक भाषा विज्ञान का छात्र । ट्रेन हवा की रफ्तार से आगे बढ़ रही थी । खिड़की के उस पार रात का अंधेरा दूर-दूर तक फैला हुआ था । बातचीत के दौरान प्रोफेसर ने बताया कि वह इस रेल मार्ग से बहुत अच्छी तरह परिचित है ।

''भई, मैं साल में दो-तीन बार इधर से गुजरता हूं ।''

''जरूर कोई खास वजह हो सकती है ।'' युवक ने उत्सुकता से पूछा ।

''दरअसल,मेरा जन्म सिंफरोपोल में हुआ था । वहां अब भी मेरे परिवार के लोग रहते हैं । बस, इसी तरह उनसे मिलने के लिए आना-जाना होता रहता है । कभी अवकाश के दौरान, तो कभी किसी जरूरी काम से ।'' प्रोफेसर ने कहा ।

अचानक कंडक्टर कूपे में दाखिल हुआ । उसने यात्रियों के सोने के लिए बिस्तर का इंतजाम किया । चाय ऑफर की । मैंने नन्ही नात्स्या के साथ रात का खाना खाया । नात्स्या ऊपरी कोच पर सोने चली गयी । सिगरेट पीने के खयाल से मैं कूपे के बाहर आया । जब वापस लौटा, तब कूपे में सभी सो चुके थे । मैंने नीली रोशनीवाला लैंप बुझाया और शीघ्र ही सो गया ।

सुबह तड़के ही मेरी नींद खुल गयी । नात्स्या और प्रोफेसर कूपे में नहीं थे । नात्स्या बाहर की खिड़की से सटकर खड़ी गांवों, खेतों तथा अलसायी नदियों के ऊपर तने नीले आसमान की ओर उत्सुकता से देख रही थी । नजदीक ही प्रोफेसर महोदय भी सिगरेट का कश लेते हुए खिड़की के उस पार कुछ देख रहे थे ।

''आप इतनी सुबह क्यों उठ गये ? सिंफरोपोल तो अभी दूर है ।'' मैंने पूछा ।

''भई, एक जगह छूट जाने का अंदेशा है

रूसी कहानी

अनजान रिश्ते

● के. पाउस्तोव्स्की



न जब उस इलाके से गुजरती है, तो रात के फर में भी मैं जागकर खिड़की के उस पार छ देखना पसंद करता हूं ।''

''तब तो जरूर आपके कोई रिश्तेदार यहां हते होंगे ? या शायद और कोई वजह हो ?'' ने उत्सुकतावश बात आगे बढ़ाते हुए पूछा ।

''नहीं,यह जगह मेरे लिए बिलकुल परिचित है । मैं वहां कभी नहीं गया । किंतु ह एक लंबी कहानी है । यह बात सन १९१७ पहले की है । उन दिनों मैं बहुत छोटा था । मैं अपने पिता के साथ सिंफरोपोल से स्को जाया करता था और सारा दिन मैं नात्स्या तरह खिड़की के पास खड़ा रहता था । एक र सूखे स्टेप्स के मैदान में मुझे कोई मूली-सी झोंपड़ी दिखायी दी । मैं यहां सवाले परिवर्तन को वर्षों से देखता रहा हूं । प के विशालकाय मैदान में यह अकेली पड़ी थी । एक बार सफर के दौरान मैंने देखा झोंपड़ी के पास कोई औरत चहल-कदमी रही है ।

शायद वह चूल्हा जला रही थी । बगल में कोई बच्चा सो रहा था । इस तरह कुछ समय और बीता । अब मेरी झोंपड़ी के आसपास दूसरी झोंपड़ियां बनने लगीं । धीरे-धीरे एक छोटे से गांव के शैशव ने किलकारियां भरनी शुरू कीं । एकदम मेरी अदना झोंपड़ी की तरह ।

वर्ष पर वर्ष बीतते रहे । मैं इस रेल मार्ग से गुजरता रहा । एक बार मुझे गांव के बच्चे दिखायी दिये । वे रेल की पटरियों के किनारे खड़े होकर जोर-जोर से चिल्ला रहे थे, ''अंकल, अंकल बिस्कुट लाओ ।'' हम मुसाफिरों ने उनकी ओर बिस्कुट और टाफियां उछाल दीं, किंतु वे रेत पर गिर गयीं । बच्चों ने फेंकी हुई चीजें खुशी-खुशी उठायीं और उसे लेकर गांव की ओर दौड़ गये ।

युद्ध के जमाने में मैंने कई साल तक इस गांव को नहीं देखा । अंत में वर्षों बाद एक दिन इसी रास्ते से गुजरा । हमेशा की तरह मुझे अपना गांव दिखायी दिया । सामने गांव के

ठीक पीछे की ओर दूर-दूर तक सूरजमुखी के खेतों का विशाल समुद्र-सा फैला हुआ था और 'अपनी झोंपड़ी' के नजदीक मुझे घमायल चेहरेवाली एक युवती दिखायी दी। युवती के बालों में लाल रिबन बंधा हुआ था।

सफर में हर बार मुझे नयी-नयी बातें देखने को मिलतीं। एक बार मुझे चेरी की एक नयी बगिया दिखायी दी। झोंपड़ियां साफ-सुथरी और आकर्षक लग रही थीं। हर झोंपड़ी के पास लाल-पीले फूल खिले हुए थे। स्कूली बच्चों का समूह सड़क से गुजरता दिखायी दिया। बच्चे बस्ता संभाले सड़क पर चहल-कदमी करते दिख रहे थे। चंद सालों के बाद इस गांव में पावरहाउस बना, जो ट्रेन की खिड़की से बिलकुल स्पष्ट दिखायी देता था। इस तरह एक भरा-पूरा गांव अपनी जवानी का सफर तय कर रहा था। मैं बूढ़ा हो गया हूं, पर मेरे आसपास जिंदगी की रौनक बढ़ती जा रही है। यह कितनी खूबसूरत है।

शीघ्र ही मेरा वह गांव आनेवाला है।

ट्रेन अब पावरहाउस के नजदीकी क्षेत्र से गुजर रही थी। हमने पावरहाउस देखा। फूलों से लदे हरे-भरे बगीचे और मकई के खेत भी दिखायी दिये।

"जनाब, आपकी झोंपड़ी कहां है ?" मैंने उत्सुकता से पूछा।

"बस, अभी दिखायी देगी।"

"वो, देखो ! ठीक... सामने... वो !"

झोंपड़ियों के इर्द-गिर्द हरित वृक्षावली और फूलों की ताजगी बिखरी पड़ी थी। झोंपड़ी के करीब ओवरकोट में मुझे हलकी चोटीवाली वही नवयुवती दिखायी दी, जिसकी चर्चा अभी प्रोफेसर महोदय ने की थी। शायद यह वही लड़की हो।

"वो, देखो ! तालाब अभी हाल में बना है। पहले यह नहीं था।" प्रोफेसर ने ऊंची आवाज में खिड़की से बाहर की ओर इशारा किया।

बड़ा-सा तालाब था, गहरा भी जरूर होगा। सूरज की किरणों से तालाब का पानी झिलमिला रहा था। तालाब में बच्चे कूद-कूदकर नहा रहे थे। यह सब गाड़ी की तेज रफ़्तार के साथ पलक झपकते ही विलीन हो गया।

क्षणिक खामोशी के बाद प्रोफेसर ने कहा :

"हां, मैं बूढ़ा हो चला हूं, लेकिन मेरे इर्द-गिर्द जिंदगी जवान हो रही है। मुझे अपनी बढ़ती उम्र का शिकवा नहीं। मैं कभी इस गांव में जरूर आऊंगा। अपनी झोंपड़ी पर जाऊंगा और उस 'प्यारी बिटिया' से मिलकर कहूंगा कि मैं अनेक-अनेक वर्षों से जानता हूं और हां, यह भी कहूंगा कि मैं तुम्हारी मां को भी अच्छी तरह जानता हूं। इस गांव के इतिहास से मेरा पुराना रिश्ता है।"

प्रोफेसर महोदय इतना कहकर खामोश हो गये। पर मेरी इच्छा हो रही थी कि अगले स्टेशन पर ही उतरकर इस गांव के जीवन में भी उन लोगों की तरह शरीक हो जाऊं। सूरज की रोशनी में झुलसते स्टेप्स के मैदान और गेहूं के खेतों के बीच इस झोंपड़ी के करीब ही शेष जीवन गुजार देने की इच्छा बलवती हो उठी।

अनुवाद : संगमलाल मालवी

बुद्धि विलास

१—एक परिवार में प्रत्येक बेटी के उतने ही भाई हैं जितनी की बहिनें और प्रत्येक बेटे के जितने भाई हैं उससे दुगुनी बहिनें। बताइए उस परिवार में बेटे-बेटियों की संख्या कितनी है ?

२—क-बौद्धों के धार्मिक मूलग्रंथ का क्या नाम है ?

ख—खोज के फलस्वरूप इसका सबसे पहले कहां पता चला ?

३—सोलहवीं शताब्दी में गुजरात में पुर्तगालियों से युद्ध में भारतीयों की सहायता के लिए मध्य एशिया के किस देश ने युद्धपोत भेजे थे ?

४—क-गत वर्ष के अंत में किस देश में संविधान द्वारा अश्वेतों को बराबरी के अधिकार दिये गये हैं ?

ख-पिछले वर्ष किस देश से लगभग चालीस वर्ष बाद भारत के राजनयिक संबंध पुनः स्थापित हुए हैं ?

५—क-वर्ष १९९३ में देश में कितनी विदेशी पूंजी के निवेश को मंजूरी दी गयी ?

ख—सबसे ज्यादा तेजी से भारत में किस देश का पूंजी-निवेश बढ़ रहा है ?

६—क-१९९२-९३ के अंत तक भारत पर कुल विदेशी ऋण कितना था ?

ख—देश में आज निरक्षर बच्चों की संख्या कितनी है ?

७—क-विश्व की आबादी में प्रति मास कितनी वृद्धि हो रही है ?

ख—सन् २००० तक विश्व की आबादी कितनी पहुंचने का अनुमान है ?

८—गत वर्ष अंतरिक्ष-विज्ञान के इतिहास में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना क्या हुई थी ?

९—निम्नलिखित पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता कौन हैं ?—

क—के. के. बिड़ला फाउंडेशन के अंतर्गत १९९३ का सरस्वती सम्मान, व्यास सम्मान, शंकर पुरस्कार, वाचस्पति पुरस्कार तथा बिहारी पुरस्कार।

ख—१९९३ का संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार पुरस्कार

ग—यूनेस्को का शांति, शिक्षा पुरस्कार

१०—खेलों में विशेष योगदान के लिए १९९२ के के. के. बिड़ला फाउंडेशन पुरस्कार पानेवाले कौन हैं ?

११—गत वर्ष के अंत में ढाका में आयोजित दक्षेस खेलों में सबसे ज्यादा पदक किस देश ने जीते हैं ?

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प। —संपादक



छन्नूलाल हाथ जोड़कर बोले, 'भैया, आप तो अपने 'डिपार्टमेंट' में काफी 'सीनियर' होंगे । थोड़ा हमारी सिफारिश कर देना । अब ऐसी गलती नहीं होगी । बाद में जब अपना टाइम आने पर हम आएंगे तो आपकी सेवा करेंगे ।'

यमदूत ने व्यंग्य से हंसकर जवाब दिया, 'आप वहां क्या सेवा करोगे ! वहां तो हमीं आपकी सेवा करेंगे ।'

व्यंग्य-कथा

छन्नूलाल की अक्लमंदी

● कुंदनसिंह परिहार

छन्नूलाल अपने युवा बेटे महेश को हमेशा ऐसे पुलककर देखते थे—जैसे कोई सूदखोर अपनी रकम को बढ़ते देखता है । वे लड़के को मुग्ध भाव से निहारते रहते थे । लड़का नौकरी पर लग गया है । कोई तगड़ा लड़कीवाला मिल जाए तो लाख-डेढ़ लाख पक्के । पुत्र को जन्म देने का पुरस्कार मिले ।

मुश्किल यही थी कि लड़का उनकी बात नहीं सुनता था । वे अपनी तरफ से हमेशा उसे नसीहत देते रहते थे—'बेटा, चार पैसे ऊपर के कमाओ । सच्चाई, ईमानदारी से इस महंगाई के जमाने में काम नहीं चलता । लक्ष्मी अपने आप नहीं आती । उसे थोड़ा फुसलाना पड़ता है ।'

कभी नसीहत देते, 'बेटा, यार-दोस्तों पर ज्यादा खर्च मत किया करो ।' आज के जमाने में पैसे से बढ़कर कोई सच्चा यार नहीं है । बाकी सब यार मतलब के होते हैं ।'

महेश उनकी बात सुनकर झल्ला उठता है । कहता है, 'आप ये ऊटपटांग बातें अपने पास रखो । हमें जो ठीक लगेगा, करेंगे ।'

छन्नूलाल खून का घूंट पीकर रह जाते हैं । आज के जमाने की औलाद को समझाना बहुत मुश्किल है । अक्ल की बात भी कांटे-जैसी लगती है ।

लड़कीवाले आने लगे हैं । उनके आते ही छन्नूलाल ऐसे अकड़कर बैठ जाते हैं—जैसे किसी मुल्क के सुल्तान हों । मुंह टेढ़ा करके खिड़की की तरफ देखते हुए बातें करते हैं—जैसे किसी प्रेत से वार्तालाप कर रहे हों । सीधे पूछते हैं, 'कितना खर्चा देंगे आप ?' वह साठ-सत्तर हजार बताता है तो छन्नूलाल खिड़की की तरफ देखते हुए व्यंग्य से हंसना शुरू कर देते हैं और आधे मिनट तक हिनहिनाते रहते हैं । सामने बैठा आदमी छोटा होता जाता है ।

हंसी रुकती है तो छन्नूलाल खिड़की को

संबोधित करके कहते हैं. 'साठ-सत्तर हजार में तो कोई चपरासी मिलेगा । यहां तो कई डेढ़ लाखवाले रोज चक्कर लगा रहे हैं ।'

कुछ मोटी पार्टियां सचमुच चक्कर लगा रही हैं । छन्नूलाल को विश्वास है कि अच्छे फायदे में सौदा पट जाएगा । डर यही है कि कहीं लड़का नखरे न दिखाने लगे ।

बुरे लक्षण प्रकट होने लगे । एक दिन महेश आकर कह गया, 'बाबूजी, सुना है आप मेरी शादी तय कर रहे हैं । मुझे अभी शादी नहीं करनी है । जब करनी होगी, बता दूंगा ।'

छन्नूलाल खौंखियाकर बोले, 'तो क्या बुढ़ापे में करोगे ?'

महेश बोला, 'कभी भी करूं । जब करनी होगी, आपको बता देंगे ।'

छन्नूलाल ने अपने तरकश से पुराने पारंपरिक तीर निकाले । बोले, 'मां-बाप होने के नाते हमारा धरम बनता है कि तुम्हारी शादी कर दें, इसलिए देख रहे हैं, नहीं तो हमें क्या । फिर, बहू आ जाएगी तो तुम्हारी अम्मा को थोड़ा आराम मिल जाएगा । नाती-पोते हों तो घर में अच्छा लगेगा ।'

महेश ने उनके दांव को काट दिया । कहा, 'घर में इतना काम नहीं है जिसके लिए अम्मां को परेशानी होती हो । इतनी जल्दी काहे की पड़ी है ?'

छन्नूलाल का दिल बैठ गया । लगा लक्ष्मी दरवाजे पर दस्तक देते-देते 'टा—टा' कहने लगी है । भुनकर बोले, 'बड़े हो गये हो न, इसलिए बाप की बात बेवकूफी लगती है । जो जी में आये, करो ।'

फिर भी उन्होंने आस छोड़ी नहीं । पत्नी को ड्यूटी पर लगा दिया कि रोज बेटे को सीधे या संकेतों से बहू की जरूरत की याद दिलाती रहे ।

लेकिन एक दिन छन्नूलाल पर वज्रपात हो गया । महेश एक दिन माला-वाला पहने, एक लड़की को साथ लेकर आ गया । लड़की की मांग में दमदमाता सिंदूर । मां-बाप के पांव छूकर बोला, 'बाबूजी, हमें आशीर्वाद दीजिए । हमने शादी कर ली है ।'



छन्नूलाल की जुबान को लकवा लग गया । यह कौन-से जन्म के पापों की सजा मिली ? डेढ़ लाख हवा में तैरकर विलीन होते दिखे । तमतमाये चेहरे से चिल्लाये, 'कपूत, तेरी हिम्मत कैसे हुई इस लड़की के साथ घर में घुसने की ? निकल बाहर ।'

उनकी पत्नी ने उन्हें रोका, लेकिन वे उन्माद की हालत में थे । बेटे ने भारी चोट दी थी । बर्दाश्त से बाहर । पत्नी से डपटकर बोले, 'तुम्हें उनकी तरफदारी करनी है तो तुम भी घर से निकल जाओ ।'

पत्नी चुप हो गयी । महेश अपनी पत्नी को साथ लेकर घर से बाहर निकल गया ।

छन्नूलाल दिन-रात घर में फनफनाते घूमते थे । भूख, नींद सब गायब । पत्नी की लायी थाली को उठाकर फेंक देते । कहते, 'ऐसी औलाद से तो बेऔलाद अच्छे होते ।'

पत्नी भी दुखी बैठी रहती ।

आठ-दस दिन बाद पत्नी ने बगावत कर दी । बोली, 'अब बुढ़ापे में ज्यादा नखरे मत करो । लड़के ने शादी ही की है, कोई हत्या नहीं की है । या तो उन्हें बुलाकर लाओ, नहीं तो मैं उनके पास चली जाती हूं । तुम यहां अकेले पड़े रहना ।'

छन्नूलाल चिल्लाये, 'हां, निकलो बाहर । इसी वक्त निकलो ।'

पत्नी भी अपनी ओटली-पोटली लेकर चली गयी । छन्नूलाल के लिए घर भूतों का डेरा हो गया । दिनभर खटिया पर मरे से पड़े रहते । रात को करवटें बदल-बदलकर चिल्लाते, 'हे राम, उठा लो ।'

पड़ोसियों की नींद हराम होती । भुनभुनाते, 'यह ससुरा जान खाये लेता है । रातभर सियार की तरह हुआता है ।'

ऐसे ही तीन-चार रात वे 'उठा लो', 'उठा लो' चिल्लाते रहे । एक रात कुछ आहट से नींद खुली तो देखा अंगरखा-धोतीधारी, सफेद लंबे केश और दाढ़ीवाला एक आदमी उनकी खाट की बगल में खड़ा रस्सी खोल रहा है । छन्नूलाल उठकर बैठ गये । बोले, 'कौन हो भैया ? चोर-वोर हो क्या ? हम गरीब हैं । हमारे घर में कुछ नहीं मिलेगा ।'

वह आदमी अपना काम करते हुए कुछ गुस्से से बोला, 'हम यमदूत हैं । तुम्हें लेने आये हैं ।'

छन्नूलाल का पसीना माथे से बहकर ठुड्डी तक आया । बोले, 'क्या हमारी उमर पूरी हो गयी भैया ?'

यमदूत बोला, 'उमर तो पूरी नहीं हुई थी, लेकिन तुमने चिल्ला-चिल्लाकर यमराज का चैन हराम कर दिया । तुम्हारे लिए 'स्पेशल आर्डर' निकला है ।'

छन्नूलाल बोले, 'मैं क्या चिल्लाता था भाई ?'

यमदूत गुस्से में बोला, 'रोज 'उठा लो', 'उठा लो' नहीं चिल्लाते थे ? हमारा काम बढ़ाकर रख दिया । वैसइ क्या काम कम था ?'

छन्नूलाल घबराये । बोले, 'अरे भाई, मैं 'उठा लो' अपने लिए थोड़इ कहता था । मैंने 'हमें उठा लो' कब कहा ?'

यमदूत हाथ रोककर बोला, 'तो किसके लिए कहते थे ?'

छन्नूलाल बोले, 'वो तो मैं अपने दफ़्तर के

जुनेजा साहब के लिए कहता था । रोज एक 'मीमो' पकड़ा देते हैं । नाक में दम कर रखा है ।'

यमदूत बोला, 'हमें इस सब से कोई मतलब नहीं है । यह सब वहीं चलकर बताना ।'

छन्नूलाल हाथ जोड़कर आर्त्त स्वर में बोले, 'अरे भैया, एक बार चोला छूट गया तो दुबारा उसमें घुसने को नहीं मिलेगा । लोग फौरन फूंक-फांककर बराबर कर देंगे । हमें माफ कर दो । अभी तो हमने पोते का मुंह नहीं देखा । अभी तो लड़के की शादी हुई है । ऐसे कठोर मत बनो ।'

यमदूत कुछ द्रवित हुआ । बोला, 'ठीक है, तो हम वहां जाकर बता देते हैं । अगर 'आर्डर कैंसिल' हुआ तो ठीक, नहीं तो हम कल आकर तुम्हें ले जाएंगे । कल नहीं आयें तो समझना 'आर्डर कैंसिल' हो गया ।'

छन्नूलाल हाथ जोड़कर बोले, 'भैया, आप तो अपने 'डिपार्टमेंट' में काफी 'सीनियर' होंगे । थोड़ा हमारी सिफारिश कर देना । अब ऐसी गलती नहीं होगी । बाद में जब अपना टाइम आने पर हम आएंगे तो आपकी सेवा करेंगे ।'

यमदूत ने व्यंग्य से हंसकर जवाब दिया, 'आप वहां क्या सेवा करोगे ! वहां तो हमीं आपकी सेवा करेंगे ।'

इतना कहकर वह गायब हो गया ।

छन्नूलाल के लिए रात गुजारना मुश्किल हो गया । राम-राम करते सबेरा हुआ । सबेरा होते ही भागकर बेटे के घर पहुंचे । पत्नी उन्हें देखकर प्रसन्न हुई । बोली, 'आखिर अक्ल आ गयी ।'

छन्नूलाल असली बात को दबा गये । बोले, 'हां, सोचा बेटा-बहू पर गुस्सा करने से क्या फायदा ! घर में मन नहीं लगता । आज यहीं रहूंगा । कल सब को घर ले चलूंगा ।'

बहू-बेटे ने उनकी खूब आवभगत की, लेकिन उन्हें चैन नहीं था । आनेवाली रात उनके दिमाग पर सवार थी । दिनभर चुपचाप खाट पर पड़े जेब में रखी माला सटकाते रहे । शाम होते ही खाट पर पड़े रहना मुश्किल हो गया । बेचैनी से इधर-उधर घूमने लगे ।

रात बढ़ने के साथ उनकी हालत खराब हो रही थी । पसीना पोंछते-पोंछते गमछा गीला हो गया । पत्ता भी खड़कता तो चौंक उठते । लगता बुलावा आ गया ।

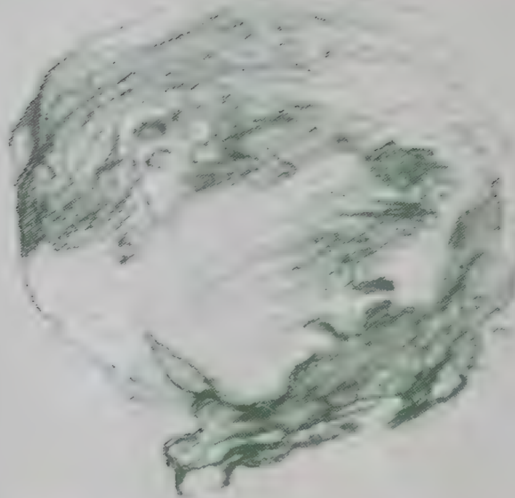
ऐसे ही काफी रात गुजर गयी । तीन-चार बजे सिकुड़कर खाट पर लेट गये ।' 'हुइहै वही जो राम रचि राखा ।' मौत का इंतजार करते-करते आंख लग गयी । सपने में देखा, यमदूत रस्सी खोलता हुआ उनके सामने खड़ा है ।

कह रहा है, 'चलो जी, तुम्हारी अरजी नामंजूर हो गयी ।'

छन्नूलाल ने देखा कि वे जान लेकर भागे और दरवाजे से टकराकर गिर गये । घबराहट में उनकी आंख खुल गयी । शरीर पसीने से लथपथ था ।

आंखें घुमाकर देखा, खिड़की से धूप घुसपैठ कर रही थी और सामने बहू चाय की 'ट्रे' लिए खड़ी थी ।

—५९, नव-आदर्श कॉलोनी
गढ़ा रोड,
जबलपुर-४८२००२



प्रेम एक विलक्षण अनुभूति है

● जे. कृष्णमूर्ति

वह एक अध्यापिका थी, या ऐसा कहना ठीक होगा कि वह एक अध्यापिका रह चुकी थी। वह स्नेहपूर्ण और मिलनसार थी, और यह स्वभाव लगभग उसके रोजमर्रे का जीवन बन गया था। उसने कहा कि पचीस साल से अधिक समय तक उसने पढ़ाया था और उसमें वह सुखी और संतुष्ट थी। आखिर में इस काम से वह निकलना चाहती थी, फिर भी उसी में बनी रही। उसके स्वभाव में जो एक बात गहराई में दबी पड़ी थी, उसका भान हाल ही में उसे हो रहा था। एक परिचर्चा गोष्ठी के दौरान उसने अचानक उसे महसूस किया और उससे वह सचमुच आश्चर्यचकित और स्तब्ध हो गयी थी। वह बात उसके भीतर निश्चित रूप से थी और उस बात का, उसका अपने ऊपर केवल मिथ्यारोप नहीं था। बीते हुए जीवन पर नजर डालने से आज उसे दीख रहा था कि वह बात हमेशा उसके अंदर मौजूद थी। वह सचमुच घृणा करती थी। यह घृणा किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं थी, लेकिन एक सामान्य द्वेष की भावना, एक दबा हुआ विरोध प्रत्येक व्यक्ति तथा वस्तु के लिए था। जब

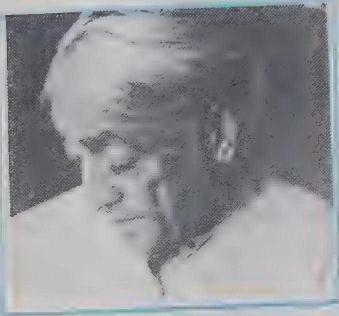
विचार संवेदन है और संवेदन प्रेम नहीं है । विचार की प्रक्रिया ही प्रेम का नकार है । प्रेम एक ऐसी लौ और लपट है जिसमें विचार का, ईर्ष्या का, द्वेष का, तथा किसी के उपयोग की मंशा का धुंआ नहीं होता क्योंकि ये सभी चीजें मन की ही हैं । जब तक मन की चीजों से हृदय बोझिल रहेगा, तब तक घृणा रहेगी, क्योंकि मन ही है घृणा, द्वेष, विरोध तथा द्वंद्व का स्थान । विचार प्रतिक्रिया है और प्रतिक्रिया सदा किसी न किसी रूप में शत्रुता का मूल स्रोत है ।

सबसे पहले उसके ध्यान में यह बात आयी तब उसे लगा कि यह एक साधारण-सी सतही बात ै और बहुत आसानी से वह उसे झटककर फेंक सकती है, लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतते गये वैसे उसे पता चलने लगा कि वह केवल मामूली-सी बात नहीं है, बल्कि वह एक गहरा जड़ जमाया हुआ द्वेष है जो उसके सारे जीवनभर चलता रहा है । और जिस बात ने उसे चौंका दिया वह यह है कि उसने अपने आपको सदा स्नेहमय और सदय मान लिया था ।

प्रेम : एक विलक्षण अनुभूति

मम एक विलक्षण अनुभूति है, जब तक विचार समें पिरोया हुआ है तब तक वह प्रेम है ही हीं । जब आप अपने प्रिय के बारे में सोचते हैं वह व्यक्ति सुखद संवेदनाओं, स्मृतियों और तिबिंबों का प्रतीक बन जाता है, लेकिन यह न नहीं है । विचार संवेदन है और संवेदन प्रेम हीं है । विचार की प्रक्रिया ही प्रेम का नकार । प्रेम एक ऐसी लौ और लपट है जिसमें चार का, ईर्ष्या का, द्वेष का, तथा किसी के योग की मंशा का धुंआ नहीं होता क्योंकि ये सभी चीजें मन की ही हैं । जब तक मन की चीजों से हृदय बोझिल रहेगा, तब तक घृणा रहेगी, क्योंकि मन ही है घृणा, द्वेष, विरोध तथा द्वंद्व का स्थान । विचार प्रतिक्रिया है और प्रतिक्रिया सदा किसी न किसी रूप में शत्रुता का मूल स्रोत है । विचार विरोध है, घृणा है ; विचार सदा स्पर्धा में रहता है, सदा किसी लक्ष्य और सफलता के लिए प्रयत्नशील रहता है । विचार के सफल होने का अर्थ है सुख, और उसका विफल होना ही घृणा है । द्वंद्व का अर्थ है परस्पर विरोधी चीजों में फंसा विकार और परस्पर विरोधी चीजों का समन्वय भी घृणा और द्वेष ही है ।

उस आगंतुक महिला ने कहना शुरू किया, ''देखिए, मैंने हमेशा यही माना कि मैं एक अध्यापिका के रूप में बच्चों को प्यार करती हूं, और बड़े हो जाने पर भी जब उन्हें कोई दिक्कत आती थी, तो वे मेरे पास समाधान के लिए आते थे । मेरी यह धारणा थी कि मैं उन्हें प्रेम करती हूं, विशेष करके उनको जो कक्षा के बाहर मुझे प्रिय थे । लेकिन अब मुझे दीखता है



विचार विरोध है, घृणा है ; विचार सदा स्पर्धा में रहता है, सदा किसी लक्ष्य और सफलता के लिए प्रयत्नशील रहता है ।

कि घृणा का, गहरे विद्वेष का एक अंतःप्रवाह हमेशा बहता रहा है । अब खुलकर सामने आयी इस बात के साथ मैं करूं तो क्या करूं ? आप कल्पना नहीं कर पाएंगे कि इस बात की प्रतीति से मैं कितनी भयभीत हो गयी हूं । और आप भले ही कहते होंगे कि हमें निंदा और आत्मधिक्कार का भाव नहीं रखना चाहिए, लेकिन इस बात का प्रकट होना बहुत हितकारक रहा है ।''

अवलोकन घृणा की प्रक्रिया का

क्या आपने घृणा की प्रक्रिया का भी पता लगाया है ? घृणा के कारण को देखना अर्थात आप घृणा क्यों करती हैं यह जानना अपेक्षाकृत सरल है, लेकिन क्या आपको घृणा के विभिन्न रूपों का भान हुआ है ? जैसे आप किसी विलक्षण और विचित्र वस्तु की तरफ पहली बार देखेंगी वैसे क्या आपने घृणा का अवलोकन किया है ?

''यह सब मेरे लिए अत्यंत नया है, दरअसल मैंने कभी घृणा की प्रक्रिया को बारीकी से देखा नहीं है ।''

तो अब हम उसका अवलोकन करेंगे और देखेंगे कि क्या होता है, जैसे-जैसे घृणा अपने आपको खोलती जाएगी, हम निश्चेष्ट होकर उसके प्रति जागरूक बने रहेंगे । चौंकिए मत, निंदा मत कीजिए या बहाने मत ढूंढ़िए, केवल निश्चेष्ट होकर उसका अवलोकन कीजिए । घृणा एक प्रकार का विफलीकरण है, है न ? आकांक्षा का सफलीभूत होना और विफल होना सदा साथ ही चलते हैं ।

आपको किस चीज में दिलचस्पी है ? व्यवसाय की दृष्टि से नहीं, बल्कि अपने गहरे भीतर किसी चीज में आपको रुचि महसूस होती है ?

''मेरी हमेशा चित्रकारी करने की इच्छा रही ।''

फिर आपने की क्यों नहीं ?

''मेरे पिताजी का आग्रह रहता था कि पैसा न लाये ऐसा कोई काम मुझे नहीं करना चाहिए । वे बड़े आक्रामक व्यक्ति थे और उनके लिए पैसे के सिवा किसी चीज का कोई मूल्य नहीं था । उन्होंने अपने जीवन में एक भी ऐसा काम कभी नहीं किया जिससे धन नहीं आता था, या अधिक प्रतिष्ठा और प्रभाव नहीं मिलता था । 'अधिक' ही उनका इष्टदेव था और हम सब उनके बच्चे थे । हालांकि वे मुझे अच्छे

लगते थे, किंतु कितने ही विषयों में मैं उनके विरोध में थी। पैसे के महत्त्व की यह धारणा मुझमें बहुत गहराई से पैठ गयी थी और मुझे अध्यापन शायद इसलिए अच्छा लगता था कि उससे हुक्म चलाने का अवसर मुझे प्राप्त होता था। छुट्टियों में मैं चित्रकारी करती थी लेकिन वह अत्यंत असंतोषजनक रहा। उसके लिए पूरा जीवन देने की मेरी तमन्ना थी लेकिन वस्तुतः केवल एक-दो महीने ही सालभर में दे पाती थी। आखिर मैंने चित्रकला को छोड़ दिया, लेकिन अंतस्तल में उसकी ज्वलंत वासना उमड़ती रही। अब मैं देख रही हूं कि उससे विद्वेष कैसे पैदा हो रहा था।''

आपने कभी विवाह किया ? आपके बच्चे ?

''मुझे एक विवाहित व्यक्ति से प्रेम हो गया और हम गुप्त रूप से साथ रहे। मैं उसकी पत्नी और बच्चों से भयंकर ईर्ष्या करती थी और मेरे अपने बच्चे हों ऐसी तड़प रहते हुए भी इसकी कल्पना से डरती थी। दांपत्य जीवन की सारी नैसर्गिक चीजें, हर रोज का सहजीवन आदि से वंचित थी एवं ईर्ष्या-जलन मेरा सर्वग्रासी उन्माद बन चुका था। मेरे प्रेमी को रहने के लिए दूसरे शहर में जाना पड़ा और मेरी जलन भी शांत नहीं हुई। यह बात असह्य थी। सब कुछ भूलने के लिए मैंने अधिक तीव्रता से अध्यापन शुरू किया। लेकिन अब मैं देख रही हूं कि अभी भी मैं ईर्ष्यालु हूं, उसके प्रति नहीं क्योंकि उसका तो निधन हो चुका, लेकिन सुखी लोगों से, विवाहित लोगों से, सफल लोगों से किसी भी व्यक्ति से मैं आज भी ईर्ष्या करती हूं। हम दोनों मिलकर जो जीवन जी सकते थे, उससे हम वंचित रहे।''

प्रेम का कोई विकल्प नहीं

ईर्ष्या तो घृणा ही है न ? यदि कोई प्रेम करता है, तो दूसरी किसी चीज के लिए स्थान ही नहीं रहता है। लेकिन हम प्रेम करते नहीं, धुंआ हमारे जीवन को अवरुद्ध कर देता है और ज्योति बुझ जाती है।

''अब मैं देख सकती हूं कि स्कूल में मेरी विवाहित बहनों के साथ और मेरे सभी अन्य संबंधों में मेरा संग्राम चल रहा था, केवल वह ढका हुआ था। मैं एक आदर्श शिक्षिका बन रही थी, आदर्श अध्यापिका बनना मेरा ध्येय था और मैं उसी रूप में सम्मानित भी हो रही थी।''

आदर्श जितना मजबूत होगा उतना ही गहरा दमन होगा, उतना ही गहरा द्वंद्व और द्वेष होगा।

''जी हां, अभी मैं यह सब देख रही हूं, और आश्चर्य तो यह है कि स्वयं को देखते समय, मैं वस्तुतः जैसी हूं वैसी ही होने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है।''

पहचान का सुख

आपको आपत्ति नहीं है, क्योंकि उसमें एक तरह की कठोर पहचान है, है न ? यह पहचान ही एक तरह का सुख लाती है, ऊर्जा देती है—अपने को जानने से आनेवाला एक आत्मविश्वास का भाव तथा अर्जित ज्ञान की शक्ति। जैसे ईर्ष्या दुःखदायी होते हुए भी एक सुखद संवेदना देती थी, वैसे ही अब आपका अतीत का ज्ञान आपको एक तरह के स्वामित्व का भाव देता है और यह भी सुखद है। अब ईर्ष्या और हताशा के स्थान पर, वंचित रह जाने के स्थान पर, एक नया शब्द आपके हाथ आ गया है : वह है घृणा तथा उसका ज्ञान। इस

ज्ञान में अभिमान है, जो द्वेष का ही एक दूसरा रूप है । हम एक विकल्प से दूसरे की तरफ मुड़ते हैं, लेकिन तत्वतः सारे विकल्प एक समान हैं, शाब्दिक रूप से वे भले ही असमान दीखें । तो आप अपने ही विचार के जाल में फंस गयी हैं, ऐसा नहीं लगता आपको ?

''माना, लेकिन हम और कर ही क्या सकते हैं ?''

यह मत पूछिए, किंतु अपने ही विचार की प्रक्रिया को देखिए । कितना धूर्त और भ्रामक है यह ! यह मुक्ति का आश्वासन देता है, लेकिन उत्पन्न करता है केवल एक और संकट, एक और द्वेष । इसके प्रति निश्चेष्टतापूर्वक जागरूक हो जाइए और इसके सत्य को प्रकट होने दीजिए ।

''इस ईर्ष्या और घृणा से, अपने भीतर दबी हुई इस अनवरत लड़ाई से क्या मुक्ति होगी भी ?''

आशा : आकांक्षा का प्रक्षेपण है

जब आप सकारात्मक या नकारात्मक रूप से किसी चीज की आशा करती हैं तो आप अपनी ही आकांक्षा को प्रक्षेपित करती हैं ; आप अपनी इच्छा की पूर्ति कर भी लेंगी, लेकिन वह केवल एक और विकल्प ही होगा, और इसलिए लड़ाई पुनः चलने लगेगी । किसी चीज को प्राप्त करने की या उसे टालने की इच्छा विरोध के क्षेत्र के अंतर्गत ही आती है, क्या ऐसा नहीं है ? मिथ्या को मिथ्या के रूप में देखिए, तब सत्य स्पष्ट है, प्रकट है । आपको उसे खोजना नहीं पड़ता । आप जो खोजेंगी वह आपको मिलेगा, लेकिन वह सत्य नहीं होगा, ठीक उसी तरह जैसे एक शक्की आदमी को जिस चीज का शक होता है वही चीज उसे दीख जाती है, किंतु यह तो बहुत आसान है और मूर्खतापूर्ण भी । इस संपूर्ण विचार प्रक्रिया और इससे मुक्त होने की आकांक्षा के प्रति निश्चेष्ट होकर केवल सजग रहिए ।

''यह सब मेरे लिए एक असाधारण खोज है, और आपकी बातों की सत्यता को मैं देखने लगी हूं । मैं आशा करती हूं कि इस द्वंद्व से परे जाने में मुझे अनेक वर्ष नहीं लगेंगे । देखिए, मैं फिर से आशा करने लगी । मैं चुपचाप निरीक्षण करूंगी और देखूंगी कि क्या होता है ।''

प्रस्तुति : रघुवीर सिंह राणा
—बालू (कैथल)
बाया कलायत
हरियाणा-१२६११७

१९८१ में फ्रांस के एक होटल में एक ऐसा कंप्यूटर स्थापित किया गया था जिसका संबंध होटल की हर मेज से कर दिया गया । यह कंप्यूटर वहीं से संचालित कर कोई भी ग्राहक अपना मनपसंद भोजन मंगा सकता था । कंप्यूटर की मदद से आजकल वर-वधू का चयन अत्यंत सफलतापूर्वक किया जा रहा है । अनेक युवक-युवतियों के स्वभाव, आयु, जाति, रुचियों आदि का लेखा-जोखा कंप्यूटर रखता है जिसके आधार पर वह वर-वधू के उचित जोड़े का चुनाव करता है ।

अमरीका में यूनीवर्सल लाइफ चर्च में कंप्यूटर पादरी की अनुपस्थिति में कंप्यूटर द्वारा विवाह संपन्न कराया जाता है । वहां वर-वधू मशीन का बटन दबाकर एक-दूसरे को पति-पत्नी स्वीकारते हैं । कंप्यूटर वर-वधू को पादरी की तरह आशीर्वाद प्रदान करता है ।



भारतीय संस्कृति की व्यापकता

● डॉ. देवव्रत जोशी

संस्कृति किसी देश-विशेष की सीमा में सीमित नहीं होती । निरंतर प्रगतिशील ...न-जीवन-प्रकृति और मानव-समाज के ...न-जिन असंख्य प्रवाहों, प्रभावों और संस्कारों ... प्रेरित, प्रभावित और संस्कृत होता रहता है, ... सबके सामूहिक स्वरूप को ही हम आज ...कृति की संज्ञा से संबोधित करते हैं । ये ...ाव और संस्कार किसी एक निश्चित काल ...थवा किसी एक देश-विशेष के नहीं होते । ...ज विभिन्न देशों में भारतीय संस्कृति के चिह्न, ...कादि वहां के लोकव्यवहारों और साहित्य में दृष्टिगत होते हैं—यह भारतीय संस्कृति की संवेदनशीलता, सुसंस्कार और उसकी अर्जित अस्मिता का प्रमाण है ।

चीन में भारतीय संस्कृति

इतिहास-पुराणों में चीन की चर्चा अति प्राचीनकाल से प्राप्त होती है । सुग्रीव ने जब वानरों को विभिन्न देशों में सीता को खोजने का आदेश दिया था, तब उन्होंने चीन का नाम भी लिया था :-

चीनाररमचीनांश्च निहारांश्च पुनः-पुनः ।
अन्विष्य वरदांश्चैव हिमवंत तथैव च ॥

(वाल्मीकि रामायण, किष्किंधाकांड)



नेपाल का स्वयंभू मंदिर

महाभारत में भी कई स्थलों पर चीन तथा चीनियों का उल्लेख प्राप्त होता है :-

यवनाः किराताः गांधाराश्चीना शबर बर्बराः ।

(महाभारत, शांतिपर्व ६५/१३)

मनु ने यवन, शक, किरात, चीनी आदि को 'आचार भ्रष्ट क्षत्रिय' बताया है ।

इसी प्रकार कौटिल्य ने भी अपने अर्थशास्त्र में चीन के रेशम का वर्णन किया है । 'द् बर्थ आव चाइना' नामक पुस्तक में डॉ. कील लिखते हैं :-

''प्राचीन चीनियों के रीति-रिवाज़ और उपासनाओं में वैदिक प्रतीकों और यज्ञों की झलक दिखलायी पड़ती है ।''

हिंद चीन

बहुत काल तक यह प्रदेश हिंदुओं के अधीन रहा । यहां के हिंदू नरेश अपने को 'श्रीभार' वंशज कहते थे जिसका काल ईस्वी सन की दूसरी शताब्दी माना जाता है । इंदुवर्मन द्वितीय के शिलालेख में, जो ७५७ शक संवत का है, बतलाया गया है कि प्रथम राजा भोज को स्वयं शिवि ने यहां भेजा । वहां के जन शिव के उपासक थे । शिव का पूजन मूर्ति तथा लिंग दोनों रूपों में प्रचलित था । शिव के साथ शक्ति की उपासना भी चलती थी । इन देवताओं के अब भी वहां कितने ही विशाल मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में मिलते हैं । यहां के साहित्य में रामायण, महाभारत, शिवपुराण, लिंगपुराण आदि की कथाएं बहुत आयी हैं । वहां के हिंदू नरेशों का इतिहास डॉ. मजूमदार ने सन १९२७ में प्रकाशित अपने 'चम्पा' नामक ग्रंथ में दिया है ।

मलाया प्रायद्वीप

'मलय' शब्द से मलाया बना है । वायुपुराण में छह द्वीपों के नाम दिये गये हैं । इनमें मलय द्वीप का नाम भी आया है । यहां ईसा की दूसरी शताब्दी में हिंदुओं का पता चलता है । एक चीनी इतिहासकार से ज्ञात होता है कि यहां एक राज्य था, जिसमें संस्कृत भाषा प्रचलित थी । 'कटाह' नामक राज्य भी किसी समय यहां था । पुराणों में कटाह का वर्णन आया है ।

डॉ. वेल्स का मत है कि किसी समय इस प्रदेश में भारतीयों का प्रभाव अवश्य रहा होगा । रामायण का 'हिकायत सेरी राम' के नाम से यहां प्रचार है । जावा, सुमात्रा, श्याम आदि राज्यों से इसका बहुत संबंध रहा ।

फिलिपाइन

यहां अति प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति

के चिह्न मिलते हैं। सन १९२८ में प्रकाशित फिलिपाइन मेगजीन में प्रो. बेलर लिखते हैं—

''यहां के आभूषणों, रीति-रिवाजों को देखते हुए मेरा यह निश्चित मत है कि यहां की संस्कृति का आदिस्रोत भारत है।''

सन १९१९ में प्रकाशित 'पीपुल्स आव फिलिपाईंस' नामक पुस्तक में प्रो. क्रोवर का कहना है कि यहां के धार्मिक लोगों के विचार, रीति-रिवाज, नाम, शब्द, लेखनशैली, कला-कौशल आदि पर भारतीय प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। उदाहरणार्थ यहां के जन ग्रहण का कारण राहु को मानते हैं। दिन के पांच विभाग—महेश्वर काल, श्री, ब्रह्मा और विष्णु के नाम से करते हैं। यहां की भाषा तगलांग में संस्कृत शब्दों की भरमार है।

अमरीका

यहां के प्राचीन निवासी लाल भारतीय (रेड इंडियन) के जीवन और उनकी प्राचीन संस्कृति के अध्ययन से अब कई पाश्चात्य विद्वान भी मानने लग गये हैं कि यहां किसी समय भारतीय संस्कृति का जोर था। इन लोगों का सामाजिक जीवन बहुत कुछ भारतीयों से मिलता है। पहले उनके यहां भी स्त्रियों के सती होने का रिवाज था। मरने के उपरांत प्रायः अग्निसंस्कार किया जाता था। सूर्य की सर्वत्र उपासना की जाती थी। दक्षिणी अमरीका में कई जगह शिवलिंग भी मिले हैं। गणेशपूजन और नागपूजन का भी रिवाज था। ग्रहण लगने पर वे दान करते थे। एक प्रकार की वर्ण-व्यवस्था अब भी उनमें प्रचलित है।

स्याम

स्याम देश भारतीय संस्कृति से सर्वांगीण ओतप्रोत है। उस देश के लोग इस बात को निर्विवाद स्वीकारते भी हैं कि हमें भारत से बहुत कुछ मिला है। इस देश की भाषा में ५० प्रतिशत संस्कृत शब्द और लगभग २५ प्रतिशत पालि शब्दों का सम्मिश्रण है। यहां भगवान बुद्ध और हिंदुओं के देवी-देवताओं की प्रतिमाएं भी दिखायी देती हैं। यहां के शिल्प विभाग का चिह्न गणेश की मूर्ति ही है। इस देश के विधान का आधार भी मनुशास्त्र है, जिसे यहां 'रथ्यमनु' भी कहते हैं।

उपर्युक्त विवरण एक दिग्दर्शन-मात्र है, इस देश तथा भारतीय संस्कृति के अन्य देशों की संस्कृति के साथ समन्वय का उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि विदेशों में भारतवासियों ने सभ्यता तथा संस्कृति का सम्यक प्रसार किया था। बिना किसी दबाव या प्रभाव के भारतीय संस्कृति का यह प्रभाव आज भी व्यापक है। राम और कृष्ण की सार्वलौकिक और सार्वकालिक आराधना से अभिभूत लाखों भौतिक मृगमरीचिका से पीड़ित व्यक्ति आज भी इस देश में आकर शांति प्राप्त करते हैं।

—हिंदी विभाग,
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
१५, कॉलेज रोड, रतलाम

...चरत्यसमुन्नद्धः स सुखी स च पण्डितः।
(विदुरनीति १/३७)

—जो व्यक्ति उद्धत न होकर अर्थात नम्र होकर चलता है, वही सुखी और वही बुद्धिमान है।

हजारों वर्षों के भारतीय इतिहास, पुरातत्व एवं भूगर्भ शास्त्र के महान विद्वानों द्वारा की गयीं आधुनिक नवीनतम खोजों के अनुसार जिस प्रकार यह सत्य सिद्ध हुआ है कि रावण की वास्तविक रामायणकालीन लंका जो शून्य अंश अक्षांस तथा ७५ दशमलव ५० अंश देशांश पर स्थित थी, समुद्र में डूब चुकी है, उसी प्रकार यह रोमांचक सत्य भी सामने आया है कि रावण अंतरिक्षयानों में बैठकर मंगल, बुध आदि अनगिनत ग्रहों की सैर कर लंका वापस लौटकर छह माहों तक वहां की प्रसिद्ध प्रयोगशालाओं में छात्रों को अपने खोजपरक ज्ञान से परिचित कराता था। यह कुंभकर्ण की वैज्ञानिक सिद्ध शक्तियों का ही प्रताप था, जिसके बल पर रावण ने इतना बड़ा साम्राज्य स्थापित किया था जिसकी विशालता की टक्कर

दुनिया का महानतम वैज्ञानिक— कुंभकर्ण

• मुकुंददास माहेश्वरी

का तीसरा भाई कुंभकर्ण अनुपम योद्धा, प्रचंड ईश्वर-भक्त तथा प्रसिद्ध शिक्षक होने के साथ ही संसार प्रसिद्ध वैज्ञानिक भी था। जैसे वर्तमान श्रीलंका अब वास्तव में रामायणकालीन सिंहल द्वीप मानी जाने लगी है वैसे ही कुंभकर्ण के संबंध की अब तक की यह मान्यता भी झूठ साबित हुई है कि वह महान आलसी, छह माहों तक सोनेवाला तथा छह माहों तक जागनेवाला केवल एक निकम्मा लंपट राक्षसराज था। सच्चाई यह है कि वह गुप्त रूप से लंका से छह माहों के लिए अमरीका व हिमालय के भयानक जंगली क्षेत्रों में जाकर वहां न केवल विज्ञान के नये प्रयोग करता था, बल्कि अपने बनाये इस धरती पर कोई नहीं ले सका (संभवतया पाठक जानते ही हैं कि रावण के साम्राज्य में कभी सूरज नहीं डूबता था और वह लंका, विंध्याचल पर्वत के दक्षिण का भारत, आस्ट्रेलिया, पूर्वी द्वीप समुदाय, साइबेरिया, चीन, अफरीका, ईरान, अफगानिस्तान, अरब, मिस्र, द. अमरीका तथा अब जलमग्न अटलांटिस और म्यू द्वीपों तक फैला था)।

राम के समकालीन महर्षि श्रृंगी व उनके प्रिय शिष्य महानंद के ग्रंथों, वाल्मीकि रामायण, तेलुगु की कम्ब तथा रंगनाथ रामायणों, कन्नड़ की परंपरागत तथा मलयालम की आध्यात्म रामायण सहित अनेक ऋषियों तथा सम्कारधानी

कुंभकर्ण ने एक से एक बढ़कर अलौकिक शस्त्रों के आविष्कार भी किये थे, जैसे शत्रु को अंधा, बहरा, पागल कर देने वाला दर्शन श्रवण यंत्र आदि !

जबलपुर के विद्वान श्री गोमती शंकर शुक्ल के अत्यंत मौलिक ग्रंथ 'गाथा राम रावण' में वर्णित तथ्यों के आधार पर कुंभकर्ण की रहस्यमयी वैज्ञानिक उपलब्धियां निम्नानुसार थीं :—

अद्‌भुत प्रयोगशालाएं

अति आश्चर्यजनक प्रतिभा के धनी कुंभकर्ण ने प्रारंभ से ही कट्टर सात्विक जीवन बिताया था तथा अपनी प्रचंड शिवभक्ति के बल पर ही उसने भगवान शंकर से रावण से भी ढ़-चढ़कर दुर्लभ वैज्ञानिक सिद्धियां प्राप्त की ीं । महर्षि भारद्वाज के आशीष से निद्रा पर जय प्राप्त कर वह रात-दिन अपने वैज्ञानिक योगों व अनुसंधानों में ऐसा जुटा था कि कुछ र्षों में ही उसने इच्छा चालित विमानों, ड़नेवाले रथों, अद्‌भुत अंतरिक्षयानों तथा यंकरतम अस्त्रशस्त्रों का आविष्कार कर सारी नेया में धूम मचा दी थी । रावण ने अपनी का में उसी के सहयोग से संसार प्रसिद्ध नों विज्ञान विश्वविद्यालय तथा सैकड़ों ‌भुत वैज्ञानिक प्रयोगशालाएं खोली थीं, का प्रमुख स्वयं कुंभकर्ण था जो अपने योगियों सहित विद्यार्थियों को भौतिक व यात्मिक विज्ञान का प्रशिक्षण देता था । ही रावण ने जब खुद भगवान शंकर को । में आमंत्रित कर उन्हें अपनी ये प्रयोगशालाएं दिखलायीं थीं, तब उन्होंने उन दोनों को आशीर्वाद देते हुए आदेश दिया था कि वे अपने आविष्कारों का सदुपयोग मानवता के कल्याण के लिए ही करें, क्योंकि विनाश के लिए करने से सारी सृष्टि का अंत हो जाएगा ।

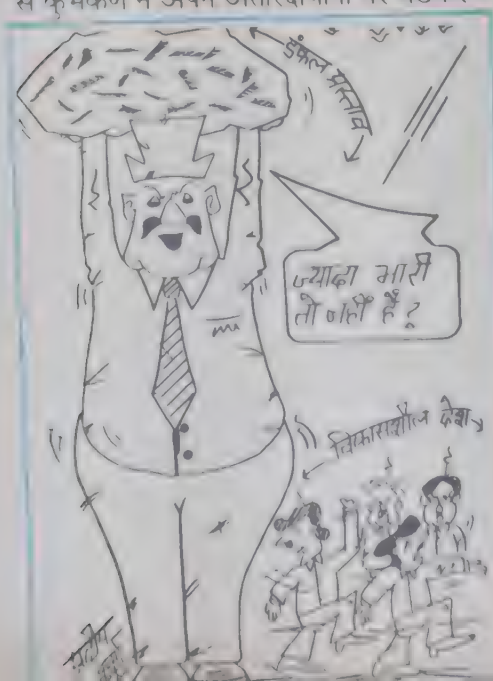
वास्तविक कार्यक्षेत्र : दक्षिणी अमरीका

विद्वानों के कथनानुसार— कुंभकर्ण ने अपनी रहस्यमयी विज्ञान साधना के लिए भारत को कभी नहीं चुना । वह हिमालय तथा तिब्बत के साथ ही दक्षिणी अमरीका (उन दिनों का पाताल लोक) के पेरू, मेक्सिको, एरीजोना, यूकातान, ग्वाटेमाला तथा होंडुराज आदि उन क्षेत्रों से संबंधित था जिसमें दुनिया के लाखों वर्ष पुराने मय सभ्यता वासियों का वास था । यह उसका सौभाग्य था, क्योंकि योरोप के विश्वप्रसिद्ध ग्रीक दार्शनिक व इतिहासवेत्ता प्लेटो के ग्रंथों के अनुसार मय जाति के पूर्वज अंतरिक्ष के किसी अज्ञात ग्रह से उतरकर उपर्युक्त क्षेत्रों सहित अटलांटिस महासागर में स्थित अटलांटिस द्वीप (अब जलमग्न) में बस गये थे । द्रविड़ सभ्यता के पोषक राक्षसराज रावण ने उपर्युक्त क्षेत्रों में अपना साम्राज्य स्थापित किया तथा कुंभकर्ण सहित उसे भी मयजाति के लोगों से ही वैज्ञानिक अनुसंधानों व सिद्धांतों का अपार भंडार मिला था । प्राचीन

मय संस्कृति व सभ्यता के खोजी विद्वान क्रेग तथा एरिक अमलैंड के अनुसार इन क्षेत्रों में उतरे दूसरे ग्रहवासी ही अपने साथ अंतरिक्षयान, बिजली, एक्सरे, टेलीविजन आदि की विद्या लाये थे । इस बात की पूर्ण संभावनाएं हैं कि वैज्ञानिक कुंभकर्ण ने भी उनसे ये विद्याएं सीखकर बदले में उन्हें भी अपनी स्वयं की वैज्ञानिक उपलब्धियों से परिचित कराया होगा । इस वैज्ञानिक लेन-देन से कुंभकर्ण को दूना लाभ हुआ और वह आविष्कारों की दौड़ में चमत्कारी रूप से सारी दुनिया में सबसे अधिक बढ़-चढ़कर माना जाने लगा था ।

सुदूर ग्रहों का भ्रमण

रावण तथा अपने विशाल साम्राज्य को दुर्लभ वैज्ञानिक उपलब्धियों (चमत्कारी चिकित्सा पद्धति, एक्सरे, बिजली, दूरदर्शन, फोटोग्राफी, इच्छाचालित यानों, उड़न रथों, अंतरिक्षयानों आदि) से समृद्ध कर सुदूर अंतरिक्ष ग्रहवासियों से संपर्क साधने की इच्छा से कुंभकर्ण ने अपने अंतरिक्षयानों पर बैठकर



जब पहली बार मंगल ग्रह की यात्रा की तो वहां से लौटकर उसने रावण को सूचित किया था कि मंगल में भी धरतीवासियों-जैसी मानव सभ्यता है, (आज के बीसवीं सदी के वैज्ञानिकों ने भी मंगल ग्रह में प्राणियों के होने की पुष्टि की है) । कुंभकर्ण ने अंतरिक्ष में जहां-तहां घूमते विनाशक उल्का पिंडों का भी उल्लेख किया था ।

रावण के कारण सर्वनाश

कुंभकर्ण ने एक से एक बढ़कर अलौकिक शस्त्रों के आविष्कार भी किये थे,जैसे शत्रु को अंधा, बहरा, पागल कर देनेवाला दर्शन श्रवण यंत्र आदि । इस बीच रावण अपने विशाल साम्राज्य तथा विराट संपदा के कारण दंभी व भयानक भ्रष्टाचारी होकर घोर आतंक फैलाता हुआ राम की सीता को चुरा लाया । इससे क्रुद्ध होकर स्वयं शंकर सहित समस्त देवताओं ने राम की मदद की और उन्होंने जब अपनी विशाल वानर सेना सहित लंका पर आक्रमण किया, तब रावण ने अपनी पराजय निकट जानकर कुंभकर्ण को राम से लड़ने के लिए बुलाया । कुंभकर्ण ने रावण को राम की सीता वापस देने की सलाह देते हुए जब उसे धिक्कारा तब रावण ने उसे कायर कहते हुए राम से युद्ध के लिए ललकारा ।

बस यहीं से कुंभकर्ण की समस्त अलौकिक वैज्ञानिक उपलब्धियों का सर्वनाश होना प्रारंभ हो गया । यद्यपि कुंभकर्ण को युद्ध करने का कोई सीधा अनुभव नहीं था, परंतु फिर भी उसने राम के विरुद्ध भीषण वैज्ञानिक युद्ध लड़ने का निश्चय किया । वह अकेला अपने बनाये पहाड़ की तरह विशाल फौलादी यंत्र दैत्य के भीतर

बैठकर युद्ध भूमि में कूदकर राम की समस्त वानर सेना को गाजर-मूली की तरह काटने लगा। यह देख विभीषण कुंभकर्ण के पास उससे मिलने गये। कुंभकर्ण ने विभीषण से अपनी लाचारी का वर्णन करते हुए कहा, "मुझे राम के अतिरिक्त और कोई नहीं मार पाएगा और मुझे पता है कि मैं उन्हीं के हाथों मारा जाऊंगा, क्योंकि मैंने रावण की गलत आज्ञा मानकर घोर अपराध किया है जिसकी सजा मेरी मृत्यु है।" विभीषण ने वापस लौटकर राम को कुंभकर्ण का यह रहस्य समझाया कि जब तक उसके यंत्र दैत्य को नहीं गलाया जाएगा, तब तक वह नहीं मर सकता। विभीषण की चेतावनी को ध्यान में रखकर दूसरे दिन राम ने महर्षि विश्वामित्र द्वारा दिये गये ऐसे अभिमंत्रित बाण कुंभकर्ण की ओर छोड़े जिनके कारण उसका पहाड़-जैसा भीमकाय यंत्र दैत्य मोम की तरह गलकर नष्ट हो गया। जैसे ही कुंभकर्ण यंत्र दैत्य से बाहर निकला वैसे ही राम ने एक बाण से उसे मार गिराया। इस प्रकार अत्याचारी रावण का साथ देने के कारण दुनिया के महानतम वैज्ञानिक कुंभकर्ण का दुखद अंत हो गया तथा उसी के साथ उसकी सारी वैज्ञानिक उपलब्धियां भी नष्ट-भ्रष्ट होकर लुप्त हो गयीं। कुंभकर्ण की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र सुमेतकेतु अपने पिता की वैज्ञानिकता में इसलिए कोई प्रगति नहीं कर सका, क्योंकि वह काफी पहले से ही रावण की आतंककारी गतिविधियों से विरक्त होकर संन्यासी बन गया था।

—दीवान बहादुर वल्लभदास
महल जबलपुर-४८२००२

सभ्यता

सभ्यता की मीनारों से
झांकते बीमार चेहरे,
जिन पर झलकती
संकीर्णता की झाइयां।
आंखों में छाया है
भौतिकता का नशा,
और निकलते हैं जिनके मुख से
धर्मांधता के बोल।
करते हैं जिनके हाथ मानवता का कत्ल,
रौंदा है जिन के पांवों ने
हर असहाय और निर्बल,
घिन आती है मुझे
इन सुसज्जित चेहरों से।
हम नहीं चाहते,
उन्नति के रथ पर बैठ
इन मीनारों में इस तरह चढ़ना,
बनना दुनिया की नजरों में
एक सभ्य मानव !
इससे तो बेहतर है
भूखा, नंगा, अनपढ़,
'असभ्य' !

—कु. सुषमा विज

शोधार्थिनी
हे.न.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय
श्रीनगर (गढ़वाल)

आजकल दुनिया में हर चीज महंगी हो रही है और इस महंगाई की लपेट में संसार का लगभग हर व्यक्ति आ रहा है । किंतु जब हम वायुयानों के क्षेत्र में आते हैं तो यहां की महंगाई देखकर बाकी सब महंगाई फीकी लगने लगती है । महंगाई यहां पर हर क्षेत्र में विद्यमान है, चाहे वह विमानों का मूल्य हो, या उनके संचालन, मरम्मत अथवा किराये का

विमानों का महंगा संसार

● बिमल श्रीवास्तव

खर्चा हो या उनके कर्मचारियों का वेतन हो ।

कितने महंगे विमान

विमानों का मूल्य अधिक होता है और ये मूल्य समय के साथ-साथ बड़ी तेजी से बढ़ते रहते हैं । उदाहरण के लिए एक जंबो जेट का मूल्य आजकल लगभग ३०० करोड़ रुपये है तथा एक एयरबस का दाम लगभग १२५ करोड़ रुपये है । किंतु सन १९७० में जंबो का मूल्य केवल २० करोड़ रुपये था । इसी प्रकार सन १९७५ में एयरबस का मूल्य १८ करोड़ रुपये था । सस्ते से सस्ते विमान का, जैसे अपने देश में निर्मित पुष्पक का, दाम भी कई लाख रुपये है ।

तुलनात्मक तौर पर यदि इन मूल्यों का विश्लेषण किया जाए तो हम कह सकते हैं कि जिस मूल्य में एक जंबो जेट आता है, उसी मूल्य में लगभग २०,००० कारें खरीदी जा सकती हैं (यदि कार का मूल्य लगभग डेढ़ लाख माना जाए) । इसी प्रकार यदि एक स्कूटर का मूल्य २०,००० रु. माना जाए तो एक जंबो के दाम से लगभग १,५०,००० स्कूटर खरीदे जा सकते हैं ।

वास्तव में जितने मूल्य में एक जंबो जेट आता है, उतने में हमारे देश में एक अच्छा-खासा उद्योग स्थापित किया जा सकता है (जैसे एक स्कूटर फैक्ट्री खोली जा सकती है ।) वैसे यह तुलना केवल रोचकता की दृष्टि से ही की जा सकती है क्योंकि वायुयान का जो उपयोग है, वह स्कूटर या कार तो पूरा नहीं कर सकते हैं । इसी प्रकार वायुयान के उपयोग से जो आय हो सकती है, वह स्कूटर या कार से तो प्राप्त नहीं हो सकती है ।

विमानों के मूल्य का जायजा लेने के लिए एक और रोचक उदाहरण लिया जा सकता है । एक जंबो जेट का मूल्य लगभग ३०० करोड़ रुपया होता है जबकि इस विमान का भार लगभग डेढ़ लाख किलोग्राम होता है । गणना करने पर जंबो जेट का मूल्य लगभग २०,००० रुपये प्रति कि.ग्रा. आता है । इसकी तुलना में आजकल चांदी का मूल्य लगभग ६००० रु. प्रति कि.ग्रा. है । इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि लगभग जंबो जेट—जैसा विशाल और



आजकल विश्व की अनेक एयरलाइन घाटे में जा रही हैं तथा अनेक देशों की एयरलाइन तो केवल अपने देश की प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए विमान चला रही हैं ।

भारी ठोस चांदी का विमान यदि बनवाया जाए तो उसका जितना मूल्य होगा, उससे लगभग तीन गुना अधिक मूल्य का असली जंबो जेट आएगा ।

और यदि इसी प्रकार का मूल्य विश्लेषण ए-३२० विमान के साथ किया जाए तो पता चलेगा कि जितने मूल्य में एक ए-३२० विमान आता है, उतने ही मूल्य में उस भार के लगभग चार चांदी के ठोस ए-३२० बनाये जा सकते हैं । वायुसेना के आधुनिक विमानों के मामले में तो यह बात कल्पना की ऊंचाइयों को पार कर जाती है जब एक मिराज-२००० या मिग-२९ का मूल्य उसके ठोस सोने के विमान के लगभग आता है ।

विमान इतने महंगे क्यों ?

विमानों के इतने अधिक मूल्य होने के कई कारण हैं ।

जैसे विमान में लगनेवाली सभी धातुएं तथा अन्य पदार्थ अत्यंत उत्तम श्रेणी के होते हैं । ये धातुएं तथा अधातुएं तापमान, गति तथा दबाव के उतार-चढ़ाव को सहन करने में सक्षम होती हैं । इन पदार्थों के उत्पादन की विधियां तथा फार्मूले अत्यंत गोपनीय रखे जाते हैं, क्योंकि विमान निर्माता कंपनियों के वर्षों के शोध तथा अनुसंधान के बाद ही इनका विकास हो पाता है ।

इसके अलावा विमान में लगनेवाले कलपुरजों तथा अन्य संयंत्रों को अत्यंत उच्चकोटि के क्वालिटी कंट्रोल के उपरांत ही विमान के लिए इस्तेमाल किया जाता है । यहां तक कि विमान में लगनेवाली एक-एक कील तथा पेंच तक को अच्छी तरह से जांच-पड़ताल के बाद ही प्रयोग में लाया जाता है । इस प्रकार एक चुने हुए पुरजे के लिए उस तरह के कई

पुरजों को अयोग्य घोषित करना पड़ता है । इन्हीं सब कारणों से इन सब कल-पुरजों का मूल्य उनके वास्तविक मूल्य से कई गुना अधिक हो जाता है ।

उदाहरण के लिए कार के विंड स्क्रीन का दाम लगभग ७००-८०० रु. होता है । किंतु जंबो जेट के विंड शील्ड (पायलट की सीट के सामने की खिड़की) का मूल्य लगभग ३ लाख रुपये है । अब यह बात दूसरी है कि जंबो का विंड शील्ड, पर्तदार, जल एवं ताप निरोधक, एयरटाइट, विद्युत व्यवस्था से युक्त (जिसका उपयोग विंड शील्ड पर बर्फ जम जाने की दिशा में उसे पिघलाने के लिए किया जाता है), तथा अत्यंत सुदृढ़ होता है । उसके विपरीत कार के विंड स्क्रीन में ऐसे कोई गुण नहीं होते हैं ।

उसी प्रकार जंबो या एयरबस में लगनेवाले प्रत्येक जेट इंजन का मूल्य लगभग दो करोड़ रुपये होता है तथा इंजन में लगनेवाले प्रत्येक फैन ब्लेड का ही मूल्य लगभग ८०,००० रुपये होता है । इस तरह के सैकड़ों ब्लेड, जेट इंजनों में लगे होते हैं ।

विमानों के मूल्य इतने अधिक होने का एक कारण यह भी है कि इनमें अधिकतर एक ही काम के लिए दो या तीन यंत्रों की व्यवस्था रहती है । ऐसा इसलिए किया जाता है क्योंकि यदि किसी कारणवश एक यंत्र खराब हो जाए तो दूसरे यंत्र का प्रयोग उसकी जगह किया जा सके । इस प्रकार यदि इस तरह के किसी यंत्र का मूल्य १० लाख रुपये है तो इस तरह के दो यंत्रों के लिए २० लाख रुपये लगाने पड़ेंगे ।

अन्य खर्चे भी बहुत अधिक

इन भारी-भरकम मूल्यों के अलावा विमानों के परिचालन में और भी कई खर्चे होते हैं । सबसे पहले तो विमान के ईंधन का मूल्य ही बहुत अधिक होता है । उदाहरण के लिए एक एयरबस विमान की एक घंटे की उड़ान में लगभग ६,००० किलोग्राम ईंधन की खपत होती है । आजकल की दर के अनुसार हमारे देश में एक किलोग्राम विमान के ईंधन का भाव लगभग १५ रुपये है । इस प्रकार एयर बस की एक घंटे की उड़ान में लगभग एक लाख रुपये के मूल्य का ईंधन जल जाता है । इसी तरह जंबो जेट की ईंधन की टंकी में लगभग डेढ़ लाख किलोग्राम ईंधन आता है । अर्थात जंबो में यदि पूरी टंकी ईंधन भरा जाए तो लगभग २५ लाख रुपये का खर्चा है ।

विमानों का दूसरा बड़ा खर्चा लैंडिंग तथा नैवीगेशन चॉर्ज का होता है । विमान जब किसी हवाई अड्डे पर उतरता है तो वहां उतरने की फीस भरनी पड़ती है जिसे लैंडिंग चॉर्ज कहते हैं । इसी प्रकार विमानों को भूमि पर स्थित रेडियो तथा अन्य नैवीगेशन उपकरणों का उपयोग करने के लिए भी शुल्क भरना पड़ता है, जिसे नैवीगेशनल चॉर्ज कहते हैं ।

इन शुल्कों की दरें वायुयान के भार के ऊपर निर्भर होती हैं तथा हर देश की अलग-अलग दरें हैं । किन्हीं देशों में रात के लिए अलग तथा दिन के लिए अलग तथा कहीं पर अंतरराष्ट्रीय तथा स्थानीय उड़ानों के लिए भिन्न-भिन्न दरें हैं । उदाहरण के लिए हमारे देश में बंबई, कलकत्ता, मद्रास तथा दिल्ली के हवाई अड्डों पर एक जंबो जेट का लैंडिंग चॉर्ज २२,००० रु. तथा बोइंग ७०७ का लैंडिंग चॉर्ज लगभग ८,००० रु. है । इसका अर्थ यह हुआ कि यदि कोई जंबो बंबई

में एक बार उतरे तो उसे लगभग २२,००० रुपये केवल उतरने के लिए ही देने पड़ेंगे। इसके अलावा उसे नैवीगेशनल चॉर्ज के लिए लगभग १०,००० रु. अलग से देने पड़ेंगे।

वैसे भारत में यह दर काफी कम है, किंतु यदि लंदन हवाई अड्डे पर यही जंबो जेट उतरता है तो उसे लगभग ९०,००० रु. एक बार उतरने के लिए देने पड़ेंगे।

इसके अलावा हवाई अड्डों पर विमानों के अन्य कार्यों के लिए भी भारी दाम देने पड़ते हैं। उदाहरण के लिए बड़े वायुयानों को अपने पार्किंग के स्थान से आगे बढ़ाने के लिए पहले ट्रैक्टर के द्वारा लगभग १५-२० मीटर पीछे ढकेला जाता है। उसके बाद विमान अपने इंजनों की शक्ति से आगे बढ़ता है। इस पीछे ढकेलने को वैमानिकी क्षेत्रों में 'पुश बैक' कहा जाता है किंतु केवल एक बार के 'पुश बैक' के लिए ट्रैक्टर के उपयोग का शुल्क केवल २००० रु. होता है।

और भी कई खर्चे सामने आते हैं। जैसे कर्मचारियों के वेतन व भत्ते, यात्रियों के होटल में ठहरने का खर्चा, इत्यादि-इत्यादि।

किराये

अब देखिए, इतना पैसा खर्च करने के बाद इन विमानों को वापसी में यात्री किराये के रूप में क्या मिलता है।

अंतरराष्ट्रीय विमानों के किराये तीन प्रकार के होते हैं, इकोनॉमी, फर्स्ट क्लास तथा एक्सकर्सन किराया। इकोनॉमी सामान्य दर से लिया जाता है तथा फर्स्ट क्लास की दर इकोनॉमी से लगभग दुगुनी होती है। एक्सकर्सन किराया रियायती दर से लिया जाता है तथा यह सामान्य किराये से बहुत कम होता है। किंतु एक्सकर्सन किराये के लिए अनेक प्रतिबंध रहते हैं जिनके पूरा होने पर ही ये दरें लागू होती हैं।

देश के अंदरूनी भागों के लिए इंडियन एयरलाइंस के विमानों के किराये सामान्यतः इकोनॉमी किराये के दर से लिये जाते हैं, किंतु कुछ उड़ानों में 'बिजिनेस क्लास' भी होता है, जिसका किराया इकोनॉमी से ज्यादा होता है।

यदि इन किरायों का मोटे तौर पर विश्लेषण किया जाए तो हम देखते हैं कि अंतरराष्ट्रीय मार्गों पर इकोनॉमी किराये की दर करीब-करीब चार रुपया प्रति किलोमीटर है। यह हमारे देश के टैक्सी के किराये के लगभग बराबर है किंतु देश के अंदरूनी भागों के लिए इंडियन एयरलाइंस का किराया लगभग दो रुपया प्रति किलोमीटर आता है।

अंतरराष्ट्रीय मार्गों पर कठिन प्रतिस्पर्धा होने के कारण कई प्रकार के रियायती किराये भी जारी रहते हैं। इसके अलावा अनेक एयरलाइन यात्रियों को आकर्षित करने के लिए कभी-कभी गैरकानूनी तौर पर भारी कटौती इत्यादि भी करती रहती हैं। इन्हीं सब कारणों से वास्तविक लाभांश बहुत कम मिलता है।

यह निष्कर्ष आसानी से निकाला जा सकता है कि वायुयान कंपनियों को अपना खर्चा पूरा करने में कितनी कठिनाई पड़ती है। इसीलिए आजकल विश्व की अनेक एयरलाइन घाटे में जा रही हैं तथा अनेक देशों की एयरलाइन तो केवल अपने देश की प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए विमान चला रही हैं।

—डी-१५, आई. एन. ए. कॉलोनी
नयी दिल्ली-११००२३



शिवरात्रि के अवसर पर

मॉरीशस में शिवरात्रि

● उषा खुराना

विश्व के कई देशों में भारतीय मूल के लोग बसे हुए हैं । जहां-जहां भारतीय हिंदू हैं, वहां-वहां उनके देवी-देवता और देवालय । उनसे जुड़े व्रत-त्योहार भी उतनी ही श्रद्धा एवं उल्लास से मनाये जाते हैं । शिव, शिवालय और शिवरात्रि की त्रयी इस कथन का सर्वोत्तम उदाहरण है । अपने देश के पड़ौसी हिंदू राष्ट्र नेपाल से लेकर सुदूर मॉरीशस, सुरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद, फिजी इत्यादि देशों में शिवरात्रि का पर्व किसी न किसी रूप में उसी श्रद्धा से मनाया जाता है, जितनी श्रद्धा से अपने यहां मनाते हैं ।

तेरहवां ज्योतिर्लिंग : मॉरीशसेश्वर

प्रायः बारह ज्योतिर्लिंगों की प्रतिष्ठा है । ये भारत में ही ह लेकिन विश्व का तेरहवां शिव ज्योतिर्लिंग मॉरीशस में है । इस बात को कम ही लोग जानते हैं । मॉरीशस का प्रसिद्ध 'मॉरीशसेश्वर नाथ' नामक शिव मंदिर ही तेरहवां ज्योतिर्लिंग है । इसे हम मॉरीशस का केदारनाथ अथवा रामेश्वरम कह सकते हैं ।

यों तो मॉरीशस बहुत ही सुंदर द्वीप है । हिंद महासागर के हरित नील वर्णी जल में रखे चमकीले मोती-जैसा एक आकर्षक टापू । लेकिन वह इंद्रधनुषों का देश है और अपनी संस्कृति में वैविध्यपूर्ण । इसीलिए सांस्कृतिक अभिरूचि के अध्येताओं के लिए यह एक आश्चर्यजनक समाज है । विभिन्न धर्मों के लोग यहां निवास करते हैं । फिर भी वे रुचिपूर्वक

लोगों ने अपना घर-गांव छोड़ा, किंतु अपनी संस्कृति नहीं छोड़ी । कुछ लोग अपने धर्म के प्रति इतने जागरूक थे कि उन्होंने लिखित आश्वासन ले लिया था कि उनका धर्म न बदला जाए । और सच तो यह है कि ऐसे ही जागरूक अनपढ़ श्रमिकों ने अपनी धर्म-ध्वजा इस अजनबी द्वीप पर फहरायी, जो आज भी उसी गौरव से फहरा रही है । इसी धर्म-ध्वजा की छाया में प्रतिवर्ष मॉरीशस का शिवरात्रि राष्ट्रीय धार्मिक पर्व उसी उल्लास के साथ मनाया जाता है ।

कुल आबादी के ५२ प्रतिशत भारतीय समाज के त्यौहारों में सम्मिलित होते हैं । इन त्यौहारों में वहां सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण त्यौहार है—शिवरात्रि ।

आस्था का आयाम

प्राकृतिक झरनों, झीलों और सागर के विभिन्न रंगों ने मिलकर मॉरीशस को जो सुंदरता सौंपी है, उसको आस्था का आयाम देकर मनुष्य ने एक नया विस्तार तथा अर्थवत्ता दे दी है । इसका सर्वोत्तम उदाहरण है यहां के परीतालाब अथवा गंगा तालाब के तट पर स्थित मॉरीशसेश्वरनाथ शिव-मंदिर । प्रतिवर्ष शिवरात्रि के पर्व पर हजारों की संख्या में मॉरीशसवासी गंगा तालाब के तट पर आते हैं । शिव की पूजा-अर्चना करते हैं । प्रतिमाएं विसर्जित करते हैं और गंगा तालाब का पवित्र जल श्रद्धापूर्वक अपने घरों को ले जाते हैं ।

मॉरीशस की गंगा

ग्रांड बेसिन में स्थित गंगा तालाब वास्तव में एक सुरम्य प्राकृतिक झील है । इसे 'परीतालाब' भी कहा जाता है । लोग कहते हैं कि इस तालाब के बीच में जो धरती का टुकड़ा है, वहां परियों की नाट्यशाला थी । रोज रात को परियां यहां नृत्य करती थीं । एक ग्वाला उन परियों का नृत्य रातभर छिप-छिपकर देखता था । एक दिन वह सूर्योदय से पूर्व चुपचाप अपने घर नहीं लौट सका । परियों ने उसे देख लिया और वह पत्थर का हो गया ! आज 'मुड़िया पहाड़' के रूप में मॉरीशस का जो सबसे महत्त्वपूर्ण पहाड़ दिखायी देता है, वह वही ग्वाला है । इस पहाड़ की आकृति ठीक ऐसी है कि लगता है कोई मानव आकृति न जाने कब से यों ही पत्थर बनी बैठी है ! लेकिन यह 'परीतालाब' अब 'गंगा तालाब' है । लोगों का विश्वास है कि यहां गंगा अवतरण हुआ था । यहां के वासियों के लिए यह झील ही गंगा है ।

अवतरण : दिव्य ज्योति का

गंगा तालाब के तट पर एक भव्य शिव-मंदिर बनाया गया है । इस मंदिर के साथ एक चमत्कारिक घटना जुड़ी हुई है । बताया जाता है कि 'मॉरीशसेश्वर नाथ शिव' की प्रतिष्ठापना समारोह के अवसर पर पांचवें दिन २

मार्च १९८९ को शाम लगभग ५ बजे आकाश में घनघोर घटाएं छा गयीं । बिजली चमकने लगी तथा मूसलाधार बारिश होने लगी । मंदिर के गुंबद पर एक दिव्य ज्योति उतरी और त्रिशूल से होती हुई शिवलिंग में प्रवेश कर गयी । यह सब एक क्षण में पलक झपकते ही हो गया । तब जब कमांडिंग अफसर 'कलश' के निकट महाज्योति प्रज्ज्वलित करने जा रहे थे । उस क्षण में अचानक बिजली चली गयी, किंतु मंदिर के २१ बल्ब तत्क्षण जगमगा उठे । जनसमूह की उपस्थिति में एक गंभीर, मनोहर और आनंदमयी ध्वनि उत्पन्न हुई । त्रिशूल से जल टपकने लगा एवं तिलक के सामने रखे मखमली कपड़े पर किसी प्रौढ़ मनुष्य के दाहिने पैर का-सा चिह्न उभर आया । कुछ देर बाद यह पग-चिह्न हाथी के चेहरे में बदल गया ! 'गंगा तालाब' का जलस्तर अनपेक्षित स्तर तक बढ़ गया क्योंकि धारासार वर्षा लगभग एक घंटे से लगातार हो रही थी । तालाब तक आनेवालीसड़कें पानी में डूब गयीं । मुख्य नदी में बाढ़ आ गयी । यातायात रुक गया । एक घंटे बाद समूचा वातावरण प्रशांत, निरभ्र हो गया तथा गंगा तालाब पर एक श्वेत कुहासे की चादर छा गयी । संपूर्ण गंगा तालाब—जैसे दिव्य अनुभूति से भर गया ।

दिव्यता के प्रत्यक्षदर्शी

अभिषेक के अवसर पर घटित इस अभूतपूर्व घटना को अनेक धर्मों के श्रद्धालुओं ने देखा था । आठवें दिन सबके सामने गणेश की पूजा-आरती करते समय गणेश का प्रतिनिधित्व करनेवाले 'कलश' ने हाथी के चेहरेवाले गणेश भगवान का रूप ग्रहण कर लिया ! शिवलिंग पर स्वतः ही नाग तथा स्वस्तिक के चिह्न उभर आये ।

गंगा तालाब नामक इस प्राकृतिक सुनील झील के तट पर कुछ सीढ़ियां चढ़कर एक और शिव-मंदिर है । इसके ठीक सामने ऊंचाई पर बनाया गया है भक्त प्रवर हनुमान का मंदिर तथा तट पर राम-सीता का छोटा-सा मंदिर ।

मुख्य शिव मंदिर में गणेश, देवी-दुर्गा, नवगृह, आदि की सुंदर मूर्तियां हैं ।

सांस्कृतिक निष्ठा

मॉरीशस में भारतीयों की संख्या लगभग १५० वर्ष पूर्व ब्रिटिशराज के समय बढ़नी शुरू हुई थी । भारत के विभिन्न प्रांतों से प्रवासी श्रमिक यहां लाये गये थे । कुछ ही लोग स्वेच्छा से आये थे, अधिकांश या तो जबरन लाये गये अथवा यहां की मिट्टी में सोने की खान होने का लालच देकर ! इन लोगों ने अपना घर-गांव छोड़ा, किंतु अपनी संस्कृति नहीं छोड़ी । कुछ लोग अपने धर्म के प्रति इतने जागरूक थे कि उन्होंने लिखित आश्वासन ले लिया था कि उनका धर्म न बदला जाए । और सच तो यह है कि ऐसे ही जागरूक अनपढ़ श्रमिकों ने अपनी धर्म-ध्वजा इस अजनबी द्वीप पर फहरायी, जो आज भी उसी गौरव से फहरा रही है । इसी धर्म-ध्वजा की छाया में प्रतिवर्ष मॉरीशस का शिवरात्रि राष्ट्रीय धार्मिक पर्व उसी उल्लास के साथ मनाया जाता है । लोग व्रत रखते हैं, इस गंगा तालाब का पवित्र जल अपने-अपने घरों को ले जाते हैं । कहा जाता है कि यह जल भी गंगा के समान शुद्ध है और महीनों तक खराब नहीं होता ।

—१८/२८ मोती नगर, नयी दिल्ली-१५

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

मानसिक पीड़ा

पंकज कुमार, मुजफ्फरपुर : मेरी आयु १९ वर्ष, गत एक वर्ष से पेट के रोग से पीड़ित हूं । मुझे कब्ज रहती है । खाने के बाद पेट एकदम 'टाइट' हो जाता है । कभी-कभी पेट में गड़गड़ाहट भी रहती है । भूख, प्यास भी कम लगती है । नमक का सेवन अधिक करता हूं । स्थानीय डॉक्टरों से उपचार व आयुर्वेदिक दवा कर चुका हूं । कोई नाभ नहीं । शारीरिक व मानसिक रूप से पीड़ित हू । घर में भाई की मौत एक वर्ष पूर्व हुई, तब से वयं के स्वास्थ्य के प्रति चिंतित रहने लगा हूं । हाल ी में तांत्रिक को भी दिखा आया । क्या करूं ? ाभ ही नहीं होता ।

यूं तो पेट के रोग मानसिक तनाव द्वारा भी भव हैं— विशेषकर जब आपके भाई की मारी व मौत के पश्चात ही आपको तकलीफ ने लगी । अब सबसे पहले पेट की अच्छी ह जांच होनी चाहिए । आजकल बड़े शहरों पेट के रोग के विशेषज्ञों की सेवाएं बड़े स्पतालों में उपलब्ध हैं । मल-मूत्र व खून की व, पेट के 'एक्स-रे' पेट के अंदर यंत्र लकर झांकना आदि परीक्षणों द्वारा रोग का न व उपचार संभव है । ईसबगोल पेट के लिए लाभदायक है । नमक का प्रयोग कम करें । क्योंकि अधिक नमक खाने से, रक्तचाप को न्योता देना है । तांत्रिक की इसमें कोई भूमिका नहीं है । यदि सब परीक्षण सामान्य हों तो आपको मनोचिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए । मन में तनाव व उदासीनता से भूख कम हो सकती है । साथ ही गैस आदि भी कई बार बनने लगती है । आशा है आप तुरंत डॉक्टरों की सलाह लेंगे, जिससे रोग का सही निदान व इलाज हो सकेगा ।

द्वंद्वग्रस्त

अमिताभ कुमार, डालटनगंज, बिहार : ४५ वर्ष का सरकारी संस्था में कार्यरत मध्यमवर्गीय अधिकारी हूं । बाल्यावस्था कष्टकर थी । विभाग में अन्य समवर्गीय लोग उच्च पद के अधिकारियों को चाटूकारिता द्वारा प्रभावित कर उत्तरोत्तर विकास करते जा रहे हैं । मैं चूंकि अंतर्मुखी हूं तथा ऐसे साधनों के इस्तेमाल के पक्ष में नहीं रहा । अत: यूं ही उपेक्षित हूं ।

अब मेरी कार्य क्षमता में कमी व आत्मविश्वास भी क्षीण होता जा रहा है । निर्णय लेने की स्थिति में द्वंदग्रस्त हो जाता हूं । उत्तेजना व निराशा के क्षणों में हाथ कांपने लगते हैं । कुछ वर्षों से उच्च रक्तचाप से भी ग्रस्त हूं । कृपया सलाह दें ।

आपकी मानसिक समस्याएं इस समय 'अवसाद' रोग का रूप ले चुकी है । आजकल अवसाद का इलाज सही मात्रा में अवसादरोधी दवाओं व मनोवैज्ञानिक चिकित्सा द्वारा संभव है । इसके लिए मनोचिकित्सक की सेवा आवश्यक है । उच्च अधिकारी केवल चाटुकारिता द्वारा ही प्रभावित होते हैं, ऐसा संभव नहीं । आप में जब इलाज के बाद आत्मविश्वास फिर से जागृत हो जाएगा, तब आपको अपने कार्य के बल पर भी सफलता

मिलेगी । निष्ठा न छोड़ें ।

हस्तमैथुन की आदत

मनोज, मद्रास : मैं २२ वर्ष का अविवाहित युवक हूं । १२-१३ वर्ष की आयु में गांव के चचेरे भाई ने हस्तमैथुन करना सिखा दिया । उस समय वीर्य नहीं निकलता था । परंतु इसकी आदत बन गयी । खराबियों का जब ज्ञान हुआ, तो नियंत्रण करने की कोशिश की तथा दिन में दो-दो बार हस्तमैथुन को छोड़, अब ४-५ बार माह में करता हूं । परंतु आदत पूरी तरह छूटी नहीं है ।

अब दो साल से अपने आप में विचित्रता का अनुभव होता है । अपनी आवाज भी विचित्र ही लगती है । माथा हल्का-हल्का दर्द करता है । कभी-कभी यूं लगता है कि ललाट पर भारी वस्तु रखी हुई है । कनपटी भीतर को धंस गयी है, गाल हलके से पिचक गये हैं। लगता है दिमाग कुछ काम नहीं करता । कम सुनता हूं तथा याददाश्त भी कमजोर हो गयी है । शारीरिक रूप से स्वस्थ हूं । भारतीय वायु सेना में चयन होकर मद्रास में ट्रेनिंग ले रहा हूं । परंतु डर लगा रहता है । नींद भी अधिक आती है । क्या यह भ्रम है या रोग । शर्म से डॉक्टर के पास नहीं गया । शादी के लिए ना करता जा रहा हूं, क्योंकि डर है पत्नी को संतुष्ट कर पाऊंगा या नहीं ।

पुरुष या स्त्री सभी सैक्स का ज्ञान अपने मित्रों, आदि से ही ग्रहण करते हैं । हमारे देश में अभी सैक्स की शिक्षा नहीं, हैं इस वजह से आप-जैसे बहुत लोग मानसिक तनाव में आ जाते हैं । सैक्स के ऊपर नियंत्रण तो आवश्यक है, इसमें कोई शक नहीं, परंतु इसके बारे में अपराधबोध भावना रखना तथा हर समय सोचते रहना भी ठीक नहीं । आपको अत्यधिक तनाव, अपराध की भावना, उदासीनता शरीर की कमजोरी व मानसिक कमजोरी होती जा रही है । आप उन पर नियंत्रण नहीं कर पा रहे हैं । इन सबसे भी ऐसे लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं । अभी आपकी तकलीफ बढ़ गयी है, इसलिए मनोचिकित्सा द्वारा इलाज कराना चाहिए । सही इलाज के बाद आप स्वयं महसूस करेंगे कि शादी के लायक आप वास्तव में हैं ।

नींद का न आना

विक्रम सिंह, दिल्ली : अधिक मानसिक तनाव था । ढाई वर्ष पूर्व लगा जैसे सर को कोई ऊपर खींच रहा है, तत्पश्चात लगने लगा कि कोई मुझसे बातें कर रहा है । नींद आनी पूर्णतया बंद हो गयी । अब केवल मनोचिकित्सक द्वारा दी गयी नींद की गोली से ही नींद आती है । मुझे क्या करना चाहिए ?

आपने मनोचिकित्सक द्वारा इलाज कराया, यह तो सही किया । आपका रोग ऐसा है कि इसमें आपको लंबे समय तक दवा खानी पड़ सकती है । साथ ही कुछ-न-कुछ कार्य में भी रुचि डाल, कार्यरत रहने की आवश्यकता है ।

लड़की के काबिल नहीं

क. ख. ग., कानपुर : मेरे लिंग का जड़ भाग उत्तेजित अवस्था में कुछ पतला रहता है । साथ ही उसका आकार इस अवस्था में नीचे की ओर वक्रता ले लेता है । मेरे मित्रों के अनुसार लिंग को ऊपर की ओर वक्राकार होना चाहिए । उनके अनुसार इन कारणों से मैं किसी लड़की के काबिल नहीं । एक-आध वर्ष में मेरा विवाह होनेवाला है । कृपया बताएं विवाह करुं या नहीं । क्या इन सब का कारण हस्तमैथुन करना है ?

लिंग पूर्णतया उत्तेजित न होने की स्थिति में इस अवस्था में है । यह या तो आप के मानसिक तनाव या चिंताग्रस्त होने से हैं । मित्रगण की उपस्थिति में आप लिंग का परीक्षण करते हैं, इसी कारण ऐसा प्रतीत होता है । आपके मित्र यदि कहते हैं कि उन्होंने हस्तमैथुन कभी नहीं

किया तो वह झूठ बोलते हैं । उनके बहकावे में न आना बेहतर है । आपका जब तक यह भ्रम कि आप अपनी पत्नी के योग्य है कि नहीं, हट नहीं जाता आपको तभी विवाह करना चाहिए । इसका तह तात्पर्य नहीं कि आप किसी वैश्या के पास जाएं । आपको वास्तव में सैक्स संबंधी सही शिक्षा की आवश्यकता है । इसे आप मनोचिकित्सक से मिलकर ले सकते हैं ।

कुत्ते के काटने से पागल तो नहीं

सतीश यादव, कानपुर : २० वर्ष का स्नातक छात्र हूं । १७ वर्ष की आयु में एक कुत्ते ने काट लिया । वह कुत्ता पागल नहीं था । जल्दबाजी में पिताजी ने 'रेबीज निरोधक' इंजैक्शन (टीके) लगवा दिये । किसी डॉक्टर ने कहा कि तुम्हारा बेटा पांच साल के अंदर पागल भी हो सकता है । क्योंकि इन इंजैक्शन का असर पांच साल तक रहता है । क्या यह बात सत्य है । मुझे इस समय गुस्सा पहले से अधिक आता है । हंसी भी मैं रोक नहीं पाता । चेहरे पर नाक के दोनों ओर कंपकंपी होती है । आजकल इस कारण बातचीत कम करता हूं तथा बाहर भी कम निकलता हूं । गरीब परिवार से हूं । कृपया मदद करें ।

वास्तव में रेबीज की बीमारी व पागलपन दोनों अलग-अलग रोग हैं । पागलपन पागल कुत्ते (रेबीजग्रस्त रोगी कुत्ते) के काटने से भी नहीं होता । रेबीज का रोगी कुत्ता व मनुष्य रोगग्रस्त होने के थोड़े समय पश्चात ही मर जाते हैं । मनुष्य पानी व तेज हवा से डरता है तथा थोड़े समय में ही मृत्यु का शिकार हो जाता है । आपको जो भी तकलीफ हैं वह न तो रेबीज के लक्षण हैं न पागल कुत्ते के काटने अथवा टीके लगाने से हैं । हां, आप मनोचिकित्सक से अवश्य मिल लें । क्योंकि शंका का निदान व इलाज आवश्यक है । और संभव भी है ।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।

—संपादक

परेशानी तो नहीं

राजेशकुमार पांडेय, बैरसिया : २२ वर्ष का युवक हूं । बहुत हस्तमैथुन करने से लिंग थोड़ा टेढ़ा है । डॉक्टर साहब स्त्री के साथ सहवास में परेशानी तो नहीं आएगी ।

कदापि नहीं । लिंग का टेढ़ापन कोई रोग नहीं । न ही सहवास में बाधक । आप व्यर्थ ही कोई ग्रंथि न पालें ।

शुक्राणुओं की कमी

र. भीलवाड़ा राजस्थान : २१ वर्षीय कानून का विद्यार्थी हूं । एक मित्र से आठ वर्ष पूर्व हस्तमैथुन क्रिया सीखी । इस क्रिया के पश्चात शांति प्राप्त होती है । उसके बाद अशांति होने लगती है । वास्तव में इस क्रिया द्वारा शुक्राणु का कोष खतम हो रहा है, इससे मैं संतान उत्पन्न नहीं कर पाऊंगा । किन वस्तुओं के सेवन से शुक्राणु की वृद्धि होती है—बतायें । इस आदत पर कैसे काबू पायें ?

शुक्राणु कोष में ऐसा नहीं होता । वह बनते रहते हैं तथा वीर्य जब-जब स्खलित होता है, चाहे वह हस्तमैथुन या स्वप्नदोष या संभोग से, वह हजारों की संख्या में निकलते हैं । संतान पैदा करने के लिए केवल एक की आवश्यकता है । शुक्राणु वृद्धि करने के लिए कोई दवाई, विटामिन, व खाद्य पदार्थ या हार्मोन का सेवन न करें । न ही इसकी आपको आवश्यकता है । हां, अपने ऊपर नियंत्रण रखें तथा व्यर्थ ही इस बारे में न सोचते रहें । इस संदर्भ में हमारे और उत्तर भी आपको सहायक सिद्ध होंगे ।

संग्रहणी का सहज उपचार

● वैद्य सत्यदेव

जठराग्नि के दूषित होने पर संग्रहणी रोग होने की आशंका बढ़ जाती है। आमाशय के अधोभाग से लेकर उडूक तक के सारे भाग में भुक्त भोजन का पाचन होता है। फलतः पाचन क्रिया में व्यवधान होता है और भुक्त भोजन से शरीर को पोषक तत्व नहीं मिल पाते। भोज्य पदार्थ पचित अथवा अपचित अवस्था में पीड़ा के साथ कभी बंधा, कभी पतला होकर मल के रूप में निकलता है। उसमें दुर्गंध भी आती है। कभी-कभी रोगी की ऐसी अवस्था हो जाती है कि वह जो भी खाता है, उसके बाद शीघ्र ही मल त्याग के लिए जाना पड़ता है। इस अवस्था को ग्रहणी रोग कहा जाता है।

यही ग्रहणी रोग जब पुराना हो जाता है एवं रोगी में तीनों दोषों के सम्मिलित लक्षण दिखने लगते हैं तो इसका नाम 'संग्रहणी' हो जाता है।

लक्षण : इस रोग के रोगी को अरुचि, आलस्य, दुर्बलता, अवसाद, कमर में पीड़ा, आंतों में गड़गड़ाहट, पसली व संधियों में शूल, शरीर में रुक्षता, शरीर में जलीय भाग की कमी, तृष्णा, मुंह आना, गुदाद्वार में पीड़ा, भोजन करते ही दस्त का वेग आदि के लक्षण होने लगते हैं।

बचाव के उपाय : इस रोग से बचने के लिए सबसे उत्तम व सरल साधन है, गाय के तक्र (मट्ठा) का सेवन क्योंकि मट्ठा दीपन पाचन व हल्का पथ्य है। इस तक्र (मट्ठा) द्वारा रोग से छुटकारा प्राप्त हो सकता है। यह संग्रहणी रोग में मल के वेग को रोककर अग्नि को दीप्त कर त्रिदोषों का शमन करता है। दुःसाध्य संग्रहणी का रोगी भी तक्र के सेवन से ठीक हो जाता है।

चिकित्सा : संग्रहणी रोग की चिकित्सा शुरू करने से पूर्व रोगी के पथ्य का निर्णय करना आवश्यक है। यदि इस रोग में रोगी उचित पथ्य का सेवन नहीं करता तो उत्तम से उत्तम औषध प्रयोग से भी रोग का शमन नहीं होगा। इसमें अग्नि को दीपन आमदोष का निराहरण व पाचनवाला आहार ही उपयुक्त होता है।

आमदोष को निकालने के लिए वमन विरेचन, लंफन आदि द्वारा रोगी को शुद्ध कर पाचन द्रव्यों पंचकोल आदि (पिप्पल, पिप्पलामूल, चन्य, चिनक, सोंठ) द्वारा माड़, पेया आदि से अग्नि तीव्र की जाती है।

इस रोग की चिकित्सा के दो प्रकार हैं : (१) पथ्य में अन्न रहित चिकित्सा, (२) सान्न चिकित्सा

अन्न रहित चिकित्सा : इसमें रोगी के साधन सामर्थ्य आदि को देखकर तय करना चाहिए। यह चिकित्सा कल्प चिकित्सा है। इसमें रोगी को केवल मात्र गाय की छाछ (मट्ठा) अथवा दूध ही सेवन करना होता है। भूख-प्यास आदि की अवस्था में भी केवल मात्र

दूध या मट्ठा जिस भी एक का सेवन कर रहा है, लेना होता है ।

औषध के रूप में स्वर्ण पपर्टी, पंचामृत पपर्टी, रस पपर्टी का प्रयोग कल्प के दिन निश्चित कर औषध की मात्रा प्रथम पांच दिन एक निश्चित मात्रा में दी जाती है और इसके बाद वर्धमान क्रम से पपर्टी की मात्रा को बढ़ाया जाता है । एक निश्चित मात्रा तक बढ़ाकर पुनः जिस क्रम से मात्रा को बढ़ाया या कम किया जाता है और न्यूनतम मात्रा पर लाकर लगभग एक सप्ताह तक पथ्याहार के साथ-साथ मूंग की दाल का मांड़ आदि दिया जाता है । इसकी मात्रा भी शनैः-शनैः बढ़ाते हैं और पुनः अन्न पर जाते हैं । इसके साथ आवश्यकतानुसार जीरकचूर्ण का प्रयोग किया जा सकता है ।

अन्न सहित चिकित्सा : इस चिकित्सा में भी रोगी को पथ्य का निर्णय कर लघु भोजन के साथ दही मट्ठा आदि लेना आवश्यक है । औषध के रूप में यदि रोगी को विशेष उपद्रव नहीं है तो निम्न औषधियों के प्रयोग से लाभ प्राप्त हो जाता है ।

इसके लिए मुख्य द्रव्यों में कुटज, इंद्रजो, ाेठ, जीरा, पिप्ल, पिप्पलामूल, बिल्व आदि का योग करें । चूर्ण योगों में नागराध चूर्ण, बिल्वादि र्ण, दाडिमाष्टक चूर्ण, जातीफल्लादि चूर्ण, गवाष्टक चूर्ण, लवण भास्कर चूर्ण, लाईचूर्ण प्रयोग बताया गया है ।

अपथ्य : गुरु स्निग्ध भोजन, मिर्च-मसाले, लू, अरबी, पत्तेवाले शाक, चाय, कॉफी, धिक अम्लपान, दिवास्वप्न, आहार के बाद ाल शयन, व्यायाम आदि ।

—७४ मसजिद मोठ, नयी दिल्ली



शांति (एक)

आकाश हुआ अरुणिम
तालाब होता रक्तरंजित
गिरता है एक छोटा कंकड़
उठती हैं लहर पर लहर
सुरखाब उतरता है जल पर
तरंग उठती हैं तरंग पर
हंस करता है अवतरण
तालाब हो जाता है सागर
आकाश अरुणिम
सागर अरुणिम

शांति (दो)

झील में जब
गिरता है एक कंकड़
नहीं उठती कोई लहर
सुरखाब आता है उतर
नहीं उठती कोई तरंग
केवल हंस आनंदित परम
तब झील हो जाती है सागर

● विश्व मोहन तिवारी
ई/१४३, खंड २१, नोएडा



लौट आये हैं स्वर्ण चित्रों के पुराने दिन

● शोभा वराड़ पांडे

भारत में स्वर्ण-चित्र बनाने की प्राचीन परंपरा रही है । रामायण में कांचन या स्वर्ण चित्रांग का उल्लेख युद्धकांड में मिलता है । शायद वह स्वर्ण चित्रों का द्योतक हो सकता है । प्राचीन बौद्ध ग्रंथ 'शेरगाथा' में सम्राट बिंबिसार द्वारा राजा तिस्स को स्वर्णपत्र पर अंकित तथागत बुद्ध के जीवनवृत्तों के दृश्य भेंटस्वरूप प्रदान किये जाने की रोचक कथा मिलती है । चित्रकला संबंधी प्राचीन ग्रंथों में असली सोने से सुनहरा रंग बनाने की विधि के वर्णन प्राप्त होते हैं ।

बारहवीं शती से शुरूआत

प्राचीनकाल के स्वर्ण चित्र तो बचे नहीं परंतु गुजरात और राजस्थान के जैन पुस्तक भंडारों में 'कल्पसूत्र' नाम से जाने जाने वाले हस्तलिखित ग्रंथों और पांडुलिपियों में स्वर्णाक्षरों का तथा स्वर्ण चित्रों का उपयोग दृष्टिगोचर होता है । इस शैली का उदय ११वीं या १२वीं शताब्दी में हुआ । स्वर्णाक्षरों से लिखित कल्पसूत्र की एक प्रति १४६७ ईसवी में जौनपुर के बादशाह हुसैनशाह शर्की के समय बनी थी । वह 'जौनपुर कल्पसूत्र' के नाम से प्रसिद्ध है । यह

कल्पसूत्र बड़ौदा के ज्ञान मंदिर में आज भी सुरक्षित है ।

भारतीय चित्रकला का एक सुनहरा अध्याय १६वीं शताब्दी से राजपूत, पहाड़ी, मुगल, दखनी आदि शैलियों से लिखा गया । इन शैलियों में बने लघुचित्रों में सोने की स्याही या सवर्णपत्रों का तथा बहुमूल्य मणियों का प्रयोग सौंदर्य निखारने के लिए किया गया ।

तंजौर चित्र शैली

चित्रों को स्वर्णपत्र तथा मणियों से अलंकृत करने की यह परंपरा दक्षिण भारत में भी थी । तंजौर चित्रशैली में रुचि लेनेवालों की संख्या बढ़ रही है । आये दिन राजधानी दिल्ली में तंजौर शैली के चित्रों की प्रदर्शनियां लगी रहती हैं । इनमें प्राचीन तंजौर चित्रों के साथ नये बने चित्र भी बिक्री के लिए उपलब्ध होते हैं ।

तंजौर के नगजड़े सुवर्ण चित्रों में खरीददारों की यह रुचि इतनी बढ़ी कि दिल्ली के हौज खास ग्राम में एक आर्ट गैलरी भी खुल गयी, जो तंजौर स्वर्ण चित्रों को समर्पित है । यहां स्वर्ण चित्रों की बिक्री के साथ-साथ पुराने चित्रों के पुनरुद्धार का कार्य (रेस्टोरेशन वर्क) भी किया

भारत में स्वर्ण चित्रों की प्राचीन परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है । अत्यंत श्रमपूर्वक बनाये गये ये चित्र कलात्मक एवं मूल्यवान होते हैं । अब रत्न जटित स्वर्ण चित्रों के दिन फिर से लौट आये हैं ।

स अलंकरण शैली का प्रकर्ष दक्षिण की प्रसिद्ध तंजौर चित्रशैली में देखने को मिलता । उसमें सुवर्ण और नगों का उपयोग इतने तुर्य से किया गया कि वे चित्र कम और सोने रत्नजटित गहने अधिक लगते हैं ।

१९वीं शताब्दी में इन समस्त चित्रशैलियों ह्रास शुरू हुआ और वे प्रायः लुप्तप्रायः हो ।

लौट रहे हैं पुराने दिन

अब लगता है कि रत्नजटित स्वर्णचित्रों के फिर लौट आये हैं । गये कुछ वर्षों से

वृंदावन चित्रशैली का एक सुवर्ण चित्र



जाता है । नये विषयों पर भी चित्र बनने लगे हैं ।

उत्तर भारत में विशेषतः राजस्थान के जयपुर, उदयपुर और नाथद्वारा-जैसे केंद्रों में स्वर्ण चित्रों का थोड़ा-बहुत काम होता था, परंतु हाल में 'मंदिरों का गांव' नाम से प्रसिद्ध वृंदावन में भी नगों से सज्जित स्वर्ण चित्रों का सृजन होने लगा है ।

वृंदावन में

वृंदावन के सुप्रसिद्ध बांके बिहारी मंदिर की ओर जानेवाली कुंज गलियों में स्वर्ण चित्र बनानेवाले कुशल चित्रकारों के स्टुडियो हैं । यहां पर चित्रों को सोने के वर्क और बहुमूल्य नगों से सजाया जाता है । इन चित्रों का मुख्य विषय कृष्ण और उनकी ब्रज-लीलाएं होता है ।

सूरदास के एक पद में चपल कृष्ण का वर्णन '**मनिमय कनक नंद के आंगन बिंब पकरिये धावल धावल**' इन शब्दों में किया गया है । स्वर्ण चित्रकारों के कैनवास भी नंदराज के आंगन-जैसे सोने और रत्नों से जड़े हुए लगते हैं । राधा को तो सूरदास ने 'कनक-लता' कहा ही है । युगल जोड़ी के यह स्वर्ण चित्र रत्नों से सज्जित होकर उन्हीं के शब्दों में '**चमकि चमकि चकचौंधति**' लगते है ।

बिहारीलाल ने अपनी सतसई में लिखा है कि श्यामसुंदर का गात भी सोने जैसा चमकनेवाला होने के कारण उनके गात और पहने हुए गहनों में अंतर करना कठिन हो जाता है । '**दीठि न परत समान दुति कनक कनक से गात**'

— एफ ४२, ग्रीन पार्क,
नयी दिल्ली-१६



चित्रकारों के प्रिय राधा-कृष्ण

मध्यकालीन हिंदी के भक्ति साहित्य और रीतिकालीन साहित्य में जिस प्रकार राधा और कृष्ण केंद्रीय विषय रहे हैं, ठीक उसी प्रकार इस काल की चित्रकला और मूर्तिकला में भी राधाकृष्ण केंद्रीय विषय रहे हैं । रीतिकालीन कवियों ने तो राधा-कृष्ण के प्रेम विषयक आख्यानों के वर्णन को चरमोत्कर्ष पर पहुंचा दिया, यह कहकर कि;

आगे के सुकवि रीझे तो कविताई
नहीं तो राधा-कृष्ण सुमरिन को बहानो है

यानी हमारी कविता से आगे के कवि रीझें तो ठीक अन्यथा राधा-कृष्ण को भक्ति भाव से स्मरण करने का बहाना ही समझा जाए ।

राजस्थान के राजपूत राजाओं तथा कुछ साल बाद हिमालय के तलहटी क्षेत्र के हिंदू राजाओं ने चित्रकला को प्रोत्साहन दिया । इन राजाओं के आश्रय में चित्रकला खूब फली और अपनी स्थानीय विशेषताएं लिए हुए अनेक शैलियां प्रकाश में आयीं । इन चित्र शैलियों में राग-रागनियों के चित्रों की श्रृखलाएं चित्रित की गयीं और इन राग-रागनियों के चित्रों में राधा-कृष्ण प्रमुखता से चित्रित किये गये ।

राजपूताना शैली के, विशेषकर किशनगढ़ शैली के और चंबा व बसोहली शैली में चित्रित राधा-कृष्ण के चित्र तो विश्व प्रसिद्ध है ।

—योगेश



चित्र : आर.के. स्टुडियो



मरु मेले में घूमर नृत्य



मरु मेला आज अंतरराष्ट्रीय आकर्षण का केंद्र बन गया है। इस मेले में ऊंटों पर करतब दिखाये जाते हैं और परंपरागत राजस्थानी नृत्य पर्यटकों का मन मोह लेते हैं।

मरु मेले में सीमा सुरक्षा बल का एक जवान ऊंट पर करतब दिखाता हुआ



सिद्ध पुरुषों का अग्नि नृत्य

• वासुदेव पालीवाल

र्य की आभा में सोने की तरह चमकते पीत पाषाण और उन पर उकेरा गया चितेरों का त्मक शिल्प वैसे तो हर क्षण पर्यटकों के त के लिए तैयार रहता है, लेकिन मरु मेले वसर पर उसकी आत्मीयता और मुसकान अधिक ही बढ़ जाती है। इन दिनों स्वर्ण जैसलमेर एक नये उत्साह के साथ कों के स्वागत के लिए उठ खड़ी होती है बड़ी आतुरता के साथ पर्यटकों की प्रतीक्षा है। मुझे याद है सन १९८९ का वह ला, जिसमें जैसलमेर को दुलहन की तरह या गया था। उस साल रात के अंधेरे में नगरी का वह दुर्ग जिसे स्व. सत्यजीत राय नार किले' के नाम से पुकारा था, जिस से चमक रहा था, उसके आगे शायद सेज पर बैठी सुंदरी का सौंदर्य भी लजा लपलपाती मशालों के गहने से सजा ानो दावानल से बना हुआ दुर्ग हवा के



मरुमेले में गुलाबी का कालबेलिया नृत्य

झोंकों के साथ झूम रहा हो।

यद्यपि प्रतिवर्ष मरु मेले के अवसर पर ऐसी नयनाभिराम प्रस्तुति देखने को नहीं मिलती, फिर भी इसमें कोई साहित्यिक अभिव्यंजना नहीं कि मरु मेले का अपना आकर्षण है। ऐसा आकर्षण कि पर्यटक मरु मेले का नाम सुनकर जैसलमेर की तरफ दौड़ा आता है।

ऊंटों का कारवां : भव्य शोभा यात्रा

मरु मेले का शुभारंभ नगर के प्राचीन पेयजल स्रोत गड़ीसर से निकाली जाने वाली भव्य शोभा यात्रा के साथ होता है। सैकड़ों ऊंटों के कारवे से युक्त शोभायात्राऊंटगाड़ियोंपर सजी झांकियां, गाते-बजाते लोक कलाकारों के दल व परंपरागत वेशभूषा में मंगल कलश लिए हुए पनिहारिनें जहां पर्यटकों को मंत्र मुग्ध कर देती हैं, वहीं गड़ीसर तालाब तथा उसके आसपास बने हुए मंदिर, छतरियां व बंगलिया भी पर्यटकों को कम प्रभावित नहीं करते।

मरु मेले के अन्य आकर्षणों में गुलाबी व कमला का कालबेलिया नृत्य, बाड़मेर का गैर नृत्य व जसनाथी संप्रदाय के सिद्ध पुरुषों का अग्नि नृत्य अपना.सानी नहीं रखते । विद्युत गति से थिरकती नृत्य की साकार प्रतिमा गुलाबी का सपेरा नृत्य, चालीस मीटर कपड़े से बनी सफेद आंगी पहने गैर नर्तकों की डंडियों की टकराहट और हाथों व मुख में अंगारे उठाये धधकती अग्नि पर नाच करते लोग—ये सब ठहरी, ठिठकी आंखों के सामने एक जादू की शक्ल में



ऊंचे मच पर साइकिल चलाकर साहसिक करतब करता कलाकार

गुजरता जाता है और हजारों पर्यटक टकटकी लगाये खामोशी से देखते रहते हैं ।

बीच-बीच में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार नड़, अलगोजा, मोरचंग, कमायचा, खड़ताल, बीन, शहनाई, घड़ा, सारंगी इत्यादि स्थानीय लोकवाद्यों का वादन करते रहते हैं । इस कला में यहां के कलाकार बहुत प्रवीण हैं तथा अपनी इस कला की बदौलत विदेशों में अपने 'प्रोग्राम' प्रस्तुत करने का गौरव हासिल कर चुके हैं ।

रोमांचक करतब

कई रोमांचक कार्यक्रम भी मरु मेले के दौरान देखने को मिलते हैं । हजारों फुट की ऊंचाई से कूदते वायुसेना के छाताधारी, बीस-पच्चीस फुट ऊंचे मंच पर साइकिल सवार का संतुलन प्रदर्शन और दौड़ते-कूदते ऊंटों पर सीमा सुरक्षा बल के जवानों के साहसभरे करतब इनमें प्रमुख हैं ।

इसके अतिरिक्त कई प्रतियोगिताओं का आयोजन इन तीन दिनों में होता है जिनमें ऊंटों व ऊंट गाड़ों की दौड़, ऊंट पोलो, ऊंट श्रृंगार, देशी-विदेशी पर्यटकों के बीच रस्सा-कस्सी, लंबी मूंछ, मेंहदी, मरुश्री व पगड़ी प्रतियोगिता के प्रति दर्शकों में विशेष आकर्षण रहता है ।

'मरुश्री' से मॉडल तक

चूंकि इस अंचल की बहुरंगी संस्कृति का सजीव चित्रण पर्यटकों के सम्मुख उपस्थित करना मरु मेले का खास मकसद रहता है, इसलिए 'मरुश्री' यानी कि 'मिस्टर डेजर्ट' का खिताब उस व्यक्ति को दिया जाता है जो इस अंचल की परंपरागत वेशभूषा का सुव्यवस्थित ढंग से प्रतिनिधित्व करता है । इस प्रतियोगिता में लगातार चार साल तक खिताब पानेवाले श्री लक्ष्मीनारायण बिस्सा की वेशभूषा व व्यक्तित्व इतने आकर्षक हैं कि एक एडवरटाईजिंग एजेंसी ने अंतरराष्ट्रीय स्तर के उत्पादन 'जैसलमेर सिगरेट' के अंतरराष्ट्रीय विज्ञापन के लिए उन्हें मॉडल चुना है ।

पगड़ी बांधो—प्रतियोगिता देशी व विदेशी

जैसलमेर में प्रतिवर्ष आयोजित होनेवाला मरु मेला विदेशी पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण तो बन ही गया है, उसके माध्यम से राजस्थान की परंपरागत कलाओं को भी अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हो रही है ।

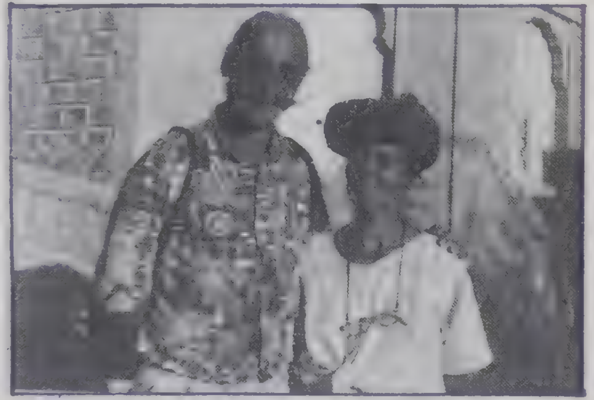
ोगों के दो अलग-अलग वर्गों में होती है । हले स्थानीय लोग पगड़ी बांधते हैं और बाद उनकी देखा-देखी विदेशी पर्यटक । इस तियोगिता में कई विदेशी महिलाएं भी हिस्सा ती हैं जो स्थानीय लोगों के लिए एक कौतूहल विषय होता है ।

जब टीले बन जाते हैं ऑडिटोरियम

मरु मेले की आखिरी शाम सबसे सुहानी ती है । यह शाम अकसर सम के बालुई लों पर संपन्न होती है । जैसलमेर से चालीस लोमीटर की दूरी पर स्थित यह स्थान लहरदार लों के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है । मेले की खिरी शाम यही टीले ऑडिटोरियम बन जाते । प्रकृति प्रदत्त ऑडिटोरियम, जहां किसी कार का तामझाम नहीं होता । न तो वहां सियां सजती हैं और न ही रंगमंच को डिस्को इटों से सजाया जाता है । कलाकारों का कअप भी परंपरागत शैली में ही होता है और पराजगत वेशभूषा ही उनका शृंगार होती है । के दिन इस तरह नियत किये जाते हैं कि खिरी शाम को पूर्णिमा हो, और फिर मासी के पूर्ण चंद्र की चटक चांदनी में कते हुए इन टीलों पर मूमल-महेंद्रा, ा-मारू या अन्य किसी प्रेमी युग्ल की प्रणय ा को बड़ी ही खूबसूरती के साथ उकेरा ा है । शौर्य, सौंदर्य और रोमांस पर

आधारित 'ध्वनि एवं प्रकाश' का यह कार्यक्रम बहुत ही मजेदार होता है ।

इन मनभावन प्रस्तुतियों के साथ-साथ पर्यटक को पर्यटन के भी बहुत अच्छे अवसर



'पगड़ी बांधो प्रतियोगिता' में हिस्सा लेती विदेशी महिला

मिलते हैं, नगर की प्रख्यात पटवा हवेली, दीवान नथमल की हवेली, सालमसिंह की हवेली और बादल-विलास का उत्कृष्ट स्थापत्य ही नहीं, यहां की एक-एक गली में बीसियों ऐसे झरोखे बने हुए हैं जो अपनी बारीक कारीगरी से दर्शकों को चमत्कृत से कर देते हैं । झरोखों से सुसज्जित इन वीथियों में जैन उपासरे अपने विशिष्ट स्थापत्य के कारण अलग से ही पहचाने जा सकते हैं । जैन साधुओं और यतियों के इन साधना स्थलों की अहम पहचान मुख्य द्वार पर अलंकृत तोरण द्वार हैं ।

अर्थ के माध्यम से धर्म और काम

नगर के सौंदर्य को निहार पर्यटक दुर्ग पर पहुंचता है तो उसे अद्‌भुत सुकून मिलता है। अर्थ के माध्यम से धर्म और काम का जो बेमिसाल मेल दुर्ग स्थित इन मंदिरों में हुआ है उसे देखकर बुद्धि चकरा जाती है। मंदिरों की मूर्तियों का शिल्प दिलवाड़ा एवं अजंता-एलोरा से किसी भी दृष्टि में हलका नहीं ठहरता। स्त्रियों के अंग-प्रत्यंगों के कमनीय सौष्ठव का जो वर्णन साहित्यकारों ने किया है, उनसे कहीं अधिक सौंदर्य और सजीवता कलाकारों ने इन मूर्तियों में अंकित कर दी है। मंदिरों में इन नग्न व कामुक मूर्तियों को देखकर लोग आश्चर्यचकित तो होते हैं, किंतु कलाकार की कला को सराहे बिना नहीं रहते।

नगर के बाहर भी ग्रामीण अंचलों में वास्तुकला का इतना खजाना बिखरा पड़ा है कि देखनेवाले की आंखें पथरा जाएं। लौद्रवा का कलात्मक जैन मंदिर व प्रणय की अप्रतिम नायिका मूमल की भव्य मेड़ी के भग्नावशेष, अमरसागर, बड़ाबाग, कुलधरा, खाभा, काठोड़ी, वैशाखी, रामकुंडा में बिखरी स्मृतियां इस बात की साक्षी हैं कि जैसलमेरवासी बेहद लोकप्रिय थे तथा अपनी इस कला अभिरुचि को इस कला महोत्सव के रूप में आज भी जीवित बनाये हुए हैं।

पहचान खो जाने का खतरा

हां, समय के साथ कुछ ऐसी विकृतियां भी कलाकारों में व्यावसायिकता, मनुष्य की अर्थलिप्सा व राजकीय यात्राओं के बहाने सपरिवार महोत्सव का आनंद उठानेवाले सरकारी अधिकारियों के कारण उत्पन्न होने लगी हैं, जिनसे मरु मेले की पहचान खोने का खतरा है। लेकिन समय रहते सचेत होकर इस कला नगरी व कला महोत्सव का आकर्षण बरकरार रखा जा सकता है। यह मेला थार मरुभूमि की कला संस्कृति के संरक्षण-संवर्धन की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास है, पर इसके लिए भी बाहरी क्षेत्रों से कलाकारों के दल बुलाने के स्थान पर स्थानीय कलाकारों को अधिक महत्त्व देना चाहिए। यदि देश के अन्य भागों की कला व स्थानीय कलाकारों के मध्य समुचित संतुलन नहीं रखा गया तो यह आयोजन कला का अच्छा महोत्सव तो साबित हो जाएगा, किंतु मरु महोत्सव नहीं।

—संयुक्त मंत्री,
अंतर प्रांतीय कुमार साहित्य परिषद,
मौकाती पाड़ा, जैसलमेर (राजस्थान)

ताजमहल को ९०० साल तक कोई खतरा नहीं

संसार की अत्यंत सुंदर इमारत ताजमहल की नींव इस तरह से रखी गयी है कि आनेवाले ९०० वर्षों तक कोई खतरा नहीं है। रुड़की विश्वविद्यालय के कुछ वैज्ञानिकों की इस रिपोर्ट, कि ताजमहल ८० मिलीमीटर जमीन में धंस गया है, का कोई आधार नहीं है।

दुनिया के माने हुए आर्कीटेक्ट सर जान फेल्डन (इंगलैंड) ने विशेष अध्ययनों के बाद यह सिद्ध किया है कि ३४५ वर्ष पुराना ताजमहल न तो धंस रहा है और न ही इसकी नींव को आनेवाले ९०० वर्षों तक कोई खतरा है। अपने देश की विभिन्न १२ संस्थाओं ने भी ताजमहल के बारे में सर्वेक्षण किया और सर जान फेल्डन की रिपोर्ट का समर्थन किया है।

•विनय राय


भाईसाहब, ऐसा
टी.वी. दिखाइए जो
दूरदर्शन का एक भी
चैनल न पकड़े ।।
एंटरटेनमेंट चैनल
न्यूजिक चैनल
बिजनेस चैनल
श्रद्धांजलि, उन
लोगों को जो हमारे
प्रोग्राम देखने के
कारण शहीद हुए
इनरिचमेंट चैनल
स्पोर्टस चैनल
...क्रिकेट मैच के अंतिम
क्षणों का खेल किसी कारणवश
हम नहीं दिखा पा रहे !!

"प्रारंभ करें ?"

"जी हां ।"

"स !...प !...अ... !"

उनकी गुरु गंभीर और सुस्पष्ट वाणी मंदिर के घंटे की नाद-ध्वनि के सहज गूंज उठी । सभी स्वर उचित स्थान पर व्यक्त हुए । मैं स्वभाव से ही बहुत सकुचानेवाली थी उन दिनों । इसलिए जब संगीतज्ञ गुरुमूर्तिजी मुझे संगीत की शिक्षा देने के लिए आये तो बस उनकी वाणी सुनती रही, सिर उठाकर उन्हें देखने हुए गाने लगी । भय और उलझन के कारण तीन जगह पर ताल गीत ठीक नहीं थी । इस पर गुरुमूर्तिजी 'रुद्रमूर्ति' बन गये । मुझे एकटक घूरने लगे । बस, मैं कांपने लगी । आवाज रुंध गयी

सच कहूं तो बात यह कि उन दिनों संगीत सीखने में मुझे विशेष रुचि या लगन नहीं थी । जब मद्रास में थी, मैलापुर के एक घर के 'आउट हाउस' में कोई वृद्धा नारी संगीत पाठशाला चलाती रही । मां के आग्रह के

टूटा हुआ स्वर

● लक्ष्मी रमणन

से डरती रही ।पूरा-पूरा ध्यान उन्हीं की वाणी पर केंद्रित था । अचानक उन्होंने प्रश्न किया,

"कितने कीर्तन सीखे हैं तुमने ?"

"जी ! कुल पचास के करीब होंगे ।"

"अच्छा ! वर्णम् ?" (संगीत शिक्षा में प्रयोग का एक शब्द)

"बीस !"

"राग आभोगी का वर्णम् जरा गाओ ।"

बस ! मैं घबरा गयी । एक ओर डर, दूसरी ओर लज्जा ! मन व्यग्र हो उठा । 'अकेले कैसे गा सकूंगी ?' सो भी अपरिचित व्यक्ति के सामने ? कक्षा में हमेशा हम सभी छात्राएं एक साथ सामूहिक रूप में ही गाती थीं । फिर भी तब कोई चारा न था । इसलिए जैसे-तैसे डरते

कारण मुझे भरती होना पड़ा था ।

दिल्ली आने के बाद 'गुरु परिवर्तन' हो गया ।

एक वर्ष के बाद मां की दौड़धूप के परिणामस्वरूप सभा से गुरुमूर्तिजी को भेजा गया था ।

खैर !...

"किसने सिखाया ! ताल बेताल है !"

"..."

"ताल मिश्रचापु बजाओ ।"

"..."

"नहीं मालूम ! जाने दो ! ताल 'रूपकम्' ही सही !"

मेरी आंखें सजल हो गयीं थीं । उन्होंने देख



ा तो गुस्से के साथ स्वयं जोर से हाथ फर्श ताल मारा...टक, टक... ।
''यह है रूपकम्, समझीं ।''
मैंने कोई उत्तर नहीं दिया । सिर उठाकर उन्हें ने का भी साहस नहीं हुआ ।
'सुनो ! स्थिति ऐसी है कि तुम्हारे लिए अब प्रारंभ से, याने सरलि वरिसै से संगीत-पाठ ाने पड़ेंगे ।''
एकदम चौंक पड़ी । कहां मेरे कीर्तन...और सरलि वरिसै । बाप रे ! मुझे रोना आया ।
'सर !'' धीरे-से मुंह खोला कि नहीं, वे पड़े, ''संगीत शास्त्र के लिए राग, भाव ताल तीनों ही अपेक्षित हैं । 'रिद्म एंड दोनों अभिन्न और अन्योन्याश्रित होने पर ीत की शोभा बढ़ती है । यह भी नहीं ! बिना सही नींव रखे पचास कीर्तन कर हवाई महल बनवाने का साहस किसने ?''

गुरुमूर्तिजी चले गये । उनके जाने के बाद घर में तूफान उठा ।

''मुझे इस गुरुजी से संगीत सीखना नहीं ।'' मैंने हठ ठान लिया । ''कौन पुनः अ, आ, इ, ई, से...'सरलि वरिसै' से सीखे ? नहीं...मुझसे यह नहीं होगा ।''

''उन्होंने यों ही मजाक किया होगा ।'' पिताजी ने गुरुमूर्तिजी का पक्ष लिया । ''यही नहीं, तुम्हारे लिए भी तो अपनी गल्तियों को सुधार लेना अच्छा ही है ।''

अब मां की बारी थी ।

''तो क्या ?...इस विस्तार में...इतनी गहराई में जाने की क्या आवश्यकता है ? हमारी बेटी को तो रंगमंच पर संगीत कार्यक्रम थोड़े ही देना है । कल जब विवाह की बात उठेगी, तो चार गीत गाने होंगे ? बस ! इतना ज्ञान काफी है ।''

''मुझे यह संगीत कला, अभ्यास, ब्याह

अपनी तबाही का कारण मैं ही हूं ! सिर्फ मैं ! उत्तरोत्तर उन्नति करते जाते समय सदा ऊंचाई की ओर ही नहीं, नीचे भी झुककर देखना है । नहीं तो मेरी तरह पांव फिसलकर गर्त में ... अधोगति की ओर .... ।

कुछ नहीं चाहिए । मुझे चैन से रहने दें ।''

''हां ! हां ! सदा सर्वदा हाथ में कहानी की कोई किताब लेकर चुपचाप बैठी रहो, वही चाहिए ।''— मां को अच्छा संदर्भ मिला मुझे कोसने का ।

लेकिन इधर मेरा हठ भी कमजोर नहीं हुआ ।

आखिर...

निर्णय हुआ कि पिताजी सभा के सचिव से फोन पर बात करेंगे । दूसरे किसी संगीतज्ञ का प्रबंध करने की प्रार्थना भी की जाएगी । सबको यह स्वीकार्य था ।

अगले दिन पिताजी शाम को दफ़्तर से सभा गये । जब वापस आये जरा देर हो चुकी थी । ऐसा समाचार लाये, जिसे सुनकर पहले तो मेरा मन किल्लोलें करने लगा । परंतु तुरंत अंतर्मन में एक वेदना...कसक भी हुई ।

पिताजी ने बताया, ''पता चला कि गुरुमूर्तिजी का स्वभाव ही कुछ ऐसा है । जहां भी जाते, ऐसे ही शास्त्र, संप्रदाय, रूढ़ि आदि की बहस करते हैं । अंत में बात बिगाड़कर या खुद रूठकर चले जाते हैं । यह भी सुना कि इसके पहले भी उनके बारे में अनेक शिकायतें पहुंची थीं । और इन सबके कारण आज उन्हें सभा से ही निकाल दिया गया है ।''

आत्मग्लानि से मैं अंदर ही अंदर कुढ़ती रही ।

'जो लोग कर्त्तव्यपरायणता से पूरी निष्ठा और लगन के साथ कार्यरत होते हैं, उन सबकी क्या यही दुर्गति होगी ?' सोचा । फिर भी मन जरा शांत हो रहा था यह सोचकर कि 'मेरी वजह से उन्हें सभा से निकाला नहीं गया ।'

कुछ दिनों के बाद...एक शाम को मैं घर में अकेली थी ।

मां-बाप गणेशजी के मंदिर में प्रवचन-कार्यक्रम सुनने के लिए गये हुए थे ।

दरवाजे पर घंटी बजी । दरवाजे के पास जाकर उसमें लगे छोटे 'लेंस' के सहारे उस पार देखा । गुरुमूर्तिजी खड़े थे । मैंने दरवाजा नहीं खोला । अंदर से ही जोर से कहा, ''मां-बाप नहीं हैं ।''

''बेटी ! जरा दरवाजा खोलो ! कुछ बातें करनी हैं ।''

दरवाजा खोलकर मैं कुछ दूर जा खड़ी हुई ।

वे अंदर आये । कुछ झेंपते रहे ।

''बैठिए ।''

''थैंक्स !'' कहते हुए वे बैठ गये ।

''देखो बेटी !...''

''जी ! मेरा नाम श्यामला है ।''

''उस दिन जब आया था, तुम्हारा नाम तक नहीं पूछा । हूं...अगली ट्यूशन के लिए देर हो जाएगी— इसी जल्दबाजी में था । लेकिन, देखो ! कोई भी इस पर गौर नहीं करता कि कितना सच्चा हूं । कितना कर्त्तव्यपरायण हूं ।

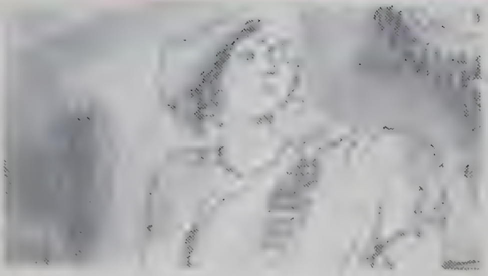
र्मठ हूं !...हां, जमाना बहुत बदल गया है। आजकल तो सच बोलने के लिए भी दाम चुकाने की नौबत आ गयी है। पैसा लेकर राग 'कल्याणी' हो या राग 'काम्वोदी'...कुछ अंतर रखे बिना जो आगे बढ़ते हैं, उन संगीत-विद्वानों में मैं नहीं हूं। मेरे अपने सिद्धांत हैं। शुद्ध मन और शुद्ध कार्य का मैं पक्षधर हूं। मेरी यही अभिलाषा है कि लोग कह सकें कि "यह अमुक विद्वान की शिष्या है। इच्छा है कि मेरी एक विशिष्ट रीति हो। रसिकजन दूसरों से उस रीति को अलग रूप से पहचान सकें और कहें कि 'वह बहुत बढ़िया है।' एक यही आशा लिए जीता हूं कि शिष्यों से गुरुजी का गौरव बढ़े।...आयी बात समझ में।"

"सुनो श्यामला ! उस दिन मैंने जो कुछ कहा था, बुरा मत मानना ! तुम रसोईघर में जाओ या भगवान की मूर्ति के समक्ष दीप जलाकर भजन-कीर्तन करो, गीत-गायन की परिपाटी का स्तर अच्छा होना चाहिए। त्यागराज भागवतर ने 'राग तोड़ी' में एक कीर्तन रचा है। उसका भावार्थ है :

निद्रा त्यागकर प्रातःकाल उठकर, तंबूरा बड़े प्यार से बजाते हुए सुस्वर, श्रुतिलय के साथ, पवित्र मन और श्रद्धाभक्ति के साथ, जो तुम्हारा नामकीर्तन करें, उन पर तुम्हारी अनुकंपा रहती है।"

आगे उन्होंने उक्त पंक्तियों को भावसहित गाकर सुनाया। कितना अच्छा गाते थे ! जब गीत समाप्त हुआ, उनके नयन आर्द्र हो चले थे।

उसी समय बाहर कार रुकने की आवाज हुई। माता-पिता जीने से ऊपर चढ़ आये।



'वाह ! गुरुमूर्तिजी ! आइए, आइए !

"कल्याणी ! देखो विद्वान के लिए कॉफी बनाकर ले आओ।"

पिताजी ने उनका स्वागत किया। अतिथि-सत्कार में उनको कोई पराजित नहीं कर सकता।

"जी नहीं ! मैं यह बताने आया हूं कि उस दिन भले कुछ सख्त कहा हो, लेकिन मुझे बुरा मत समझें।"

"गुरु महाशय को पूरा अधिकार है कि शिष्या से गलती होने पर सुधारें। इसमें बुरा मानने की क्या बात है ?"

गुरुमूर्तिजी ने बड़ी कृतज्ञता के साथ उन्हें देखा !

"कल्याणी ! पत्तल पर खाना परोस दो। ये यहीं खाएंगे।"— पिताजी ने मां से कहा।

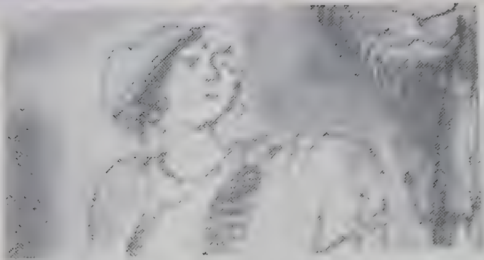
"जी नहीं।"— गुरुजी सकुचाते रहे।

"सुनें ! मुझे भूख लगी है। दोनों खाते हुए आगे बातचीत करेंगे। आइए !"

दोनों भोजन करने के लिए उठे।

पांच मिनट में मां ने उनके लिए व्यंजन परोसे। गरमागरम सांबर, साग-सब्जी, टमाटर का रसम...। गुरुमूर्तिजी शायद बहुत भूखे थे। जल्दी-जल्दी खाते रहे। भरपेट खाकर संतुष्ट हुए।

उठकर हाथ धोये। "अन्नदाता सुखी भव। आप दीर्घायु हो। अतिथि की भूख का अनुमान



करके प्रेमपूर्वक आपने भोजन कराया, ऐसा करुणभाव आजकल दिल्ली में देखना बेहद आश्चर्य है ।''

पिताजी का अट्टहास गूंज उठा ।

''श्यामला के लिए कल से ही आप ट्यूशन आरंभ कर दीजिए । सप्ताह में दो कक्षाएं लें, पर्याप्त होंगी । अपनी फीस बताएं । जो भी हो, वही दे दूंगा । अपनी जान-पहचान की दो-चार जगह आपके बारे में बताऊंगा । बात बन जाएगी । आप कहां रहते हैं ?''

''मोतीबाग 'सी' दो में एक सर्वेंट रूम में हूं ।''

''आप पता दीजिए ! 'वायस ऑडिशन' के लिए आवेदन कीजिए । रेडियो में आधे घंटे का गीत कार्यक्रम अवश्य मिल जाएगा । मेरा एक मित्र है । वह इस दिशा में सहायता करेगा ।''

नौकरी चली जाने से खाली हाथ जो थे, उन्हें एक ही दिन में सीढ़ियों के ऊपर चढ़ा देने का प्रयास किया पिताजी ने । ऐसा लगा कि अत्यधिक प्रसन्नता के कारण गुरुमूर्तिजी रो पड़ेंगे ।

मेरी ट्यूशन शुरू हुई ।

उनकी आवाज सुमधुर और गंभीर थी । अनायास सभी स्वर लहरियां उचित स्थान पर सुस्वर गूंजते थे । स्पष्ट था कि ज्ञान और श्रम दोनों के तालमेल ने उनकी उन्नति में साथ दिया है । संगीत कला के प्रति तब मुझे कोई विशेष अभिरुचि नहीं थी । लेकिन उनके अधीन शिक्षाभ्यास प्रारंभ करने के बाद मैं श्रद्धा-भक्ति के साथ वह कला सीखने लगी । अब विशेष रुचि और निष्ठा भी होने लगी ।

कुछ दिनों में रेडियो पर उनका पहला प्रोग्राम आया । उसी दिन शाम को हमारे घर आते समय वे सूजी हल्वा की एक पोटली लाये । पिताजी को दी, ''मां के हाथ का बनाया हुआ है । आपको देने के लिए अभी कुछ देर पहले बनाया गया । आप ही के प्रयत्न और प्रोत्साहन से यह कार्यक्रम संपन्न हुआ । नहीं जानता कि मैं अपनी कृतज्ञता किन शब्दों में और कैसे प्रकट करूं ।'' उनकी वाणी गद्‌गद्‌ हो उठी ।

''ऐसा मत कहें । आपमें क्षमता है । परिश्रमी हैं । आपकी विद्वता के कारण ही यह अवसर मिला है । आपका भविष्य बहुत अच्छा और उज्ज्वल होगा । मुझे पूरा विश्वास है ।''

पिताजी आत्मीयता के साथ विद्वान की प्रशंसा करने लगे । गुरुजी इससे अधिक प्रभावित और भावुक हो गये । कहा, ''आपका आशीर्वाद हो, वही पर्याप्त है ।''

आर्थिक दृष्टि से उनकी स्थिति शोचनीय थी । मुश्किल से घर-बार चलता था । कभी-कभार ट्यूशन की फीस अग्रिम के रूप में बहुत संकोच के साथ मांग लेते । कभी राशन का चावल, शक्कर आदि भी ।

उनके घर में उनकी मां, पत्नी ललिता और तीन वर्ष की बिटिया थी । नवरात्रि का त्योहार आया । मां ने उन्हें एक दिन न्योता दिया । ''ललिता को इन दिनों में कभी हल्दी-कुंकम के लिए साथ लाइए ।''

गुरुजी की पत्नी उतने गौर वर्ण की नहीं थी,

र भी चेहरा आकर्षक था ।

"गीत गा सकती हो ?"— मां ने प्रश्न या ।

"विवाह के पहले गाया करती थी । फिर ड़ दिया । सब भूल चुकी हूं ।"

"समझी नहीं !"

"विवाह के पूर्व जब ये 'लड़की' देखने के र आये तो मैंने मरकतवल्ली का गीत ा । उस गीत में कहीं गलती हो गयी तो ा में दांत पीसने लगे । विवाह के बाद राल आते समय मायके में ही श्रुतिबक्स र अटाली में छोड़कर चली आयी । संगीत ा का लक्ष्य आनंदप्राप्ति है । मुझे तब डर हा था कि कहीं मेरे संगीत ज्ञान के कारण हिक जीवन में झगड़ा उत्पन्न न हो । और ये तो सिद्ध गायक हैं ही । मुझे गीत गाने या आवश्यकता है ?" सहजभाव से ा हुए ललिता ने कहा ।

पिताजी के प्रयत्नों से गुरुमूर्तिजी के लिए रराष्ट्रीय केंद्र' में एक संगीत-कार्यक्रम का जन किया गया ।

जब तक मुहूर्त और सुअवसर न आये, तब ही चिंता और व्यग्रता । एक बार अवसर आये, फिर एक के बाद एक अवसर आते गे । है न बात सच ? गुरुमूर्तिजी का ा कार्यक्रम सुनने के लिए ऋषिकेश से ा भारत के एक स्वामीजी आये थे । वे की कला और विद्वता से इतने प्रभावित क उनसे संबंध जोड़ लिया । अपने आश्रम र्थना गीतों के लिए राग और लय मिलाकर सेट में रेकॉर्ड करके सौंप देने की प्रार्थना यह गुरुतर दायित्व का कार्य गुरुजी ने अत्यंत श्रद्धा भक्ति से किया । बस, भाग्य चमकने लगा । फिर एक समारोह में एक जाने-माने राजनीतिज्ञ के हाथों उस कैसेट का विमोचन किया गया । यश और धन का मार्ग एक साथ खुल गया ।

पहला कैसेट ही हजारों की संख्या में बिक गया । यह अपने आप में एक ऐतिहासिक घटना थी ।

शादी के अवसरों पर संगीत-कार्यक्रम के लिए इन्हें निमंत्रण दिये जाने लगे । साथ ही दूरदर्शन से भी निमंत्रण मिला । इस तरह बहुत छोटी-सी कालावधि में ही वे अत्यंत प्रसिद्ध हो गये ।

मेरी परीक्षाएं निकट आ रही थीं । इसलिए संगीत अभ्यास अस्थायी रूप से स्थगित किया गया ।

अपनी शादी का निमंत्रण देने के लिए मोतीबाग की अपनी एक सहेली के घर मुझे खुद जाना पड़ा । वापसी पर गुरुजी के घर पर भी गयी । देखा, वहां एक नये किरायेदार थे । उनसे पता चला कि गुरुमूर्तिजी मुनिरका में एक नये घर में चले गये हैं । उन्होंने मुझे पता भी दिया ।

मैंने बात वहीं नहीं छोड़ी ।

पता खोजकर मुनिरका पहुंची ।

गुरुमूर्तिजी की पत्नी से ही मिल पायी । उनके हाथों, गले और कानों पर सोने के आभूषण जाज्वल्यमान थे लेकिन मुंह की स्वाभाविक कांति और शोभा गायब ! उसकी जगह शोकमुद्रा और रुखापन स्पष्ट था । नयनों में एक तरह की घबराहट थी । बातचीत में भी वह आत्मीयता या सहजता नहीं थी । सहमते

हुए बातें कीं। गैस, स्टोव, टेबल फैन, टेलीविजन आदि सभी सुविधाएं वहां पर थीं। घर में नयी रौनक थी।

मन की बात जबान पर आयी। मैंने कहा, "लगता है, गुरुजी की उन्नति बिजली की तेज गति से हो चुकी है। मैं बहुत खुश हूं।"

उन्होंने दीर्घ श्वास छोड़ा। थोड़ी देर के बाद कहने लगीं, "साथ ही कुछ अवांछनीय आदतों के शिकार भी बने हुए हैं। कल शराब के नशे में घर आये, एकदम हलचल मचा दी। असह्य वेदना हुई। क्या से क्या हो गये हैं? कैसी दुर्गति! अपनी बेटी से यों मारपीट की कि कुछ कहते नहीं बनता है। पता नहीं कब और कहां जाकर यह सब समाप्त होगा। मैं बहुत तंग आ गयी हूं।"

"चिंता मत कीजिए। सब ठीक हो जाएगा।"

"खाक ठीक होगा! मुझे अब कोई आशा नहीं। मन किसी पर विश्वास नहीं करता! श्यामला! तुम्हारे पिताजी को इनके प्रति अत्यंत श्रद्धा भक्ति है। तभी तुम्हारी शादी के सिलसिले में रिसेपृशन में इन्हें गायन की प्रार्थना करने के लिए यहां तक आये। आज वह जो कुछ हैं, यश और कीर्ति— तुम्हारे पिताजी द्वारा दिखाये गये मार्ग के कारण ही हैं। उन्हीं के प्रोत्साहन और सिफारिश के कारण ये इतना नाम कमा सके। धन, मौका सबके पीछे उन्हीं की कृपा है। उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए, है कि नहीं? लेकिन तुम्हें सुनकर आश्चर्य होगा कि ये अपने अहं के कारण उन्हें भूल चुके हैं। उनके मुंह पर ही साफ इनकार कर दिया। कैसी धूर्तता? मुझे तो ऐसा हुआ कि धरती फट जाए और मैं वहीं समा जाऊं! छिः ऐसा भी कोई करता है? वे कितने बड़े व्यक्ति हैं; घर आकर इन्हें बुलाया! पर इनका यह दुर्व्यवहार! मैं कभी इन्हें क्षमा नहीं करूंगी। मैं हार गयी हूं। दिल टूट गया है। इन्हें क्या हो गया? क्यों मुझ पर ऐसा बीत रहा है?" कहते-कहते वे रो पड़ीं। गला रुंध गया।

पिताजी ने यह बात मुझे नहीं बतायी थी। जिस गुरुजी को महान संगीतज्ञ और विद्वान समझ रखा था, उन्हीं के हाथों उनकी वह छवि टूटे यह शायद पिताजी बर्दाश्त न कर सके। उन्हें भारी दुःख हुआ होगा और यह बात मन ही मन दबाकर चुप हो गये होंगे। मैंने यही सोचा।

मेरी शादी दिल्ली में ही संपन्न हुई। परंतु गुरुमूर्तिजी के घर से कोई नहीं आया। कभी-कभार जान-पहचान के या परिचित लोगों का संबंध वैसे ही बीच में रुक जाता है जैसे कि रेलगाड़ी में यात्रा के दौरान उत्पन्न होनेवाला स्नेह-संबंध। यह बात भी वैसे ही भुला दी गयी।

कभी फुरसत मिलने पर गाने का मन होता तो गुरुजी की याद आती। गाने लगती तो उनकी मधुर आवाज स्मरण हो आती। दिल दुखने लगता।

मां ने एक बार एक चिठ्ठी में उनके बारे में कुछ लिखा था। 'वे आजकल बड़े आदमी बन गये हैं। समाज में जाने-माने हो गये तो हमें पहचानते नहीं। शायद शर्म आती होगी! मधुरगीत के पांच-छह कैसेट, हिंदी भजन के दो कैसेट उनके निकल चुके हैं। सुनने में आया कि उनका 'रेट' भी, ट्यूशन के लिए, चार सौ

रुपये से कम नहीं है । एक बार, अभी हाल ही में, एक शादी के रिसेपृशन में मैं और तुम्हारे पिताजी दोनों गये । उनका संगीत-कार्यक्रम था । बड़े चाव के साथ बैठे रहे । रात के सात बज चुकने पर भी वे मंच पर नहीं आये । बड़ी देर से जब आये, नशे में लड़खड़ाते रहे । सारा शरीर कांप रहा था । हमें बहुत दुःख हुआ । हमने घर की राह ली । बाद में मालूम हुआ कि गुरुजी ने विद्वान के हाथ से वायलन उठा लिया था और उसे घुमाते हुए आक्रोश और अट्टहास के साथ खलबली मचा दी थी ।'

यश अपने आप में एक नशा है ।...उस पर शराब के नशे की क्या जरूरत है ?

कहीं पढ़े हुए ये वाक्य मुझे याद आये, 'जिंदगी में सफलता से मैं घबराता हूं, क्योंकि वह मुझे भी परिवर्तित कर देगी ।'

अंगरेजी के एक-दो साप्ताहिक, मासिक पत्रिकाओं में गुरुमूर्तिजी की विद्वता की आलोचना पढ़ने को मिली । साथ ही इतर समाचार भी ... ।

दो वर्षों के बाद छुट्टियों के दिन माता-पिता से मिलने पति और बच्चों के साथ मैं दिल्ली आयी ।

कनॉट प्लेस का चक्कर काटे बिना दिल्ली घूम आने का मजा कैसे ? हम सब एक दिन वहां गये । खरीद-फरोख्त के चक्कर में इधर-उधर बिखर गये ।

पुस्तक की एक दूकान के सामने 'वे' खड़े थे । सर के बाल सफेद; मुंह पर झुर्रियां; आंखें काली और अंदर धंसी हुई । और साथ ही कदम लाल !

एक क्षण के लिए दुविधा हुई, 'बोलूं या नहीं ?'

तुरंत...

"जी ! नमस्कार !"

"कौन ? पहचान न पाया ।"— खुरमुरी आवाज में प्रश्न किया । 'उनकी वह मधुर आवाज कहां चली गयी ?'

"आपकी शिष्या श्यामला ।"

"आहा ! ला मिनिस्ट्री के श्री रामस्वामीजी की बेटी ! माता-पिता कुशल तो हैं न ?" अप्रत्याशित, यह कुशल-क्षेम का प्रश्न मेरे लिए आश्चर्य की बात थी ।

"हां जी ! सब सकुशल हैं ।"

"तुम कहां रहती हो ?"

"जयपुर में ।"

मेरी नजर उनकी गंदी धोती, कुरते पर टिकी थी ।

"जी ! क्या आपकी तबीयत खराब है ?"

"नहीं ! तबीयत तो ठीक है । लेकिन मन टूट गया है ।"...हमें आगे उन्नति करनी है । बढ़ना है । लेकिन अहं को बढ़ने नहीं देना है ।' ललिता ने मुझे यही समझाने के लाख प्रयत्न किये । सब व्यर्थ । आखिर दम घुटकर रोगग्रस्त होकर वह चल बसी ! उसके भी पहले...प्यारी बेटी थी । एक दुर्घटना के कारण छह मास तक की खींचातानी रही...और फिर सब खतम । बस अब साथ में मांजी हैं । पगली-सी हैं । हमें सुखी रहने के लिए तो यश और धन चाहिए न ? लेकिन जब वे मिल जाते हैं तब चैन-सुख दूर चले जाते हैं । सुख-शांति के लिए लालायित होकर मन भटकने लगता है । लेकिन...नहीं... । मुझे कुछ भी समझ में नहीं आता । जब उस दिन की याद करता हूं,

जब सारे संसार को अपनी मुट्ठी में समझता रहा, बहुत ग्लानि होती है। क्या हो गया था मुझे। अहं ? लज्जित होता हूं कि क्या ऐसा मदोन्मत्त व घमंडी था ? बड़ी आत्मीयता और श्रद्धाभक्ति के साथ कत्तनुवारिकी गीत गाकर प्रसन्न होनेवाला 'गुरुमूर्ति' कभी का नष्ट हो चुका है। साथ ही और क्या-क्या नष्ट हो गये— यह हिसाब-किताब अभी पूरा न कर पाया हूं।

"संगीत-साम्राज्य के शासक सप्तस्वर हैं। आरोहण और अवरोहण में उन स्वरों को निर्दिष्ट स्थान पर ही ध्वनित होना है। अगर स्थानांतरण हो जाए और आरोहण के ऊपर अवरोहण के स्वर गाये जाएं तो असंगति है; अपस्वर हो जाएगा। है कि नहीं ? वैसे ही मानव को चाहिए कि वह उन्नति, अवनति में समरस भाव और एक मन के साथ समाज में व्यवहार करे। स्थानांतरित स्वर की भांति अपने जीवन के अपस्वर का कारण स्वयं मैं ही हूं। आजकल संगीत कार्यक्रम, ट्यूशन कुछ नहीं है। आखिरी कैसेट जो निकला, उसकी बिक्री भी संतोषजनक नहीं। अपनी तबाही का कारण मैं ही हूं ! सिर्फ मैं ! उत्तरोत्तर उन्नति करते जाते समय सदा ऊंचाई की ओर ही नहीं, नीचे भी झुककर देखना है। नहीं तो मेरी तरह पांव फिसलकर गर्त में...अधोगति की ओर...। पिताजी से कहना कि एक दिन उनसे मिलने आऊंगा।" और गुरुमूर्तिजी विदा लेकर चले गये।

पीछे से तभी मेरे पति इस ओर आ रहे थे। नजदीक आने पर पूछा, "कौन हैं ये ? जो अभी जा रहे हैं ?"

"टूटा हुआ एक स्वर है।"

मेरे पति को यह बात समझ में नहीं आयी होगी।

● अनुवाद :
डॉ. जयलक्ष्मी सुब्रह्मण्यम

फेफड़े के व्यायाम के लिए नया-यंत्र

सवाई मानसिंह अस्पताल (जयपुर) के डॉ. वीरेंद्र सिंह ने फेफड़ों के व्यायाम हेतु एक यंत्र तैयार किया है। इस यंत्र का निर्माण, प्राणायाम के सिद्धांतों के आधार पर किया गया है। इस विशेष यंत्र को 'पिंकसिटी लंग-एक्सरसाइजर' कहते हैं। यंत्र में सांस बाहर निकालने का समय सांस लेने के समय से ठीक दुगना होता है। इस यंत्र के प्रयोग से सांस के रोगियों को न केवल सांस लेने में आसानी होगी, बल्कि जिन्हें बलगम आदि निकालने में कष्ट होता है, उन्हें भी सुविधा मिलेगी।

इस उपयोगी-यंत्र के माध्यम से, सांस से संबंधित मांस-पेशियों की क्षमता बढ़ जाएगी। दमे की शिकायत वाले तथा धूम्रपान करनेवाले रोगियों के लिए यह यंत्र काफी उपयोगी है।

यंत्र को सुबह-शाम भोजन करने से पूर्व, दस-पंद्रह मिनट तक व्यायाम हेतु काम में लेना ही पर्याप्त होता है।

फिल्मों में देह प्रदर्शन

• विजय अग्रवाल

दुर्भाग्यवश भारतीय समाज में आज भी ऐसा कोई आंदोलन या ऐसी कोई चेतना दिखायी नहीं देती, जो नारी के प्रति समाज की इस भोगवादी मानसिकता को बदल सके । जो छोटे-मोटे नारी आंदोलन होते भी हैं, वे केवल नारी के दैहिक शोषण तथा दहेज के विरूद्ध आवाज उठाने तक सीमित हैं । इस तरह का कोई सकारात्मक प्रयास दिखायी नहीं देता जो नारी के प्रति पुरुष की उपयोगवादी मानसिकता का परिवर्तन ला सके तथा स्वयं में अपने प्रति यह चेतना जागृत कर सके कि उनके द्वारा किये गये इस देह प्रदर्शन से नारी की गरिमा का कितना अधिक ह्रास होता है । इस दृष्टि से ममता कुलकर्णी के विरोध में किये गये प्रदर्शन और ममता कुलकर्णी द्वारा मांगी गयी क्षमा को एक अच्छी शुरूआत कहा जा सकता है । जरूरत है कि नारी संगठन इस दिशा में सक्रिय पहल करते रहें ।

इतिहास के यदि छोटे-छोटे खंडों को छोड़ दें तो अधिकांश कालों में समाज ने नारी को एक शरीर के रूप में ही देखा है । समाज ने उसकी मुख्य उपयोगिता संतान उत्पन्न करने के रूप में स्वीकार की । चूंकि संतान की उत्पत्ति शरीर से ही होती है इसलिए समाज की मानसिकता का केंद्र बिंदु उसका शरीर बन गया ।

भोग-विलास का उपकरण

सामंतवादी समाज में भी उसकी स्थिति कोई बेहतर नहीं रही । इतना जरूर था कि उसके साथ नृत्य और गायन के गुण जोड़ दिये जाने के कारण उसे थोड़ी प्रशंसा प्राप्त हुई । लेकिन मुख्यतः वह पुरुषों के भोग-विलास के एक उपकरण के रूप में ही देखी गयी ।

इसीलिए समय-समय पर कुछ चिंतकों और समाज सुधारकों ने नारी की गरिमा को पुनर्स्थापित करने की दृष्टि से अपने-अपने स्तर पर आवाज उठायी । चूंकि समाज मूलतः पुरुष शासित था, उत्पादन के साधनों पर उसका

नियंत्रण था इसलिए नारी को वह सम्मानजनक स्थान नहीं मिल सका । जबकि इसके विपरीत जहां मातृ-सत्तात्मक पारिवारिक संगठन हैं, वहां नारी को काफी ऊंचा स्थान प्राप्त है ।

बाद में जब मशीन का युग आया, तब उसने व्यक्ति की उत्पादक क्षमता को बढ़ाया और उसके उपयोग के लिए अनेक नयी-नयी वस्तुएं पैदा करके जीवन दृष्टि को भौतिकवादी बनाया । वैसे ही नारी भी एक भोग की वस्तु में शामिल हो गयी । लेकिन इस उपभोगवादी व्यवस्था की एक विशेषता यह भी रही कि नारी स्वयं भी उत्पादन के कार्यों में सक्रिय होने लगी । इसके फलस्वरूप उसमें आर्थिक आत्म-निर्भरता आयी । इससे उसका आत्म-विश्वास बढ़ा और वह स्वतंत्रता के लिए धीरे-धीरे आवाज उठाने लगी । उसकी इस उठती हुई आवाज का असर भी हुआ । पूरे विश्व में 'विमन लिब्रेशन' (नारी स्वतंत्रता) का एक आंदोलन-सा उठ खड़ा हुआ । यह मांग यहां तक बढ़ी कि हमने अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष भी मनाया ।

आज विश्व में, यहां तक कि भारत में भी नारी अधिकारों की रक्षा के लिए अनेक कानून और नियम हैं । महिलाएं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, बल्कि यहां तक कि अपने लिए निषेध किये गये क्षेत्र में भी सक्रिय हैं । ऐसे इसलामिक देशों तक में नारियां प्रधानमंत्री बनी हैं, जहां उनका परदे से मुंह निकालना तक मुश्किल था । पाकिस्तान की बेनजीर भुट्टो तथा तुर्की की वर्तमान प्रधानमंत्री ट्रांससुल्वर इसके प्रमाण हैं ।

क्या नारी के प्रति धारणा बदली ?

लेकिन इन सबके बावजूद क्या यह कहा जा



सकता है कि नारी के प्रति समाज की धारणा बदली है ? क्या पुरुष प्रधान समाज ने नारी को समानता के स्तर पर स्वीकार किया है ? दुर्भाग्यवश इन दोनों का उत्तर नकारात्मक है ।

यह सच है कि जैसे-जैसे नारी में आर्थिक निर्भरता आएगी, वैसे-वैसे वह पुरुष के आश्रय से मुक्त होने का साहस जुटा सकेगी । लेकिन प्रश्न यह है कि क्या पुरुष के आश्रय से मुक्त हो जाना ही समाज में उसकी छवि को निखारने के लिए पर्याप्त होगा या कि उसे इससे अधिक भी कुछ करना होगा ।

ऐसा लगता है कि नारी का पुरुष के आश्रय से मुक्त होना उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितना कि उसका अपने आप से मुक्त होना महत्त्वपूर्ण है । नारी को पुरुष की, और पुरुष को नारी की समान रूप से आवश्यकता होती है । इसके बावजूद यदि पुरुष का दृष्टिकोण उसके प्रति



बदला हुआ है तो उसका बहुत बड़ा कारण यह है कि ऊपर से सब कुछ बदल जाने के बावजूद नारी आज भी अपने आपको अंदर से नहीं बदल पा रही है । उसका सबसे बड़ा संकट यह है कि वह स्वयं को देह के भूगोल के घेरे से मुक्त नहीं कर पा रही है और उसे ऐसा न करने देने के लिए हमारे जन संचार माध्यम काफी अधिक जिम्मेदार हैं ।

नग्न चित्रों का प्रदर्शन

इसके लिए हाल की ही तीन घटनाओं को लिया जा सकता है । फिल्मी पत्रिका 'स्टार डस्ट' के मुखपृष्ठ पर ममता कुलकर्णी का अर्धनग्न चित्र प्रकाशित हुआ है । इसे एक सुखद स्थिति ही कहा जाएगा कि इस चित्र को लेकर 'फिल्म मेकर कम्बाईन' तथा 'सिने आर्टिस्ट एसोसिएशन' ने इसका विरोध किया । विरोध यहां तक बढ़ा कि अंततः ममता कुलकर्णी को माफी मांगनी पड़ी ।

ठीक इसके कुछ दिन पूर्व फिल्म 'खलनायक' के गीत 'चोली के पीछे क्या है' को लेकर विवाद उठा था । हालांकि न्यायालय का निर्णय यही रहा कि इस फिल्म में कुछ भी अश्लील नहीं है । लेकिन इसके बावजूद बाजार में 'फुल साउंड' में बजते हुए इस गीत के बोल ने नारी की पलकों को शरम से झुकाया है और पुरुष की निगाह को उनके शरीर के एक निश्चित भाग पर केंद्रित किया है । 'स्टार डस्ट' के कुछ माह पूर्व के अंकों में पूजा भट्ट तथा शीबा के अर्धनग्न (?) चित्र प्रकाशित हुए थे । पूजा भट्ट का वह चित्र नग्न शरीर पर पेंटिंग किया हुआ चित्र था । ठीक इसी प्रकार पिछले वर्ष 'कामसूत्र' के विज्ञापन के लिए पूजा बेदी ने जो

'पोज' दिये थे, उससे समाज में एक खलबली-सी मची थी । इसके अनेक नग्न चित्र 'डेबोनायर' के अंक में प्रकाशित हुए थे ।

अधिक से अधिक नंगा भाग परोसना

ठीक यही स्थिति फिल्मों की भी होती जा रही है । हालांकि इससे पहले की फिल्मों में भी यथा-संभव कोशिश यही रही कि नायिका, खलनायिका और नृत्यांगनाओं के शरीर का अधिक से अधिक भाग दर्शकों के सामने परोसा जाए । इसलिए फिल्म में जानबूझकर ऐसे दृश्यों की कल्पना की जाती थी, ताकि वह दृश्य अनावश्यक भी न लगे और दर्शकों की आंखों की भूख भी मिट जाए । राजकपूर ने फिल्म 'आवारा' में नर्गिस को स्वीमिंग सूट पहनाकर झील में तैराया था और उन्होंने अपनी यह परंपरा अपनी अंतिम फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' तक में कायम रखी । घुटनों तक साड़ी को उठाने तथा बरसात में नृत्य कराने-जैसे अवसरों की तलाश इसी दृष्टि से की जाती है । फिल्म 'खलनायिका' में अनु अग्रवाल ने बच्चे को स्तनपान कराया है । किमी काटकर, शीबा तथा वर्षा उषगांवकर-जैसी अभिनेत्रियां देह दर्शन में ही अपनी सफलता के सूत्र तलाश रही हैं । इस बारे में जितनी भी अभिनेत्रियों से पूछा गया है सबका यही कहना है कि यदि कहानी की मांग हुई तो उन्हें शरीर प्रदर्शन में कोई आपत्ति नहीं है ।

दूरदर्शन पर दिखाये जाने वाले विज्ञापन नारी देह को एक कोमल और सुगंधित त्वचा के रूप में प्रस्तुत करते हैं । चाहे लिरिल साबुन का विज्ञापन हो या काक्रोच मारने की दवा का, हर स्थान पर सजी-धजी नारी दिखायी पड़ती है ।



अखबारों में भी नारी से संबंधित अधिकांश समाचार प्रेमी के साथ भागने की, बलात्कार होने की तथा प्रेमी के साथ मिलकर पति की हत्या करने-जैसे नकारात्मक सूचनाओं से ही संबंधित होते हैं । फिल्मी पत्रिका तो विशेषकर नायक और नायिकाओं के रोमांस संबंधों का ही गुणगान करते रहते हैं ।

यहां तक कि सामाजिक जीवन में भी नारी की उपस्थिति एक देह की उपस्थिति बना दी गयी है । बड़े-बड़े होटलों में रिसेप्शनिस्ट के रूप में सजी-धजी लड़कियां ही होती हैं । आभूषणों की दुकानों पर सजी-धजी लड़कियां ही विक्रेता की भूमिका निभाती हैं । व्यापार मेलों में करीब-करीब हर दुकान पर लोगों को आकर्षित करने के लिए कोई न कोई लड़की होती है । यहां तक कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उद्घोषक के रूप में लड़कियों को ही प्रधानता

दी जाती है । आपत्ति इस बात से नहीं है कि ऐसा क्यों किया जाता है बल्कि, इस बात पर है कि ऐसा किये जाने के पीछे कौन-सी मानसिकता काम करती है ?

भोगवादी मानसिकता में बदलाव !

दुर्भाग्यवश भारतीय समाज में आज भी ऐसा कोई आंदोलन या कि ऐसी कोई चेतना दिखायी नहीं देती, जो नारी के प्रति समाज की इस भोगवादी मानसिकता को बदल सके । जो छोटे-मोटे नारी आंदोलन होते भी हैं, वे केवल नारी के दैहिक शोषण तथा दहेज के विरुद्ध आवाज उठाने तक सीमित हैं । इस तरह का कोई सकारात्मक प्रयास दिखायी नहीं देता जो नारी के प्रति पुरुष की उपयोगवादी मानसिकता का परिवर्तन ला सके तथा स्वयं में अपने प्रति यह चेतना जागृत कर सके कि उनके द्वारा किये गये इस देह प्रदर्शन से नारी की गरिमा का कितना अधिक ह्रास होता है । इस दृष्टि से ममता कुलकर्णी के विरोध में किये गये प्रदर्शन और ममता कुलकर्णी द्वारा मांगी गयी क्षमा को एक अच्छी शुरूआत कहा जा सकता है । जरूरत है कि नारी संगठन इस दिशा में सक्रिय पहल करते रहें ।

**—टाइप-५, म. नं. २४, शड्यूल 'ए',
राष्ट्रपति एस्टेट,
नयी दिल्ली-११०००४**

यूरोप के इतिहास में एक व्यक्ति ऐसा भी है, जो अपने जमाने में जितना अपनी खेल-प्रतिभा के लिए मशहूर हुआ, उतना ही अपने प्रणय-संबंधों के कारण । कहते हैं, उसके खूबसूरत चेहरे में कुछ ऐसी बात थी कि पूरे यूरोप की सुंदरियां उससे शादी करना चाहती थीं । यह भी कहा जाता है कि जब वह गली से गुजर रहा होता, तो लोग अपने खिड़की-दरवाजे बंद कर लेते । उन्हें डर रहता कि उनकी जवान लड़कियां उस खिलाड़ी के कदमों में जा गिरेंगी ।

यह खूबसूरत प्रेमी तलवारबाजी में माहिर था । घूंसेबाजी में भी उसका जवाब नहीं था । वह क्रिकेट भी खेलता था और बेहतरीन घुड़सवार भी था । पिस्तौल से निशानेबाजी करते समय वह बड़े-बड़े निशानेबाजों के छक्के छुड़ा देता था । और वह बहुत अच्छा तैराक भी था ।

ताज्जुब की बात तो यह थी कि उसका एक पैर विकृत था । क्रिकेट के खेल के दिनों के बाद यह खूबसूरत इनसान पूरे यूरोप में घूमता रहा और सैनिक बन गया । उसने अपनी बहन से ही प्रणय किया और पूरी दुनिया को जबरदस्त झटका दिया । वह इनसानी खोपड़ियों में शराब पीता था, द्वंद्व-युद्ध करता था, तलवारबाजी के मुकाबलों में हिस्सा लेता था । पिस्तौल को अपने तकिये के नीचे रखकर सोता था—और वह मानता था कि ३६ के अंक ने उसके वंश को ग्रस रखा है । उसके पिता की मृत्यु ३६ वर्ष की उम्र में ही हुई थी, वह खुद भी ३६ वर्ष की उम्र में ही मरा और उसकी बेटी भी ३६ की होकर मरी ।

यह गजब का खिलाड़ी यूनान पहुंचा । वहां वह यूनान के स्वतंत्रता-संग्राम में लड़ा और राष्ट्रीय नायक बन गया ।

इस सबके बावजूद वह अगर याद किया जाता है तो अपनी उच्चकोटि की कविताओं के कारण । यह खिलाड़ी था अंगरेजी भाषा का प्रख्यात रोमांटिक कवि लॉर्ड बायरन ।

हाल ही में कजाकिस्तान के एक प्रमुख कवि अमानजुल शामकेनाव कादम्बिनी कार्यालय आये थे । हमारी उनसे साहित्य, संस्कृति, राजनीति और उनके अपने साहित्य के बारे में विशद चर्चा हुई ।

देश होने के कारण कजाकिस्तान को स्वयं अपना विकास करने के अवसर मिले हैं । आज हमें हर बात की आजादी है । पहले हर बात के लिए हमें मास्को पर निर्भर रहना पड़ता था । हम हमेशा एक तरह की घुटन अनुभव करते थे ।

प्रेमिकाएं तो भूल जाने के लिए होती हैं

● संवाददाता द्वारा

शामकेनाव की चालीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । इनमें काव्य संग्रह, नाटक-संग्रह और कहानी-संग्रह हैं । उनकी अनेक पुस्तकों का रूसी के साथ-साथ पूर्व सोवियत संघ की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है ।

शामकेनाव को भारत से बेहद प्यार है और वह कजाक -भारत मित्रता संघ के सदस्य भी हैं । भारत के संबंध में उन्होंने अनेक कविताएं लिखी हैं । हमने शामकेनाव से पूछा कि सोवियत संघ के विघटन के बाद वह कैसा अनुभव कर रहे हैं ? उनका उत्तर था,

विघटन के बाद

सोवियत संघ के विघटन के बाद दो तरह की स्थितियां उत्पन्न हुई हैं । एक स्थिति सकारात्मक है, वह यह कि अब नव-स्वाधीन स्वाधीनता के बाद हमें उससे मुक्ति मिली । हमारा देश हर तरह से समृद्ध है । लोहा, खनिज, अनाज तथा अन्य मामलों में भी हम अब पूरी तरह आजाद हैं । अब हम अपना सर्वोत्मुखी विकास कर सकते हैं । पहले कजाकिस्तान से उसका सारा कच्चा माल लील लिया जाता था । यहां कोई कारखाना नहीं लगाया गया था । अतः हम एक तरह से परावलंबन का जीवन जी रहे थे । अब स्वतंत्र हो जाने के बाद कजाकिस्तान को दुनिया के सभी देशों से प्रत्यक्ष संपर्क बनाने का अवसर मिला है । भारत के साथ हमारे संबंध बहुत प्राचीन हैं । हमें विश्वास है कि स्वाधीन हो जाने के बाद कजाकिस्तान और भारत के संबंध और प्रगाढ़ होंगे ।

जहां तक लेखकों की बात है, पूर्व



अमानजुल शामकेनाव : कजाकिस्तान के लोकप्रिय कवि एवं नाटककार । शामकेनाव को भारत से बेहद प्यार है और उनका यह प्रेम अनेक कविताओं में भली-भांति व्यक्त हुआ है । भारत और नवगठित कजाकिस्तान के मध्य प्रगाढ़ मैत्री के लिए वह निरंतर प्रयत्नशील हैं ।

सोवियत-संघ में उनकी हालत अच्छी नहीं थी । उन्हें अपनी रचनाओं में कम्युनिस्ट पार्टी के प्रशासकों की प्रशंसा करनी ही पड़ती थी । साथ ही हमें मानवता के बारे में भी लिखना ही पड़ता था । यों मानवता के बारे में हम आज भी लिख रहे हैं लेकिन वह स्वयं स्फूर्त है । मैं मानता हूं कि लेखक किसी भी देश का क्यों न हो, वह मानवता का, आध्यात्मिकता का इंजीनियर होता है । आज हम लोग मानव-जीवन के बारे में सभी पक्षों को छूते हुए लिख रहे हैं । अब हम जैसा सोचते हैं, अनुभव करते हैं वैसा ही लिखते हैं । यह तो सकारात्मक पक्ष हुआ ।

आर्थिक कठिनाइयों का सामना

सोवियत संघ के विघटन के बाद कुछ नकारात्मक स्थितियां भी सामने आयी हैं । इनमें से पहली है— आर्थिक । हमें बेहद आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है । राष्ट्रीय स्तर पर हमारे आर्थिक संबंध टूट गये हैं । मुद्रा स्फीति दिनोंदिन बढ़ रही है । हाल यह है कि एक डॉलर के लिए अब हमें तीन हजार कजाक-रूबल देने पड़ते हैं । यद्यपि मुद्रास्फीति के अनुसार वेतन बढ़ रहे हैं । पर वे निष्प्रभावी सिद्ध हो रहे हैं । कजाकिस्तान में आज औसत वेतन ३० से ७० हजार रूबल है । इन स्थितियों में यदि कोई मजे में है तो व्यवसायी । वे मनमाना पैसा कमा रहे हैं ।

सोवियत संघ के विघटन का एक और बुरा असर हुआ है, और वह है— पाश्चात्य संस्कृति का हमला । शुरू-शुरू में तो पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव अच्छा लगा लेकिन अब लगता है कि यह संस्कृति हमारे समूचे युवा-वर्ग को विकृत कर रही है । हमारी शिक्षा पर, देशवासियों के चरित्र पर बुरा असर पड़ रहा है । पोरनोग्राफी, सेक्स प्रधान अमरीकी फिल्में युवा-वर्ग को अच्छी लग रही हैं। इसके फलस्वरूप उनका पतन हो रहा है और उन पर नियंत्रण रखना कठिन होता जा रहा है ।

हमने शामकेनाव से कजाकिस्तान के नये

पहले कजाकिस्तान से उसका सारा कच्चा माल लील लिया जाता था । यहां कोई कारखाना नहीं लगाया गया था । अतः हम एक तरह से परावलंबन का जीवन जी रहे थे । अब स्वतंत्र हो जाने के बाद कजाकिस्तान को दुनिया के सभी देशों से प्रत्यक्ष संपर्क बनाने का अवसर मिला है ।

लेखकों और पुराने लेखकों के बीच अंतर के संबंध में प्रश्न किया ।

उन्होंने कहा कि पुराने लेखकों की जीवन के प्रति मान्यताएं तो वही हैं लेकिन अब रचनाओं की थीम और अभिव्यक्ति की शैलियां बदल गयी हैं । उन्होंने बताया कि कजाकिस्तान के प्रमुख लेखकों में अनवर अली, अजाम, नईम, अतीश, केकेन बाई आदि प्रसिद्ध लेखक हैं । इनमें से अनीश, केकेन बाई राष्ट्रपति के परामर्शदाता भी हैं ।

अपने जीवन की चर्चा करते हुए शामकेनाव ने हमें बताया कि जब वह दस वर्ष के थे, तब से ही उन्होंने लिखना शुरू कर दिया था । प्रारंभ में वह कविताएं लिखा करते थे । व्यस्क होने पर उन्होंने साहित्य को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाया । वे कजाक रेडियो पर साहित्य और नाट्य विभाग के प्रधान संपादक थे । संस्कृति मंत्रालय में भी उन्होंने महत्त्वपूर्ण कार्य किया । वे कजाकिस्तान लेखक संगठन से भी वर्षों संबद्ध रहे और आज वे उसके एक निदेशक भी हैं ।

शामकेनाव ने कहा कि मैं प्रेम के बारे में ही लिखता हूं । हमने विनोद में उनसे पूछा कि उनकी कितनी प्रेमिकाएं हैं ?

उन्होंने कहा कि प्रेमिकाएं तो भूल जाने के लिए होती हैं । जीवन में कितनी प्रेमिकाएं रहीं, यह याद नहीं ।

हमने अंत में उनसे पूछा कि क्या आप ईश्वर में विश्वास रखते हैं, उन्होंने हंसकर कहा, ''जब कम्युनिस्ट पार्टी में था, तब ईश्वर पर विश्वास नहीं था और अब उस पर विश्वास करना पड़ रहा है ।'' ●

विलक्षण प्रेम जोड़े

थाइलैंड में ११५ वर्ष का एक बूढ़ा व्यक्ति भले ही कब्र में पांव लटकाये हो, लेकिन वह एक बार फिर विवाह करने का सपना संजोये हुए है । प्राम केइयूनगाम नाम के इस सज्जन ने १०६ वर्षीया बाई औनेका को अपनी दुल्हन बनाने की योजना बनायी है ।

११५ वर्षीय प्राम केइयूनगाम एक स्वास्थ्य-प्रतियोगिता में १०६ वर्षीया बाई औनेका से मिला और उनमें प्रेम हो गया । इस स्वास्थ्य प्रतियोगिता में पहले एवं दूसरे स्थान पर यह दोनों ही रहे और प्राम को पुरस्कार स्वरूप २००० बाहट तथा औनेका को १,५०० बाहट मिले ।

प्राम ने इससे पूर्व २० वर्ष और ४० वर्ष की उम्र में क्रमशः दो विवाह किये थे । बाद में अपने बच्चे की ओर से आपत्ति होने की आशंका से अन्य विवाह नहीं किया, किंतु बैंकाक में आयोजित एक प्रतियोगिता में बाई औनेका से मिलने के बाद उसके दिल में प्यार की नयी कोपलें फूटीं और उसने शादी करने का फैसला कर डाला । उसे उम्मीद है कि इससे बच्चों को आपत्ति न होगी ।

थाइलैंड के इस विलक्षण प्रेम जोड़े की मुराद शीघ्र पूरी हो, यही कामना है, क्योंकि इस विवाह के बाद इन विलक्षण सर्वाधिक बुजुर्ग प्रेम जोड़े को विश्व के सबसे बूढ़े वर-वधू होने का खिताब मिलेगा ।

—रमेश कुमार

अमरीका में आजकल मुद्दा-ए-बहस यह है कि क्या परंपराओं के नाम पर यातनाएं दिया जाना जायज है ? इस बहस के मूल में मुद्दा है— महिलाओं का खतना । महिलाओं के खतने का रिवाज अनेक देशों विशेषकर तीसरी दुनिया के देशों के मुसलमानों में एक सामाजिक मान्यता प्राप्त प्रथा है और इस प्रथा का प्रचलन अफरीका के मुसलिम बहुल देशों में खूब है और यह मध्यकालीन बर्बर प्रथा आज भी जारी है ।

यातना ही नहीं अमानवीय कृत्य

परंपरागत चली आ रही यह प्रथा किसी भी अबोध बच्ची को दी जानेवाली निर्मम यातना है । यह निर्मम यातना ही नहीं बल्कि एक



नौ वर्षीय लड़की जिसका हाल ही में खतना किया गया

महिलाओं का खतना बहस अमरीका में

• प्रणय पंडित

महिलाओं का खतना एक बर्बर यातनादायी प्रथा है, जो आज के किसी सभ्य समाज में जारी नहीं रखी जा सकती, लेकिन इसे मिटाया कैसे जाए ? केन्या सरकार ने सन १९९० में इस पर प्रतिबंध लगा दिया है, लेकिन फिर भी जारी है यह प्रथा...

अमानवीय कृत्य है जिसमें बच्चियों को शारीरिक और मानसिक यातना ही नहीं दी जाती बल्कि, उसके नारी की तरह जीने के मौलिक अधिकार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का भी खुलेआम हनन किया जाता है।

प्रथा खतने की

आखिर, यह प्रथा है क्या ? जिस तरह मुसलमानों में अबोध लड़कों के शिशन के ऊपरीभाग की चमड़ी को काटकर हटा दिया जाता है, उसी प्रकार बालिकाओं की भगनासा को काटकर फैंक दिया जाता है हालांकि, कष्टकर तो यह लड़कों के लिए भी होता है, लेकिन लड़कियों के लिए विशेष रूप से कष्टदायी होता है। होता इसमें यह है कि लड़की के परिपक्व होने से पहले ही, और जितना जल्दी संभव हो सके, उतनी ही कम उम्र में लड़की की भगनासा के ऊपरी चोंचवाले भाग को काट दिया जाता है या पूरे नासिका भाग को निकाल दिया जाता है। शरीर-विज्ञान की शब्दावली में कहें तो क्लिटोरिस और लाबिया मिज़ोरा को निकाल दिया जाता है। लाबिया मिजोरा की बगलों को खुरचकर उन्हें दोनों तरफ से उठाकर ऊपर से सिल दिया जाता है। खतने की यह प्रक्रिया अकुशल पर परंपरागत दाइयों के समान महिलाओं द्वारा की जाती है। इस प्रक्रिया में न तो लड़की को कोई निश्चेत औषधि दी जाती है, न कोई ऐंटीसैप्टिक। हां, लड़की को जबरन शराब जरूर पिला दी जाती है और सिलाई व टांकों पर शराब छिड़क दी जाती है या स्थानीय जड़ी-बूटियों को लगा दिया जाता है। लेकिन इस सबके बाद भी इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप मरनेवाली लड़कियों की संख्या का प्रतिशत भी कम नहीं है। अधिकांश लड़कियां खून के अधिक बह जाने से तथा सड़ान व गलाव से यानी सैप्टिक होने के कारण मर जाती हैं, साथ ही जीवनभर स्त्री-रोगों की शिकार रहती हैं।

मतलब क्या है खतने का

दरअसल, यह प्रथा पुरुष प्रधान समाज की उस दूषित मनोवृत्ति की इजाद है कि नारी केवल उसकी एकमात्र एक पुरुष ही भोग्या बनकर रहे। पुरुष ही आनंद का भोक्ता रहे, औरत नहीं। इस प्रथा की ईजाद कभी मिस्र में हुई थी। मिस्रवासियों ने इस प्रथा का ईजाद इसलिए किया कि विवाह के समय तक लड़की की योनि अक्षत बनी रहे इसी के लिए उसने यौन उत्तेजना पैदा करनेवाले भाग को काट फैंकने का भी तरीका अपना लिया। पुरुष प्रधान समाज ने इस प्रथा को महिलाओं पर बरबस लाद दिया। तब से यह प्रथा मिस्र से लगे मध्य-पूर्व के देश, अफरीका तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में बराबर जारी है। अनुमान है आज ८५० से १,१४० लाख महिलाओं का खतना हुआ हुआ है।

चिंता अमरीका में

खतना तीसरी दुनिया के देशों के समाज-चेता व्यक्तियों के लिए चिंता का विषय है, लेकिन पिछले दिनों से अमरीका में भी चिंता का विषय बन गया है और वह इसलिए कि इन देशों के अप्रवासी लोग बड़ी संख्या में अमरीका में आ बसे हैं और वे वहां भी इस प्रथा को जारी रखे हुए हैं जिसे अमरीकी समाज और कानून मान्यता नहीं दे सकता, लेकिन फिर भी यह प्रथा अमरीका में जारी है और गैर कानूनी भी

नहीं है । इसलिए गत अक्तूबर में अमरीकी सीनेट में एक विधेयक पेश किया गया है इस प्रथा पर प्रतिबंध लगाने के लिए । बस, इसी पर राष्ट्रव्यापी बहस छिड़ गयी है ।

खतने की प्रथा को बहस का मुद्दा बनाने का श्रेय साहित्य के एक विशिष्ट पुरस्कार पुलित्जर प्राइज से सम्मानित उपन्यासकार सुश्री एलिस वाकर और न्यूयार्क टाइम्स की स्तंभकार सुश्री ए. एम. रोसेंथल को जाता है । उनका कहना है कि औरत सैक्स के मामले में पुरुष के समान है । अब औरत को खतने की बर्बर प्रथा का



सुश्री एलिस वाकर : खतने के खिलाफ जेहाद

गुलाम बनाये नहीं रखा जा सकता । इसलिए इस प्रथा पर रोक लगायी जानी चाहिए । विश्व स्तर पर यह जहां मानवाधिकार का मामला है, वहीं अमरीका के लिए और भी महत्त्व का हो जाता है क्योंकि, अमरीका का संविधान व्यक्ति की स्वतंत्रता की सर्वोपरि गारंटी देता है ।

सुश्री वाकर ने यह भी मांग की है कि जिन देशों में यह प्रथा है उन देशों पर आर्थिक प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए, ताकि लड़कियों को जिंदगीभर की पीड़ा से छुटकारा तथा यौन सुख का समानाधिकार मिल सके ।

विरोध में उठे स्वर

जहां खतने पर प्रतिबंध लगाने की मुहिम चल रही है, वहीं उसके समर्थन में भी स्वर उठने लगे हैं । दो अफरीकी महिलाओं— अबे और एलिस ने इसका पक्ष लेते हुए कहा है कि अमरीका एक बहुजातीय और संस्कृतियों का देश है अतः उसे अपने से इतर जातियों की प्रथाओं के प्रति सहानुभूतिपूर्वक विचार करना चाहिए और पाश्चात्य सभ्यताओं को उन रीति-रिवाजों, प्रथाओं व परंपराओं के प्रति उदार होना चाहिए जो उनकी निजी सभ्यता से भिन्न हैं । उन्होंने हालांकि इस प्रथा को बिलकुल खत्म करने के लिए नहीं कहा है, फिर भी इसे धीरे-धीरे खत्म करने और खतने की प्रक्रिया को वैज्ञानिक बनाने के लिए भी कहा है । इतना ही नहीं ये दोनों महिलाएं सुश्री एलिस पर छींटाकशी करने पर भी उतर आयी हैं ।

सुश्री एलिस के प्रयास से समाज में चेतना आयी है और आम जनता का ध्यान इधर गया है । इसकी गूंज अफरीकी देशों में भी गयी है । केन्या के शिक्षित वर्ग ने भी सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में इस मुद्दे पर बहस छेड़ी हुई है । हालांकि, केन्या ने सन १९९० में इस पर प्रतिबंध लगा दिया है । फिर भी यह प्रथा जारी है ।

अब देखना यह है कि यह बहस क्या अंजाम लेती है । ●

संस्मरणात्मक युद्ध-कथा

दो-दो ब्रिटिश फील्ड-मार्शलों को धूल चटानेवाला भारतीय

● धर्मेन्द्र गौड़

वे थे इंडियन सिविल सर्विस के नौजवान अफसर शौत्तेंद्रो कुमार घोष, जिनकी नियुक्ति कलकत्ता में बंगाल सरकार के अधीन संचार और निर्माण विभाग के सचिव के रूप में हुई थी ! यह उस समय की बात है जब सौ दिनों के अंदर-अंदर शाही जापानी झंडे पर्ल हारबर से बरमा तक लहराने लगे थे । और, अब उनका इरादा था भारत पर कब्जा करने का ।

अनोखी सूझबूझ के विद्वान और विनम्र होने के अलावा घोष खेलकूद के बड़े प्रेमी थे । सन १९२२ में ऑक्सफोर्ड में आई. सी. एस. की ट्रेनिंग हासिल करते हुए वे पहलवानी, मुक्केबाजी, फुटबाल और रग्बी में माहिर हो गये थे । वे लंदन में भारतीय जीमखाना के प्रतिनिधि थे । सन १९२२ से १९३३ तक शासन-व्यवस्था का काम उन्होंने बड़े ही अच्छे ढंग से किया । जहां जाते, वाहवाही लूटते । तभी उन्हें बड़े जानवरों के शिकार का शौक चर्राया और वे शेर, चीता, हाथी, जंगली भालू का शिकार करने लगे । इस प्रकार वे बंगाल के, विशेष तौर पर संथाल के, चप्पे-चप्पे से वाकिफ हो गये, जहां उनकी नियुक्ति रही ।

घोष की बढ़ती हुई शौहरत और क्षमता को देखते हुए उन्हें पूर्व और पश्चिम बंगाल के समस्याओंवाले जिलों में ही तैनात किया जाता रहा, जिनमें खास थे जरग्राम, मैमनसिंह, मिदनापुर और जैसोर । फिर बाद में तो उन्हें चटगांव तक की छलांग लगानी पड़ी । सन १९३२-३४ में घोष पहले हिंदुस्तानी अफसर थे जिन्हें चटगांव—जैसे पहाड़ी इलाके में डिप्टी कमिश्नर की हैसियत से नियुक्त किया गया और वह भी एक अंगरेज अफसर को हटाकर जिसने आदिवासियों के खिलाफ जिहाद बोल रखी थी ।

अंगरेज अफसरों से दोस्ती

सन १९३० के बाद घोष की आत्मीयता

तीन अंगरेज अफसरों से बेहद बढ़ गयी थी, जो १९४० में युद्ध के दौरान उनके बहुत काम आयी । वे थे जनरल लिंडसे, कर्नल ई. ग्रेगरी और आर. बी. लैगडन । तीन-तीन अंगरेजों से एक साथ दांत-काटी रोटी-जैसी दोस्ती, और वह भारत, बरमा, श्रीलंका और ब्रिटिश मलाया की मुकम्मिल राजनीतिक और खुफिया गतिविधियों से अवगत कराते रहना !

विषधरों से लगाव

उन दिनों बंगाल में आतंकवादियों से सबसे

पूर्वी क्षेत्र में कार्यरत एक ऐसे इंडियन सिविल सर्विस अफसर की दास्तान है यह, जिसकी अनोखी सूझबूझ से अराकान मोरचे पर अंगरेजों को अप्रत्याशित सफलता मिली, वरना सुंदर वन के रास्ते भारत पर कब्जा करने में जापानियों को देर ही कितनी लगती । जिस काम में अंगरेजों के दो-दो मशहूर फील्ड मार्शल (वेवल और अलेक्जेंडर) सफल न हो सके, उस सफलता का सेहरा बंधा इस आई. सी. एस. अफसर के सिर पर । लेकिन, इस अहसान का बदला दिया गया उस अफसर पर झूठे-सच्चे इलजाम थोपकर, उल्टी-सीधी तोहमत जड़कर, भरी अदालत में रुसवा करके ।

भी एक हिंदुस्तानी की ! ऐसी मिसाल बहुत कम देखने-सुनने को मिलती है ।

सन १९३५-३६ में कर्नल ई. ग्रेगरी रंगपुर (वर्तमान बंगला देश) में घोष के अधीन अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक थे । उनकी यह नियुक्ति हुई थी ब्रिटिश आर्मी इंटेलिजेंस से अवकाश ग्रहण करने के बाद । कारण था बंगाल के चप्पे-चप्पे से उनकी अच्छी जानकारी । लगातार ३८ वर्षों तक ब्रिटिश इंडिया का एक प्रांत रहकर बरमा भी अलग देश बनने का ख्वाब देख रहा था । बंगाल और बरमा में ग्रेगरी के अच्छे मुखबिर थे, जो उन्हें ताजी घटनाओं की जानकारी देते रहते थे । इस मदद से उन्होंने इंपीरियल इंटेलिजेंस ब्यूरो (तत्कालीन केंद्रीय गुप्तचर विभाग) और बंगाल पुलिस, दोनों को ही महत्त्वपूर्ण योगदान दिया । उन दिनों इंपीरियल इंटेलिजेंस ब्यूरो, नयी दिल्ली, के ही जिम्मे था, ब्रिटिश सरकार को ज्यादा प्रभावित जिला था रंगपुर । इन्हें काबू में लाने की गरज से घोष और ग्रेगरी के बीच और भी निकटता आयी । अच्छे शिकारी होने के

शोत्तेन्द्रो कुमार घोष



अलावा दोनों ही जंगली जीव-जंतुओं के बेहतरीन जानकार थे। शेर, चीता, हाथी आदि बड़े जानवरों के शिकार में तो ग्रेगरी ने घोष को अपना गुरु मान लिया था। फिर घोष की दोस्ती हुई जनरल लिंडसे से, जो वहां के एरिया कमांडर थे। वे भी बड़े जानवरों के अच्छे शिकारी थे और जंगल-जीवन संबंधी बातों (वाइल्ड लाइफ) पर घंटों घोष के साथ बातचीत होती रहती थी। घोष को किंग कोबरा सांपों से बेहद लगाव था। कई अदद पाल भी रखे थे। उन्हें इन सांपों के बारे में महारत हासिल थी। उन दिनों महकमा जंगलात के कंजरवेटर मिस्टर शेब्बियर थे, जो कभी एवरेस्ट शिखर पर चढ़ाई करने के सिलसिले में विश्वविख्यात रहे हैं। बाद में उन्हें मलाया में 'गेम वार्डन' नियुक्त किया गया था। उन्होंने 'बंगाल नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी' नामक पत्रिका के अक्तूबर १९४६ अंक में पृष्ठ ५८ पर लिखा था, "**कोबरा सांपों के विषय में जितनी जानकारी घोष को है, उतनी किसी को भी नहीं।**"

लगभग इन्हीं दिनों सन १९३६-३७ में घोष ने पहाड़ी आदिवासियों के जीवन-संबंधी प्राकृतिक इतिहास और बड़े जानवरों पर लेखमाला तैयार की, जिन्हें समय-समय पर उनके छद्मनाम 'शिकरा' से 'स्टेट्समैन' में प्रकाशित किया जाने लगा। तभी चटगांव के आरक्षित इलाके के प्रबंध के बारे में घोष की रिपोर्ट का उल्लेख तत्कालीन सेक्रेटरी ऑव स्टेट्स ने ब्रिटेन के हाउस ऑव कॉमंस में भी लिखा था। बुधवार दिनांक १३ अक्तूबर १९३० को 'टाइम्स ऑव इंडिया' ने घोष के बारे में अपनी टिप्पणी छापी, "**घोष चटगांव के पहले भारतीय डिप्टी कमिश्नर हैं, जिन्हें इस छितरे-छितरे बसे पहाड़ी इलाके में नियुक्त किया गया। इस सुरक्षित इलाके को पहली बार खोलने के लिए लॉर्ड जटलैंड ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।**"

घोष पहले भारतीय थे जिन्हें सन १९३७ में शिलांग में विदेशों से आये मजदूरों का कंट्रोलर नियुक्त किया गया। यह वह समय था जब उनकी मुलाकात हुई आर. बी. लेगडन से, जो पहले चाय बागानों के मालिक थे और अब भारतीय चाय एसोसिएशन का प्रतिनिधित्व करने के अलावा कलकत्ता की मैक-लियाड एंड कंपनी के डायरेक्टर भी थे। कलकत्ता के क्लबों और खेलकूद के मैदान में वे बड़े ही लोकप्रिय थे। आज भी उनके नाम से कलकत्ता में 'लैगडन मेमोरियल' होते हैं। धीरे-धीरे दोनों की भेंट अटूट मैत्री में बदल गयी।

घोष इतने मशहूर हो चुके थे कि सन १९४०-४१ में बंगाल के गवर्नर सर जॉन हरबर्ट मैमनसिंह तशरीफ लाये थे महज घोष के साथ कुछ क्षण बिताने। फिर तो शिकार के लिए दोनों ने गारो पहाड़ियों की पैदल ही यात्रा की। तभी सर जॉन ने घोष को निकट से देखा, पहचाना, और अपनी धारणा बनायी कि है घोष निहायत शानदार, निराला अफसर।

घोष को ग्रेगरी की जासूसी कारगुजारियों में मजा आने लगा था और वे उन्हें महत्त्वपूर्ण खबरें भी देने लगे थे। तभी ग्रेगरी ने घोष का परिचय कराया एक ऐसे ब्रिटिश गुप्तचर अधिकारी से, जिसका सीधा संपर्क नयी दिल्ली से था।

जापान का आक्रमण

सन १९४२ के शुरू होते-होते पूर्वी क्षेत्र में

लड़ाई ने ऐसा भयंकर रूप धारण किया कि भारत के लिए खतरा पैदा हो गया । ७ दिसम्बर १९४१ को पर्ल हारबर पर आक्रमण करके जापान युद्ध में कूद ही चुका था । २३ जनवरी १९४२ को बरमा की राजधानी रंगून पर पहला हवाई हमला हुआ और ७ मार्च को उसे खाली भी करा लिया गया । १५ फरवरी को सिंगापुर का पतन हुआ और ५ व ६ अप्रैल को श्रीलंका तथा भारत के पूर्वी तट पर बमवर्षा की गयी । ३ अप्रैल को जापानियों का आक्याब पर अधिकार हुआ । २५ मई १९४२ को फील्ड मार्शल वाइकाउंट आर्चिबाल्ड वेवल को बरमा से खदेड़ दिया गया । बरमा अंगरेजों के हाथ से निकल गया । सैनिक स्थिति रातोंरात बदल गयी ।

लोग सोचने लगे कि जापानी किसी भी समय बंगाल पर धावा बोल देंगे । कलकत्ता में रहनेवाले तो और भी भयभीत थे । वे अपने बीवी-बच्चों सहित तेजी से शहर छोड़कर बिहार, यू. पी., की ओर भाग रहे थे । सरकारी दफ़्तरों का रेकॉर्ड भी दक्षिणी जिलों से हटाकर उत्तर में भेजा जाने लगा था । कोई कह नहीं सकता था कि जापानी कब आ धमकें । चटगांव, नोआखाली, टिपरा (कोमिल्ला) जिलों की हालत तो और भी खस्ता थी । ऐसा लगता था कि वे ही युद्ध-स्थल हों । बरमा से आनेवाले शरणार्थियों का तांता लगा था । और, वे आ रहे थे असम के रास्ते । लेकिन उन्होंने यह रास्ता उस वक्त अपनाया, जब चटगांव में उनकी आबादी हद से ज्यादा बढ़ गयी और अब वहां उनके रहने-ठहरने के लिए किसी प्रकार की गुंजाइश बाकी नहीं बची थी । वे अपने साथ लाये थे तरह-तरह की बीमारियां और रोंगटे खड़े कर देनेवाली दर्दनाक कहानियां । भारतीय सीमा से जापानी सैनिक बस ४५ किलोमीटर दूर ही तो थे ।

फोर्स वन थ्री सिक्स

इस घटना से पहले १ जनवरी १९४२ को ब्रिटिश गुप्तचर संस्था 'फोर्स वन-थ्री-सिक्स' का जन्म भारत में ही हो चुका था । उसकी समस्त जिम्मेदारी समान रूप से सौंपी गयी थी सर कॉलिम हरक्यूलीज मिकेंजी और सर गाल्विन वी. स्टुअर्ट को । दक्षिण-पूर्व एशिया में



सैनिक गुप्तचरी-प्रति गुप्तचरी के लिए संस्था का हेडक्वार्टर्स स्थापित किया गया था मिकेंजी के अधीन मेरठ छावनी में और स्टुअर्ट के तहत रियर हेडक्वार्टर्स कलकत्ता में । उन्हें ब्रिटेन तथा भारत की सरकारों का पूरा-पूरा सहयोग भी मिलने लगा था ।

घोष ही उपयुक्त

संकट की इस घड़ी में मिकेंजी और स्टुअर्ट को एक ऐसे विश्वसनीय व्यक्ति की तलाश थी जिसे जंगल जीवन और पहाड़ी आदिवासियों के विषय में पूरा ज्ञान तो हो ही, वह उन्हें दुश्मन के खिलाफ गोरिल्ला युद्ध में भी बखूबी इस्तेमाल कर सके । जनरल लिंडसे के अलावा बंगाल सरकार के मुख्य सचिव मिस्टर ब्लेयर ने उनके

सामने पेश किया घोष का नाम । तुरंत कर्नल ग्रेगरी से घोष को मिलाने के लिए कहा गया । २३ फरवरी, १९४२ को ग्रेगरी ने सर गाल्विन स्टुअर्ट को घोष से अपने अलेक्जेंडर कोर्ट ; कलकत्ता, के फ्लैट में मिलाया । काफी देर तक बातचीत करने के बाद स्टुअर्ट इस नतीजे पर पहुंचे कि ऐसी मुसीबत के वक्त यदि कोई वास्तविक रूप में सहायक हो सकता है, तो वे थे केवल घोष ।

दूसरे दिन २४ फरवरी को घोष की भेंट करायी गयी सर कॉलिन मिकेंजी से । इस



भेंटवार्ता के दौरान बरमा के नये कमांडर-इन-चीफ जनरल सर हेरोल्ड अलेक्जेंडर, ईस्टर्न आर्मी ऑव इंडिया कमांड के कमांडर लेफ्टिनेंट-जनरल एन. एम. एस. इरविन, गोरिल्ला फोर्स के कमांडर मेजर जनरल फेलेक्स विलियम, सर गाल्विन स्टुअर्ट और कर्नल ग्रेगरी भी मौजूद थे । घोष की योग्यता और क्षमता देखते हुए उन्हें बताया गया कि फोर्स वन-थ्री सिक्स को उनकी सख्त जरूरत है बंगाल में भूमिगत काम करने के लिए, जिससे जापानियों का डटकर मुकाबला किया जा सके, जो किसी भी समय बंगाल में दाखिल हो सकते हैं -- जैसा कि उन्होंने मलाया तथा बरमा में किया । यह भूमिगत संस्था पूरी तरह से घोष को ही चलानी थी । घोष ने मीटिंग में कहा कि अपने कंधों पर जिम्मेदारी लेने में पहले मैं बंगाल का दौरा करके अपने मित्रों से मिलना चाहूंगा, जिससे मुझे यह तो मालूम हो सके कि उनसे मुझे कितना सहयोग प्राप्त हो सकेगा । वैसे, मैं स्वयं यह जिम्मेदारी उठाने के लिए पूरी तरह तैयार हूं ।

अपने दोस्तों से मिलने के बाद घोष राजी हो गये । उन्होंने सर गाल्विन स्टुअर्ट से यह भी कहा, कि दुश्मन को बंगाल तक आने ही क्यों दिया जाए ? क्यों न अराकान के बीहड़ जंगलों और तेज ढलानवाली ऊंची-ऊंची पहाड़ियों में ही जापानियों की कसकर खबर ली जाए ? फिर उन्होंने स्पष्ट शब्दों में यह भी कह डाला, कि अब लोगों को अंगरेजों के 'प्रोपोगेंडा' में भरोसा नहीं रहा । मुझे तो अपने ही तौर-तरीके से उनके दिलो-दिमाग में भरना होगा, कि अंगरेज बुरे जरूर हैं, लेकिन जापानी तो उनसे भी बुरे हैं ।

उस समय घोष बंगाल सरकार के अधीन संचार और निर्माण विभाग के सचिव थे और उनका हेडक्वार्टर्स था कलकत्ता में । अपने इस अहम् कार्य को आगे बढ़ाने की गरज से उनके लिए 'छद्मवेश' (कवर) निहायत जरूरी था । अतः उन्हें बंगाल सरकार की अधीनता से निकालकर 'ओवरसीज डिपार्टमेंट' के तहत बरमा शरणार्थी संस्था का चीफ एडमिनिस्ट्रेटर नियुक्त करके उनका मुख्यालय चटगांव कर दिया गया ।

घोष ने तुरंत नयी-नयी स्कीमें बनायीं, जिन्हें आनन-फानन में कार्यरूप में परिणित किया गया । फिर वे पहुंचे मिकेंजी से मिलने मेरठ । उन्होंने घोष को एक पत्र दिया एलेक पैटर्सन के

नाम, जो उन दिनों कलकत्ता आये हुए थे । यूरोप में ब्रिटिश इंटेलिजेंस के 'फोर्स वन-थ्री-थ्री' की दो शाखाएं थीं...'मेक्सिस' और 'चित्रिक्स ।' इन दोनों के गुप्त कार्यों में गोरिल्ला युद्ध भी शामिल था । पैटर्सन का इन दोनों से ही गहरा संबंध था और वे थे भी यूरोप में अंगरेजों के प्रचार-चक्र की धुरी-समान । गोरिल्ला टुकड़ियों के लिए कुछ विश्वसनीय एजेंट चुनने के लिए भी मिकेंजी ने घोष से कह दिया ।

सर कॉलिन मिकेंजी, लॉर्ड कॉली, चार्ल्स ओ' नील और बैरट स्मिथसन से भेंटवार्ता के बाद जब घोष कलकत्ता वापस लौटे, पैटर्सन खड़गवासला रवाना हो चुके थे । अतः घोष को कुछ दिनों तक उनकी प्रतीक्षा करनी पड़ी । खाली बैठे क्या करते ? लगे हाथ उन्होंने जनरल सर हेरोल्ड अलेक्जेंडर, लेफ्टिनेंट-जनरल एन. एम. एस. इरविन, मेजर-जनरल सर ऑर्डे चार्ल्स विंगेट मेजर-जनरल फैलेक्स विलियम के अलावा बैरकपुर के कुछ अंगरेज और हिंदुस्तानी अफसरों से भी संबंध बढ़ाया ।

पैटर्सन के कलकत्ता वापस लौटने पर घोष उनसे मिले । उन्होंने घोष की सहायता करते रहने का आश्वासन दिया और दूसरे ही दिन बंगाल-नागपुर रेलवे के चीफ मेकेनिकल इंजीनियर मिस्टर ए. एम. रॉबर्टसन को फोर्स वन-थ्री-सिक्स में नियुक्त करके घोष की सुपुर्दगी में दे दिया । इस भरती का कारण था रॉबर्टसन की जंगल-जीवन संबंधी पर्याप्त जानकारी, जो तोड़फोड़ और गोरिल्ला शैली के युद्ध में निहायत जरूरी है ।

इस 'ब्रीफिंग' (अंतिम संक्षिप्त हिदायत) के बाद घोष ढाका पहुंचे और अपने एक पुराने दोस्त खान बहादुर फजलुल करीम से मिले । वह उस इलाके का बहुत बड़ा और प्रभावशाली जमींदार था । घोष ने उसके बड़े बेटे अब्दुल करीम को बारीसाल जिला और छोटे को कलकत्ता तथा हावड़ा में मुसलमानों के बीच जासूसी करने के लिए नियुक्त किया । खान बहादुर ने घोष की पूरी-पूरी मदद करते रहने का वायदा किया और हसन शहीद सोहरावर्दी जैसे कट्टर मुसलिम लीगी नेता और अंगरेजों के जबरदस्त खैर-ख्वाह से मुलाकात भी करा दी, जो बाद में, बजाय सहायक होने के उनकी जान-लेवा बनी ।

कलकत्ता वापस आने पर घोष ने बोर्ड ऑव रेवेन्यू के मेंबर मिस्टर फौकस और बंगाल सरकार के पी. डब्लूयू. डी. इंजीनियर मिस्टर स्टेन से अब्दुल करीम और नायब करीम को मिला दिया, क्योंकि इन्हीं के अधिकार-क्षेत्र में दोनों को जासूसी करनी थी । एक खास मकसद और था । बंगाल पर जापानी कब्जा हो जाने की स्थिति में इन्हीं के माध्यम से बंगाल और उड़ीसा में ईस्ट बंगाल रेलवे, ईस्ट इंडियन रेलवे और बंगाल एंड नागपुर रेलवे में भयंकर तोड़फोड़ कराकर रेलगाड़ियों को निष्क्रिय बना देने की तजवीज थी, जिससे जापानी फौजें उन्हें इस्तेमाल में ला ही न सकें । बड़ी ही विस्फोटक थी घोष की यह योजना ।

शातिर बदमाश की खोज

घोष को पूरी आजादी थी सेना, नौसेना, सिविल सर्विस आदि के किसी भी व्यक्ति को अपनी इस जासूसी संस्था में मिनटों के नोटिस पर ले लेने की । घोष ने बेनजीर नामक एक

निहायत शातिर बदमाश के बारे में सुन रखा था, कि वह दर्जनों कत्ल करके अपने आप को बंगाल पुलिस से छिपाता रहा है। कभी अराकान के जंगली इलाके में, तो कभी कहीं और। अराकानी मुसलमान उसे बहुत मानते थे। वे उसके मुरीद थे।

घोष को पता चला कि उन दिनों वह कलकत्ता में ही कहीं छिपा फरारी की जिंदगी गुजार रहा है। घोष को उसकी सख्त जरूरत थी। बिना पुलिस को भनक दिये वे उसकी तलाश में निकल पड़े। कभी गंदी बस्तियों और चकलों के चक्कर लगाते तो कभी सस्ते शराबखानों और जुआघरों के। जेल और जेल के बाहर खतरनाक कातिलों से पूछताछ की, लेकिन बेनजीर का पता नहीं चला। अंत में उन्होंने यह कहना शुरू कर दिया कि जापानियों से मोरचा लेने के लिए घोष को बेनजीर की सख्त जरूरत है।

कलकत्ता के पुलिस कमिश्नर खान बहादुर ई. ए. रे को इस बात की भनक मिली, कि घोष नामक एक आई. सी. एस. अफसर बेनजीर—जैसे शातिर बदमाश को पनाह दे रहा है। उन्होंने घोष के पास तुरंत अपने विशेष पुलिस अधीक्षक मिस्टर हार्डविक को यह समझाने भेजा, कि उस—जैसे बदमाश को इस आतमरक्षा बरतने वाली संस्था में भरती करने से बाज आएं।

घोष अपने दृढ़ निश्चय और फौलादी इरादे पर डटे रहे। हार्डविक को मुंहतोड़ जवाब दिया, "यह वक्त पुलिस हथकड़ों का नहीं है। बिना अंडा तोड़े आमलेट नहीं बन सकता। खतरनाक काम के लिए खतरनाक आदमी ही काम में लाये जाते हैं। यह काम साधु-संतों, स्कूली लड़कों, बुजुर्ग राय बहादुरों और खान बहादुरों का नहीं है। हमें बेनजीर—जैसे शातिर बदमाशों की ही जरूरत है।" हार्डविक उनका मुंह ताकते रह गये।

हार्डविक के चले जाने पर घोष ने बंगाल के गवर्नर सर जॉन हरबर्ट से शिकायत भी जड़ दी, कि पुलिस उनके कामों में दखलंदाजी बरत रही है। दूसरे दिन सुबह-सुबह गवर्नर के ए. डी. सी. ने टेलीफोन पर हार्डविक की कसकर धुलाई की और आदेश दिया कि घोष के किसी मामले में अड़ंगा न डाला जाए। बल्कि यदि बात कहीं बिगड़ती हो, तो उनकी पूरी-पूरी मदद की जाए।

लेकिन, बेनजीर का पता न चला। किसी ने उसे वर्षों से देखा भी न था। भारी मन से घोष ने अकेले ही चटगांव जाने का फैसला कर लिया। तभी रात के समय उनके अर्दली ने किसी के आने की सूचना दी। सतर्कता बरतते हुए घोष ने आगंतुक को अंदर भेजने को कहा। एक हट्टे-कट्टे ठिगने कद के दाढ़ीवाले नौजवान ने प्रवेश किया। वह था बेनजीर। अपने आप को घोष की खिदमत में पेश करने आया था। घोष फूले न समाये। उसे नया नाम दिया 'बेंजमिन' और भोर में ही उसके साथ चटगांव रवाना हो गये। फिर वहां से पहुंचे अराकान योमा।

अगले अंक में पढ़िए

घोष ने किस तरह जापानियों के विरुद्ध एक सशक्त संगठन तैयार किया।

प्रवेश

आशंका

पने घरौंदे से निकलकर जो देखा उसने
ला आकाश मुस्करा रहा था
मेट लेने को अपनी बांहों में
पने पंख पसारे उड़ चला वो
यी मंजिल की खोज में,
यी राहों में
दल से निकली बूंद,
बी नीड़ छूट जाने के गम से
खा जो नीचे अथाह सागर में
मने सीप मुसकरा रहा था
निया से अनजान, भयभीत
धेरे दायरों में कैद
पनी सीमाओं से निकलकर जब सोचा उसने
मने सुनहरा भविष्य मुस्करा रहा था ।

● नीलिमा

...कथ्य : ...ला कविता एक अहसास
...है । अभिव्यक्ति का सहज माध्यम है
शिक्षा : ...
...ा : विज्ञान विहार, रायपुर, देहरादून ।



इंतजार

मैंने
कितना रोका
उसको,
पर वह
चला गया
चलते हो गया
अकेला,
मस्त
अपने आप में
बेखबर
सारी दुनिया से ।
कब आएगा
फिर वह
शायद... जब
पतझड़ खत्म हो,
नयी आस,
नयी चाह
उगे आसमान में,
एक ओर से
उठे रवि
और दूसरी तरफ
मैला आंचल
फैलाकर
चंदा को भर ले
अंक में धरती

● सुनीता जैन 'सूर्या'

शिक्षा : बी.ए. बी.एड.
आत्मकथ्य : मन के भाव जब उमड़कर आना
... तो कविता के रूप में उनकी अभिव्यक्ति होती है ।
पता : ८०/४ ए, निशातगंज, इलाहाबाद ।



अम्लरोग? भूख की कमी? कब्ज़?

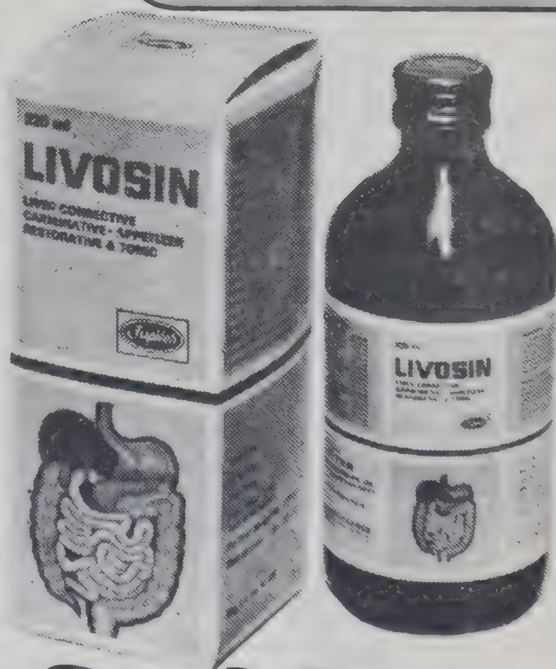
पेट की गड़बड़ी?

स्वास्थ्य और सुन्दरता का रक्षक-लिवर।

सर्वाधिक रोगों का कारण – पेट की खराबी, अस्वस्थ्य लिवर, और अनिद्रा। स्वस्थ्य लिवर हर रोग का निदान।

....डा. सरकार





पेट की गड़बड़ी दूर करने और लिवर सुरक्षित रखने के लिए

डा. सरकार का एक अनोखी खोज आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक।

लिवोसिन

सेवन विधि :
जब तक सीने की जलन, पाचन शक्ति में वृद्धि, अम्लरोग, कब्ज़ियत, भूख की कमी, पेट की गड़बड़ी, यकृत की अस्वस्थ्यता दूर न हो तब तक एक ग्लास गुनगुने पानी के साथ **लिवोसिन** सुबह खाली पेट और रात को सोने के समय नियमित सेवन करें।

लिवोसिन
एक आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक

आर्निकाप्लस-ट्रायोफर निर्माता का सहयोगी संस्था Jupiter - की आयुर्वेदिक खोज का एक अनोखा उपहार।

जुपिटर फार्मासिटिकल्स प्रा० लि०
२५, इडन हॉस्पिटल रोड़, कलकत्ता-७३
दूरभाष-२६०१५६/२७-०२२४

Dr. Sarkar Group

एलोपैथिक
आयुर्वेदिक
होमियोपैथिक
औषध प्रस्तुतकारक

Marketed by :
Allen's India Marketing Pvt. Ltd.
ArnikaPlus Apartment, Sealdah
35, A. P. C. Road, Calcutta-9
Phone : 350-9026

जिसके सहयोग से आपको मिले आरोग्य में विश्वास।

Allen's Ad India

Branch Office : Duggal House, Bank Road, Patna-800 001, Ph : 23-4953
Branch Office : 84/77B, Narayan Bagh, G. T. Road, Kanpur-208003, Ph : 24-2844

अतृप्त

देखा,
कई बार
रहा अतृप्त
हर बार—
स्मृति को जैसे
बांध लिया तुमने
आंचल में—
एक सनातन सत्य
जो तैरता है
तुम्हारी आंखों में,
सुबह के
राजहंस की तरह—
मेरे मानस में तुम
गीत बन
समायी हो गीतिका—
पल-प्रतिपल
तुम छन-छनकर
बही हो
मेरी धमनियों में—
फिर भी
मैं...
रहा अतृप्त
हर बार की तरह

● रूपेश दिग्विजय

आत्म कथ्य : सामाजिक व्यवस्था जब शूल
कर हृदय में आती है तब अनायास ही शब्द कविता
रूप धरने लगते हैं ।

शिक्षा : स्नातक (कला)

पता : चानपुरी निवास, गांधीनगर, बोरिंग रोड,
ना





तृप्ति

निस्तब्ध वातावरण,
निस्तेज किरण,
आकाश में कालिमा
सिंधु में बेचैनी
ऐसे में—
एक निर्धन के घर में
अन्न का पदार्पण
जैसे, दुर्भिक्ष के बाद
बसंत का आगमन
उसके शुष्क होंठों पर
खुशी की लहर,
फटी आंखों में तृप्ति की चमक
यही असली खुशी है
यही तृप्ति का बोध है

● मनीष जैसवाल

जन्म : १८ अप्रैल, १९७०

शिक्षा : एम.सी.ए. में अध्ययनरत

आत्म कथ्य : जीवन के अनुभवों को कलम के माध्यम से कागज पर उतार देता हूं ।

पता : २०१, एफ-२५, यमुनानगर, न्यू लिंक रोड, अंधेरी (पश्चिम), बंबई-५८





अवैधनाथ घोरिया

प्रश्न : उम्र ५२ वर्ष । शरीर के पीछे भाग में आपाद मस्तक इतना दर्द करता है कि मुरदा की-सी स्थिति बन जाती है । आपके अनुग्रह की कामना ।

उत्तर : शिरशूलादि वज्र रस एक वटी, त्रयोदशांग गूगल एक वटी, सुबह-शाम गरम पानी से लें ।

शोभा सनवाल, धारानौला

प्रश्न : पति को आठ दिन ६-६ घंटे के बाद लगातार नाक से खून चलता रहा । १२ दिन बहुत परेशान रहे । अब शरीर में बहुत दर्द रहता है । झनझनाहट, दुर्बलता व सिर में भारीपन रहता है ।

उत्तर : सितोपलादिचूर्ण साठ ग्राम, मुक्ताशुक्ति पिष्टी दस ग्राम, कपर्दिका भस्म दस ग्राम की अस्सी मात्रा बनाएं । सुबह-शाम एक-एक मात्रा शहद से लें । आंवला चूर्ण आधा-आधा चम्मच दोपहर-रात पानी से लें ।

राहुल, गुलावठी

प्रश्न : उम्र [illegible] साल है । शराब का सेवन करता रहा हूं । लगभग छह माह से छोड़ दिया है । पाचन क्रिया ठीक नहीं । भोजन के बाद पेट व सिर में बहुत भारीपन हो जाता है । दूध भी नहीं पचाता हूं । अकसर कब्ज बनी रहती है । पेशाब खुलकर नहीं आता । कमर दर्द, हाथ दर्द बना रहता है ।

उत्तर : पुनर्नवामंडूर तीस ग्राम, आरोग्यवर्धनी वटी दस ग्राम, शंख भस्म दस ग्राम की साठ मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-शाम पानी से लें । चंद्रप्रभावटी एक-एक वटी रात दूध से लें ।

मनोज, पटना

प्रश्न : उम्र ३४ वर्ष । दस वर्षों से चश्मा लगा रहा हूं । दृष्टि दोष दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है । कृपया इलाज बतायें ।

उत्तर : महात्रिफलाघृत एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । छह माह नियमित सेवन करें ।

अभोसक, टिहरी

प्रश्न : उम्र चालीस साल । नसें व मांसपेशियां कमजोर हैं । साइटिका पेन बताया गया है । काफी परेशान हूं । परहेज व दवा लिखें ।

उत्तर : समीर पन्नग रस दस ग्राम की साठ मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । दशमूलारिष्ट दो चम्मच, अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद पियें ।

हीरालाल, नयी दिल्ली

प्रश्न : उम्र पैंतीस साल । नजला, जुकाम व सिरदर्द, दमे-जैसी स्थिति बनी रहती है । उपचार लिखें ।

उत्तर : व्याघ्रीहरीतकी एक-एक चम्मच सुबह दूध से लें । चित्रकहरीतकी एक-एक चम्मच रात गरम पानी से लें ।

सुखदेव यादव, वर्द्धवान ।

प्रश्न : उम्र ५० साल । पेट में हर समय मरोड़ बना रहता है । पेशाब में जलन व आंखो मे जलन और मुंह का स्वाद हमेशा तीखा । कमर व जोड़ों में दर्द । सिर दर्द के साथ बेचैनी हर समय बनी रहती है ।

उत्तर : स्वर्ण सूतशेखर रस दस ग्राम की चालीस मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें ।

चित्रकादि वटी एक-एक वटी भोजन बाद पानी

लें । अविपत्तिकर चूर्ण एक चम्मच रात पानी
लें ।

, मठोरा

**: उम्र ५४ वर्ष । लगभग तीस वर्ष पूर्व
नीवश किसी महिला से तीन-चार बार संभोग
ा । सप्ताह बाद पेशाब में जलन व पीप आने
। इलाज से ठीक हुआ । पांच वर्ष के बाद
में फुंसियां निकलीं, वे भी ठीक हो गयीं ।
कुछ दिनों से शिश्न पर दाने निकल आते हैं ।
ी परेशान हूं ।**

: रसमाणिक्य दस ग्राम की चालीस मात्रा
एं । एक-एक मात्रा सुबह शहद से लें ।
वाद्यासव दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।
ुरादि गूगल एक वटी, कैशोर गूगल एक
दोपहर-रात पानी से लें ।

राजेन्द्र, इंदिरा नगर

**: उम्र ३३ वर्ष । विवाह हुए डेढ़ वर्ष हुआ है ।
ाल से रात्रि में श्वास तीव्र गति से चलने लगता
कफ छोटे-छोटे टुकड़ों में सफेद हल्के नीले रंग
भी पक जाता है । आसानी से नहीं
लता । सात्विक वृत्ति का हूं ।**

: च्यवन प्राश अवलेह एक-एक चम्मच
ह-रात दूध से लें । द्राक्षारिष्ट दो-दो चम्मच
न के बाद पियें ।

बहन मैनपुर

**: २१ वर्षीय अविवाहिता हूं । चर्मरोग,
दर, कब्ज, कमर-पैर में दर्द,मासिक नियमित
है किंतु उन दिनों में असहनीय पीड़ा होती है ।
भी खूब लग जाते हैं । अनेक रोगों से पीड़ित
के कारण परेशान हूं ।**

: पुष्यानुगचूर्ण साठ ग्राम, मुक्ता शुक्ति
दस ग्राम, आरोग्यवर्धनी वटी दस ग्राम
मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-शाम
से लें । अशोकारिष्ट दो चम्मच
ाद्यारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद पियें ।

सुनंदा फड़के रत्नागिरी

प्रश्न : नींद कम आती है । चलने में तकलीफ होती है और थकान महसूस करती हूं । ज्यादा देर तक कुरसी या जमीन में बैठ नहीं सकती । मार्गदर्शन करें ।

उत्तर : ब्रह्म रसायन एक-एक चम्मच सुबह-शाम दूध से । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच, बलारिष्ठ दो चम्मच भोजन बाद पियें ।

खीमा सिंह विष्ट,जोशीमठ

प्रश्न : उम्र साठ साल । पांच साल से दायां हाथ कांपता है तथा भीतर से पूरी बाजू में दर्द होता है । दायां घुटना भी प्रभावित होने लगा है ।

उत्तर : रस राज रस तीन ग्राम, त्रयोदशांगगल पंद्रह ग्राम, अश्वगंधादि चूर्ण साठ ग्राम लेकर साठ मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-रात दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें । छह माह नियमित औषधियां लें ।

ओमप्रकाश शर्मा, जयपुर ।

प्रश्न : मेरा इकलौता पुत्र है । डॉक्टरों ने नाक और आखों के बीच नस में नासूर कहा है । आख से आसू आते रहते हैं । तीन बार अलग-अलग डॉक्टरों से आपरेशन करवा चुका हूं । फायदा नहीं हुआ है । छोटा-सा घाव भी नहीं भर रहा है । लगभग डेढ़ वर्ष से परेशानी भुगत रहे हैं । कृपया कोई उपाय बताएं ।

उत्तर : त्रिफला गूगल एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । रसमाणिक्य दस ग्राम, कपर्दिकाभस्म दस ग्राम की अस्सी मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा दोपहर-रात शहद से दें । जात्यादि तेल घाव पर लगाएं ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

बी-५/७, कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१ ।

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिव प्रसाद पाठक

मेष : मास में आर्थिक प्रयासों में सफलता मिलेगी । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से वांछित पद परिवर्तन होगा । संपत्ति संबंधी कार्यों में अवरोध उत्पन्न होगा । नवीन संपर्कों में वृद्धि होगी । भावुकता की अपेक्षा विवेक से कार्य करें ।

वृषभ : राजकीय कार्यों में विलंब होगा । शत्रु पक्ष से परेशानी होगी । संपत्ति विवाद का अनुकूल समाधान होगा । सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । आकस्मिक धन लाभ से कार्यों की पूर्ति होगी । स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें । प्रवास का योग होगा ।

मिथुन : मास अनुकूल फलदायी होगा । आत्म-विश्वास तथा साहस से जोखिमपूर्ण कार्यों में लाभ मिलेगा । उच्चाधिकारियों की अनुकूलता से आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । नवीन वस्तु के क्रय को भी यह मास प्रभावित करेगा । शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर प्रतिष्ठा प्रभावित करेगा । सतर्कता रखें ।

कर्क : आर्थिक दिशा में किये गये प्रयास पूर्ण होंगे । संपत्ति वाहन संबंधी सुखद समाचार मिलेगा । जीवनसाथी के सहयोग से आजीविका की दिशा में वांछित परिणाम मिलेंगे । प्रवास में सावधानी रखें । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा ।

सिंह : मास में पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी । संघर्ष तथा परिश्रम से प्रतिकूल स्थितियों पर नियंत्रण होगा । न्यायालयीन कार्यों में विलंब हितकर होगा । जीवनसाथी अथवा परिवार के सहयोग से उल्लेखनीय उपलब्धि संभावित है । प्रियजन के सहयोग से शत्रु संबंधी समस्या का समाधान होगा ।

कन्या : नवीन योजनाओं से भाग्योदय होगा । अज्ञात भय एवं मानसिक चिंताओं में वृद्धि होगी । पारिवारिक वातावरण खिन्नता पूर्ण होगा । प्रियजन की अस्वस्थता की चिंता होगी । संपत्ति संबंधी कार्यों में धीमी प्रगति होगी । उच्चाधिकारियों के सहयोग से शत्रु पक्ष का शमन होगा ।

तुला : पारिवारिक सहयोग से आर्थिक दिशा में सफलता मिलेगी । नवीन संपर्कों से राजनीतिक दिशा में उल्लेखनीय उपलब्धि संभावित है । सृजन संबंधी कार्यों में व्यवधान होंगे । प्रवास की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा । न्यायालयीन कार्यों में विलंब हितकर होगा । आकस्मिक धन लाभ से संपत्ति कार्य की पूर्ति होगी ।

ग्रह स्थिति : सूर्य १४ मार्च से मीन में, मंगल पूर्ण मास कुंभ में, बुध १० से कुंभ में, गुरु तुला में, शुक्र ३ से मीन में, २७ से मेष में, शनि कुंभ में, राहु वृश्चिक में, केतु वृषभ में, हर्षल मकर में, नेपच्यून धनु में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

कला दीर्घा



शामा के तैल चित्र

हिंदुस्तान टाइम्स की कार्यकारी निदेशक श्रीमती शोभना भरतिया ने शामा के तैल चित्रों की प्रदर्शिनी का उद्‌घाटन त्रिवेणी कला संगम में किया । शामा के चित्रों में कश्मीर की सुंदरता का ही नहीं, वहां आजकल फैली हुई वीरानी का धुंध के माध्यम से चित्रण हुआ है । उनमें खून के रंग से सराबोर कुछ अकेले वीरान घाटी के विभिन्न रूप, वहां का सूना आकाश गहरी धुंध, सूने पथ, कैदी झील आदि का भी अंकन किया गया है ।



चित्रों से उभरा रंगमंच

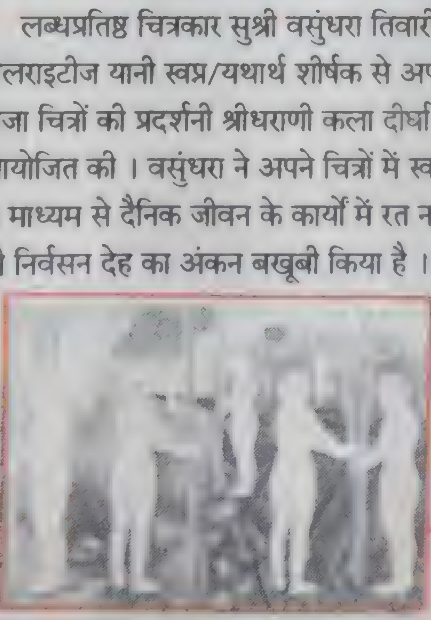
त्रिवेणी कला दीर्घा में प्रदर्शित संजय राय के चित्रों में रंगमंचीय अवधारणा—कृत्रिम प्रकाश, नाटकीयता और हर चीज को प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति आदि का अंकन बखूबी हुआ है । आकृतियों की संरचना और रंग संयोजन उल्लेखनीय है ।

लंदन की ज़िंदगी रेखाओं में

ब्रिटिश कौंसिल की कला दीर्घा में प्रदर्शित 'लाइफ इन लंदन' शीर्षक पचपन रंगीन रेखाचित्रों में राकेश सहगल ने लंदन के जनजीवन को एक कार्टूनिस्ट की निगाह से मनोरंजक व बेबाक ढंग से दर्शाया है ।

नारी की निर्वसन देह का अंकन

लब्धप्रतिष्ठ चित्रकार सुश्री वसुंधरा तिवारी ने पोलराइटीज यानी स्वप्न/यथार्थ शीर्षक से अपने ताजा चित्रों की प्रदर्शनी श्रीधराणी कला दीर्घा में आयोजित की । वसुंधरा ने अपने चित्रों में स्वप्न के माध्यम से दैनिक जीवन के कार्यों में रत नारी की निर्वसन देह का अंकन बखूबी किया है ।



ज्योतिष : समस्या और समाधान

● अजय भाम्बी

मीना, दिल्ली
प्रश्न : शुक्र की महादशा मेरे लिए कैसी रहेगी ?
उत्तर : कुल मिलाकर बहुत अच्छी रहेगी ।

नारायण जोशी, भानपुरा (म.प्र.)
प्रश्न : ऋण से मुक्ति कब मिलेगी ?
उत्तर : धन आगमन की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा व्यतीत होगा ।

अनामिका, बरियारपुर (बिहार)
प्रश्न : मेरी आंख ठीक होगी या नहीं ? कब ?
उत्तर : संभावना कम है ।

करण सिंह चौहान, सहारनपुर
प्रश्न : मेरी डॉक्टरी की दुकान है, कब सही चलेगी ?
उत्तर : मार्च से ।

मंजुश्री, पटना
प्रश्न : मिरगी रोग क्यों ? इससे छुटकारा कब तक ?
उत्तर : अभी थोड़ा समय और कष्ट रहेगा । उसके बाद मुक्ति मिलेगी ।

नीलेश निगम, पुरैना
प्रश्न : १९ नवम्बर को नेवी में सेलर की परीक्षा दी है, इसमें सर्विस लगेगी या नहीं ?
उत्तर : नहीं ।

शालिनी सिंह, लखनऊ
प्रश्न : एम. बी. बी. एस. में प्रवेश किस सन तक ?
उत्तर : अत्यधिक प्रयत्नों के उपरांत ही सफलता की कामना करें ।

मनीषा, जयपुर
प्रश्न : विवाह कब होगा ? उपाय ?
उत्तर : इस वर्ष विवाह होने की पूर्ण संभावना है । मोती धारण करें ।

संजय भक्ता, अजमेर
प्रश्न : कर्माजीव ग्रह ट्रांसपोर्ट व्यवसाय कब तक देगा ? लगभग समय बतायें ?
उत्तर : शनैः-शनैः अब परिणाम बेहतर आने लगेंगे ।

रश्मि तिवारी, दमोह
प्रश्न : विवाह का दसवां साल चल रहा है । संतान योग है या नहीं ?
उत्तर : इस वर्ष गर्भधारण होने की संभावना है ।

अनिल गुप्त, वाराणसी
प्रश्न : पी. सी. एस. बनने का योग कब तक ? कोई रत्न सुझायें ?
उत्तर : प्रयास बढ़ायें, इस बार सफलता मिलेगी । मूंगा धारण करें ।

प्रणव गौतम, दिल्ली
प्रश्न : मुझे कौन-से व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी ? रत्न सुझायें ?
उत्तर : निर्यात में । पुखराज पहनें ।

ऋचा शुक्ला, होवा शुक्ल (बस्ती)
प्रश्न : हृदय रोग का निदान कब और किस प्रकार ?
उत्तर : दीर्घ आयु तो आप हैं, अतः इलाज में सफलता मिलेगी ।

सुधीर सिन्हा, झांसी
प्रश्न : पदोन्नति कब एवं सुखी जीवन कब से ?
उत्तर : जुलाई के बाद ।

जानकी नंदन, ग्वालियर
प्रश्न : संतान प्राप्ति कब तक, अनुमानित माह, वर्ष ?
उत्तर : अगले वर्ष ।

प्रशांत गहलोत, बीकानेर

प्रश्न : विवाह अंतर्जातीय होगा या नहीं ?

उत्तर : होगा ।

ओमप्रकाश झा, बरेली

प्रश्न : न्यायालय में विवाद चल रहा है । मकान पर कब्जा कब तक मिलेगा ?

उत्तर : कब्जा तो प्राप्त होगा लेकिन अभी थोड़ा समय लगेगा ।

आनंद भार्गव, पिपरिया

प्रश्न : विदेश जाने की संभावना कब ?

उत्तर : जून के बाद योग बन रहा है ।

नीरज गोस्वामी लखनऊ

प्रश्न : क्या अपना मकान बनवा पाऊंगा ? कब तक ?

उत्तर : मकान अगले दो वर्षों में बनना चाहिए ।

सतेन्द्र सिंह, मुजफ्फरनगर

प्रश्न : क्या सर्विस में पुनः बहाली होगी, कोर्ट से ?

उत्तर : बराबर बहाली होगी ।

प्रदीप कुमार, वागीदौरा (राज.)

प्रश्न : मानसिक शांति कब, रुका पैसा कब तक मिलेगा, कोई रत्न धारण करना पड़ेगा ?

उत्तर : आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अच्छा है । माणिक धारण करें ।

सरोजनी रोथाण, देहरादून

प्रश्न : क्या इच्छित व्यक्ति से शादी होगी ?

उत्तर : इच्छित व्यक्ति से विवाह होने में बहुत झंझट आएंगे ।

गोवर्धन गोपाल, मेरठ

प्रश्न : नौकरी में प्रमोशन कब होगा ? रत्न सुझायें ?

उत्तर : इस वर्ष संभावना है । पन्ना पहनें ।

— 'नक्षत्र-निकेत'
९४४/३, नाईवाला फेज रोड, करोलबाग,
नयी दिल्ली-११०००५

प्रविष्टि-१४५



नाम...

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख).... महीना.... सन ....

जन्म-स्थान.............................. जन्म-समय ....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण...

पता...

आपका एक प्रश्न ....

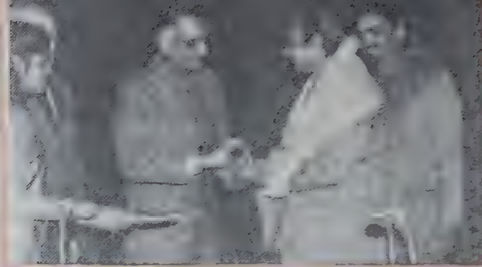
इस पन्ने को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें...

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि १४५)
'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स भवन,
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० मार्च, १९९४

सांस्कृतिक समाचार

'कादम्बिनी'-संपादक को सर्वोत्तम मीडिया पुरस्कार



[illegible] और श्री मणि मधुकर ।

नेशनल प्रेस ऑफ इंडिया ने अपनी स्वर्ण जयंती के अवसर पर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट सेवाओं के लिए राजनेताओं, पत्रकारों, अर्थशास्त्रियों एवं अन्य लोगों का सम्मान किया ।

एक समारोह में लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल ने कर्नाटक के राज्यपाल श्री खुर्शीद आलम, पंजाब के मुख्यमंत्री श्री बेअंत सिंह, केरल के मुख्यमंत्री श्री करुणाकरण एवं सिक्किम के मुख्यमंत्री श्री नरबहादुर भंडारी के अलावा ब्रिटिश पत्रकार श्री मार्क टूली और अ. भा. कांग्रेस (इ) की महिला शाखा की अध्यक्षा डॉ. गिरिजा व्यास का सम्मान किया गया । भारतीय भाषाओं में विशिष्ट लेखन एवं मीडिया के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'कादम्बिनी' संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी को भी सम्मानित किया गया ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता लॉर्ड बर्नार्ड वेथरिल ने की तथा विशिष्ट अतिथि थे श्री कोलिन शेफर्ड ।

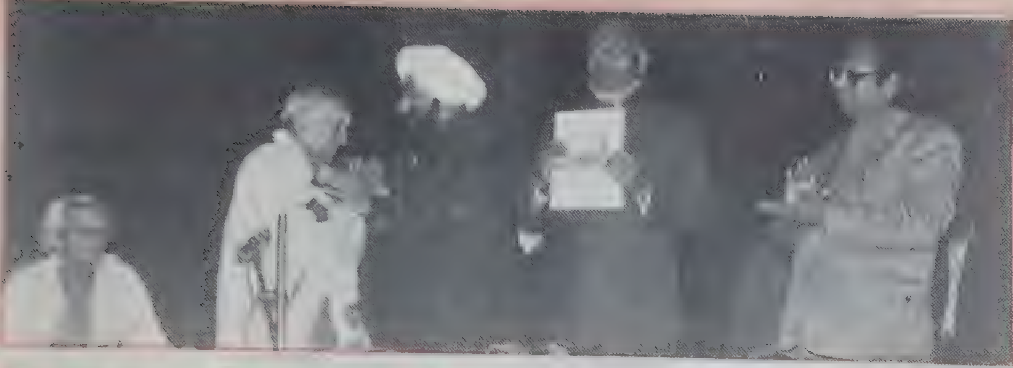
नेशनल प्रेस ऑफ इंडिया के कार्यकारी अध्यक्ष श्री मणि मधुकर ने अतिथियों का स्वागत किया एवं नेशनल प्रेस ऑफ इंडिया की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला ।

डॉ. शिवमंगल सिंह का सारस्वत-सम्मान

कानपुर । 'भारत भारती' पुरस्कार से सम्मानित यशस्वी कवि डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का आर्मापुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कानपुर द्वारा सारस्वत सम्मान किया गया । इस अवसर पर डॉ. सुमन ने वर्तमान राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए नयी पीढ़ी को आह्वान किया और सावधान किया कि युवा वर्ग किसी के कहने भड़काने में न आयें । बल्कि विवेक का प्रयोग कर जो निर्णय लें वही करें ।

कानपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय ने समारोह की अध्यक्षता की । महाविद्यालय के डॉ. यतीन्द्र तिवारी ने आचार्य सुमन का 'सारस्वत सम्मान' करते हुए उन्हें कालजयी कवि की संज्ञा से विभूषित किया । इस अवसर पर डॉ. हरि गोविंद सिंह एवं श्री प्रभाकर श्रोत्रिय ने डॉ. सुमन के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डाला ।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. एम. पी. सिंह ने किया । कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. गायत्री सिंह ने आभार प्रदर्शित किया ।



[illegible]द्यराज पं. जगदीश प्रसाद शर्मा का अभिनंदन

विख्यात वैद्य पं. जगदीश प्रसाद शर्मा, का ८३वां जन्म दिन 'संकल्प दिवस' के रूप में मनाया गया । इस अवसर पर भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने पुष्पहार, शाल एवं नारियल से उनका अभिनंदन किया और उनके कार्यों की प्रशंसा की । ज्ञानीजी ने चिंता प्रकट की कि आजादी के ४६ वर्ष बाद भी यहां अंगरेजी का वर्चस्व है और हिंदी प्रतिदिन दूर होती जा रही है । उन्होंने अपने भाषण में आयुर्वेद की महत्ता पर भी प्रकाश डाला और वैद्यजी के कार्यों की सराहना की । वित्त आयोग के अध्यक्ष श्री के. सी. पंत ने इस अवसर पर एक स्मारिका का विमोचन किया । अंतरराष्ट्रीय आयुर्वेद विज्ञान संस्थान के महासचिव श्री राजेन्द्र अवस्थी ने संस्थान द्वारा भारत और विश्व के सात-आठ देशों में किये गये आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार का विस्तार से परिचय दिया । इस अवसर पर दिल्ली की पंद्रह संस्थाओं ने वैद्यराजजी का पुष्पहार से अभिनंदन किया और वैद्य श्री नानक चंद सहित पांच विख्यात व्यक्तियों ने अपनी शुभकामनाएं प्रकट कीं । एक सादगीपूर्ण सौम्य वातावरण में समारोह संपन्न हुआ ।

[illegible]चीन मिस्र में भारतीय संस्कृति का [illegible]

श्री यशपाल जैन ने साहित्यिक पत्रिका 'संधान' के हीरक जयंती अंक समारोह में नवीन खन्ना की पुस्तक 'प्राचीन मिस्र में भारतीय संस्कृति' का विमोचन किया । समारोह के मुख्य अतिथि थे डॉ. गंगाप्रसाद विमल । इस अवसर पर एक गोष्ठी का भी आयोजन किया गया, जिसमें इलाहाबाद के वयोवृद्ध साहित्यकार श्री कैलाश कल्पित के अतिरिक्त डॉ. जीवन प्रकाश जोशी, डॉ. मोतीलाल जोतवाणी, श्री [illegible]लस्वरूप राही, डॉ. सुलेखचंद्र शर्मा, डॉ. [illegible]हुल, श्री चंद्रमोहन, श्री दिविक रमेश, श्री श्याम विमल और डॉ. विजय कपूर ने भी भाग लिया ।

[illegible] कवि सम्मेलन

नयी दिल्ली : श्री गोवर्धन विद्या निकेतन के प्रांगण में राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव के ज्वलंत संदर्भ पर एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । इस कवि सम्मेलन में सर्वश्री राजगोपाल सिंह, सुरेश नीरव, मंगल नसीम, राजेन्द्र राजा, कमल दर्पण, अनमोल सिंह परदेशी, विष्णुदत्त शर्मा एवं कमल जैन ने कविता पाठ किया । विनय सरगम ने गोष्ठी का संचालन किया ।

थोड़ा सा कर ढेर सारी शांती

छोटे कारबारी

स्वयं रोजगार कर्ता

छोटे सड़क परिवाहक

वित्त वर्ष 1993-94 के लिए सरलीकृत
आयकर योजना का लाभ उठाएं

फार्म 4 क

के साथ
किसी भी नामित बैंक में 1400/- रुपये जमा कराएं
तथा अपनी कर संबंधी चिंतायें भूल जायें

[illegible]ना नहीं

आयकर विवरणी दाखिल करना
आयकर कार्यालय जाना
खाता बही रखना

सर्वे नहीं

आयकर विभाग आयकर निदेशालय
(ग.सा प्र.व ज.स.) छठी मंजिल, मयूर भवन,
नई दिल्ली-110 001.

davp 93.261



कादम्बिनी क्लब समाचार

खंडवा में काव्य गोष्ठी

खंडवा । स्थानीय गांधी भवन में 'कादम्बिनी' क्लब द्वारा एक काव्य गोष्ठी आयोजित की गयी, जिसकी अध्यक्षता श्री एस. सी. सोनी अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने की । मुख्य अतिथि कवि श्री श्रीकांत जोशी थे । श्री जोशीजी का क्लब की ओर से क्लब के संरक्षक श्री राजेन्द्र मिश्र ने शॉल एवं श्रीफल से सम्मान किया । विशेष अतिथि श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, ललित निबंधकार भी उपस्थित थे ।

कवियों में सर्वश्री डॉ. श्रीराम परिहार, मनोज तोमर, दिनेश शुक्ल, रामवरण ओझा, सुधीर मंडलोई, श्रीमती शकुन्तला बड़ोन्या, कुमारी सोनाली डोंगरे, कपिल डोंगरे आदि ने काव्य पाठ किया ।

—रमेश राव अव्हाड़

ग्राम में साहित्य गोष्ठी

'कादम्बिनी' क्लब, साईंखेड़ा द्वारा समीपस्थ ग्राम रम्पुरा में साहित्य गोष्ठी का आयोजन किया गया । जिसमें क्लब के सदस्यों के अलावा आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों एवं गाडरवारा नगर के साहित्यकारों ने भाग लिया । अतिथियों के स्वागत-सत्कार की व्यवस्था क्लब के सदस्य श्री मेहरबान सिंह पटेल द्वारा की गयी। प्रारंभ में श्री लीलाधर श्रीवास ने कविता से सबका अभिनंदन किया । तत्पश्चात साहित्य सृजन परिषद, गाडरवारा के सदस्य सर्वश्री श्यामसुंदर रावत, आनंद श्रीवास्तव (एडवोकेट), कुशलेन्द्र श्रीवास्तव (संपादक, चौमानबाड़ी), के. सी. जैन, रामसेवक गुप्ता, श्रीराम साहू, हेमराजकोरी, नागेन्द्र त्रिपाठी, राकेश तिवारी, आशीष शर्मा, आशीष सोनी, रामेश्वर यादव, राजीव नीखरा, कु. ज्योति मिश्रा, कु. माया रावत ने अपनी रचनाओं का पाठ किया ।

'कादम्बिनी' क्लब के सदस्य सर्वश्री नरहरिदत्त बसेड़िया, शेख जफर (शिक्षक), रेवाशंकर कटारे, नीरज श्रीवास्तव, डॉ. गनेश सोनी ने भी काव्य पाठ किया ।

गोष्ठी का संचालन 'कादम्बिनी' क्लब के संयोजक वेणीशंकर 'ब्रज' ने किया । गोष्ठी के सफल आयोजन में सर्वश्री संजय गुप्ता, श्री वीरेन्द्र सिंह राजपूत, रामसिंह पटेल, शिवकुमार शर्मा, दरयावसिंह पटेल, भानुप्रताप राजपूत, मुकेश साहू आदि का सराहनीय योगदान रहा ।

सहारनपुर में वैचारिक गोष्ठी

सहारनपुर : 'कादम्बिनी' क्लब की एक वैचारिक गोष्ठी का आयोजन इलाहाबाद की डॉ. आशा गुप्ता की अध्यक्षता में हुआ । मुख्य अतिथि अपर जिलाधिकारी (वित्त) आनंदवर्धन तथा डॉ. मीरा गौतम ने अपने विचारों में साहित्य साधना को मन की शांति का माध्यम बताया । इस अवसर पर हुई 'काव्य गोष्ठी' में डॉ. सुरेन्द्र सिंघल, श्रीमती इंदिरा गौड, कृष्ण शलभ, साहिल फरीदी, श्रीमती अनिता कथूरिया, प्रहलाद 'आतिश', योगेन्द्र पाल दत्त, आसिम पीरजादा, संजय जैन समेत डेढ़ दर्जन काव्य साधकों ने काव्य पाठ किया । संचालन सुरेश सपन ने किया ।

—विजेश जोशी

नयी कृतियां

दाखिल खारिज : बुंदेलखंड को केंद्र बनाकर पहली बार हिंदी साहित्य के औपन्यासिक लेखन में 'दाखिल खारिज' अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराता है। बुंदेलखंड अपनी आन-बान और शान में प्रसिद्ध तो रहा है, किंतु उसके आर्थिक दारिद्रय, सामाजिक शोषण और अंध-विश्वासों की ओर बहुत कम ध्यान आकर्षित किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास बुंदेलखंड के इन्हीं प्रसंगों के आसपास अपनी कथा के ताने-बाने बुनता है। 'दाखिल-खारिज' की कथावस्तु सामाजिक उत्पीड़न के विरुद्ध दलित समुदाय की चेतना का जोरदार प्रस्तुतीकरण करती है।

उपन्यास के अनेक चरित्र एक संगठन विशेष न होते हुए भी जीवनगत स्वतंत्रता की भावना से और सामाजिक उत्थान की भावना से प्रेरित हैं। महात्मा गांधी का तेजस्वी नेतृत्व जिस विशाल परिवर्तन का केंद्र बनता है, उस परिवर्तन की एक झलक इन पात्रों में भी प्रकट होती है। उपन्यासकार ने पहली बार बुंदेलखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में महात्मा गांधी के असर का कथात्मक प्रस्तुतीकरण किया है। स्वतंत्रता संग्राम ने मुक्ति का जो संदेश दिया था, वह कैसे सामाजिक मुक्ति को भी अपना सहचरी बनाता है, 'दाखिल खारिज' में यह बिंदु विशिष्ट रूप से उभरकर आया है। पिछले सौ वर्षों के सामाजिक संघर्ष, सांस्कृतिक विरूपीकरण और ह्रासशील मानव मूल्यों को व्यक्त करनेवाले इस उपन्यास की कथा का कैनवास बहुत व्यापक है। बुंदेलखंड के तीज त्योहार, लोकगीतों आदि का रचनात्मक उपयोग इस उपन्यास में हुआ है। निश्चित ही यह कृति भीखनपुर के जनपदीय स्वरूप को न छूकर संपूर्ण देश के ग्रामीण जीवन को कुछ सीमाओं में अभिव्यक्त करती है।

—विजय अग्रवाल

उपन्यास : 'दाखिल खारिज'
लेखक : श्यामसुंदर दुबे, प्रकाशक : प्रज्ञा प्रकाशन मंच, नयी दिल्ली, मूल्य : पचास रुपये।

मेरी प्रतिनिधि हंसिकाएं : हास्य सदा साहित्य का अभिन्न अंग रहा है। महाकाव्यों तक में हास्य प्रसंगों के पुट रहे हैं। गत दो दशकों में काव्य के क्षेत्र में हास्य का एक अन्यतम उदाहरण दृष्टिगत हुआ है—'हंसिकाएं'। सरोजनीप्रीतम की पैनी दृष्टि है या स्थितियों के तीखे व्यंग्य—वे उन्हें शब्दों में कुछ ऐसे समेट लेती हैं कि शब्द स्वयं धन्य हो जाता है। 'हंसिकाएं' स्वयं में एक विधा हो गयी है और इसका श्रेय —डॉ. सरोजनी प्रीतम को है।

संकलन की इन कविताओं में कथ्य की विविधता है। अधिकांश हास्य कवियों के पास गिने-चुने कथ्य ही हैं। उन्हीं के आसपास उनका रचना संसार है। गिरते मानवीय मूल्य, संबंधों का खोखलापन, सत्ता से चिपके रहने की राजनीति, पाखंड आदि का कवयित्री ने जिस सहजता से सशक्त चित्रण किया है उससे कवयित्री की सामाजिक सरोकारों के प्रति उत्तरदायी दृष्टि का बोध होता है।

—अशोक लव

मेरी प्रतिनिधि हंसिकाएं,
कवयित्री : डॉ. सरोजनी प्रीतम, प्रकाशक : हास्य अकादमी, सी-१११, न्यू राजेन्द्र नगर, नयी दिल्ली, मूल्य : पचास रुपये

लाइन पर लाइन : रचनाकार ने सर्वप्रथम अनुभूत समस्याओं का बहुत ही बेबाक बिंबांकन किया है। भाषा सरल, प्रवहमान, बोधगम्य और उद्देश्य का पूर्णरूपेण अनुगमन करती हुई चली है और पाठक के साथ साधारणीकरण की प्रक्रिया स्थापित करती प्रतीत होती है। 'चक्कर का चक्कर' शीर्षक से बलात पति-पत्नी बनने का उपक्रम, 'लेखक की सींग में' रचनाकार की अस्मिता-अस्तित्व पर प्रश्न-चिह्न, 'धमकी चिंतन' सामयिक और विचारोत्तेजक आलेख, 'शुभकामना और फंदे' में शुभकामना शब्द विभक्ति का हास्योदाहरण, 'सावित्री की नोक-झोंक' एक नारी की व्यथा-कथा, 'हरसुखलाल' के माध्यम से बलात हास्य उद्भावना की वर्जना, 'अभाव चंद' में वृद्ध काया और युवा भावनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति और 'शिरीष बाबू' प्रत्येक व्यक्ति की जीवन-संध्या के जीवंत प्रतीक रूप में परिलक्षित हुए हैं।

—डॉ. सर्वदानंद द्विवेदी

लाइन पर लाइन
लेखिका : डॉ. सरोजनी प्रीतम, प्रकाशक : हास्य अकादमी, सी-१११, न्यू राजेन्द्र नगर, नयी दिल्ली, मूल्य : चालीस रुपये

कुछ नये काव्य संग्रह

काव्य

उगते सूरज की बांसुरी : अनिता अनिलाभ
प्रकाशक : अंकित प्रकाशन, १६८ एस, डबल स्टोरी न्यू राजेन्द्र नगर, नयी दिल्ली, मूल्य : नब्बे रुपये

तुम्हारे नाम के अक्षर : गणेश गंभीर
प्रकाशक : आख्या प्रकाशन, बंगाली चौराहा, विंध्याचल, मिरजापुर (उ. प्र.) मूल्य : चालीस रुपये

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. (३ बेटे, ४ बेटियां), २.क. त्रिपिटक—जो विनय, सुत्त और अभिधम्म—तीन पिटकों (भागों) में विभक्त हैं, ख. श्रीलंका में, ३. मिस्र ने, ४.क. दक्षिण अफरीका में, ख. द. अफरीका से, ५.क. दस महीनों में ६५८० करोड़ रु. की, ख. अमरीका का १९९१ में १८५ करोड़, १९९३ में ६०१ करोड़, ६.क. ८५ अरब ४० करोड़ डॉलर (२,६६१ अरब ६७ करोड़ रु.), ख. २.८० करोड़, ७.क. ७३ लाख, ख. ६ अरब ४० करोड़, ८. एक अंतरिक्ष-दूरबीन की मरम्मत, जिसके लिए अमरीकी अंतरिक्ष-यान 'एंडेवर' के ७ यात्रियों ने ७० लाख किलोमीटर की लगभग ११ दिन की यात्रा की और ५ बार निर्वात में कदम रखा, ९.क. विजय तेंदुलकर (सरस्वती सम्मान), गिरिजाकुमार माथुर (व्यास सम्मान), डॉ. रघुवंश (शंकर पुर.), प्रो. राजेन्द्र मिश्र (वाचस्पति पुर.-'जानकी जीवनम्' पुस्तक पर), हरीश मादानी (बिहारी पुर.—'पितृकल्प' पर), ख. गणेशमान सिंह (नेपाली कांग्रेस के नेता), ग. मदर टेरेसा, १०. विश्वनाथ आनंद (शतरंज), गीत सेठी (बिलियर्ड्स), ११. भारत ने, ६१ स्वर्ण-पदक सहित कुल १४६ पदक।

पृष्ठ १०१ पर छपे चित्र में विषैले कैटरपिलर

फैसला चाहिए : छंदराज
प्रकाशक : संजय प्रकाशन, रामपुर डुमरा, पटना
मूल्य : तीस रुपये

आस्था के बोल : नवरत्न शर्मा
प्रकाशक : प्रतिभा प्रकाशन, १२ ए, रमेश दत्त स्ट्रीट
कलकत्ता ७००००६, मूल्य : पचास रुपये

कुछ पठनीय उपन्यास

कथा-साहित्य

अपनी-अपनी मरीचिका : भगवान अटलानी
प्रकाशक : ज्ञान गंगा, २०५-सी, चावड़ी बाजार, दिल्ली ६, मूल्य : एक सौ रुपये

हीरे का हार : गई द मोयासां

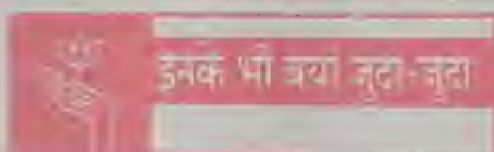
राशोमोन : रियूनोसुके अकूतागवा

एक अनजान औरत का खत : स्टीफेन ज्विग

अब न बनेगी देहरी : पद्मा सचदेव

उपर्युक्त चारों पुस्तकों के प्रकाशक :
हिंद पाकेट बुक्स, जी. टी. रोड, दिलशाद गार्डन-९५
प्रत्येक पुस्तक का मूल्य : पैंतालिस रुपये

राजा रवि वर्मा : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश
प्रकाशक : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली,
मूल्य : तेरह रुपये पचास पैसे



मौका-ए-यास कभी तेरी नजर ने न दिया
शर्त जीने की लगा दी मुझे मरने न दिया

—परवेज शाहदी

जिंदगी तू भी पड़ोसन की तरह लगती है
आज तोहफे में जो कुछ दे है तो कल मांगें है

—मुनव्वर राना

ख्वाहिश तुझे पाने की किस बस्ती में ले आयी
हर गम पे सन्नाटा हर मोड़ पर तन्हाई

—ताबिश धर्मकोटी

शिकवा करने की जरूरत ही नहीं
दिल की कमजोरी का शिकवा नाम है

—वकार वासकी

अपनी परछाईं भी डस लेती हैं
हर कदम सोच-समझकर रखिए

—हफीज बनारसी

टुकड़ों को मेरे खत के न फेंको, इन्हें ले जाओ
जोड़ोगे तो कट जाएगा कुछ वक्त सफर में

—नारायण सिंह गाफिल

बस यह हुआ कि उसने तकल्लुफ से बात की
और हमने रोते-रोते दुपट्टे भिगो लिये

—परवीन शाकर

जुदा हुए तो कई रंग थे खयालों में
मिले तो एक था पानी का रंग प्यास का रंग

—अहमद मुश्ताक

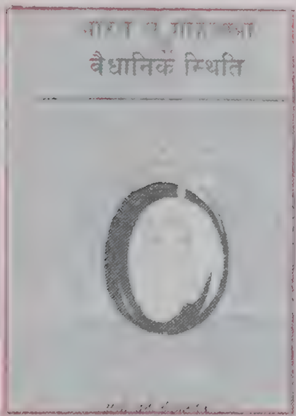
प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

सार-संक्षेप

भारत में महिलाओं की वैधानिक स्थिति

स्त्री की कमाई कितनी अपनी, कितनी परायी

● सुधारानी श्रीवास्तव



भारत में महिलाओं की संवैधानिक स्थिति के संबंध में आम जनता को बहुत कम ज्ञान है। संविधान के निर्माण के समय स्त्रियों की स्थिति में सुधार की प्रतिज्ञा भी की गयी थी, तथापि आज देश की स्त्रियों की स्थिति में सुधार के बावजूद विशेष प्रगति नहीं हुई है। जबलपुर की सुप्रसिद्ध एडवोकेट श्रीमती सुधारानी श्रीवास्तव ने अपनी कृति 'भारत में महिलाओं की वैधानिक स्थिति' (प्रकाशक : कामनवेल्थ पब्लिशर्स ४३७८/४ बी गली मुरारीलाल अंसारी रोड, नयी दिल्ली, मूल्य : एक सौ पचहत्तर रुपये) में संविधान द्वारा महिलाओं को दिये गये अधिकारों का विस्तृत विवेचन किया है। सार संक्षेप में पढ़िए, इसी कृति का एक अध्याय।

आज स्वतंत्र भारत में भी स्त्रियों की स्थिति विषमतर होती जा रही है । पहले जब परदा प्रथा थी, तब स्त्रियां कम-से-कम घरों में रहती थीं । अच्छा-बुरा, कम-अधिक सभी घर के अंदर चलता था । आज स्थिति यह है कि घर तो उसे देखना ही है । प्रकृति ने जो उसे मातृत्व दिया है वह तो उसी के हक में है, साथ ही बाहर भी संभालना पड़ता है । इस बढ़ती महंगाई में जहां मूल्यों पर कोई नियंत्रण नहीं है, वहां घर की, अर्थात राष्ट्र की इकाई का आर्थिक संतुलन संभालने के लिए उसे देहरी लांघकर नौकरी करनी ही पड़ती है । दूसरी ओर यदि वह इस बंधन को तोड़कर अंतरजातीय विवाह कर ले तो स्थिति और भयावह । पितृकुल और श्वसुर कुल का त्याग करने के पश्चात ही अंतरजातीय विवाह किया जाता है । ऐसे में जब प्रेम का बुखार उतरता है और प्रेमी-प्रेमिका स्वप्निल रंगी आकाश से उतरते हैं तब हकीकत की भूमि पर पांव रखते ही एक-दूसरे को खटकने लगते हैं । अंत या तो तलाक से होता है अथवा आत्मदाह से । दूसरी ओर कानून बनानेवाले धुरंधरों ने स्त्री की स्थिति कानून में भी जटिल कर दी है ।

समान कानून आवश्यक

धर्म निरपेक्ष राष्ट्र में अपना संविधान लागू है । हिंदू अपना कानून लेकर अदालत चढ़ता है, और मुसलमान अपना कानून लेकर । इसी प्रकार अन्य जातीय कानूनों की इस भारत में अच्छी मसालेदार खिचड़ी पकती है । आज देश को इस कानूनी चक्रव्यूह से निकालने के लिए एक यूनीफाइड सिविल कोड की आवश्यकता है ।

इस कानून की भूलभुलैया में सबसे अधिक विषम स्थिति स्त्री की है । पुरुष कूद-फांदकर इस भूलभुलैया से पार हो जाता है । वहीं स्त्री अपने मातृत्व को ढोती-ढोती जवानी में ही बुढ़िया हो जाती है ।

आज जो स्त्रियां नौकरी एवं व्यवसाय में हैं । उनका स्व-अर्जित 'धन' किस परिभाषा में आएगा, यही इस लेख का मकसद है । वैसे तो सभी जातिगत कानूनों में स्त्री की स्थिति कुछ अच्छी नहीं है किंतु 'स्त्रीधन' मात्र हिंदू विधि में ही आता है अतः इसी का विवेचन प्रस्तुत है । हिंदू विधि का आधार हिंदू धर्म माना गया है :

''श्रुति स्मृति : सदाचार : स्वस्थ च प्रियम् आत्मनः
सम्यक् संकल्पज्ञः कामो धर्ममूलम् इदं स्मृतिम् ।।

(याज्ञवल्क्य :)

अर्थात श्रुति एवं स्मृति भाग्य आचरण संहिता हैं । व्यक्ति के स्वतः की आत्मा के शुभविवेक की इच्छा ही धर्म का मूल है ।

इसी के अंतर्गत हिंदू कानून में श्रुति-स्मृति और रूढ़ि को हिंदू विधि का आधार माना गया है । इसी के साथ कहानी आगे बढ़ती है और मिताक्षर स्कूल एवं दायभाग के स्कूलों के नियमों का नाम आता है । पुनः विभाजन दायभाग स्कूल के नियम बंगाल के हिंदुओं पर लागू होते हैं और मिताक्षर स्कूल के नियम शेष भारत के हिंदुओं पर ।

हिंदू विधि में एक अध्याय है 'स्त्रीधन' । कौन-कौन-सा स्त्री धन है और कौन-सा नहीं । इसी 'स्त्री धन' होने के कारण रानी दुर्गावती एवं झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को अपने अवयस्क पुत्रों की ओर से राज्य संचालन करना पड़ा । वैसे दायभाग एवं मिताक्षर स्कूल के नियमों में स्त्रीधन के विषय में अधिक भेद नहीं है, फिर

आज के संदर्भ में हिंदू स्त्री को उसके स्व-अर्जित वेतन अथवा व्यवसाय द्वारा लाभ पर उसका संपूर्ण अधिकार है । (एबसोलूट राइट) वह जैसा चाहे वैसा उसका उपयोग कर सकती है । आजकल बहुत से धनलोलुप श्वसुरकुल मात्र इसलिए कमानेवाली लड़की से शादी करना चाहते हैं कि बहू की कमाई पर उनका अधिकार है । यह स्त्री की स्व-इच्छा पर निर्भर करता है कि वह अपनी कमाई का कैसा उपयोग करे । यदि ससुरालवाले उसके साथ अच्छा सलूक करते हैं । उनका मन जीत लेते हैं तभी वे उसकी कृपाकांक्षा के पात्र हो सकते हैं ।

भी सभी मान्यता प्राप्त नियमों के आधार पर स्त्रीधन की निम्नलिखित परिभाषा है :

(१) स्मृति के अनुसार विवाह की पवित्र अग्नि के समक्ष पितृकुल, मातृकुल एवं परदेशी व्यक्तियों द्वारा दिया गया धन । इसमें परदेशी से तात्पर्य संबंधियों के अतिरिक्त व्यक्तियों से है ।

(२) स्त्री की कौमार्यावस्था अथवा विधवा होने पर जो संपत्ति उसने अर्जित की है । यह संपत्ति निम्न प्रकार से अर्जित की हुई होनी चाहिए :

(क) परदेशियों द्वारा दिया गया उपहार ।

(ख) तकनीकी कला द्वारा अर्जित धन ।

(३) मिताक्षर स्कूल नियम के अंतर्गत प्रिविकौंसिल के निर्णय के अनुसार धारा १२२, हिंदू विधि में प्रिविकौंसिल ने मीमांसा की है कि 'स्त्रीधन' वह सभी धन है जो कि उसे उत्तराधिकार में प्राप्त है । इसमें भी एक परंतुक (प्रोविसो) लगा दिया गया है । विधवा को जो उत्तराधिकार उसके पतिकुल से प्राप्त हैं वे उसके नहीं हैं बल्कि उसके पति की मृत्यु के उपरांत वे पुरुष उत्तराधिकारियों को प्राप्त होंगे । जब कोई 'स्त्रीधन' का ही स्त्री उत्तराधिकारी, अधिग्रहण करेगी उसे ही स्त्रीधन कहा जाएगा ।

(भगवानदीन विरुद्ध मूना बाई एम. आई. ए. १८६७)

(अब इसमें संशोधन हो चुका है)

यह तो हुई स्त्रीधन की परिभाषा कि स्त्रीधन की परिभाषा में कौन-कौन-सा धन आता है । इन अधिकारों पर स्त्री के क्या अधिकार हिंदू विधि में दिये हैं, उसका वर्णन प्रस्तुत है :

'स्त्रीधन' पर उसका संपूर्ण अधिकार होता है । वह जैसा चाहे उसका उपयोग कर सकती है । वह स्त्रीधन के रूप में अर्जित संपत्ति बेच सकती है, गिरवी रख सकती है एवं जिसे उसकी इच्छा हो, उसे दान कर सकती है । इतना ही नहीं यदि उसे दूसरी संपत्ति खरीदनी हो तो अपनी स्त्रीधन की संपत्ति बेचकर इस धन से दूसरी संपत्ति खरीद सकती है । यदि वह स्त्रीधन की संपत्ति बेचती है तो जो पैसा आएगा वह भी स्त्रीधन कहलाएगा । इस संपत्ति पर उसके पिता, भाई, पति एवं पुत्र किसी का भी कोई अधिकार नहीं होता ।

इसी के साथ स्व अर्जित कला द्वारा प्राप्त धन भी स्त्रीधन के अंतर्गत आता है, जिसकी मीमांसा कात्यायन ने की है । किंतु जो स्त्रीधन उसे पति के द्वारा दान के रूप में प्राप्त है, उसका उपयोग वह स्वेच्छा से नहीं कर सकती है । पिता एवं अन्य संबंधियों द्वारा दान किया धन 'स्वदायिक' कहलाता है । स्त्री को इसी धन पर

संपूर्ण अधिकार है ।

कात्यायन ने 'कला द्वारा अर्जित स्त्रीधन' की मीमांसा की है । इसके अंतर्गत स्त्रियों की नौकरी अथवा व्यवसाय द्वारा अर्जित धन को लिया जा सकता है । कहने का तात्पर्य यह है कि इस दिशा में हिंदू कानून एकदम स्पष्ट है । इसमें कोई जटिलता नहीं है ।

आज के संदर्भ में हिंदू स्त्री को उसके स्व-अर्जित वेतन अथवा व्यवसाय द्वारा प्राप्त लाभ पर संपूर्ण अधिकार है । (एबसोलूट राईट) । वह जैसा चाहे वैसा उसका उपयोग कर सकती है । यह स्त्री की स्व-इच्छा पर निर्भर करता है कि वह अपनी कमाई का कैसा उपयोग करे । यदि ससुरालवाले उसके साथ अच्छा सलूक करते हैं, उसका मन जीत लेते हैं तभी वे उसकी कृपाकांक्षा के पात्र हो सकते हैं ।

सास-ससुर का भरण-पोषण

कानून ने अभी बहू और दामाद को अपने सास-ससुर के भरण-पोषण का अधिकार प्रदान नहीं किया है । इसे बहू या दामाद का कर्त्तव्य कहा जा सकता है किंतु इस कर्त्तव्य की भावना भी तभी उत्पन्न होगी जब बहू को अपनी ससुराल में उतना ही आदर, मान, सम्मान और अपनत्व मिलेगा जितना पुत्र को प्राप्त है । तभी वह स्वेच्छा से अपनी अर्जित कमाई अपने पति-कुल के सदस्यों पर खर्च कर सकती है ।

पत्नी का शोषण

मेरे पास एक केस आया । पति महोदय अपनी पत्नी का पूरा वेतन पहली तारीख को ले लेते थे, और उसे मार्ग-व्यय आदि के लिए ५०/- रुपये दे देते थे । बेचारी, अपने सहयोगियों को अपनी कमाई से चाय भी नहीं पिला सकती थी । उससे जब स्थिति असह्य हो गयी तो उसने अपने मायके के शहर का स्थानांतरण करवा लिया । इंजीनियर पति ने बहुत हाथ-पांव मारे किंतु स्थानांतरण नहीं रुका । पत्नी मायके चली गयी । इससे पति महोदय को ९००/- रुपये माहवार का नुकसान हो गया । क्योंकि पत्नी ने फिर पतिगृह का मुंह भी नहीं देखा । पति महोदय मेरे पास आये और कहने लगे कि मेरा अपनी पत्नी की कमाई पर अधिकार है । आप कुछ ऐसा नोटिस दीजिए कि उसकी तनख्वाह कटकर मेरे पास आये । मैंने कहा कानून में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है । हां ! यदि किसी अयोग्यता के कारण आप अपना भरण-पोषण करने में असमर्थ हैं तो उसके लिए कानून में गुंजाइश निकल सकती है ।

स्त्री और पुरुष को लेकर अलग-अलग बातें क्यों होती हैं जबकि संविधान की धारा १४ में लिंग भेद मिटा दिया गया है, एवं इसी धारा की दुहाई देकर धर्मनिरपेक्षता की आवाज उठायी जाती है वही लिंग निरपेक्षता की बात राष्ट्र के लिए हितकारी है । एक कानून जो स्त्री और पुरुष एवं जाति के भेद रहित हो, आज की आवश्यकता है, किंतु प्रकृति ने जो कुछ निर्बलताएं स्त्री को प्रदान की है उसकी सुरक्षा के लिए कानून में गुंजाइश की आवश्यकता तो रहेगी ही । ऐसे कानूनों को सुरक्षात्मक (प्रोटेक्टिव) कानून कहा जाता है । जब तक स्त्री को संपत्ति संबंधी सुरक्षात्मक कानूनी कवच नहीं मिलता उसकी कानून में स्थिति भ्रामक ही रहेगी ।

इसी संदर्भ में यह उल्लेख करना भी आवश्यक है कि धारा १४ हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम में इसका स्पष्ट उल्लेख है :

कि हिंदू स्त्री की मृत्यु के पश्चात उसकी संपत्ति का उत्तराधिकार का प्रश्न किस प्रकार हल होगा । स्त्री की यह संपत्ति स्त्रीधन होती है ।

धारा १४ हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम में इसका स्पष्ट उल्लेख है—

धारा १४ हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम

हिंदू नारी की संपत्ति उसकी आत्यंतिक अपनी संपत्ति होगी—

(१) हिंदू नारी के कब्जे में की गयी कोई भी संपत्ति, चाहे वह इस अधिनियम के प्रारंभ से पूर्व या पश्चात अर्जित की गयी हो, उसके द्वारा पूर्ण स्वामी के तौर पर न कि परिसीमित स्वामी के तौर पर धारित की जाएगी।

स्पष्टीकरण— इस उपधारा में 'संपत्ति' के अंतर्गत वह जंगम और स्थावर संपत्ति आती है जो हिंदू नारी ने विरासत द्वारा अथवा वसीयत द्वारा अथवा विभाजन में अथवा भरण-पोषण के या भरण-पोषण की बकाया के बदले में अथवा अपने विवाह के पूर्व या विवाह के समय या पश्चात दान द्वारा किसी व्यक्ति से, चाहे वह संबंधी हो या न हो, अथवा अपने कौशल या परिश्रम द्वारा अथवा क्रय द्वारा अथवा चिरभोग द्वारा अथवा किसी अन्य रीति से, चाहे वह कैसी ही क्यों न हो, अर्जित की हो और ऐसी कोई संपत्ति भी जो इस अधिनियम के प्रारंभ से अव्यवहित पूर्ण स्त्रीधन के रूप में उसके द्वारा धारित थी।

(२) उपधारा (१) में अंतर्विष्ट कोई बात ऐसी किसी संपत्ति को लागू न होगी जो दान अथवा बिल द्वारा या अन्य किसी लिखत के अधीन अथवा सिविल न्यायालय की डिग्री या आदेश के अधीन या पंचाट के अधीन अर्जित की गयी हो यदि दान, विल या अन्य लिखत अथवा डिग्री, आदेश या पंचाट के निबंधन ऐसी संपत्ति से निर्बंधित संपदा विहित करते हों।

आज देश को एक यूनीफाइड सिविल कोड की आवश्यकता है।

महत्त्वपूर्ण परिवर्तन :

इस अधिनियम के अधिनियमित होने के पूर्व हिंदू नारी को संपत्ति पर सीमित अधिकार थे। वह संपत्ति से अपने जीवनभर निर्वाह कर सकती थी और उसकी मृत्यु के बाद संपत्ति उत्तरभोगियों को वापस हो जाती थी। इस प्रकार हिंदू जाति संपत्ति की सीमित स्वामी होने के कारण स्वतंत्रतापूर्वक अपनी स्वेच्छा से संपत्ति को किसी भी प्रकार हस्तांतरित करने के लिए सक्षम नहीं थी। वह केवल वैधानिक आवश्यकता के लिए ही सीमित अधिकार वाली संपत्ति को बिक्री कर सकती थी। यह संपत्ति के लाभ के लिए या सुरक्षा के लिए बिक्री कर सकती थी तथा उत्तरभोगियों की सहमति से संपत्ति की बिक्री कर सकती थी। इस प्रकार संपत्ति पर उसके सीमित अधिकार थे अर्थात संपत्ति से अपनी परवरिश करने भर का उसे अधिकार था। हिंदू वूमेंस राइट टू प्रापर्टी एक्ट १९३७ के द्वारा हिंदू विधवा को अपने पति की संपत्ति में उत्तराधिकार का हक मिला एवं बंटवारा प्राप्त करने का भी हक मिला, परंतु वह हक भी सीमित था केवल उपभोग का हक था। इस अधिनियम के अधिनियमित होने के पूर्व पुरुष का संपत्ति पर पूर्ण अधिकार था किंतु नारी को सीमित अधिकार था और इस प्रकार संपत्ति पर पुरुष एवं नारी के अधिकार में अंतर था जिसे दूर करने के लिए इस अधिनियम के

'स्त्रीधन' पर उसका संपूर्ण अधिकार होता है। वह जैसा चाहे उसका उपयोग कर सकती है। वह स्त्रीधन के रूप में अर्जित संपत्ति बेच सकती है, गिरवी रख सकती है एवं जिसे उसकी इच्छा हो उसे दान कर सकती है। इतना ही नहीं यदि उसे दूसरी संपत्ति खरीदना हो तो अपनी स्त्रीधन की संपत्ति बेचकर इस धन से दूसरी संपत्ति खरीद सकती है। यदि इस स्त्रीधन की संपत्ति बिकती है तो जो पैसा आएगा वह भी स्त्रीधन कहलाएगा। इस संपत्ति पर उसके पिता, भाई, पति एवं पुत्र किसी का भी कोई अधिकार नहीं होता।

प्रावधान रखे गये।

स्त्री धन—नारी संपदा

इस अधिनियम के पूर्व हिंदू नारी दो प्रकार की संपत्ति धारित करती थी, 'स्त्रीधन' और 'नारी संपदा'। विवाह के समय पवित्र अग्नि के समक्ष नारी को दी गयी संपत्ति, विवाह के बाद मायके से ससुराल जाते समय वधू को दिया गया दान तथा स्नेहवश सास-ससुर, रिश्तेदारों द्वारा दिया गया उपहार, तथा माता, पिता, भाई के द्वारा नारी को दिया गया उपहार माना जाता था। इसके अतिरिक्त भी पति-पुत्र, रिश्तेदारों के द्वारा नारी को दिया गया उपहार भी स्त्रीधन माना जाता था। स्त्रीधन के अतिरिक्त हिंदू नारी की अन्य संपत्ति होती थी, जिसे नारी संपदा कहते हैं, जिसे नारी उत्तराधिकार में या भरण-पोषण के लिए प्राप्त करती थी। स्त्रीधन पर नारी का पूर्ण अधिकार होता था और स्त्रीधन के किसी भी प्रकार के उपभोग एवं हस्तांतरण के लिए वह स्वतंत्र थी किंतु नारी को जो संपत्ति उत्तराधिकार में प्राप्त होती थी उसकी वह पूर्ण स्वामिनी नहीं होती थी। वह केवल जीवनभर उसका उपभोग करती थी और उसकी मृत्यु के बाद उसकी सीमित अधिकारों वाली संपत्ति को उत्तरभोगी प्राप्त करते थे। उत्तरभोगी, संपत्ति के अंतिम पूर्ण स्वामी के वारिस होते थे जो विधवा या अन्य सीमित स्वामी की मृत्यु के बाद अंतिम पूर्ण स्वामी की संपत्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त करने के अधिकारी होते थे, बशर्ते कि वे विधवा या सीमित स्वामी की मृत्यु के समय जीवित रहे। इस प्रकार संपत्ति के पूर्ण अंतिम स्वामी से नारी, संपत्ति को सीमित अधिकार में प्राप्त करती थी और उसकी मृत्यु के बाद उसके स्वयं के वारिस उस सीमित हकवाली संपत्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं करते थे किंतु संपत्ति के अंतिम पूर्ण स्वामी के वारिस जो उत्तरभोगी कहे जाते हैं, संपत्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त करते थे। सीमित अधिकार की संपत्ति को यदि हिंदू नारी बिक्री भी कर देती थी तो भी यदि वैधानिक आवश्यकता न हो तो ऐसी बिक्री उत्तरभोगियों के लिए बंधनकारी नहीं होती थी। इसलिए उत्तरभोगी गण इस संबंध में उद्घोषणा का वाद पेश करके उद्घोषणा की डिग्री प्राप्त कर लेते थे और विक्रेता सीमित अधिकार की नारी की मृत्यु के बाद खरीददार से बिक्रीशुदा संपत्ति वापस प्राप्त कर लेते थे। संपत्ति में सीमित अधिकार होने के कारण यदि नारी संपत्ति की बिक्री भी कर देती थी तो विक्रेता को नारी का सीमित अधिकार ही हस्तांतरित होता था और नारी के

मरने के बाद उत्तरभोगी बिक्रीशुदा संपत्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त करने के अधिकारी हो जाते थे ।

महत्त्वपूर्ण परिवर्तन

अब इस अधिनियम की धारा १४ के द्वारा नारी के संपत्ति पर अधिकार के संबंध में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किया गया है । अब हिंदू नारी अधिनियम की धारा १४ (१) के प्रावधानों के अनुसार इस अधिनियम के अधिनियमित होने के पूर्व अर्जित सभी संपत्ति और अधिनिय मित होने के बाद अर्जित समस्त संपत्ति की पूर्ण स्वामिनी बना दी गयी है । अब हिंदू नारी पूर्ण स्वामिनी की हैसियत से संपत्ति को बिक्री करने या किसी प्रकार भी हस्तांतरित करने के लिए स्वतंत्र है । अब हिंदू नारी पूर्ण स्वामिनी के रूप में संपत्ति अर्जित करती है इसलिए यदि कोई विधवा पति की संपत्ति उत्तराधिकार में प्राप्त संपत्ति से वंचित नहीं होगी क्योंकि उसे संपत्ति में पूर्ण स्वामित्व प्राप्त है परंतु इस अधिनियम के पूर्व यदि विधवा पुनः विवाह कर लेती थी तो वह पति से उत्तराधिकार में प्राप्त संपत्ति से वंचित हो जाती थी । इस प्रकार इस धारा के द्वारा हिंदू नारी के संपत्ति में हक के संबंध में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किया गया है और उसे संपत्ति का पूर्ण स्वामी उसी प्रकार बना दिया गया है जिस प्रकार पुरुष संपत्ति का स्वामी होता है । संपत्ति के स्वामित्व के संबंध में अब पुरुष और नारी में कोई भेद नहीं है ।

पूर्ण स्वामिनी उपधारा (१)

इस अधिनियम के प्रारंभ होने के पूर्व यदि हिंदू नारी के द्वारा कोई संपत्ति अर्जित की गयी हो और वह नारी इस अधिनियम के प्रारंभ होने के दिनांक को अर्थात १७ जून १९५६ को उस अर्जित संपत्ति के कब्जे में हो तो इस उपधारा के प्रावधान के अनुसार वह हिंदू नारी उस संपत्ति की पूर्ण स्वामिनी हो जाएगी अर्थात उसका परिसीमित पूर्ण स्वामी के अधिकार में परिवर्तित हो जाएगा । इसलिए वह नारी उस संपत्ति को पूर्ण स्वामिनी के रूप में धारित करेगी । इसी प्रकार इस अधिनियम के प्रारंभ होने के पश्चात यदि कोई हिंदू नारी उत्तराधिकार में संपत्ति अर्जित करती है तो वह पूर्ण स्वामिनी के रूप में डिग्री के अधीन संपत्ति अर्जित करेगी तथा उस संपत्ति को वह नारी पूर्ण स्वामिनी के रूप में धारित करेगी । इस प्रकार इस उपधारा के प्रावधान के अनुसार संपत्ति की पूर्ण स्वामिनी होगी । कोई भी नारी संपत्ति की पूर्ण स्वामिनी तभी बन सकेगी जब वह इस अधिनियम के प्रारंभ होने के दिनांक १७ जून १९७६ को उसके कब्जे में हो और उसने उस संपत्ति का उत्तराधिकार में बंटवारा में या परवरिश के एवज में प्राप्त किया हो अर्थात संपत्ति पर उसका पूर्व विद्यमान हक हो और इस अधिनियम के प्रारंभ होने के बाद तो पूर्ण स्वामिनी के रूप में संपत्ति उत्तराधिकार में प्राप्त करती है ।

अर्जित

शब्द अर्जित को भी व्यापक अर्थ दिया गया है । स्पष्टीकरण के भाषा उपधारा (१) को उसमें दिये गये तरीके से लागू होती है । उपधारा (२) उपधारा (१) के परंतुक या अपवाद के रूप में है । उपधारा (२) तभी लागू होती है जब उसमें वर्णित रीतियों में से किसी रीति से प्रथम बार हिंदू नारी के द्वारा




हमारे गणतंत्र के आधार स्तंभ
न्याय
स्वतंत्रता
समानता
बंधुत्व
धर्मनिरपेक्षता



अर्जन किया जाता है और उसका उस संपत्ति में पूर्व विद्यमान अर्थात संपत्ति में पहले से ही विद्यमान अधिकार नहीं रहता है । इस तरह इस धारा के अंतर्गत शब्द अर्जित का यही अर्थ है कि नारी का उस संपत्ति में पूर्व से विद्यमान हक था, जिसके कारण वह संपत्ति उसे दी गयी थी, उस नारी को बिना किसी पूर्व विद्यमान हक के संपत्ति नहीं दी गयी थी । यदि संपत्ति पूर्व विद्यमान हक के कारण नारी को प्राप्त हुई थी तो वह इस अधिनियम के प्रभावशील होने पर पूर्ण स्वामिनी बन जाएगी बशर्ते कि वह १७ जून १९५६ को कब्जे में भी हो । विधवा ने हिंदू वूमेंस राइट टू प्रापर्टी एक्ट, १९३७ के अंतर्गत पति की संपत्ति में हक पाया जो कि बाद में बंटवारा माप और सीमांकन से उसे वह संपत्ति आबंटित की गयी, इसलिए विधवा संपत्ति को अर्जित करके कब्जे में थी । विधवा को १९३७ के अधिनियम के अनुसार संयुक्त संपत्ति में पति की संपत्ति पर हक प्राप्त हो चुका था अर्थात विधवा का पूर्व विद्यमान हक था जिसके ही कारण उसे बंटवारे में संपत्ति दी गयी थी और वह काबिज थी इसलिए इस अधिनियम के प्रभावशील होने के बाद धारा १४ (१) के अंतर्गत उस संपत्ति की पूर्ण स्वामिनी हो गयी । देखें *ए. आई. आर. १९७० सुप्रीम कोर्ट १९६३ बद्रीप्रसाद वि. श्रीमती कंसा देवी ।*

यदि किसी हिंदू नारी ने विधिवत् रीति से कोई संपत्ति अर्जित नहीं की है परंतु उसका नाम राजस्व पत्रों में स्वामी के रूप में दर्ज कर लिया गया था तथा वह नारी उस काश्तकारी जमीन के कब्जे में भी नहीं थी तो उस नारी को धारा १४ (१) का लाभ नहीं मिल सकेगा, वह पूर्ण स्वामिनी नहीं बन पाएगी । पति ने कुछ काश्तकारी जमीन में पत्नी का नाम राजस्व पत्रों में दर्ज करा दिया तथा पत्नी के पक्ष में कोई दस्तावेज नहीं लिखा तो राजस्व पत्रों के नाम दर्ज करा देने मात्र से पत्नी को उस जमीन के स्वामित्व का अर्जन नहीं होता । राजस्व पत्रों के नाम दर्ज करने से कब्जा और स्वामित्व का अनुमान कतिपय मामलों में लगाया जा सकता है परंतु धारा १४ के प्रयोजन के लिए यह सिद्ध किया जाना आवश्यक है कि भूमि का अर्जन किस प्रकार से किया गया और भूमि में उसका स्वामित्व पूर्ण या सीमित जो भी हो किस प्रकार से था, जिससे कि वह धारा १४ (१) के अनुसार पूर्ण स्वामिनी बन सकेगी । पति के द्वारा जमीन सौंप देने मात्र से एवं राजस्व पत्रों के नाम प्रमाणित कर देने से धारा १४ के प्रावधान के अनुसार उसे नारी द्वारा अर्जित नहीं माना जाएगा । इसलिए वह पूर्ण स्वामिनी नहीं बन पाएगी । (देखें ए. आई. आर. १९८१ बांबे २७१ नारायण राव वि. महाराष्ट्र राज्य) ।

इस अधिनियम के प्रारंभ से पूर्व या पश्चात अर्जित यदि किसी हिंदू नारी ने इस अधिनियम के प्रारंभ होने के पूर्व संपत्ति अर्जित की थी और कब्जे में थी तो वह इस उपधारा के अनुसार इस संपत्ति की पूर्ण स्वामिनी बन जाएगी । इसलिए इस धारा का प्रभाव भूतलक्षी माना गया है क्योंकि इस अधिनियम के प्रभावशील होने के

पूर्व किसी हिंदू नारी ने संपत्ति विधिवत् अर्जित की है तभी उसकी संपत्ति का अर्जन इस धारा के प्रयोजन के लिए विधिवत माना गया है। यदि इस अधिनियम के प्रारंभ होने के पूर्व किसी नारी का बारह वर्ष से अधिक कब्जा है तो वह विरोधी कब्जा के सिद्धांत के अनुसार पूर्ण स्वामिनी बन जाती है अन्य रीति से अर्जित करने का प्रश्न नहीं है। इस अधिनियम के प्रारंभ होने के पूर्व हिंदू नारी को पूर्ण स्वामित्व नहीं था और हिंदू वूमेंस राइट टू प्रापर्टी एक्ट, १९३७ के अधिनियम होने के पूर्व विधवा को पति की संपत्ति को बंटवारे में प्राप्त करने का भी हक नहीं था। सन १९३७ के अधिनियम के पूर्व हिंदू नारी को केवल परवरिश प्राप्त करने का अधिकार था किंतु १९३७ के अधिनियम के द्वारा हिंदू नारी को बंटवारा में संपत्ति प्राप्त करने का हक मिला। इसलिए १९३७ के पूर्व जिस विधवा के पति की मृत्यु होती थी उसे परवरिश का ही अधिकार था, बंटवारा लेने का हक नहीं था। जब केवल परवरिश का ही नारी का हक था और परवरिश के बदले में उसे कोई संपत्ति नहीं दी गयी थी और न ही वह इस अधिनियस के आरंभ के दिन संपत्ति के कब्जे में थी तो परवरिश के आधार के ही कारण वह पूर्ण स्वामिनी नहीं बनेगी। जब किसी नारी के पति की मृत्यु संयुक्त अवस्था में सन १९३० में हुई अर्थात हिंदू वूमेंस राइट टू प्रापर्टी एक्ट १९३७ के प्रभावशील होने के पूर्व हुई हो तब मृत पति के द्वारा छोड़ी गयी संपत्ति उत्तरजीविता के सिद्धांत के अनुसार उत्तरजीवी सहदायिकों को प्राप्त हो जाएगी और विधवा को उस संपत्ति में कोई हित नहीं रहेगा।

इसलिए विधवा को संपत्ति के आन्वयिक कब्जा में भी १९३० से नहीं माना जा सकता। इसलिए धारा १४ लागू नहीं होगी और विधवा को पूर्ण स्वामित्व प्राप्त नहीं होगा। (देखें ए. आई. आर. १९७७ पटना २०१, राम चरित्र सिंह एवं अन्य वि. मोनफल देवी अन्य।) इस अधिनियम के प्रारंभ होने के पश्चात यदि कोई हिंदू नारी संपत्ति अर्जित करती है तो वह उस संपत्ति की उपधारा के अनुसार पूर्ण स्वामिनी बनेगी। संपत्ति का अर्जन से तात्पर्य है विधिवत् अर्जन।

पैतृक संपत्ति

पैतृक संपत्ति में धारा ६ हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम के अंतर्गत संपत्ति सहदायिक को जाती है और सहदायिक मात्र पुरुष ही होता है। ऐसी स्थिति में लड़की को पिता की संपत्ति में से कुछ भी प्राप्त नहीं होता। अतः यह संशोधन अत्यंत आवश्यक है कि सहदायिक अधिकार पत्नी एवं पुत्री को भी प्राप्त हो जिससे वह पिता/पति की जीवितावस्था में विशेष परिस्थिति में बंटवारा कर सके।

हिंदू कोड बिल में पारित होने के पश्चात् हिंदू स्त्रियों को पर्याप्त अधिकार प्राप्त हो गये हैं। इसके अतिरिक्त संपूर्ण हिंदू विधि का संहिताबद्ध होने के कारण भी बहुत कुछ सुधार हुआ है। फिर भी कुछ संशोधनों की आवश्यकता है। ●

समस्या-पूर्ति-१७४

अनंत



प्रथम पुरस्कार

दो क्षण का विश्राम पखेरू, फिर जाने किस ओर प्रयाण
सखे, जानने सुनने को कुछ, व्याकुल, आतुर यह मन प्राण,
क्या देखा, क्या पाया तुमने, घूम घूम कर दिशा दिगंत
कितने भेद छिपाये बैठा, यह असीम आकाश अनंत

—श्रीमती प्रभा पंत

ए-१२, इंकम टैक्स कॉलोनी
पैडर रोड, बंबई-४०००२६

द्वितीय पुरस्कार

इच्छा अनंत, आशा अनंत
क्षमता अनंत, सुविधा अनंत
फिर क्यूं 'मन पगले-सा' पंछी
बैठा देखे—'सीमा' अनंत

—नरेन्द्र तम्बोली

३४५, कलर्क कॉलोनी
परदेशीपुरा, इंदौर (म. प्र.) पिन-४५२००३

तृतीय पुरस्कार

यंत्रों ने कर चमत्कार तय कर दी दूरी
हुई नहीं फिर भी मानव-अभिलाषा पूरी
लहरों-सा सिलसिला न इसका कहीं अंत
साधन सीमित हैं पर इच्छाएं अनंत

—विजय प्रसाद

सुभाष नगर कॉलोनी, बेरमो
क्वार्टर नं. १/बी ६ जिला-बोकारो (बिहार)

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित

फार्म-4

(नियम 8 देखिये)

कादम्बिनी

1.	प्रकाशन स्थान	: नई दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक का नाम	: राजेन्द्र प्रसाद
	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	: × × ×
	पता	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001
4.	प्रकाशक का नाम	: राजेन्द्र प्रसाद
	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	: × × ×
	पता	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001
5.	सम्पादक का नाम	: राजेन्द्र अवस्थी
	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	: × × ×
	पता	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	: दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001

मैं, राजेन्द्र प्रसाद, एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह०/- (राजेन्द्र प्रसाद)

दिनांक : 28 फरवरी, 1994

प्रकाशक